राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला

राजस्थान - राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थानप्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया

उपनिदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ११६

राजस्थानी - वीर - गीत - संग्रह

तृतीय भाग

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)
१९७२ ई०

मुद्रक

राज प्रिंटिंग प्रेस, जोधपुर

वि० स० २०२९ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९४

विषय-सूची

प्रस्तावना

राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश के चारणो और अन्य सबधित कवियो ने बडी सख्या मे राजस्थानी वीर-गीतो की रचनाए की हैं। इन गीतो का न केवल साहित्यिक दृष्टि से अपितु ऐतिहासिक, सामाजिक एव सास्कृतिक दृष्टि से भी विशेष महत्व है। इन गीतो से प्रभावित होते हुए विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है —

"राजस्थानी गीतो मे कितनी सरलता, सहृदयता और भावुकता है। वे लोगो के स्वाभाविक उद्‌गार हैं। मैं तो उनको सत-साहित्य से भी उत्कृष्ट समझता हू। .... ससार की कोई भी भाषा और साहित्य इन पर गर्व कर सकता है।[1]

स्वर्गीय श्री झवेरचन्दजी मेघाणी ने इन गीतो का ऐतिहासिक महत्व इस प्रकार प्रदर्शित किया है—

"एक ओर गीत जहाँ प्राचीन घटनाओ की ऐतिहासिक जानकारी के बहुत बडे साधन हैं, वहा दूसरी ओर तात्कालिक परिस्थितियो पर लोक-हृदय की समीक्षा का विवरण इन गीतो मे मिल जाता है। इतिहास के शुष्क ककाल को इन गीतो ने लोकोक्तियो के सजीव रुधिर-मास से आपूरित कर दिया है।[2]

इन वीर गीतो के सबध मे कतिपय प्राचीन उक्तिया इस प्रकार हैं —

भीतडा ढह जाय धरती भिले, गीतडा नहँ जाय कहे राव गागो।[3]

और

गवडीजे जस गीतडा, गया भीतडा भाज।[4]

प्राचीन साहित्य शोध-सस्थान, राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर की ओर से राजस्थान मे प्राचीन साहित्य के सर्वेक्षण, सग्रह और सम्पादन-प्रकाशन का कार्य १९४० ई० मे प्रारम्भ किया गया तो इन वीर-गीतो का महत्व समझते हुए इनके सग्रह के लिये मैंने विशेष

---

१. माडर्न रिव्यु, कलकत्ता, दिसम्बर १९३८

२. राजस्थान के सास्कृतिक उपाख्यान, डा० कन्हैयालाल सहल, पिलानी, पृ० ११

३. वागवर, चारण जाति के प्रति राजपूत कवियों के उद्‌गार, वर्ष १, अक ३, पृ० ४३

४. बांकीदास-ग्रंथावली, पं० रामकर्ण आसोपा, भाग १, पृ० ५८

प्रयत्न किमा। श्री सावलदान आमिया और श्री रूपसिंह वारहठ जैसे व्यक्तियो के सहयोग से लगभग पच्चीस हजार वीर-गीतो का सग्रह उक्त सस्थान मे करवाया। साहित्य और इतिहास जगत् के लिये यह सग्रह वहुत उपयोगी है।

प्रतिष्ठान की ओर मे राजस्थानी-साहित्य के सम्पादन - प्रकाशन की योजना वनी तो राजस्थानी-वीर-गीत-सग्रह सवधी सम्पादन - प्रकाशन कार्य को भी महत्व दिया गया। परिणाम-स्वरूप इन गीतो के दो भाग प्रकाशित हो चुके हैं और यह तीसरा भाग पाठको के हाथो मे पहुच रहा है। वीर-गीत-सग्रह सवधी इस योजना पर आगे भी कार्य चालू है और आगामी भाग भी पाठको के सम्मुख शीघ्र ही प्रकाशित होकर पहुचेंगे।

राजस्थानी-वीर-गीत-सग्रह भाग ३ के प्रारभ मे ३ गीत राम और कृष्ण सवधी हैं। तदुपरान्त कछवाहा, शेखावत, राठौड, सीसोदिया, झाला, चौहान और जाट वीरो से सवधित गीत शब्दार्थ सहित दिये गये हैं। परिशिष्ट मे ऐतिहासिक टिप्पणिया तथा गीतानुक्रमणिका है।

इन गीतो के साथ इनके कर्त्ता अनेक राजस्थानी कवियो के नाम भी प्रकाश मे आये हैं जिनमे जोरावरसिंह (गीत स० १), मुरारीदास वारहठ (स० २), गोपाल मीसण (स० ४), ईसरदास सादू (स० २१), वनजी खिडिया (स० २५), कुभा दमोवी (स २६), नवलराम कविया (स० ३१), जीवण मोतीसर (स० ३८), कवि हणू दान (स० ४०), गंगाराम देभल, नेतड़वास (स० ४२), देवा महियारिया (स० ५६), माला, सादू, भदौरा (६५, ६६), अनोप सादू (६७), पद्मा सादूवण (स० ७०, १४०), द्वारकादास दधिवाडिया (७६), कीरतदान वारहठ (७८), गगाराम (८०), कल्ला जीवण (८४) आसा सिंढायच (८५), जाला सादू (६६), वना खिडिया (१०२), नादण वारहठ (१०४), वद्रीदास खिडिया (११६), तेजराम आसिया (१२०), आदि नाम हैं। कविवर हुक्मीचदजी खिडिया, कविराजा वाकीदासजी, वृन्द और महाराजा वहादुरसिंहजी जैसे प्रसिद्ध कवियो के भी अनेक गीत इस सकलन मे है।

राजस्थानी डिंगल-काव्य मे 'गीत' छन्द दोहे के समान लोकप्रिय रहा है। गीत छन्द के भेद एक सौ से भी अधिक हैं और इस छन्द से सवधित शास्त्रीय ग्रथो की सख्या सत्रह हैं। प्रत्येक प्रमुख चारण अथवा अन्य सवधित कवि ने कम-अधिक सख्या मे गीतो की रचनाए की है। गीत-रचना कवि की कसौटी रहा है और आज भी राजस्थान, गुजरात तथा मध्य-प्रदेश मे अनेक गीत-कर्त्ता कवि वर्तमान हैं।

अद्यावधि ज्ञात-अज्ञात हजारो ही भारतीय वीरो के चरित्र इन गीतो मे हैं और भारतीय इतिहास एव सस्कृति के अनेक अधकार पूर्ण पक्ष इन गीतो के प्रकाश मे आलोकित हो सकते हैं। इस प्रकार न केवल साहित्यिक दृष्टि से वरन् ऐतिहासिक, सामाजिक एव सास्कृतिक दृष्टि से भी इन गीतो का महत्व है।

राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश के अनेक अन्धकारमय उपेक्षित, धूलधूसरित कोनो मे दबी विनाश की ओर अग्रसरित ग्रथ निधियो मे अथवा वृद्ध जानकार व्यक्तियो की स्मृति मे विराजमान इन अगणित गीतो का विधिवत् सग्रह, अध्ययन, सम्पादन और प्रकाशन-सबधी कार्य अखिल भारतीय महत्व का एक वृहद् सास्कृतिक आयोजन है। तदर्थ सबधित समस्त सस्थाओ और व्यक्तियो को सक्रिय होना है।

विद्वान् सम्पादक ने अपनी भूमिका सहित इस सस्करण को पाठको के लिये उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है। प्रस्तुत वीर-गीत-सग्रह के सम्पादक राजस्थानी भाषा-साहित्य की डिगल-शैली के विशेप ज्ञाता है। इन्होंने प्रत्येक गीत का हिन्दी साराश देते हुए शब्दार्थ और टिप्पणियाँ दी हैं जिनसे, गीतो का अर्थ समझने मे सहयोग मिलता है।

श्री सौभाग्यसिहजी शेखावत इस कार्य को पूरी रुचि और योग्यता से सम्पादित कर रहे हैं। तदर्थ इनका प्रयास सराहनीय है। विश्वास है कि आगे और भी अधिक समय देकर इस महत्वपूर्ण कार्य को पूर्ण करने मे यथाशक्य योग देंगे। इस पुस्तक को सुचारु रूप मे प्रकाशित करने मे प्रतिष्ठान के प्रकाशन विभाग के सहयोगी श्री गिरधरवल्लभ दाधीच का परिश्रम उल्लेखनीय है।

डॉ पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
उप निदेशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।



भूमिका

राजस्थान भारत का वीर प्रान्त है। इस भूमि का इतिहास वीरता तथा उदारता की अनुपम गौरव गाथाओ का इतिहास है। यहाँ के महामानवो ने युगो तक असामाजिक तत्वो के विरुद्ध संघर्षरत रह कर भारतीय सस्कृति, भारतीय मर्यादाएँ और मानवीय जीवनादर्शो के लिए सतत अपने प्राणो का बलिदान किया है। स्वतत्रता, कर्त्तव्य-पालन और परम्परित कुल गौरव-रक्षा के निमित्त अपना सर्वस्व उत्सर्ग करने की परम्पराओ से राजस्थान का इतिहास ओतप्रोत है। राजस्थान का गौरव यहाँ की कला, सस्कृति, साहित्य और इतिहास मे प्रतिविम्बित हुआ है। जैसा शौर्य और त्याग राजस्थान के वीरो ने दिखाया है वैसी ही ओजस्वी सशक्त वाणी मे राजस्थानी कवियो-साहित्यकारो ने उसे अभिव्यक्त किया है। बलिदान और उत्सर्ग का वह स्वर राजस्थानी (डिंगल) भाषा मे सहज मुखरित हुआ है। पद्य मे प्रबधकाव्यो, दोहो, सोरठो, छप्पयो, झमालो और विविध गीत छदो मे तथा गद्य मे वचनिका, वारता, दवावैत, ख्यात और वात मे अकित मिलता है। पद्य साहित्य मे गीतो मे तो वीर-वर्णन जिस कौशल और वैविद्य के साथ वर्णित पाया जाता है वह सर्वथा अनूठा और विस्तृत है। गीतो के अध्ययन से आभासित होता है कि मानो गीत छद प्रकृतित वीराख्यानो के लिए ही निर्मित हुए हो। वस्तुत राजस्थानी का यह छद अपना निजी घर का छद है। प्रान्तीय भाषाओ मे गुजराती के अतिरिक्त पजावी, मराठी, बगला, आसामी और उडिया आदि किसी भी भाषा मे गीत छद का प्रयोग नही मिलता है।

वीर चरित्र वर्णन मे युद्ध और योद्धा का सर्वाङ्गीण चित्रण गीतो मे उपलब्ध होता है। युद्धस्थली, सैन्य-सयोजन, युद्ध-सज्जा, शस्त्र, वाहन, दुग-किलो के वर्णन के साथ साथ योद्धाओ की मनोदशा, उनकी युद्ध के प्रति कामना, समाज मे उनके प्रति आदर की भावना, जय-विजय और पराजय तथा जीवन-मृत्यु के प्रति उनका दृष्टिकोण बखूबी गीतो मे अभिव्यक्त हुआ है। राजस्थानी गीत साहित्य मे विजय को आनन्द, मृत्यु को स्वर्ग सौख्यदाता और कायरता पूर्वक जीवन-रक्षा को कलक के रूप मे अकिन किया गया है। स्वकर्त्तव्य–पालन करते हुए जूझने वालो की प्रशसा और कायरता पूर्वक रणस्थली से पलायन करने वालो की कटु भर्त्सना की गई है।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया है कि गीतो मे वीरता और उदारता का विविध रूप मे आलेखन हुआ है। काव्य, कल्पना और इतिहास की त्रिधारा गीतो मे गुजित है।

काव्य रसिको और इतिहास-वेत्ताओ के लिए गीतो मे समान रूप से अभिलषित सामग्री प्राप्त होती है। भारतीय सस्कृति के अनेक तत्व गीतो मे सुरक्षित मिलते हैं। धरती प्रेम, शरणागत रक्षा, कुल-गौरव का अनुसरण, वचन-निर्वाह, स्वामिधर्म और प्रतिशोध भावना प्रभृत्ति का गीतो मे बहुविध वर्णन प्राप्त है। शरणागत रक्षा के लिए अकारण अपने जीवन को सकटार्पित करने की गौरवमयी घटनावलियाँ गीतो मे अनेकश वर्णित है। राजस्थान मे शरणागत रक्षा को महान् धर्म माना गया है। रणथभौर के शासक राव हम्मीर चौहान का बलिदान तो शरणागत रक्षा का अद्वितीय उदाहरण है। राजस्थान मे अनेक योद्धा परिवारो की शरणागत रक्षा के लिए परम्परित प्रसिद्धि रही है। अकेले मेवाड़ राज्य मे ही सादडी, गोगूदा, देलवाडा कोठारिया, वेदला, पारसोली, सलूम्बर, देवगढ, बेगू, आमेट, भीडर, बानसी, घाणेराव, बदनौर, कानौड और बीजोलिया आदि ऐसे ठिकाने रहे हैं, जिनके यहाँ बडा से बडा राजकीय अपराधी भी जा पहुँचने पर शाकीय कोप से सुरक्षित बच पाता था। यदि राजा उनके शरणागत रक्षा के अधिकार को चुनौती देने का दुस्साहस कर बैठता था तो वे राजाज्ञा का उल्लघन कर राजकीय सेना से जूझ मरते थे, पर शरण मे आए को न राज्य के सुपुर्द करते और न कही अन्यत्र भाग जाने देते थे। मेवाड मे 'शरण' के स्वत्व प्राप्त ठिकानो का निम्न प्रकार उल्लेख मिलता है—

मरणा ईवक सादडी, गोघूदो घर घल्ल ।
देलवाडो बकौ दुरग, झाला खत्रवट झल्ल ।।
कोठारचो अर वेदलो, पारसोली भुजपाण ।
माझी धर मेवाड मे, चित बका चौहाण ।।
दीपै सलूम्बर देवगढ, बेघू नाथ विचार ।
अधपतिया आमेट का, चूडा सरणा चार ।।
भीडर दूजी बानसी, महपत सकता मौड ।
घाणेराव बदनौर गढ, राण धरा राठौड ।।
कानौड ओपै करा, सरणा सारगदेव ।
झेल पवार बीजौलिया, भणिया मालम भेव ।।

इसी प्रकार जोधपुर मे भी अनेक सस्थानाधिकारियो को 'शरणा' का अधिकार प्राप्त था और वे इस अधिकार का उपयोग खुले रूप मे करते थे। जागीरदारो के अतिरिक्त चौपासनी, महामन्दिर और उदयमदिर आदि मदिर-मठो के महन्तो तक को यह अधिकार मिला हुआ था। जोधपुर के महाराजा मानसिंह के कोप से बचने के लिए सवत् १८७७ वि मे खीची बिहारीदास खेजडला ठाकुर शार्दूलसिह भाटी की शरण मे चला गया। ठाकुर शार्दूलसिह भाटी अपने योद्धाओ सहित महाराजा मानसिंह की सेना से लड़कर मारा गया किन्तु बिहारीदास को महाराजा के सुपुर्द नही किया। शार्दूलसिह की शरणागत रक्षा की महिमा गीत में इस प्रकार उदीर्ण है—

काज सरणाया भूप सिर रा वळी, दुजड घन रावळी कठै दांई।
वाप रिव ठाभियौ घडी दोय वाजता, ताहि सुत ठाभियो पौहर ताई ॥
झडतां आग वज्राग तप झेलणा, ढाल सू प्रवळ गिरमेर ढकणा।
भाटिया जेम प्रथमाद रा भूपता, राव सरणाविया अेम रखणा ॥

सन् १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य सग्राम के राजस्थानी योद्धा ठाकुर कुशालसिंह चापावत आऊवा का अंग्रेजो एव जोधपुर की सेनाओ ने पीछा किया तब वह मारवाड का त्याग कर मेवाड के कोठारिया के रावत जोधसिंह के पास गया। जोधसिंह ने मेवाड तथा अंग्रेज सत्ता के कोप की विना पर्वाह किए ठाकुर कुशालसिंह को अपने यहाँ ससम्मान अभयदान दिया। रावत जोधसिंह के उस साहस का गीत मे सगौरव वर्णन हुआ है—

डाखिया घसल रवतेस डग डौलडा. पीथहर चौलडा अमल पीधा।
ढावता सरण वागा जगत ढौलडा, कौड जुग बौलडा अमर कीधा ॥

राजस्थानी ममाज मे वैर-शोधन को वडा महत्त्व दिया गया है, जो सतति अपने पिता, भ्राता अथवा मित्र-कुटुम्वी का प्रतिशोध लिए विना मर जाती है, वह अपयश की भागीदार समझी जाती है। शेखावाटी के महरौली के ठाकुर जोगीदास ने अपने भ्राता दलपतसिंह का वदला लेने के लिए जयपुर राज्य की सेना से युद्ध लडा था और शत्रुओ को अपार क्षति पहुँचा कर वीरगति प्राप्त की थी। एक गीत मे प्रतिशोध का स्वर स्पष्ट व्यक्त हुआ है।

मारे वैरिया अखूटी आव भूपाळां खाडियौ माण,
तेग धारे नकौ पाण छाडियौ तमाम।
वीर राव छळा जाग ताडियौ 'दलाळा' रै वैर,
राडिगारे उखेळो माडियौ जोगीराम ॥
खेडै फौजा चहुवळा फतै आसमान खाटै,
काहुळां नीधसै जागी ऊपटे क्रोधार।
केवै लाग भ्रात रै नाथ रै आगे बळाकारी,
जोध रौ घूखळा करै हमेसा जोवार ॥

जो स्वामी अपनी भूमि, प्रजा-धन और दुर्गादि रक्षा स्थानो को विना मरे शत्रुओं को सौंप देता है, वह स्वामी कहलाने का अधिकारी नही माना जाता है। उसे, समाज में सदा सर्वदा लज्जाहीन सम्बोधित कर तिरस्कृत किया जाता है और जो दुर्ग रक्षा करते हुए मारा जाता है वह प्रात स्मरणीय गिना जाता है। मानपुर दुर्ग की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त करने वाले दलपतसिंह शेखावत पर कथित गीत मे तो योद्धा

नाम उसी का सार्थक चित्रित किया गया है जो दुर्ग रक्षा के लिए अपना जीवन उत्सर्ग करता है—

मरद वोलियौ अेम खग तोल आपह मलौ,
मन अडर यसो पलौ पकडे मीच ।
कमळ धड ऊपरा थका सूपै किलौ,
भड जिका दलौ लानत कहै भीच ॥
अभग छळ राव आवेर दळ आवता,
उजाली सरव सेखावता ओघ ।
जमी न पडै अगुट कर दुरग जावता,
जोध सुत रावता न मानै जोघ ॥
प्रवाडा जीत साकौ कर मानपुर,
सघर गिरमेर दीठौ सवाही ।
निलज भुरजाळ भिळता जकौ सिर न दै,
नरा हदमाल हर वदै नाही ॥

ऐसे वीर योद्धा वैरियो द्वारा घिर जाने पर कायरो की भाँति क्रन्दन नही करते हैं और न साहस त्याग कर जीवन-रक्षा के लिए किसी प्रकार का संधि-समझौता ही करते हैं, वरन् शत्रुओ को ललकार ने के साथ साथ किले को भी अविजित रखने के लिए आश्वस्त करते हैं। ठाकुर मोहवतसिह शेखावत दूजोद के गीत मे किले का मानवीकरण करते हुए कवि ने रक्षक मोहवतसिह द्वारा कहलवाया है—

सवळ लूविया आणि दळ साहिपुर सावठा,
वळोवळ वीररस भड़ा वसियौ ।
चळ विचळ हुवै मत दुर्ग मोवत चवै,
कमळ मणि नाग जिम कमळ कसियौ ॥

और तब ऐसे वीर रणस्थली मे जूझ कर स्वामी को विजय, तलवार को मांस पिण्ड, शिव को माला के लिए अस्तक, रण चण्डी को रुधिर और वराकाक्षिणी अप्सरा को पति प्रदान कर ससार मे अपनी कीर्ति को अमरता प्रदान करते हैं। कुमार कर्णसिह शेखावत के गीत मे दो द्वालो मे पढिए—

पति असमर सकर सकति अपछर, विजय पिंड सिर रुधिर वर।
कारण पच पूगौ भड करणौ, कळह रिमागां हठ कवर ॥
स्याम सार सिव सिवा सुरगना, रिण जै अ ग घू रत भतार।
आरण सजि अरि भजि उमाहत, विलगौ पच कारण उणतार ॥

स्वधर्म का पालन करते हुए मृत्यु का आलिंगन करने वाले वीरो की मृत्यु पर शोक अथवा रुदन करने की राजस्थान मे परम्परा नही रही है। ऐसी वीर मृत्यु मागलिक कही गई है। राठौड वीर पृथ्वीराज जैतावत के रण-निधन पर उसकी पत्नि के विलाप करने पर कवि ने उसके पति के कुल-धर्म का स्पष्ट स्मरण करवाते हुए कहा है—

राणी म रोइ पीथौ रण रीधल, रिण गा छाडि जिके भड रोइ।
घण जूझै रिणमाल तणै घरि, हुवै मरण तिम मगळ होइ।।
पीथल तणौ म करि पछि ग्रछि, दिग गा तजि करि ताह दुख।
ग्रादि तै ग्रेह ग्रखा घरि ग्रागै, सार मरण घण घणौ सुख।।

वीरगीतो मे उपर्यंकित सास्कृति विशिष्टताग्रो के ग्रतिरिक्त योद्धा के ग्रातक भय, प्रताप ग्रौर प्रभाव ग्रनेक गीतो मे सवल भाषा मे ग्रभिव्यक्त हुग्रा है। ग्रामेर के कछवाहा नरेश मिर्जा राजा जयसिंह से वादशाह ग्रौरगजेव वडा भयभीत रहता था। वह उसे न दिल्ली से दूर रखने मे ग्रपनी खैर समझता था ग्रौर न पास रखने पर चैन से रह सकता था। गीतकार ने ग्रौरगजेब की द्विधाग्रस्त मन स्थिति का निम्नलिखित रूप मे तथ्यपरक वर्णन किया है—

ग्रत ग्रळगो ठाढ़ विलागै ग्रातम, ग्रत नैडे प्राजळे ग्रथाह।
ग्रौरगसाह ग्रडर ग्रावेरौ, सीत तणौ पावक जैसाह।।
दूरै ठरै ढूकडे दाझै, रूका मुख होमवा रिम।
रत हेमन्त वसन्त गत राजा, जवन जाळवै जळण जिम।।

मिर्जा राजा जयसिंह जैसा वीर था उसी के ग्रनुरूप प्रवीण राजनीतिज्ञ शासक भी था। दिल्ली के वादशाहो को वह ग्रपनी कुशल नीति एव विचक्षण वुद्धि से चौसर के खेल की गुट्टिकाग्रो की भाँति क्रीडा करवाता था—

करग खाग पासौ भरत खड चौपड करै,
दुगम खेला मिले भड दुवाहां।
देयतौ धाउ घण धाउ जैसिंघदे,
सारि जिम रमाड़ै पातसाहा।।
परठीजै जोड थाणा हिय पारके,
डाण ग्राराण कीजै इसा डाउ।
पाधरै थापि उथापिजै ग्रसपति,
रमै रामति तिका कूरमा राउ।।
ऐवहा खेल खेलै भुजा ग्रापरा,
मीर रद हुग्रा मेल्हे मछर माण।

महाजुधि मारि वीछोडिजै मेलीजै,
साफळे सौ गढा जेम सुरताण ।।
तिसौ अगजीत खेलार माहव तणौ,
हाथ वळि खळा सिरि चहोडे हारि।
ऊठवै राह वे मेछ वाजी अखिल,
जगत जेठी न्रपत जंन जुवारि ।।
प्रथी सिणगार अवतार आवेर पति,
प्रगट रण चाचरा खाग पूजी ।
दाउ ऊपर हुवौ रहै राहा दहू,
दिगविजै थकौ जगतेस दूजौ ।।

शस्त्र, योद्धा का अभिन्न साथी और युद्ध का अनिवार्य उपकरण होता है। इसलिए राजस्थान मे वन की देवी दीपमालिका की भाँति युद्ध की देवी चण्डिका तथा शक्ति के प्रतीक शस्त्रो की पूजा की जाती है। शस्त्रो मे तलवार, भाला, साग, मावल, तोप, तीर, गदा, गुर्ज, त्रिशूल, कटार और तुक्का आदि का गीतो मे वर्णन हुआ है। यहाँ तलवार पर रचित गीत के दो द्वाले देखिए—

अडर अोप आराण कुरखेत वडवा अगनि,
सक तडिल कावडा जोड साथा ।
हाथि जिका भाराथ नाराज पिसणा विहड,
हद घडी काळ उसताज हाथा ।।
कळ धमणि सेस फूका जहर कोयला,
अरड अहरणि कमठ पिठि अवियाट ।
धरणि कर दळावत जका असिमर धजर,
घण घडी जजर नोखै धाट ।।

शस्त्रो की भाँति ही योद्धा के लिए वाहनो का भी असदिग्ध महत्त्व है। वाहनो मे घोडा, हाथी, ऊँट और रथादि का गीतो मे आलेखन हुआ है। रतलाम के राजा पद्मसिह राठौड द्वारा गीतकार को प्रदत्त एक घोडे का गीत के प्रथम द्वाले मे वर्णन है—

न्रता लागिया सगीत ताळा परीसै सुभावा नचै,
खुरीसै चुभावा नाळा सुमा धुखै राव।
सकौ मोल तरीसै हजार आठ दूण साजा,
राजा इसौ नीलो तूही वरीसै हयराव ।।

युद्धप्रिय राजस्थानवासियो मे सिंह, सूअर, व्याघ्र और हाथियो की लडाई तथा उनके आखेट के प्रति वडा अनुराग रहा है। आखेट मे वन्य-जीवो की स्वच्छद

प्रकृति, क्रिया-कलाप और घात-प्रतिघात का कौतूहल वर्द्धक वर्णन गीतो मे उपलब्ध होता है। यहाँ महाराणा स्वरूपसिंह द्वारा किए गए आखेट के वर्णन के कुछ द्वालो मे सिंह का स्वरूप, गति, आकृति आदि दर्शनीय है—

बावरैल डालामथो रसा पाला वेड वाळी,
कवल्ला अखाड वाळो रेडवाळो काथ ।
हैजम्मा विरोळी केती जञ्जदूता हेडवाळो,
भद्रजात्या कपोळा भडेच -वाळो आथ ॥
भाळकी सपासी चक्खा भाळवा भजातो आयौ,
हायळा मजातो आयौ हवद्दा हडूर ।
ऊभै ओळा हूता रोस झाळका बझातो आयौ,
गिरदा गजातो आयौ नौहत्थी गडूर ॥

गजो की आखेट और परस्पर लडाइयो का गीतो में ओजस्वी वर्णन हुआ है। लडाये जाने वाले हाथियो को पहिले प्रोत्साहित कर क्रुद्धार्थ तैयार किए जाते थे। कभी कभी मदिरा पिला कर उन्मत्त भी वनाए जाते थे। फिर खुले मैदान मे उन्हे छोडे जाते थे। यह राजकीय प्रमुख मनोरजन होता था। हजारो नर-नारियो के देखते यह घातक क्रीडा प्रारम्भ की जाती थी, जिसमे कभी कभी महावतो और दर्शको तक को अपने प्राण गँवाने पडते थे। और उनमे से जब कोई एक हार जाता था तब जलती हुई अग्नि की चर्खी पैरो मे चला, भालो से घायल कर अथवा दूसरे मस्त हाथी को छोड़ कर कठिनता से वश मे किया जाता था। यह राजकीय मनोरजन बड़े उत्सव के साथ सम्पन्न होता था। उदयपुर के महाराणा भीमसिह और जयपुर के महाराजा प्रतापसिह के हाथियो की लडाई के अनेक गीत बडे प्रभावोत्पादक भाषा मे उपलब्ध होते हैं। महाराणा भीमसिह के हाथियो की लडाई एक गीत का विषय बनी है—

खूटा पराथी अनता देहा उराथी उखेडे खभ,
कपोळा भाराथी मद्दा जूटा काळकीट ।
जञ्ज दूत तणा साथी तूटा गैण वज्र जेम,
राण वाळा हाथी छूटा जूटा आकारीट ॥
रसम्मी उगन्ती वेळा सोभन्ती सिंदूरा रेख,
स्वेतदन्ती धूति चद गिरद्दा समान ।
कुदरत्ती हुवा चक्खा रत्ती झाळ पूळा क्रोध,
चीतौड पत्ती रा वागा हसत्ती चौगान ॥
हैदल्ला हमल्ला जूझ मल्ला वाज हाक,
पोगरा नवल्ला भल्ला मल्ला पाण ।

आदसल्ला दाता भीक आडीया वगल्ला ऊठै,
अडील्ला जेण वल्ला गजा मचायौ आराण ॥
अछक्का रदन्ना तन्ना वदन्ना मचक्का उठै,
मचक्का लचक्का जमी थरक्के समाम ।
हको हक्का खाडेराव चक्रवा पसाव हाथी,
सारीसा धधक्का धक्का जूटा वे संग्राम ॥

लागा डाण अद्रिगात अथागा लगरा लोह,
सेघ पै विलागा वौम आगा जेम खांत ।
गाजता पुळिन्द्र जेम सामद्र सा पुत्र गोती,
भद्रजाती नागा जोगी वागा ईसी भात ॥

चठ्ठा वैंभीत रट्टा दुकट्टा लोयणा चोळ,
उमै छटा घटा सक्र गात मे अनूप ।
लगरा रठ्ठा पै अनूठा कठ्ठा आडी लौह,
राण वाळा रूठा फील जूटा ईमै रूप ॥

धत्ता धत्ता वत्तां धत्ता मावता पूतारै धीठ
तत्था वेखि मत्ता मत्ता भिडे निराताळ ।
भेखता घुमता वे वत्था यू अखाडे वागा,
छत्रधारी भीम वाळा उमता छछाळ ॥

सिंदूरा कपोळा बीच हवोळा खळक्के श्रोण,
’ गिरदा गैंतूळा मच्चै वगूळा चौगान ।
दौवळा हीलोळा टोळा ओळा दौळा प्रथी देखै,
मचोळा गयंदा वाळा धूजै आसमान ॥

बूवावोर चरक्खी सपखी छूटा घरा धूम,
मयाणखी देख चक्खी ओछारे सुभाळ ।
कौमखी गाजिया फील चोळ चक्खी पर्व्वै काळा
आवळा घटूम मुखी वेपखी उजाळ ॥

आदीता वे घडी हूता वीता निसा जाम उमै,
मैंभीता न छंडै पांव मीता यू भयान ।
पीलवाना करै दूर लगाडे पलीता पूळा,
जीता खाटेराव दहूं वदीता जहान ॥

लागा द्रव अवारै उतारै लूण जडे लोह,
अनता मोअन्ना तन्ना सिंगारे सरूप ।
बापूकारै पूतारै आण ठाण वावा बेहूं,
गण वाळा हाथी वीज भाळ रूप ॥

इस प्रकार वीर गीतो मे वर्णन-वैविध उपलब्ध होता है। यहाँ गीतो के वर्ण्य विषय की थोडी-सी बानगी मात्र प्रस्तुत की गई है।

इस सकलन मे कुल १४१ गीतो को सम्मिलित किया गया है जो राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, राजस्थानी शोध सस्थान चौपासनी और मेरे निजी सग्रह से चुने गए हैं। कुछ गीत कु वर सवाईसिह धमोरा आकाशवाणी जयपुर और कु वर प्रतापसिह राठौड तिलाणेस द्वारा भी प्राप्त हुए हैं। अत मैं इन सस्थाओ तथा कृपालु सज्जनो का आभारी हूँ।

इस सग्रह के प्रकाशन की स्वीकृति प्रदान करने तथा सम्पादन मे महत्त्व-पूर्ण दिशा-निर्देशन करने के लिए राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के अवकाश प्राप्त निदेशक श्रद्धेय डा. फतहसिह तथा वर्त्तमान उपनिदेशक डा पुरुषोत्तमलाल मेनारिया के प्रति मैं अपना आभार व्यक्त करता हूँ। छदानुक्रमणिका तैयार करने मे कु. रघुवीरसिंह शेखावत का सहयोग मिला है।

—सौभाग्यसिह शेखावत

चौपासनी
१५ जून, १९७२

राजस्थानी-वीरगीत-संग्रह

भाग-३

१. गीत राम-रावण जुद्ध रौ सुपंखरौ

सेना ऊतरे समंदे पार पदम्मे अठारह सहस,
बहस्से निसांण किनां गाजियौ बाराण।
वेद बाण दूण लाख डडाळा लकाळ बजे,
असुरा सुरांह मांह माचियौ आराण ॥१॥
चढ़े दीठि मूठि चाप कैंमराणा गुणा चढे,
झड़ै आगि अराबा गैणाग चढ़े झाळ।
चाव चढ़े बारगा बिमाणा गिरब्बाण चढे,
क्रोध चढ़े राम राण कध चढे काळ ॥२॥
व्याळ नू जगायौ सोर विड़ूजा चलायौ वज्र,
सीघळी अधायौ कैं सुणायौ बीर साद।

---

१. गीतसार—उपर्युक्त गीत मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र और लकपति राक्षस राज रावण के युद्ध पर रचित है। गीतकार ने कथित युद्ध मे रामायण के कथानक के आधार पर यह वर्णन किया है। गीत मे लिखा है कि समुद्र की गर्जना सदृश युद्ध वाद्यो का घोष कर अठारह पदम सख्यक राम सेना ने लका पर आक्रमण किया। देव तथा दानव योद्धाओ मे युद्धारम्भ हुआ।

---

१ बहस्से—जोशीले बजते हैं। निसाण—नगाडे, निशान। किना—किंवा, अथवा। बाराण—समुद्र। दूण—द्विगुने। डडाळा—दण्डक, डडे। सुराह—देवताओ। माचियौ—छिडा, प्रारम्भ हुआ। आराण—युद्ध।

२ दीठि—दृष्टि। मूठि—मुष्टि। कैंमराणा गुणां—धनुषो पर प्रत्यचाएँ। झडै—गिरे, बरसती है। आराबा—तोपो की। गैणाग—गगन, आकाश। झाळ—ज्वाला। चाव—उत्साह, चाह। बारगा—अप्सराएँ। बिमाणा—विमानो पर। गिरब्बाण—देवता। चढे—आरूढ हुए। राण—रावण। कध चढे काळ—कधो (सिर) पर मृत्यु चढ आई, मृत्यु घूमने लगी।

३ व्याळ नू—सर्प को। सोर—बारूद। विड़ूजा—इन्द्र। सींघळी—सिंह। अधायौ—अतृप्त, भूखा। कैं—अथवा। साद—ध्वनि, नाद।

धुरजटी जटा हू अघायौ वीरभद्र आयौ,
देव दळा ऊपरा यू आयौ मेघनाद ॥३॥

कोपाणा लखण वाणा वोव राणा प्रळै काळ,
बदराणा अगदाणा रीछाणा वेवाह ।
काळ रूप राकसाणा भूखाणा बछाणा केळ,
गौतराणा तराणा मूकाणा गजगाह ॥४॥

मेदनी मचक्के सेस लचक्के उचक्के मेर,
ताम रूप हणू कूभ रचक्के रवतेस ।
बोक नू पिछक्के काळी उभक्के विभक्के वैल,
तठै मारतड रुक्के भैचक्के भूतेस ॥५॥

लडदा जुडदा रुण्ड टूटि धू गडदा लैत,
पोगरा उडदा खागा अलगा पडन्त ।
छडाळा घडाळा पार पन्नाळा रताळा छूटे,
लकपत्ती वाळा जोध स्याम रा लडन्त ॥६॥

धुरजटी जटा हू—शिव की जटा से। अघायौ—अतृप्त, भूखा। देव दळा—देवताओ के समूह पर। यू—यो, इस प्रकार।

४ कोपाणा—कोप किया, क्रोधान्वित। लखण—लक्ष्मण। वोव राणा—वायुराणा, रावण को डुवाना। बंदराणा—वानर समूह, कपिदल। रीछाणा—ऋक्षदल। वेवाह—दोनो हाथो से प्रहार करने वाले। भूखाणा—भूखे। केळ—केलि, युद्ध। गोतराणा—रावण गोत्रीय। तराणा—तरुओ। मूकाणा—मुक्त करने लगे, छोडने या प्रहार करने लगे। गजगाह—गजग्राह, युद्ध।

५ मेदनी—पृथ्वी। मचक्के—धसकने लगी। सेस—शेषनाग। लचक्के—ऊपर-नीचे धसकने का भाव, लचकना। उचक्के—ऊपर उठे, स्थान च्युत हुवे। मेर—सुमेरु गिरी। हणू कूभ—हनुमान और कुम्भकर्ण। रचक्के—जूझने लगे। रवतेस—रावत पदवी वाले, योद्धा। वोक—दोनो हाथो की अञ्जली। काळी—कालिका देवी। उभक्के—उछले, कूदे। विभक्के—चौंकता है। वैल—शिव का वाहन नदि। तठै—वहा। मारतड—सूर्य। रुक्के—रुके, ठहरे। भैचक्के—भयचक्रित, विस्मित। भूतेस—शिव।

६ लडदा—लडते हैं। जुडदा—जुटते है, भिडते हैं। धू—मस्तक। गडदा लैत—लुढकते हैं। पोगरा—शुण्डदण्ड। उडदा—उडते हैं। खागा—तलवारो। अलगा पडन्त—दूर जाकर गिरते हैं। छडाळा—भाले। घडाळा—शरीरो के, घडो के। पार—उस ओर, इधर से उधर निकल कर। पनाळा—प्रनाले, नाले। रताळा—रक्त के। जोध—योद्धा। स्याम रा—श्री रामचन्द्र के, स्वामी के।

वीस भुजा गदा छूटा त्रिसूळा करन्त बाह,
रूढ़डौ छछाळा छेडि ऊधरो हकारि ।
नेत्राळा कराळा झाळा मुखाळा बक्कतो नामी,
रीसके कोमड करा खेंचियौ मुरारि ।।७।।

पावक्का ज्वाळ मे अभ्र अनंळा सोखत पोख,
गहै मंछ जाळ नागां आछटे खगेस ।
अधकार चत निद्रा सोखना बिखाळ अबी,
जारां-अत बाण राण मारियो जगेस ।।८।।

हुवौ जै जै कार त्रहु लोक में उछाह हुवौ,
लभे देवा नरां नागा ग्रंदफा मिळाव ।
मिळे पाट बभीखण दसाकंध मोख मिळे,
आणदे हो सिया राघौ अजोधिया आव ।।९।।

—जोरावरसिंघ रौ कह्यौ

---

७ बीस भुजा—रावण की बीस भुजाएँ । गदा—गदा नामक शस्त्र । त्रिसूळा—त्रिशूल शस्त्र । वाह—प्रहार, चोट । छछाळा—हाथियो को । छेडि—आगे बढाकर । ऊधरो—ऊपर, ऊँचा । हकारि—हाककर । नेत्राळा—नेत्रो से । झाळा—ज्वाला, क्रोधाग्नि । मुखाळा—मुखो से । वक्कतो—कहता, बकता । रीस—क्रोध, कोप । कोमंड—धनुप, कमान । करा—हाथो से । मुरारि—श्री रामचन्द्र ने ।

८ पावक्का ज्वाल—अग्नि-ज्वाला । अभ्र—बादल, आकाश । अनळा—वायु, अग्नि । गहै—पकडे । नागा—सर्पो । आछटे—दूर फेंके, पछाट देकर भूमि पर पटके । खगेस—गरुड । जाराअत—जरान्तक, नाश, मृत्यु ।

९ उछाह हुवौ—उत्सव हुआ । गद्रफा—गन्धर्वो । मिळाव—मिलन । पाट—सिंहासन । दसाकध—रावण को । मोख—छुटकारा, मोक्ष । सिया राघौ—सीताराम, सीता और रामचन्द्र । अजोधिया—अयोद्धा ।

२. गीत काळी नाग नै क्रिसण रा जुद्ध रौ

सोहै वाधिया जड़ूलो सीस कड़ूलो करग्गा किया,
ऊघड़ूलो नाग रो जड़ूलो भाग आज ।
अड़ूलो आगणे ऊभो लड़ूलो सो रोस लिया,
कानूडो कड़ूलो वोलै दड़ूला के काज ।।१।।

घणी मिळै नागणी सुभागणी सुहागणी सी,
मूणी यू पूछणी आयो जायो कुणी मात ।
अैसो फुणी सुणी वाला कुणी सु जगाणी आवै,
तत्र मत्र हणी जको अते तणी घात ।।२।।

वोलियो आणद कंद नद रो (हू) कहाऊ वेटो,
चराऊ मुकद धेन जसोदा रो चद ।
मोरी देवी गेद काये जगावौ नागेन्द्र माटी,
छोडो फद रदगारी नारिया रा फद ।।३।।

---

२. **गीतसार**– इस गीत मे भक्तकवि ने श्रीकृष्णचन्द्र की नाग दमण लीला का वर्णन किया है। वालक कृष्ण कालीदह मे अपनी कन्दुक के लिए प्रवेश करता है और नाग को गेंद का चोर मान कर उससे युद्ध कर नाथ डाल लेता है। लिखा है कि वह शीश पर जटाओ को वाँधे एव हाथो मे कर-भूषण धारण किए शोभित हो रहा था और नाग के वहा आगन मे रोष धारण कर गेंद के लिए कटु वाणी वोलने लगा।

---

१ सोहै–शोभित होता है। वाधिया–वाँधे हुए। जड़ूलो–केशो को, वालको के सिर के केशो को वाधकर रखते है उसे जड़ूला कहते हैं। कड़ूलो–कडे, हाथो मे पहनने के कडे जो स्वर्ण अथवा चादी के होते हैं। करग्गा–हाथो में। ऊघड़ूलो–उघडना, खुलना, प्रकट होना। अड़ूलो–हठीला। ऊभो–खडा। लड़ूलो सो–लडने वाला-सा। कानूडो–कन्हैया, श्री कृष्ण। कड़ूलो–कठोर, कटु। दड़ूला–वडी गेंद।

२ घणी–वहुत। नागणी–नागिनें। सुहागणी–सधवाएँ, सौभाग्यवती। मूणी–कही, कहने का भाव। जायो–उत्पन्न किया। कुणी–किस। अैसो–ऐसा। फुणी–फनधारी, सर्प। जको–वह, जो। अतेतणी–मृत्यु की।

३ कहाऊ–कहलाता हूँ। चराऊ–चराता हूँ। धेन–गायें। मोरी–मेरी। काये–किसलिए। माटी–वलवान, पुरुष को। फद–फदे, छल-चतुराई की वातें। रदगारी–छल-वहाने, लडाई-वखेडे का।

हसै सारी नाग नारी उचारी विहारी हूत,
सवारी पधारी बळे लेतो आजे सूक ।
कठै थारी वेस असी जुद्धकारी वाता करै,
फूणाधारी दीठौ न छै आगकारी फूक ।।४।।

माटी रीस काटी असी आटी आटी वाता मेळो,
भडा सू उझाटी तेग बाटी न छै भीड ।
पेस करा घाटी जद्या फाटसी फुणा री फाटी,
पीड-सी खाटी चाटी पाटी तणी पीड ।।५।।

नागणी रहायौ नाद बादियौ अघाये बाद,
ताअ्रे वाता भूलायौ लखायौ ताग ।
पायौ अमी आप रा बजायौ असो राग प्रभु,
कानूडे जगायौ असो नौळी आयौ नाग ।।६।।

राळतौ कराळ झाळ फूणा वाळा फूकारडा,
चाळा लागो ठाळा करै बावै असी चोट ।
लळवळा जीहा घणी गलाफा गुजाफा लाळा,
परनाळा पडै जठी हळाहळा पोट ।।७।।

---

४ सारी—समस्त, समग्र । उचारी—बोली, कहने लगी । विहारी हूत—श्री कृष्ण से । वळे—पुन , फिर । सूक—रिश्वत । कठै—कहाँ । थारी—तेरी, तुम्हारी । वेस—आयु, वयस्य । असी— ऐसी । दीठौ न छै—देखा नही है । आगकारी—ज्वालामयी । फूक—फूत्कार ।

५ माटी—जोरावरी की । रीस—रोष, क्रोध । आटी आटी—वैर विरोध की, बाकी टेढी चुभने वाली । वाता मेळो—मनमानी बातें मिलाना, मिथ्या बातें कहना । भडा सू—योद्धाओ से । ऊझाटी—चोट, प्रहार । भीड—सहायता । घाटी—कठ, गले का जोड । जद्या—जब । फाटी—फटने, अलग अलग होने का स्थान । पीड-सी—पीडा देगी ।

६ अघाये—धापकर, तृप्त होकर । वाद—विवाद । ताअ्रे—तव, तप्त, तेजी की । लखायौ—जान पडा, समझ मे आया । ताग—असो—ऐसा । कानूडे—श्री कृष्ण ने । जगायौ—जगाया, जाग्रत किया । नौळी आयौ—कचुकी आया हुआ ।

७ राळतौ—गिराता हुआ । कराळ झाळ—कराल ज्वाला । फूकारडा—फूत्कारें । चाळा लागो—कौतूहल लगकर । ठाळा—ठिठोली । बावै—प्रहार करे, चलाता है । असी—ऐसी । लळवळा जीहा—जिह्वा को बार-बार भीतर बाहर निकालने की क्रिया । गलाफा—मुह का जबडो का भाग । लाळा—मुख से गिरने वाला रस, लार । जठी—जहाँ । हळाहळा—हलाहल, विष । पोट—पोटली ।

करै यू रपट्टां रट्टा झपट्टा कपटा कीधा,
छूटा पट्टा चहुँवट्टा फिरतो छछाल ।
दाव ले उलटा दळतो दपट्टां दढ्ढा,
कट्टा कट्टा कूटा करै काळी विकराळ ।।८।।

करादी मूकियां झींक फेरियो कवादी कूंडै,
नादी नामजादी गायो वांसळी रो नाद ।
मादी नागजादी जीयो महाजोगी मंत्रवादी,
अनादी जुगादी आदी वादी खेले वाद ।।९।।

लागै नहीं फूक झाळ लपेडा थपेडा लागै,
नेडा नेडा फूणा घणा ऊपडे नत्रीठ ।
राजवी अहेडा जांण वडां डढां रीस रत्तो,
रमन्तो उरेडा दियै केडा आयौ रीठ ।।१०।।

लडन्तो कळाप करै लाप-लोप हुवौ लोहां,
आप नाग थाको फुणा वाहतौ अमाप ।

---

८ रपट्टा—रपट्टें । रट्टां—टक्करें, भिडन्तें । झपट्टा—झपटने की क्रिया । छूटां पट्टा—खुले रूप में, मद वहते खुले केश जो क्रोध मे खडे हो जाते हैं । चहुवट्टा—चारो ओर । फिरतो—घूमता, चक्कर काटता । छछाळ—हाथी, उन्मत्त । दाव ले—दाव पेंच से, अवसर लेता है । दपट्टा—दपट कर, दौड कर । दढ्ढा—दाढें । कट्टा-कट्टा—दांतो की आवाज । कूटा—दांत विशेष, दाढें तथा आगे के दांतो के मध्य के चार दांतो को कूटा कहते हैं ।

९ करादी—हाथो की । मूकिया—मूठियो की । झीक—चोटें । कूडे—कुण्डल, घेरे मे । नादी—नाद करने वाला, श्रीकृष्ण । वासळी—वांसुरी, मुरली । नागजादी—नागकन्या । जोयो—देखा । अनादी—अनादि । जुगादी—आदि, युगादि । आदी—आदिकालीन ।

१० फूक—फूत्कार । लपेडा थपेडा—थप्पडे, दोनो गालो पर थप्पडे । नेडा नेडा—पास पास, समीप । ऊपडे—थप्पड के चिह्न प्रकट होने को उपडना कहते हैं । नत्रीठ—चोट के निशान, प्रहार, वेग पूर्वक । डढा—दंष्ट्राएँ । रीस रत्तो—रोषान्वित, क्रोध मे लाल हुआ । उरेडा—लपेटा, वलपूर्वक टक्कर । केडा आयौ—पीछे पडा हुआ । रीठ—प्रहार, चोट ।

११ कळाप—क्रन्दन । लाप—लोप । हुवौ लोहा—लोहू लुहान हुआ, रक्त रञ्जित । थाको—थकित । फुणा वाहतौ—फनों की चोटें मारता हुआ । अमाप—अपार, अनाप-शनाप ।

स्याम थाप बाहै जका ऊघडे जो छाप जैसी,
साप री ऊतरे त्रिहूँ ताप रो सताप ।।११।।

नाथियो पोग्रेणनाळो बंनमाळो चढै नांचै,
ताळी ताळी न्रत वाळी होवतो त्रबक ।
उघाडी बडाळी छाप कदम्मा चहन्नावाळी,
ग्रैसा काळी कपाळी कोराळी मडे ग्रंक ।।१२।।

बरक्खै ग्रंनंत फूल हरक्खै नारद ब्रह्म,
निरक्खै झरोखा झाके व्रजवाळी नार ।
ग्राणद जसोदा नद धनौ धनौ जीत ग्रक्खै,
न लक्खै ग्रलख माया महिम्मा निहार ।।१३।।

रीझिया नागणी हूँतां नागेदा दियंदा रीझै,
नमौ नद नंदा नमै नागदा री नार ।
छबीला दुडंदा चंदा तोझंदा न जाणू छदा,
मत्ता सारू दीनबंधा मुणदा मुरार ।।१४।।

मुरारीदास बारहठ रौ कह्यो

स्याम—श्री कृष्ण । थाप—थप्पड, खुले हाथ की चोट । वाहै—देकर, प्रहार कर । जका—जो । ऊघडे—उद्घाटित, चिह्न प्रकट होना । ऊतरे—उतरे, प्रभावहीन हुए । त्रिहूँ ताप रो—तीनो ताप का, त्रिताप ।

१२ नाथियो—नाक मे छेद कर रस्सी डालने को नाथना कहा जाता है । पोग्रेणनाळो—कमलनाल, सर्प । न्रत—नृत्य । त्रबक—तिरछा, टेढा । ऊघाडी—उद्घाटित की । कदम्मा—कदमो, पैरो के । चहन्नावाळी—चिह्नो की । कपाळी—मस्तक । कोराळी—रेखाग्रो वाली । मडे—मडित । ग्रक—ग्रक्षर ।

१३ बरक्खै—बरसे, वर्षा हुई । ग्रनत—ग्रपार, ग्राकाश । हरक्खै—हर्षित हुए । निरक्खै—देखने लगी, देखती है । झरोखा—गवाक्षो से । झाँके—झाक कर, देख कर । व्रज वाळी—व्रज-निवासिनी । धनौ धनौ—धन्य धन्य । जीत—विजय । ग्रक्खै—कहती, कहती है । न लक्खै—नही जान पाती है । ग्रलख माया—ग्रलक्ष की लीला ।

१४ रीझिया—प्रसन्न हुग्रा । हूँता—से । नद नदा—नन्द के मेहर पुत्र श्री कृष्णचन्द्र । नागदा री—नाग की । दुडदा—सूर्य, रवि । तोझदा—तेरे, तुम्हारे । छदा—कौतुक, क्रीडा । मत्ता सारू—बुद्धि के ग्रनुसार । भणदा—कहता है, वर्णन करता है । मुरार—गीत रचयिता कवि मुरारिदास ।

३ गीत क्रिस्ण नैं सिसपाल रा जुद्ध रौ

वर किसन रुकमणी ले वळे, सिसपाल सुरनर सभळे ।
सजि सिलह आवध कोप करि, नीसाण गाज निहग ।।
धर रोस असि पाइ धडहडे, असिमान रज चढि ऊपडे
डवर गैमर फररि धज डमरि, पसरि हैमर पसरि पाखरि
दररि पोगरि मछरि दुछरि अवरि धारि तरि थररि कायरि
अणरि हरि वरि सुरा औसरि, आग झरिहरि सोर ऊभरि
सार भरि मरि मारि समहरि, खरग वगतरि झररि खजरि
फाट फरि उर पारि फीफरि वजरि असमरि विहर वाखरि
कुवरि नरि कटि कचर कोपरि चार चरि धरि ढचरि पळचरि
जोध जुट थट जग ।

---

३ गीतसार—उपर्युक्त गीत राजा शिशुपाल और यदुपति श्री कृष्ण के रुक्मिणी-हरण के अवसर पर लडे गए युद्ध पर रचित है । गीत मे लिखा है कि रुक्मिणी के साथ बलपूर्वक विवाह करने के लिए श्रीकृष्ण और शिशुपाल शस्त्र सज्जित होकर ससैन्य आए । उनकी सेनाओ के प्रयाण मे धूलिराशि ऊपर चढकर आकाश धूमिल हो गया ।

---

१ वळे—बलपूर्वक, फिर । सभळे—सुना, सम्भलना । सिलह—सन्नाह, जिहरवस्तर । आवध—आयुध, शस्त्र । नीसाण—वाद्य यत्रादि । निहग—आकाश । रोस—रोष, क्रोध । असि पाइ—अश्वो की पदचापो से । रज—धूलि समूह । ऊपडे—उमडकर, उडकर । डवर—सेना, घटा । गैमर—हाथी, गज । धज—ध्वजाएँ, पताकाएँ । हैमर—घोडे । पाखरि—घोडो के कवचादि । मछरि—मत्सरता । दुछरि—वीर, तलवार । थररि—काँपकर । औसरि—अवसर । सोर—बारूद । ऊभरि—उभर कर, वधक कर । समहरि—समर, युद्ध । खरग—टकराकर । वगतरि—बख्तर, कवच । खजरि—खजर, तलवार । फाट—विदीर्ण । फरि—फरें । उर—हृदय, कलेजे । फीफरि—फेंफडे । वजरि—वज्र । असमरि—तलवार । विहर—चीरकर । वाखरि—समूह, काँख का भाग । कोपरि—कोहनी । ढचरि—प्रेतनी, डायन । पळचरी—गृद्‌लादि, आमिषभक्षी पक्षी । जुट—भिडकर । थट—समूह, सेना । जग—युद्ध ।

जुरासध सिसपाल जोरै, किसन बळिभद लोह कोरै
जोध जुध जमराण जूटा, सुर सकति ससार
गैणाग गोळा बाण गाजै, बीर हका डाक बाजै
हसति हळवळ चचळ हूँकळ भळळ सावळ
सिलह भळहळ कळळ हुबि दळ बीर कळियळ
चाळ चळदळ मडे चळचळ लळक मेंगळ
झाळ लळवळ सकळ कायर तळक सळवळ
बळक बीजळ धार वळवळ हुरळ हाथळ
प्रवळ वैहळ तडळ कमळ जुवळ टळटळ
छोळ जळकळ छीछ ऊछळ खळकि चळुग्रळ
खाळ खळहळ प्रघळ पळचर समर गळ पळ
पडै खळ अपार ॥२॥

---

२ जुरासध—जरासध । बळिभद—वलभद्र, बलराम । जोध—योद्धा । जमराण—यमराज । जूटा—भिडे, युद्ध करने लगे । गैणाग—आकाश । बाण—तोपें, तीर । हका—हाक, ऊँची आवाज । डाक—ढाक नामक वाद्य । बाजै—बज कर । हसति—हस्ति, हाथी । हळचळ—हलचल । चचळ—घोडे । हूँकळ—हिनहिनाहट । भळळ—चमचमाहट । सावळ—बर्छे, भाले । सिलह—सन्नाह, कवचादि । भळहळ—चमक कर । कळळ—कौलाहल । हुबि—प्रहार । कळियळ—कलरव ध्वनिनाद । लळक—झुक कर । मैंगळ—हाथी । लळवळ—झुकना और ऊपर उठना । तळक—शीघ्रता से भगना । सळवळ—रेंगते हुए चलना । बळक—कौंधती, चमकती, बल खाती । बीजळ—तलवार । वळवळ—वारम्बार, पुन पुन । हुरळ—फुरतीला प्रहार । हाथळ—पञ्जा, खुला हाथ । तडळ—टुकडे, सहार । कमळ—मस्तक । जुवळ—पैर । छोळ—तरग, लहर । जळकळ—फव्वारे । छीछ—छीछडे, मास अथवा जमे हुए रक्त के टुकडे । ऊछळ—उछल कर । खळकि चळुग्रळ—वहकर रुधिर, लोहू प्रवाह । खाळ—नाले, पहाडी, घाटियो की दरारें । खळहळ—खलखल ध्वनि । प्रघळ—अधिक मात्रा मे । पळचर—गृद्धादि आमिषचारी । समर—युद्ध । गळपळ—मास के पिण्ड, मास और मज्जा । खळ—शत्रु ।

व्रजनाथ लिखमी सग वणै, आरांण वाणां ऊफणैं
डिगपाल अहिफण डोलिया, प्रथमादि कूरम पीठ
जादम डाहळ जोरवर वाजिया खागे वीरवर
गडड गज घडि त्रम्बक गडगड घड आतस अनड वड धड़
तिजड ओभड़ तीर तडड खाग झड़ झड ढाल खड खड
विरड ऊरड़ मुरड़ वड़ वड हूर हुड हुड रभ हुड हुड़
वीजड़ ओभड कध वड वड़ दडड़ रतपड मुड दड दड़
फडड घाव भड तडळ तडफड थाट वडि चढि सोहड लडथडि
करड़ि वरगड़ि मुरड़ि कुटकड़ि ऊकरड़ि भड़ि ढिगडि अतडि
रूक झड़ पड़ि रीठ ॥३॥

---

३ लिखमी–लक्ष्मी, रुक्मिणी। आराण–युद्ध। वाणा–तीर, तोपें। डिगपाल–दिग्पाल। अहिफण–शेषनाग का फन। कूरम–कच्छप की। जादम–यादव वंशीय श्री कृष्ण। डाहळ–डाहल वंशीय शिशुपाल। वाजिया–लडे। खागे–खड्गो से। गजघडि–गजघंट, गजसेना। त्रम्बक–ताम्बा के पेंदे के नक्कारे। गड गड–नक्कारों के वजने की ध्वनि। आतस–तोपें, अग्नि। अनड–पहाड, स्वतंत्रता प्रिय योद्धा। वडधड–वडधडाने की आवाज। तिजड–तलवार। ओभड–प्रवल प्रहार। कध–कधे। वडवड–कटते अथवा टूटते समय होने वाली ध्वनि। दडड–अत्यधिक परिमाण मे तरल पदार्थ के गिरने पर उत्पन्न ध्वनि। रत–रक्त, लोहू। मुड–कटे हुए मस्तक। दडदड–भारी वस्तु के अनवरत गिरने की ध्वनि। तडळ–मस्तक, टुकडे। तडफड–तडफडाहट। थाट–समूह। सोहड–सुभट, योद्धा। लडथड–लडखडा कर। करडि–कड कड की ध्वनि। वरगडि–टुकडे। कुटकडि–छोटे छोटे टुकडे। ऊकरडि–वलपूर्वक वेंस कर। भडि–योद्धा, भिड कर। ढिगडी–ढेर, राशि। अतडि–आंतें, आत्र। रूक–तलवार। झडपडि–झपट, प्रहार। रीठ–युद्ध, प्रचंड प्रहार।

भिड रुकम डाहळ बिन्है भजे, गाढ गह सिंध जुरा गजै ।
पार बिण जूझार पाड़ै, लड़े कमळा लीध ।।
हरि ब्रह्म सुर नर हरखिया, देवाधि छळ बळ दक्खिया
दबटि हैथटि प्रघटि दुदटि ऊकटे कटि कूट ग्रावटि
सुजड सटि सटि बहै सामटि धुबटि धाबटि सुभटि घटि घटि
चपटि झापटि लपटि गहचटि लुटति लोटति जुटति लटि लुटि
निपट ऊलटि पलटि जिम नटि त्रिगुटि माछटि जुवटि जळ तटि
गरट अवियट अघट गाहट, ग्रीधटि मांसटि गिळै गटि गटि
कवि जगै जस कीध ।।४।।

—जगा खिड़िया रौ कह्यो

---

४. रुकम—रुक्मि । डाहळ—डाहल वशोत्पन्न शिशुपाल । विन्है—दोनों । गाढ गह—दृढता धारण कर । सिंघजुरा—जरासिंध । गजै—मार डाला । पार विण—अपरिमित । जूझार—योद्धा । पाडै—गिराये । कमळा—लक्ष्मी, रुक्मिणी । हरखिया—हर्षित हुए । छळवळ—दांव पेंच, युद्ध और बल । दक्खिया—देखा, प्रशसा की, कहा । दबटि—आक्रमण कर । हैथटि—अश्व सेना । प्रघटि—प्रगट । दुदटि—द्वन्द्व युद्ध । ऊकटे—आगे बढ कर । कूट आवटि—सहार, नाश । सुजड—कटार, तलवार । सटि सटि—बिलकुल निकट से, अग से अग भिडा कर । वहै—चले । धुबटि—प्रहार, क्रोध मे आकर । धाबटि—चोट, प्रहार देकर । चपटि—चपत, तमाचा । झापटि—थप्पड । गहचटि—केश पकड कर पछाडना । जुटति—जुटकर, भिडकर । नटि—नट । त्रिगुटि—तीन ओर से समूह मे । माछटि—मछली । जळतटि—जल के किनारे, समुद्र तट । गरट—समूह, सेना । अवियट—युद्ध, योद्धा । गाहट—सहार कर । ग्रीधटि—गृद्धिनी । मासटि—मास । गिळै—निगलती है । जस कीध—यश वर्णन किया ।

४ गीत राजा मानसिंघ कछवाहा आमेर रौ

पिडि साझि पठाण परसि पुरिसोतम, पौरिसि भगति वधारी अपार।
मान निचत कियौ अकवर मन, कियौ क्रतारथ हिंदूकार ।।१।।
सत्र साझै पतसाह सतोखै, सुपह भेटि असरण सरण।
वस खटतीस तणा कछवाहे, मेटिया दुख जामण मरण ।।२।।
अरि साझै हरि पखा आवे, जोध विधा अकवर छळ जाण।
विहू चौतीस कुळा क्रम वधण, भागा भाण-हरै कुळ भाण ।।३।।
भगवत सुतण हुऔ त्रहूँ भुवणे, घण दीहां लग नाम घणौ।
व्रहमा विसन महेस वदीतौ, तप तुगिम जस तूझ तणौ ।।४।।

—गोपाल मीसण रौ कह्यौ

---

४ गीतसार—उपर्युक्त गीत आमेर के कछवाहा शासक मानसिंह प्रथम पर रचित है। गीत मे मानसिंह द्वारा युद्ध मे शाही विद्रोही पठानो को विजित करने तथा शरण मे आए हुओ को अभय प्रदान करने का वर्णन किया गया है। लिखा है कि शत्रुओ का दमन कर मानसिंह ने वादशाह अकवर को चिंताविहीन तथा हिन्दू समाज को कृतार्थ किया।

---

१ पिडि साझि—युद्ध मे मार कर। पठाण—पठानो को। परसि—स्पर्श कर। पौरिसि—पौरुष। भगति—भक्ति, भोजन। ववारी—वढा कर। मान—राजा मानसिंह ने। निचंत—निश्चिन्त। क्रतारथ—कृतार्थ। हिंदूकार—हिन्दूत्व को।

२ सत्र—वैरी। साझै—नाश किया। सतोखै—सन्तोप दिलाया, सतुष्ट किया। सुपह—राजा, योद्धा। खटतीस—छत्तीस। तणा—का। जामण मरण—जन्म मृत्यु के।

३ अरि—शत्रु। जोव विधा—योद्धाओ की विद्या, युद्ध विद्या। छळ—युद्ध, लिए। विहूँ चौतीस—छत्तीस। कुळा—राजवँशो के। क्रम वधण—कर्मो के वधन। भागा—विनष्ट किए। भाण (भार) हरै—भारमल्ल का पौत्र। कुळ भाण—कुल रवि।

४ भगवत सुतण—भगवतदास का पुत्र राजा मानसिंह। त्रहूँ भुवणे—तीनो लोको मे। घण दीहा लग—अनन्त काल तक। घणौ—अधिक। वदीतौ—कहा गया, चर्चा का विपय वना। तुगिम—पृथ्वी, ससार। जस—यश। तूझ तणौ—तुम का, तुम्हारा।

५ गीत राजा मानसिंघ कछवाहा आमेर रौ

मान रै डरे असमान पग मेल्हिया, अवर सूझै नह तेथ बाकी ।
विकट धर ऊपरै विहसि बीडो लियौ, वळे समदर नखै लियै बाकी ।।१।।

रोहितास दखिणाद कापे असुर, दुसर का चाढीया कापिया देस ।
महोदध झळमल्या तका माहे रतन, पहल नग ऊवरचा तके करू पेस ।।२।।

बळ करै भोमिया तका नू बाधिल्यू, पहल री हद परै मारि पैल्यू ।
समद री अरदास राजा सुणो, तौ मे खरच ह्वै तितौ मेल्हू ।।३।।

सिला तारे समद कसू बळ सायरा, नाग नेतो करे नगन काळे ।
चोल रतन काढिया चत्रभुज, पहल रा गुसा मानसिंघ पाळे ।।४।।

---

५ गीतसार—उपर्युक्त गीत राजा मानसिंह कछवाहा आमेर की युद्ध विजयो से सम्बन्धित है । कवि कहता है कि मानसिंह ने जल और स्थल पर सर्वत्र शत्रुओ का उन्मूलन कर दिया । शत्रुओ के छिपने के लिए केवल आकाश ही ऐसा स्थान बाकी रहा है जहाँ वे शरण लेकर जीवित रह सकते हैं ।

---

१ मान रै डरे—राजा मानसिंह के भय से । पग—पैर । मेल्हिया—धरे । अवर—अन्य, अपर । सूझै नह—दिखते नही । तेथ—तहाँ, वहाँ । विहसि— जोश मे उबल कर । बीडो—पान का बीडा । वळे—फिर । नखै—पास, निकट ।

२ रोहितास—रोहिताश्व दुर्ग । कापे असुर—मुसलमान कापते हैं । दुसर का—दूसरे । कापिया—खण्ड खण्ड किए । महोदध—महासागर । झळमल्या—मथा, चमकदमक । तका माहे—तिन मे, जिन मे । नग—रत्न । ऊवरचा—बचे । तके—वे । पेश—भेंट, हाजिर ।

३ बळ करै—ताकत का गर्व करें । भोमिया—भूस्वामी । तका नू—उन को । बाधि ल्यू—बन्दी बना लू । पहल री—पहिले की । हद—सीमा से । परै—उस ओर दूर । पैल्यू—प्रभाव मे न आऊ,धकेल दू । अरदास—निवेदन । तितौ—उतना । मेल्हूँ—सेवा मे भेज दू ।

ए सिला—शिला, पत्थर खण्ड । तारे—तैराए । बळ—ताकत । सायरा—समुद्रो । नाग नेतो—सर्प की मथन रज्जु । नगन—नग्न । काळे—वीर, श्यामल । चोळ—लाल । काढिया—निकाले । चत्रभुज—भगवान् चतुर्भुज, रामचन्द्र । गुसा—गुस्सा । पाळे—पालन करता है, निभाता है ।

६ गीत राजा माधोसिंघ कछवाहा अजबगढ़ भानगढ़ रौ

मुहै अणियां वुपरै नाकतो मधकर, भव चै मन आतरौ भयौ ।
सहली दिली हुई अणसकती, गहली रौ बेव्हडौ गयौ ।।१।।

जिण रै बळे उतराद जीपतौ, हवकै नाह पुजवी हमस ।
वाल्ही वुसत खूम चौ वड पोहौ, काली रौ डिगियौ कळस ।।२।।

देतौ बाह दुबाह दळा वुत, रिमा राह अणथाह रण ।
चगथा वड आसगणि चहुँ दसि, वड अभली रा कुम्भ वण ।।३।।

बावळी तणा वडा ज्यू वरतै, काया जतन न कीतौ काज ।
दिली भीच वोरसो दूजौ, राखण-हार न घडियौ राज ।।४।।

---

३ **गीतसार**—ऊपरिलिखित गीत राजा माधवसिंह कछवाहा की युद्ध वीरता से सम्वद्ध है । गीत मे लिखा है कि माधवसिंह विपक्षी सेना की अग्रिम पक्ति पर आक्रमण करता था । किन्तु वह पगली के सिर पर धारण किए घट की तरह अपने शरीर को क्षणभगुर समझने वाला मारा गया । अत दिल्ली वलहीन हो गई ।

---

१ मुहैं—मुह के आगे । अणिया—सेना, हरावल पक्ति । वुपरैं—ऊपर । नाकतो—डालता, धकेलता, हमला करता । मधकर—माधवसिंह । आतरौ—अन्तर, दूरी, फर्क । भयौ—हुआ । अणसकती—अशक्त, निर्वल । गहली—पगली । बैव्हडो—द्विघट । गयौ—गया, मर गया ।

२ जिणरैं—जिसके । वळे—वल पर, ताकत से । उतराद—उत्तर दिशा के देश । जीपतौ—विजित करता था । हवकै—अवकी वार । हमस—भीड-भाड । वाल्ही—प्रिय । वुसत—वस्तु । खूम चौ—वादशाह को । पोहौ—राजा, योद्धा । काली—पगली का । कळस—घट ।

३ देतौ वाह—प्रहार करता । दुवाह—दोनो हाथो से । दळावुत—दलपत अथवा दला का पुत्र, किन्तु माधवसिंह दला का पुत्र नही था, उसके पिता का नाम राजा भगवन्तदास था । रिमाराह—शत्रुओ । अणथाह—अथाह, अपार । चगथा—मुसलमानो । आसगणि—साहसी । अभळी—पगली । कुभ—घट, घडा ।

४ बावळी—पगली, चित्तभ्रम । तणा—का । वरतै—वरतने वाला, व्यवहार अथवा काम मे लेने वाला । काया—शरीर का । भीच—योद्धा । वोर सो दूजो—ऐसा अन्य, इस जैसा दूसरा । घडियौ—वनाया, निर्माण किया ।

७ गीत राजा जगनाथ कछवाहा रौ

समंद उलटो देख जगनाथ साहृण समद,
लोह पामै नको पार लडियो।
ढीलो करि राण तिण दीह ढीलाणपुर,
चालि असमाण गिरि सिखरि चडियो ।।१।।
आवटीजे फौज जळाबौळ आबेरवो,
नर महण ऊलटे ताघ नाही।
पतौ चढियो अनड तेण विढवा पेखो,
माड पग विढे तो वूढै माही ।।२।।
भाण रै वड मण्डळि सरिस विसमे भिडण,
घट सुभट आवटै तरग घाये।
औहटै तेण मेवाड वै आप रौ,
जीव उवारीयौ अळग जाये ।।३।।
ऊधरण - हरे वेळा हरण आठ मे,
कियौ छिळीये सुतो जग कहियौ।
लोह मे लहरि पैठा सु बोढे लिया,
राण गिरवर चढे नीठ रहियौ ।।४।।

—देवीदास गाडण रौ कह्यो

---

७ गीतसार—उपर्युक्त गीत राजा जगन्नाथ कछवाहा पर रचित है। राजा जगन्नाथ ने विशाल मुगल सेना सहित महाराणा प्रतापसिंह मेवाड पर आक्रमण किया था। महाराणा प्रतापसिंह उस आक्रमण के सामने रणस्थल मे नही ठहर सका। वह अपना स्थल भागीय निवास त्याग कर पार्वत्य भाग मे ऊपर जा चढा। गीत मे गीतनायक का आतक प्रकट किया गया है।

---

१ समंद—समुद्र। साहण समद—अश्व सेना रूपी समुद्र। लोह—शस्त्र-अस्त्र। पामै—प्राप्त करे। नको—कोई नही। ढीलो—निर्बल,शिथिल। तिण दीह—उस दिन। चालि—चलकर, भाग कर। असमाण—आकाश, ऊपर, असम्मानित होकर। चडियो—चढ गया, जा चढा।

२ आवटीजे—उबलने का भाव। जळाबौळ—विकट, क्रोधपूर्ण। आबेरवो—आमेर वाला, राजा जगन्नाथ कछवाहा। नर महण—नर-समुद्र। ऊलटे—उमड आने पर। ताघ—थाह। पतौ—महाराणा प्रतापसिंह। अनड—पहाड पर। विढवा—युद्ध करने। पेखो—देखो। माड पग—पग रोप कर, सामने डट कर। विढे—युद्ध करे। वूढै—डूब जाय।

३ भाण रै—भारमल्ल का। वड मण्डळि—बडा राजा। भिडण—लडने के लिए। घट—सेना, शरीर। सुभट—योद्धा। आवटै—उवाल आना, जोश चढ़ना। औहटै—हटकर, छिपकर। उवारियौ—बचाया।

४ ऊधरण हरे—राजा उद्धरण का वशज। वेळाहरण—समुद्र। छिलिये—युद्ध। बोढे लिया—काट दिए, मारे गए। नीठ—कठिनता से। रहियौ—जीवित बच रहा।

८ गीत गोयंददास माधाणी कछवाहा रौ

गजगाहा खडग ताहरौ गोयंद, खळ दखणाद कहर करि खीज।
वळती लाय कै व्यळती बामळ, वहती नदी कै ढहती बीज ।।१।।

सत्र आदेस कह रण सग्रम, सुजड ताहरौ खेम सुजाव।
भूमि धाडि कै मगळ भाळा, सीळता सोक कै तडित सळाव ।।२।।

रूक स तुझ नमौ आखै रिमि, चढि मुहे भोहै तके जुवै।
ग्रसण पडै काय आगि ऊछळै, व्है गरकाब वेटूक हुवै ।।३।।

---

८ **गीतसार**—उपरांकित गीत राजा माधवसिंह कछवाहा के वशज गोयददास कछवाहा पर कथित है। गीत मे गीतनायक के दक्षिण प्रान्त मे युद्ध लड कर धराशायी होने का वर्णन है। लिखा है कि हे गोयददास! युद्ध मे तेरी खड्ग प्रज्ज्वलित अग्नि, वेग से वहती नदी, आकाश से टूट कर पडती विजली अथवा गोले वरसाती तोप के तुल्य शत्रुओ पर गिरती है।

---

१ गजगाहा—युद्धो मे। खडग—तलवार। ताहरौ—तेरा, तुम्हारा। खळ—वैरी। दखणाद—दक्षिण प्रदेश वाले। कहर—विपत्ति। करि खीज—रोष कर, नाराज होकर। वळती लाय—अग्नि ज्वाळमाळा। व्यळती—धधकती। बामळ—भूवळ, अग्नि। वहती—प्रवाहित। ढहती—गिरती। बीज—विद्युत।

२ सत्र—शत्रु। कहरण—क्षय करती, विपत्ति। सग्रम—ग्रामो को, युद्ध। सुजड—तलवार। खेम सुजाव—खेमकर्ण तनय,गोयददास। भूमी—आक्रमण करते समय की आकृति। धाडि—लूट मार करती सेना, डाकू दल। मगळ भाळा—अग्नि की लपटे। सलिता—सरिता, नदी। सोक—वहते समय नाद करती। तडितसळाव—विजली की चमक, कौंधती विद्युत।

३ रूक—तलवार। आखै—कहते है, सराहना करते है। रिम—वैरी। मुहे—मुख के आगे, सामने। जुवै—पृथक, अलग। ग्रसण—गोले, वज्र। काय—अथवा। आगि—अग्नि। ऊछळै—उछलती है। गरकाव—तरावोर। वेटूक—दो टुकडे, द्विखण्ड।

९ गीत कमा माधाणी कछवाहा रा आतंक री

करां जोडि बैरीहरां तणी नारी कहै, लाख वाता वचन मानि लीजे ।
चमकि भाला भड़ा मेळिया चकारी, कमा रा धका री जतन कीजे ॥१॥

अवाट्यं घोख करनाळिया अहाका, तिकण रा रूक री झाळ ताती ।
जरद कसिया भड़ा फिरै अस जाकिये, छाकिये तणी मत चढौ छाती ॥२॥

सावळां खिवणि आगा खळकि सावता, चहूं तरफ साकुरा घसळ चावौ ।
जोध री निडर हुळसेट पाड़े जिका, खबर राखै रखे फेट खावो ॥३॥

सार री भवर मोहकम निडर तिण सूं, खसणि करि काय रे जीव खोवै ।
अेम मनि जाणिजै पीया चढ़ि उराणे, सिराणे बाह दे बळे सोवै ॥४॥

---

९. गीतसार—उपर्युक्त गीत माधवसिहोत राजावत कछवाहा कर्मसिह पर कथित है । गीत मे कवि ने शत्रुओ की पत्नियो के मुख से गीतनायक के आतक को प्रकट करवाते हुए कहलाया कि कर्मसिह के सामने कभी आगए तो वह जीवित न लौटने देगा । अतः उससे सदैव दूर ही निकला करो ।

---

१ करां जोडि—हाथ जोड कर । बैरीहरा तणी—शत्रुओ की । भडा—योद्धाओ । मेळिया—मिलाए हुए । चकारी—निशाना । कमा री—कर्मसिह को ।

२ अम्वाटा—नगाडो की । घोख—घोष, ध्वनि । करनाळिया—करनाल नामक बाजा । अहाका—अह अह की ध्वनि । तिकण रा—उनका । रूक री—तलवार की । झाळ ताती—धार तीक्ष्ण है, तप्त ज्वाला । जरद—कवच । कसिया—कसे हुए, बाधे हुए । अस—अश्व । जाकिये—मस्ती मे आया हुआ ऊट । छाकिये तणी—छके हुए की । मत चढ़ौ छाती—सामने मत आओ, धके मत आओ ।

३ साबळा—भाले, बर्छे । खिवणि—चमकने की क्रिया का भाव । आगा—अगरक्षक, कवच, अगरखे । खळकि—सरक कर, फिसल कर । सावता—सामन्तो । साकुरा—घोडो की । घसल—हमला, डांट । हुलसेट—आडे टेढे प्रहार । पाडे—धराशायी करें, पछाडे । जिका—जिनको । फेंट—दाव ।

४ सार री भवर—युद्धवीर । मोहकम—निडर । खसणि करि—लडाई कर, भिडकर । काय रे—अरे किसलिए । जीव खोवै—जीवन समाप्त करते हो । अेम—यों । पीया—पति । उराणे—वक्षस्थल पर । सिराणे—सिरहानें, सिर के नीचे । बाह दे—प्रिया की भुजा रख कर । बळे—फिर । सोवै—शयन करोगे ऐसी आशा मत रखो ।

१० गीत अनोपसिंघ कछवाहा री निंदा रौ

दाखै इम सूर घणा जुध दीठा, अचरजि विसन साभळो आप ।
वेटा री बेटो वाहुडियौ, बाप तणौ बडगडियौ बाप ॥१॥

पत द्रोही कहियौ सीता पति, वण अध्रम आपडियौ ।
सुत रौ सुत रहियौ खग साहे, पित रौ पित आपडियौ ॥२॥

कुळ वहुवां बहुवां नैं कहियौ, पड़ वहुवा पूछायौ ।
पौतो कठै वरसि पन्दरह रौ, अस्सी वरसि रौ आयौ ॥३॥

भारमली मीसण धोवौ भरि, रेत पाघ में राळी ।
काके तणी मन सांक न मानी, वाग अनोपे वाळी ॥४॥

सासड री सासूजी सुणज्यो- सती होता च्यूं कसूं सराप ।
वापजी तणौ मरावे वेटो, वापजी तणौ आवियो वाप ॥५॥

---

१० गीतसार—इस गीत मे अनोपसिंह कछवाहा की भर्त्सना की गई है। वह युद्ध मे अपने पौत्र के वीरगति प्राप्त करने पर लौट कर पौत्र विना अपने घर लौटा, तव पौत्र वधू ने सती होते समय उसे दुत्कारा और भारमली ने उसकी पगड़ी पर अञ्जलि भर मिट्टी फेंक कर कायर घोषित करते हुए निंदा की।

---

१ दाखै—कहते हैं। सूर—सूर्य, देवता। घणा—वहुत, घने। दीठा—देखे। विसन—विष्णु। साभळो—सुनो। वेटा रौ वेटो—पौत्र। वाहुडियौ—लडमरा, लौट आया। वाप तणौ—पिता का। वडगडियौ—दौड आया। पिता—पितामह, पिता।

२ अध्रम—अधर्म। आपडियौ—पकडा, ग्रहण किया। सुत रौ सुत—पौत्र। रहियौ—रण मे काम आया। खग साहे—तलवार सम्भाल कर, खड्ग पकड कर। पित रौ पित—पितामह, दादा। आपडियौ—दौड आया।

३ कुळ वहुवा—कुल वधुएँ। वहुवा नैं—वधुओ को। पड वहुवा—पौत्र वहुएँ। पूछायौ—पुछवाया। पौतो कठै—पौत्र कहाँ गया अथवा रहा। वरसि—वर्ष। आयौ—भागकर आ गया।

४ धोवो भरि—अञ्जलि भर कर। रेत—धूलि। पाघ मे राळी—पगडी पर उछाली। साक—शका। वाग—वगीचा, पगडी। अनोपे—अनोपसिंह ने। वाळी—जला दी।

५ सासड री—सास की। कसूं—क्या, कैसा। सराप—शाप। वापजी तणौ—ससुरजी सा को। मरावे—मरवा कर।

११ गीत राजा जैसिंघ कछवाहा आमेर रौ

अत अळगो ठाढ विलागै आतम, अत नैडे प्राजळे अथाह ।
औरंगसाह अउर आंबेरौ, सीत तणौ पावक जैसाह ।।१।।
दूरै ठरै ढूकडे दाझै, रूकां मुख होमवा रिम ।
रत हैमन्त वसन्त गत राजा, जवन जाळवै जळण जिम ।।२।।
दूर थकै धूजै दूजै डर, उर थकै प्राजळे उर ।
मानहरौ मकर चौ मैंगळ, सकै न ग्रह तप दिलेसर ।।३।।
माहव तणौ ठाढ़ तप मेटण, नरख सीत रत न धन नर ।
बेवै डर झालीया बराबर, आग जहीं सेवै उसर ।।४।।

---

११. गीतसार—ऊपर लिखित गीत मे गीतकार ने कछवाहा नरेश मिर्जा राजा जयसिंह द्वितीय का रूपकात्मक वर्णन करते हुए कहा है कि जयसिंह बादशाह औरगजेब के लिए शीतकालीन पावक है; जिसके दूर रहने पर वह ठिठुर उठता है और अति समीप रहने पर जलने लगता है। इस प्रकार वह बादशाह के हृदय को दग्ध करता रहता है।

---

१ अत अळगो—अति दूरी पर। ठाढ—ठण्डक। विलागै—लगती है। अत नैडे—अति समीपता से। प्राजळे—जलता है, सतप्त करता है। अथाह—अपार। अउर—उर, हृदय। आंबेरो—आमेर नरेश जयसिंह प्रथम। सीत तणौ—शीत काल की। पावक—अग्नि। जैसाह—राजा जयसिंह।

२ दूरै—दूर रहने पर। ठरै—ठिठुरता है। ढूकडे—निकट रहने पर। दाझै—दग्ध होता है। रूकां मुख—तलवार की धार से। होमवा—दग्ध करने, नाश करने। रिम—वैरी। रत हेमन्त—हेमन्त ऋतु। वसन्त—बसन्त ऋतु। गत—गति, भाति। जवन—बादशाह औरगजेब, मुसलमान। जाळवे—जलता है। जळण—अग्नि। जिम—ज्यो, तरह।

३ दूर थकै—दूर रहते हुए। धूजै—विधूत होता है, काँपता है। दूजै—द्वितीय। उर थकै—हृदय के पास रहने, निकटता से। प्राजळे—दहन होता रहता है। मानहरौ—मिर्जा राजा मानसिंह का वशज मिर्जा राजा जयसिंह। मकरचौ—मकर सक्राति को, शीतकाल को। मैंगल—कामदेव, हाथी। सकैन ग्रह तप—सूर्य का तप सहन नही कर सकता, जयसिंह का आतप सहन नही कर सकता। दिलेसर—बादशाह।

४ माहव तणौ—महासिंह का पुत्र जयसिंह। ठाढ—शीत। रत—ऋतु। धन—धन, शीतकाल मकर और धन राशि पर सूर्य आने पर होता है। कहा है—धन का तेरह मकर पचीस, सरदी का दिन दो कम चालीस। बेवै—दो दो। झालीया—लिए हुए। आग—अग्नि। जही—ज्यो ही। सेवै—सेवा करता है, पालन करता है। उसर—असुर, बादशाह।

१२ गीत मिरजा राजा जैसिंघ रौ हाजीपुर रा जुद्ध रौ

धरा धूज घौंसा धमक साहिजादा धकै, सदा तण वार कूरम सवाया।
सैद गजसिंघ कसि भीम री तप सू, उलटि जैसिंघ री ओट आया ॥१॥

वव अवाज वा' हरौ विरच्चिया, वधै महासिंघ-वत लोह वाहे।
वारहो मडोवर चित्रगढ विरचता, मचकि पग मडै आंवेर माहे ॥२॥

टकर चगथा अटळ टळै नहि तूझ तट, झपट जगता-हरौ दळा झकोळे।
असुर राठौड़ सीसोदिये ऊठता, आविया अभनवा मान ओलै ॥३॥

हालियो खुरम पर रीझ वासै हुवौ, लडै अमरेस-उत जास लाजा।
किलम कमधज उभै राखिया न्रिभै करि, राडि रौ घणी जैसिघ राजा ॥४॥

---

१२. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत आमेर के राजा जयसिंह प्रथम और विद्रोही शाहजादे खुर्रम (शाहजहा) के हाजीपुर के निकट लडे गए युद्ध पर रचित है। उस युद्ध मे शाही पक्ष मे जयसिंह आमेर, गजसिंह जोधपुर और शूरसिंह बीकानेर प्रभृति थे और विपक्ष मे राजा भीमसिंह सीसोदिया, शाहजादा खुर्रम तथा शाहजादे के सहायक अन्य योद्धा थे। युद्ध के जवरदस्त दवाव से राजा गजसिंह, वहलोलखाँ सैयद वगैरह राजा भीमसिंह के भय मे जयसिंह की ओट मे आ वच रहे थे।

---

१ धरा धूजे—पृथ्वी कम्पित हो। घौंसा वमक—धूसा वाद्य की ध्वनि, वडा नगाडा जो एक डके से वजाया जाता है की आवाज। धकै—सामने। कूरम—कूर्म, कछवाहा जयसिंह। सैयद—वहलोलखाँ प्रभृति सैयद। गजसिंघ—जोधपुर का राजा गजसिंह। कसी (खसि)—खिसक कर, हट कर। भीम री—राजा भीमसिंह सिसोदिया की। उलटि—उलटे फिर कर, उलटे लौट कर। ओट—आड, रक्षा मे।

२ वव—नगाडा की। विरचिया—रचे, किए। वधै—वढ कर। महासिंघवत—महासिंह पुत्र जयसिंह। लोह वाहे—शस्त्र प्रहार कर। मडोवर—मडोर नरेश गजसिंह। चित्रगढ—चित्तौड वाले, भीमसिंह के। मचकि—आगे पीछे हिला कर। पग मडे—पैर रोके। आवेर माहे—आमेर नरेश जयसिंह के पास।

३. टकर—टक्कर। चगथा—मुसलमानों। टळै नहीं—चूके नहीं, दूर नही हटे। जगता हरौ—जगतसिंह का पौत्र जयसिंह। दळा—सेनाओ को। झकोळै—हिलोरित किए। असुर—मुसलमान। अभनवा मान—अभिनव मानसिंह के। ओलै—ओट मे।

४ हालियो—चला, डगमगाया। वासै—पीछे। अमरेसउत—राणा अमरसिंह का वत्स राजा भीमसिंह। किलम—मुसलमान, सैयद। कमधज—राठौड। उभै—दोनो। न्रिभै करि—निर्भय कर। राडि रौ वणी—उस युद्ध का स्वामि, उस युद्ध का सेनानायक।

१३ गीत राजा जैंसिघ कछवाहा आमेर रौ

करग खाग पासौ भरत खड चौपड करै, दुगम खेला मिले भड दुबाहा ।
देयतौ दाउ घण घाउ जैसिधदे, सारि जिम रमाडै पातसाहा ।।१।।
परठिजै जोड थाणा हिये पार के, डाण आराण कीजै इसा डाउ ।
पाधरै थापि उथापिजै असपति, रमै रामति तिका कूरमा राउ ।।२।।
ऐवहा खेल खेलै भुजा आपरा, मीर रद हुवा मेल्हे मछर माण ।
महा जुधि मारि बीछोडिजै मलीजे, साफळे सौ गढा जेम सुरताण ।।३।।
तिसौ अगजीत खेलार माहव तणौ, हाथ बळि खळा सिरि चहोडे हारि ।
ऊठवै राह बे मेछ बाजी अखिल, जगत जेठी न्रपत जैत जुवारि ।।४।।
प्रथी सिणगार अवतार आबेर पति, प्रगट रण चाचरा खाग पूजौ ।
दाउ ऊपर हुवौ रहै राहा दठू, दिगविजै थकौ जगतेस दूजौ ।।५।।

—नरहरिदास बारहठ रौ कह्यौ

---

१३. **गीतसार**—उपर्युक्त गीत मे कवि ने आमेर नरेश महाराजा जयसिह की युद्ध क्रीडा का चौसर क्रीडा के साथ समता दिखाते हुए युद्ध का वर्णन किया है । इसमे चौसर भारत भूमि, पासा तलवार और दाव युद्ध मे शस्त्राघात को कहा है और चौसर की गोटियां बादशाहो को बताया गया है ।

---

१ करग—हाथ । खाग—तलवार । पासौ—पासे । भरतखण्ड—भारतवर्ष को । चौपड करै—चौसर वना कर । दुगम—कठिन । खेला—क्रीडक, खिलाडी । भड दुबाहा—दोनो हाथो से शस्त्रो के वार करने वाले वीर । देयतौ दाउ—दाव लगाता हुआ । घण घाउ—वहुत अधिक आक्रमण, अधिक घावे । सारि जिम—गोटियो की तरह । रमाडै—खिलाता है, रमण करवाता है ।

२ परठिजै—स्थापित करता, बनाता, भेजता (?) । जोड—बराबर के । थाणा—स्थानो, सैनिक चौकियो । हिये—हृदय । पार के—दुश्मनो के, परायो के । डाण—दाव, चौसर का दांव । आराण—युद्ध । इसा—ऐसा । डाउ—दांव । पाधरै—सीधे, सरल । थापि—स्थापित कर । उथापि—उखाड कर, अधिकार विहीन कर । असपति—बादशाह । रमै—खेलता है । रामति—क्रीडा । राउ—राजा ।

३ ऐवहा—ऐसे । खेलै—खेलता है । मीर—अमीर, मुसलमान उमराव । रद—प्रभावहीन, रद्दी । मेल्हे—त्याग कर । मछर माण—गर्व और सम्मान । बीछेडि—विछोह कर । मलीजे—मिला कर ।

४ तिसौ—ऐसा । अगजीत—अजेय । खेलार—खिलाडी । माहव तणौ—महासिह का पुत्र जयसिह । वळि—वल, शक्ति । चहोडे—चढाता है । ऊठवै—उठ जाती है, समाप्त होती है । राह बे—दोनो धर्म वालो की । बाजी—खेल । जगत जेठी—जगत मे श्रेष्ठ, सूर्य । जैत—विजय ।

५ चाचरां—खेल, युद्ध । पूजौ—पुज्य, पहुचने वाला । ऊपर हुवौ—सबसे वढ कर हुआ । थकौ—सहित । जगतेस दूजौ—द्वितीय जगतसिंह, राजा जयसिंह ।

१४ गीत महाराजा जैंसिघ कछवाहा आमेर रौ

महाराज जैंसाह भारथ सवळ माडते, जुड किया गज कमळ उलट जोया ।
निमख री ठौड सहर विचाळे निरतर, हमरकै जवाहर ढेर होया ।।१।।
पछट खगट भट पतसाह रा पाडिया, झूळ ले गज उटोउट अकट जडिया ।
तेण कारण विकट लूण दरियाव तट, प्रगट नग अवीधा गरट पडिया ।।२।।
त्रिजड आवाह किसनेस हर विसन तण, रिखी हडहड हसे समर रीधा ।
अमोखळ प्रमाणै आमळा-सामळा, दुरद मोताहळा गज दीधा ।।३।।
सैंद सधार आभूखण सहेता, कीरत जाहर करी चहू कूटां ।
लूण री ठौड साभर ... ...।।४।।

—दळपत सादू रौ कह्यो

---

१४ गीतसार—उपर्युक्त गीत जयपुर के शासक महाराजा सवाई जयसिंह कछवाहा द्वारा साभर स्थान पर लडे गए युद्ध पर रचित है। महाराजा सवाई जयसिंह ने जोधपुर के महाराजा अजितसिंघ राठौड की सैनिक सहायता प्राप्त कर साभर के शाही थाने पर आक्रमण किया था और वहाँ के हाकिम सैयद अलीअहमद को पराजित कर साभर पर अधिकार कर लिया था। गीत मे साभर झील मे नमक के स्थान पर गज-मुक्ताओ को विखेरने का कवि ने उल्लेख किया है।

---

१ जैसाह—सवाई जयसिंह जयपुर। भारथ—युद्ध। माडते—प्रारम्भ करते, लडते। गज कमळ—गज मस्तक। निमख री—नमक की। ठौड—स्थान पर। विचाळे—मध्य, मे। हमरकै—इस वार, अबकी वार। जवाहर—जवाहिरात। ढेर होया—ढीगला हुआ, ढेर लग गया।

२ पछट—पछाट देकर, आघात कर। खगट—खड्ग। पाडिया—पछाड दिए, मार गिराये। झूळ—समूह। उटोउट—उठा कर। अकट—मस्तक। लूण दरियाव तट—नमक की झील के किनारे। नग—जवाहिरात, मोती आदि। अवीध—अविध्य, अच्छेद। गरट—समूह, घना, सेना।

३ त्रिजड—तलवार। आवाह—युद्ध, प्रहार। किसनेस हर—किशनसिंह का पौत्र, सवाई जयसिंह। विसनतण—विशनसिंह तनय सवाई जयसिंह। रिखि—ऋषि, नारदादि। हडहड हसे—जोर की आवाज मे हसने लगे। रीधा—प्रसन्न होकर। अमोखळ—अपार, अमूल्य ? । आमला सामळा— एक दूसरे के सम्मुख। दुरद—द्विरद हाथी। मोताहळा—मोतियो का। गज—ढेर। दीधा—दिया, लगा दिया।

४ सैंद—सैयद, शाही सेनानायक। संघार—सहार कर। सहैता—सहित। कीरत—कीर्त्ति। चहू कूटां—चारो दिशाओ मे।

१५ गीत महाराजा सवाई रामसिंघ कछवाहा जैपुर रौ

मने धारि के सुरता पचमाथ रैं चढावे माथ,
गुडचो हाथ जोडी भैरू भाप रै गिरद ।
करौत धारी कै गात पूरी सात सिधा कासी,
नाथ पुत्र पूरे पात पायौ जैसा नन्द ।।१।।
आखरा सचिदानन्द भजे सरा तरा ओटैं,
साधे हरा हरी सिभ रट्यौ अवस्याण ।
उरा धार आठौ जाम अक रा जीह आणै,
मन्ने प्रतापीक हुवौ तरा कूरमाण ।।२।।
तापे सूक पत्रां भखै त्यागे नाना भोग ताजा,
आधार समाजा बिना रह्यौ एक आप ।
दराजा साहसधार गाळे हेम अद्रा देह,
तूठा प्रभु प्रामे राजा बिजाई प्रताप ।।३।।

---

१५ **गीतसार**—उपरांकित गीत जयपुर के महाराजा रामसिंह द्वितीय पर रचित है। कवि गीतनायक के समय मे अपना जन्म होना किन्ही महान् पुण्यो का फल मानता हुआ कहता है कि मैंने शिव के समक्ष शीश न्योछावर किया अथवा गिरि शृंग से भैरव झाप ले कूद कर प्राण त्यागा या सिद्धपुरी काशी मे करोत से अपना शरीर विदीर्ण किया, जिसके पुण्य से ऐसा उदार स्वामी प्राप्त हुआ।

---

१ मने—मन मे। सुरता—ध्यान, सुरति। पचमाथ रैं—महादेव के। माथ—शीश। गुडचो—लुढका, छलाँग लगाई। भैरूं भाप—मोक्ष की कामना से कूदना। गिरद—पर्वत। करौत—आरा, करवत। गात—गात्र। पूरी सात सिधा कासी—सप्तपुरियो सिद्ध काशीपुरी। नाथ—गौरक्षनाथ। पूरे—पूर्ण। पात—कवि ने। पायौ—प्राप्त किया। जैसा नन्द—जयसिंह के पुत्र रामसिंह को।

२ आखरा—अक्षरो, वाणी द्वारा। सरा तरा—सरोवरो और वृक्षो की। ओटैं—आड मे, ओट मे। साधे—सिद्ध किए, साधना की। हरा हरी सिंभ—ब्रह्मा, विष्णु और शभु तीनो देवो की। रट्यौ—रटा, स्मरण किया। उरा धार—हृदय मे दृढ निश्चय कर। अक रा—राम नाम का अक्षर। जीह—जीभ, जिह्वा। आणै—लाकर। मन्ने—मुझे। कूरमाण—कछवाहा।

३ तापें—तप किया। सूक पत्रा—सूखे पत्ते। भखै—खाये, आहार बनाये। दराजा—बहुत, महान्। साहस धार—साहस धारण कर। गाळे—पिघलाया। हेम अद्रा—हिमगिरि, हिमालय। तूठा—तुष्टिमान हुए। प्रामे—प्राप्त हुए। बिजाई प्रताप—द्वितीय प्रतापसिंह, रामसिंह को।

ओडकार सीत काळ रटचौ रेळे नीर ऊडै,
धारे पच आग जळचो उन्हाळे रै धूप ।
व्रखा छाय टल्यौ कविद्र गिरन्द्र वेठौ,
भोम इन्द्र तरा घणी मिल्यौ राम भूप ।।४।।

१६ गीत महाराव नाथूंसिघ सेखावत मनोहरपुर रौ

अमल जमावै परधरा पाथ रूपी अडर, भाज घड़ त्रघक फतै भाराथ ।
पमगा तौरा हसत वधारा मनसुपा, नाथ रौ खाग पूजै दिलीनाथ ।।१।।

पाट ऊवोर व्रन खट भुजा ऊपटै, प्रवळ घोडा भडा थाट परघै ।
पटाभरा सिरौपावा नवा पिडगना, असपती जसाउत रूक अरघै ।।२।।

---

१६ गीतसार—उपरांकित गीत मनोहरपुर शाहपुरा के शासक नाथूसिंह शेखावत की शाही दरबार मे प्रतिष्ठा एव महत्त्व का प्रदर्शक है । कवि का कथन है कि वह शत्रुओ की भूमि पर अपना आधिपत्य स्थापित करने मे वीर अर्जुन पाण्डव की भाँति निर्भीक है । युद्धो मे शत्रुओ का सहार कर विजय प्राप्त कर लौटता है । वादशाह उसको अश्व, हाथी और उच्च मनसव प्रदान कर सम्मानित करता है ।

---

४ सीतकाळ—शीतकाल मे । रटचौ—जपा । रेळे—प्रवाह, नदी के फैलने का स्थान । ऊडै—गहरे । पच आग—पचाग्नि मे । जळचो—दग्ध हुआ । ऊन्हाळे—ग्रीष्म । धूप—ताप, सूर्य । व्रखा—वृक्षो की । टल्यौ—एकाकी वैठा रहा । भोम इन्द्र—भूपेन्द्र, राजा । तरा—तव । घणी—मालिक । मिल्यौ—मिला, प्राप्त हुआ ।

१ अमल जमावै—अधिकार स्थापित करे । परधरा—पराये भूभागो पर । पाथ—पार्थ, अर्जुन । भाज घड—सेना का नाश कर । त्रघक—नगाडे वजा कर । भाराथ—युद्ध । पमगा—घोडो । हसत—हस्ति, हाथी । वधारा—वृद्धि । मनसुपा—मनसव । नाथ रौ—महाराव नाथूंसिह का । खाग पूजै—खड्ग की आराधना या प्रतिष्ठा करते हैं । दिलीनाथ—वादशाह ।

२ पाट ऊवौर—राजसिंहासन का उद्धारक । व्रन खट—पट् वर्ण, यती, जोगी, सन्यासी, व्राह्मण, चारण वगैरह । ऊपटै—दान के । भडा—योद्धाओ का । थाट—समूह, ठाठ । परघै—परिवार, सभा, दरवार । पटाभरा—हाथियो । नवापिडगना—नवीन प्रान्त । असपती—वादशाह । जसाउत—जसवन्तसिंह तनय नाथूंसिह । रूक—तलवार । अरघै—पूजा करता है, अर्चना करता है ।

सक अफिर पीठ थाहर विकट अमरसर,प्रथी रस जाहर समर जीत परचा ।
किताबा मुरातब सहत हजरत्त करै, अभनवा जगा री खडग अरचा ।।३।।
ईसुरी सहायक फतै पावे अवसि, दळ खळा भाज घुरता दमामा ।
पाण खग ऊपरा ऊपरी पठावै, साह मनसूप कुरप राव सामा ।।४।।

१७ गीत महाराव हणूतसिंघ सेखावत मनोहरपुर रौ

सधर पांव लग सेस भुजडड वधिया सुरग,
निवारण न कर वाळी तरह नेम ।
सुतन विसनेस थारा परग सेवियां,
जग वधै छडी वामन करग जेम ।।१।।
हेळ रा सिंध अघ दुरत नासा हणू,
पियासा जस दरस जिका निज भूप ।
वेहळ व्रन कदम रा सागरां वधायौ,
राव मुर भुवण आसा तणै रूप ।।२।।

---

१७ गीतसार—इस गीत मे कवि ने गीतनायक हनुमन्तसिंह को दानी, वलि और याचको को वामन वर्णित कर रूपक का विधान किया है। वह कहता है कि हे विशनसिंह के पुत्र हनुमन्तसिंह, तुम्हारे कदम शेषनाग के शीश एव हाथ स्वर्ग के जा लगे हैं। तुमने याचको को त्याग देने मे राजा वलि का व्रत ग्रहण कर रक्खा है। जिसने भी तुम्हारी चरणाराधन की वह धनी हो गया। ससार मे वे भगवान् वामन के गात्र की भाति विशाल वनते गए।

---

३ सक—शस्त्र, वीर। अफिर—पीछे नही मुडने वाला। पीठ—पृष्ठस्थान, पीठस्थान। थाहर—दुर्ग। अमरसर—राजधानी का नाम। जीत—विजय के। परचा—परिचय, चमत्कार। किताबा—खिताब, पदवी। मुरातब—माहि मुरातव का सम्मान। हजरत—वादशाह। अभनवा जगारी—अभिनव जगतसिंह की, नाथूसिंह की। अरचा—अर्चन, पूजा।

४ ईसुरी—ईश्वरी, भगवती, देवी। फत्तै—फतह। अवसि—अवश्य। भाज—सहार कर। घुरता दमामा—नगाडो की ध्वनि करवाता हुआ। पाण—वल, भुजा। खग—तलवार। ऊपरां ऊपरी—एक के ऊपर एक, लगातार। पठावै—भेजता है। मनसूप—मनसब। कुरव—प्रतिष्ठा, सत्कार। सामा—सम्मुख, सामने।

१ पाव लग सेस—शेषनाग तक पैर। वधिया—बढे। सुरग—स्वर्ग। निवारण—त्यागने। न कर—इन्कार न करने वाले, राजा वलि। नेम—व्रत, नियम। थारा—तेरा। परग सेविया—चरणो की आराधना की। जग वधै—ससार मे वढे। वामन—वामनावतार।

२ हेळ रा सिंध—उदारता का सागर। अघ दुरत—भयकर पापो का। नासा—नष्ट करने वाला। हणू—हनुमन्तसिंह। पियासा जस—यश के प्यासे। जिका—जिनका। वेहळ—लहरी, विकल। राव मुर भवण—त्रिलोकी नाथ, विष्णु। असा—ऐसे। तणै—के।

कूरमा नाथ कर जोड सेवन करी,
घात जिण चरण अरविन्द कर प्रीत ।
ईजत जस आथ इक साथ व्रहमड अडि,
रसा त्रय विक्रम लकडी तणी रीत ।।३।।

दंड व्रह्मंड वधियौ जिको न दीठौ,
रहीं धर विचाळे कदम रेखा ।
मह सुजस मेर छाया उलघन माया,
सुकव तैं वधाया जिता सेखा ।।४।।

—जोधा सादू रौ कह्यौ

१८ गीत महाराव हणूर्तासघ सेखावत मनोहरपुर रौ

मसत लगायो डाण दध तटा खट रुत महि,
खसत दिग गजां उर सत्रां खटकैं ।
हाहुळी समंद जस हसत थारौ हणू,
लगरा घसत अदतार लटकैं ।।१।।

---

१८ गीतसार—ऊपर कथित गीत राव हनुमन्तसिंह शेखावत मनोहरपुर शाहपुरा के शासक के पराक्रम पर रचित है। गीतकार ने इसमे लिखा है कि हे राव हनुमन्तसिंह तुम्हारा मद मस्त गजराज समुद्र तटीय प्रदेशो मे निर्भीक घूमता है। उसके भय से शत्रु रूपी दिशाओ के गज भयभीत रहते हैं। वह कृपण रूपी गज जजीरो को अपने पीछे घसीटता चलता है।

---

३ कूरमानाथ—कछवाहो के स्वामी हनुमन्तसिंह की। सेवन करी—आराधना की। पात—पात्र, कवि, याचक। अरविन्द—कमल। करप्रीत—प्रीति कर। ईजत—प्रतिष्ठा। जस आथ—यश और धन। अड़ि—अडे, स्पर्श करने लगे। रसा—पृथ्वी। त्रय विक्रम—त्रिविक्रम—विष्णु।

४ दड—भुज दण्ड, वामन की छडी। जिकौ—जो। न दीठौ—नही दिखता। धर विचाळे—पृथ्वी पर। कदम रेखा—चरण चिह्न। मेर—सुमेरु गिरि। वधाया—दान सम्मान दे वडे वनाए। जिता—जितने। सेखा—महाराव शेखा के वंशज हनुमन्तसिंह।

१. मसत—मस्त, उन्मत्त। डाण—राहदारी नामक कर, मद। दध तटा—समुद्र तटीय देशो तक। खट रुत—षट् ऋतु। खसत—टक्कर, खसकना। दिगगजा—दिग्पाल। उर सत्रा—शत्रुओ के हृदय। हाहुळी समद—तरंगित सागर। जस हसत—यश रूपी गजराज। लगरा—जजीरें, सैन्य समूह। घसत—घसीटते। लटकैं—पीछे लटकते चलते हैं।

नन्द बिसनेस नव खण्ड ऊपर निसक,
रूप नभ उमड सित जळद रेखा ।
फरक जिम केत यळ छंद करतो फिरै,
सूंब पैबंद गयंद सुजस सेखा ।।२।।
दट गया अरियंद अदतार दिस हू दिसा,
रसा अहनिसा बजै त्रबक रोडे ।
जोडगर सांकळा जडै दूजा जसा,
दिस दिसा चाव गजराज दोडै ।।३।।
हका दोय राह बावन मिणी जती हद,
चीत बाधै उदध वीत चाळो ।
ईढदारा तणौ देख मद ऊतरै,
ऊजळ सुसबद दुरद तूझ वाळो ।।४।।
—जोधा सादू रौ कह्यौ

१९ गीत महाराव हणूतसिंघ सेखावत मनोहरपुर रौ

स्रवै रीझ गज गाम चित मठा फाटै बका,
असमरा धका करिवा खळा अंत ।
छहु रित रहै छाक खत्रवट छका,
हका जस ताहरा प्रथी हणमन्त ।।१।।

---

१९ **गीतसार**—ऊपर लिखा हुआ गीत मनोहरपुर शाहपुरा के स्वामी राव हनुमन्तसिंह शेखावत की उदारता तथा वीरता के वर्णन का है। कवि कहता है कि राव हनुमन्त-सिंह के दान देने और शत्रुओ के दमन करने की यशकथा का श्रवण कर कृपण तथा कायर हतप्रभ हो जाते हैं।

---

२. सित—श्वेत। जळद—मेघ, समुद्र। फरक—चक्री। केत—केतु, ध्वज पताकाएँ। यळ—भूलोक, पृथ्वी। छद करतो फिरै—मस्ती मे क्रीडा करता फिरता है। सूब—कृपण। गजद—हाथी। सुजस—सुयश। सेखा—शेखावत।

३ दट गया—रुक गए, दब गए। अरियद—वैरी। अदतार—कजूस। रसा—पृथ्वी। अहनिसा—दिनरात। त्रबक—दुदुंभि, नगाडे। जोडगर—बराबरी वाले। साकळा—लोह शृंखलाएँ। जसा—जसवन्तसिंह।

४ हका—हाक, हल्ला। दोय राह—हिन्दू और मुसलमान दोनो धर्म पथो पर चलने वाले। जती—जितनी। हद—सीमा। चीत—चित्त, मन। बाधै—बढता है। उदध—समुद्र। वीत—वित्त, धन। चाळो—क्रीडा, छेडछाड। ईढगारा—बराबरी वालो, समता वालो। मद—घमण्ड। उजळ—उज्ज्वल। सुसबद—सुशब्द, कीर्त्ति। दुरद—द्विरद, हाथी। तूझ वाळो—तेरे वाला, आपश्री का।

१ स्रवै—देता है, दान करता है। रीझ—दान। गज गाम—हाथी और ग्राम। चितमठा—कृपणो। फाटै बका—मुह फाटे रह जाते है। असमरा—तलवारो के। धका—टक्कर, आघात। करिवा—करने के लिए। खळा अन्त—दुश्मनो का नाश। छाक—छकित, उन्मत्त। खत्रवट—क्षत्रियत्व। हका जस—यश प्रसिद्धि, शोहरत। ताहरा—तेरा, तुम्हारा। हणमत—राव हनुमन्तसिंह।

बिसन रा सींह नखतैत ताळा विलद,
　　ताहरा खत्रीवट गुणा तोल ।
परवरे किरण रवि जिती समदा परा,
　　बराछक धरा सारी सुजस बोल ।।२।।

नाथहर सुवप खत्रवट धणी नरांनर,
　　वदा कुण तो तणी जोड यण वार ।
मानपुर धणी सेखावता मिण मुगट,
　　इळा सुसबद तणी इण अपार ।।३।।

सार आचार थारा अगर समजती,
　　दुड़े सारा गया हार यण दाय ।
वखत छत ताहरा अगर जसवन्त विया,
　　जिमि दुड़िद ऊगिया नखत दवि जाय ।।४।।

---

२ विसन रा—राव विशनसिंह का । सींह—सिंह तुल्यवीर पुत्र । नखतैत—नक्षत्रधारी ; ताळा विलद—भाग्यशाली । खत्रीवट—क्षत्रियपथ, क्षत्रियत्व । परवरे—फैले, प्रसरित, विकीर्ण । जिती—जितनी । समदा पार—समुद्रों के उस पार तक । बराछक—वीरता से छकी हुई । धरा—पृथ्वीलोक । सारी—समस्त । सुजस बोल—यशवाणी, कीर्त्ति के वचन ।

३. नाथहर—श्रीनाथसिंह के पौत्र हनुमन्तसिंह । सुवप—सुन्दर शरीर । खत्रवट—क्षत्रियत्व । धणी—नरा नर—राजाओं का भी राजा । वदा—कहे, वर्णित करें । कुण—कौन, किसको । तो तणी—तुम्हारी । जोड—बराबरी । यण वार—इस समय । मानपुर—मनोहरपुर शाहपुरा का एक ग्राम । धणी—स्वामी । मिण मुगट—मुकुट मणि । इळा—पृथ्वी, भूलोक । सु सबद—सुशब्द, कीर्त्ति के बोल ।

४ सार—अस्त्र-शस्त्र, तलवार । आचार—व्यवहार । थारा—तेरा । समजती—जितने भी समता करने वाले थे । दूडे सारा गया—समस्त छिप गये, प्रभुत्वहीन लगने लगे । ताहरा—तेरे, तुम्हारे । अगर—आगे, सामने । जसवन्तविया—द्वितीय जसवन्तसिंह, हनुमन्तसिंह । जिमि—जिस प्रकार । दुड़िद ऊगिया—सूर्य के उदित होने पर । नखत—नक्षत्र, तारे । दविग जाय—द्युतिहीन हो जाते हैं, फीके दीखने लगते है ।

२० गीत महाराव हणू तसिघ सेखावत मनोहरपुर रौ

तुरा भीड़जै तग अग उमग सरताज रा,
पतग थभियौ निहग मूके दध पाज रा।
सिघ हणवन्त कैरा प्रवल साज रा,
असा आरम्भ हुवै किणी सिर आज रा ।।१।।

खुले नीसाण खैंगा चढे ताखडा,
चोळ रग रारिया भीच हुक भुक चडा ।
खाग करधारियां खूद आगळ खडा,
गाढमल सालुळे कसी रुख गै घडा ।।२।।

त्रसल पड भ्रगुट चढ कोप अहतेस रौ,
वराछक प्रवळ धक चढन्ती वेस रौ ।
देखजै कै मत्थे आभरण देस रौ,
वणावै इसा आरम्भ वीर बिसनेस रो ।।३।

---

२० **गीतसार**—यह गीत मनोहरपुर शाहपुरा के राव हनुमन्तसिह शेखावत के सैनिक अभियान के वर्णन पर कथित है। कवि कहता है कि वीर श्रेष्ठ हनुमन्तसिह उत्साह पूर्वक अपने अश्वो पर जीन कस कर यवन सेना सहित उस पर आक्रमण करने के लिए तत्पर हुआ जिमसे आकाश मे रवि स्थिर हो गया और समुद्र अपनी मर्यादा त्याग कर हिलोरें मारने लगा।

---

१ भीडजै तग—घोडे के जीन कसने का तशमा खीच कर, जीन करके। पतग—सूर्य। थभियौ—रुक गया। निहग—आकाश मे। मूके—छोडे, अतिक्रमण करे। दध—उदधि, सागर। पाजरा—मर्यादा का, सीमा का, तट का। कैरा—के। साज रा—सज्जा का। असा—ऐसा। आरम्भ—कार्यारम्भ। किणी सिर—किस पर।

२ नीसाण—निशान, ध्वज पताकाएँ। खैंगा—घोडो पर। ताखडा—ताकतवर, तगडा। चोळ रग—लाल वर्ण, रक्तिम। भीच—योद्धा। हुक भुक—चूर चूर कर। खाग कर धारिया—तलवारें हाथो मे लिए हुए। खूद—मुसलमान, बादशाह के। आगळ—आगे। गाढमल—दृढवीर। सालुळै—चले, प्रयाण करे। कसी रुख—किस तरफ, किस दिशा की ओर। गै घडा—गज सेना।

३ त्रसळ—तीन सलवटे, ललाट। भ्रगुट—भ्रकुटि। कोप—क्रोध। अहतेस रौ—गर्वीले का, अभिमानी को। वराछक—परिपूर्ण, वीर। धक—क्रोध, साहस। चढती वेस रौ—चढती युवावस्था का, जवानी आती उम्र का। कै मत्थे—किस पर। आभरण—आभूषण।

मयंद डाचाळ अंतकाय सु प्रमाथ रा,
प्रसण भंजवे सुभट हथ पाथ रा।
सांमरख हुवै दळ कसी वळ साथ रा,
नीघसे अम्बागळ बिजाई नाथ रा ।।४।।

धराधर थरहरैं धकौं अवधेस रौं,
सकौं लटके मचक धुकैं सिर सेस रौं।
मचक पड़ अरिहरां मयाणंक भेस रौं,
जठै छक जोवजैं दुवा जगतेस रौं ।।५।।

कोपियौ जटाधर टकर देसी कहीं,
नेतबंध क्रोध भर आज टळसी नहीं।
जोवजौ उरड़ भीमेण पारथ जही,
मुरड़ अग न मावै अजड़ खापां महीं ।।६।।

ऊससँ अंगोठे भाण रूपी अडर,
वाण कर तोक के माघवाणी वजर।
जोमरद अरिहरां दीठ आयौ जजर,
खेध लागौ कंठीरव ऊभौ खजर ।।७।।

---

४ मयद–सिंह। डाचाळ–मुख। अतकाय–यमराज, शिव। प्रसण–पिशुन, शत्रु। पाथरा–अर्जुन का। सांमरख–सामर्थ। कसी वळ–किस तरफ। नीघसे–ध्वनि करते हैं। अम्बा गळ–तावे के पेंदे वाले नगाडे। बिजाई–दूसरे। नाथ रा–नाथूसिंह के।

५ धराधर–पहाड, शेषनाग। थरहरैं–कंपायमान हुए, भय कंपित हुवा हुआ। धकौं–टक्कर। सकौ–सब कोई। धुकैं–कुढना, झुकना, जलना। सेस रौ–शेषनाग को। मचक–लचक कर। अरिहरा–शत्रुता रखने वालों। जठै–जहाँ पर। छक–मस्ती। जोवजैं–देखिए, निहारिए। दुवा–द्वितीय।

६ कोपियो–कुपित हुआ। जटाधर–शिव। टकर–टक्कर। नेतवन्ध–वीरता सूचक चिह्न विशेष धारी। टळसी नही–टलेगा नही, चूकेगा नही। उरड–जोश, उमग। भीमेण पारथ–भीमार्जुन। जही–जैसी। मुरड–मरोड, ऐंठ। न मावै–समाहित नहीं होती। अजड–तलवार। खापा नहीं–म्यान मे, कोश मे।

७ ऊससैं–जोश मे उफनना। अगोठे–शरीर, अग्नि। भाण–सूर्य। कर–हाथ मे। तोक कर–उठा कर। माघवाणी–इन्द्र। जोमरद–जवामर्द। अरिहरा–वैरियो को। दीठ–दृष्टि मे। जजर–यमराज। खेध–विरोध, क्रोध। कंठीरव–सिंह। ऊभौ–खडा हुआ। खजर–क्रोध से पूर्ण।

आज रौ घाट दीठौ सकौ अेहडौ,
जकौ जांणो मती जुहारण जेहड़ौ।
वाघ सारूप काळी तणौ बेहडौ,
कहौजो बरोबरि जुड़ै अप केहड़ौ।।८।।

थट भड़ां मुगट उप्रवट बिड़द थावसी,
खग भटा पछट सत्रहा दळां खावसी।
पाण भालां लिया प्रसध जस पावसी,
असी विध बौल्लबाला कीयां आवसी।।६।।

२१ गीत राजा द्वारकादास सेखावत खण्डेला रौ

वग ठांमे परण रायहर बैठा, हेली पठांण चाली हीच।
आर‥ ‥ ‥ ‥‥ ‥‥वांणी, वैनाणी पांणी घड बीच।।१।।

---

२१ गीतसार—प्रोक्त गीत खण्डेला के राजा द्वारिकादास शेखावत पर सर्जित है। द्वारिकादास ने बादशाह की ओर से अपने मित्र नवाब खानजहाँ के विद्रोह करने पर उसे पराजित किया था। गीत मे लिखा है कि जिस समय शाही पक्ष के अन्य राजाओ से युद्ध परिणय कर खानजहा की सेना रूपी दुल्हिन अपने घर की ओर विदा हुई उस समय उस पर किलकिला पक्षी की भाँति द्वारिकादास ने आक्रमण किया और बलपूर्वक अपहरण कर स्वर्ग ले गया।

---

८ घाट—ढग, विचार, हाल। सकौ—सब कोई। अेहडौ—ऐसा। जकौ—जो, वह। जाणो मती—समझो मत। जेहडौ—जैसा। वाघ सारूप—व्याघ्राकृति। काळी तणौ बेहडौ—पगली के सिर पर के द्विघट जो क्षण भंगुर होते हैं। केहडौ—कैसा।

६ थट भडा—योद्धा समूह। उप्रवट—अधिक, बहुत। विड़द—विरुद्ध। थावसी—होगा। खग भटा—खड्गाघात। पछट—मार कर, पछाट देकर। सत्रहा दळा—शत्रु सेना। खावसी—मारेगा, नाश करेगा। पाण—हाथ। पावसी—प्राप्त करेगा। असी विध—ऐसी विधि से, इस रीति मे। आवसी—आएगा, लोटेगा।

१ ठामे—स्थान, ठहर कर। रायहर—राजकुमार। हेली—सहेली (?)। हींच—युद्ध लड़ कर। वैनाणी—किलकिला पक्षी। पाणी—जल। घड—सेना।

गिरधर रौ आयौ गजगाहे, वीजा जेमि न करी वुधि।
छिवतो निहग विहग गति छूटौ, जळा वौळि दळ बीच जुधि ॥२॥

अनि रायहर घणै ओछडिया, खानजिहा सिर लोह सुख।
पाडव घडा ऊपरा पडियौ, राव कूरम किलकिला रुख ॥३॥

मारे खानजिहा रण माहे, कौ राजा उग्राहे कर।
रुके थके जळचरे रहियौ, चखे न रहियौ मीन-चर ॥४॥

—ईसरदास सादू भदौरा रौ कह्यौ

२२ गीत उमेदसिंघ सेखावत सूजावास रौ

पैला भाजिया हजारा चोडै केई वारा फतै पाई,
भाणवा लुटाई आथ लाधो गुणा भेद।
रजाई खडेले ब्रद सकौ भाई ईढ राखै,
आचा खाग त्याग पाई वडाई उमेद ॥१॥

---

२२ गीतसार—उपरांकित गीत सूजावास के स्वामी उम्मेदसिंह शेखावत के युद्ध और दान की सराहना का है। कवि कहता है कि उम्मेदसिंह ने अनेक वार शत्रुओ को रणभूमि मे खदेड कर विजय प्राप्त की और कवियो को द्रव्य दान कर प्रशसा प्राप्त की। इस प्रकार अपने बान्धव नरेश खण्डेलाधीशो से वीरता और उदारता मे बराबरी कर यश प्राप्त किया।

---

२ गिरधर रौ—राजा गिरधरदास का पुत्र राजा द्वारिकादास। गजगाहे—गजग्राह मे, युद्ध मे। बीजा—अन्यो। जेमि—ज्यो। वुधि—बुद्धि, चालाकी, उपाय। छिवतो—स्पर्श करता। निहग—आसमान। विहग गति—किलकिला पक्षी की गति से। छूटौ—टूट कर पडा, झपटा। जळावौळि—प्रालेय, भयकर। दळ—सेना। जुधि—युद्ध।

३ अनि रायहर—अन्य राजा लोग। घणै—घने। ओछडिया—छोड चुके, त्यागे। लोह—अस्त्र-शस्त्र। पाडव घडा—पठानो की रूपी सेना पर। पडियौ—टूट पडा, धावा किया। कूरम—कछवाहा। किलकिला रुख—तालाबो मे मछलियो पर झपट्टा मार कर पकडने वाले पक्षी की तरह झपट कर।

४ कौ—कौन। उग्राहे—रक्षा करे। रुक थके—तलवार होते। मीनचर—किलकिला, मछलियो को खाने वाला।

१ पैला—विपक्ष वालो, वैरियो को। भाजिया—नष्ट किये। केई वार—अनेक वार। भाणवा—कवियो को। आथ—अर्थ, धन। लाधो—लब्ध, मिला। रजाई—राजापने, राजत्व। खडेले—रायसलोत शेखावतो का प्रधान पट्ट स्थान का नाम। सकौ—सब कोई। ईढ—बराबरी, ईर्ष्या। आचा—हाथो मे। त्याग—दान। वडाई—बडप्पन।

रूप सेखा घराणे ऊधरी ताणै गाढ़ेराव,
चाव माणे संपदा वखाणै सूर चन्द।
यळाधीस सारा वन्ध कहावै मरोड़ आणै,
न जाणे आचार सार तो ज्यू गजा-नन्द ॥२॥
दहू पाखा नीर चाढे वरापूर साजे दीह,
सुपाता निवाजे हेळा हमीर समान।
भूप कोरा और वीर निकम्मी मरोड भाजे,
दूजा धीर तूझ भुजा छाजे खाग दान ॥३॥
कई गाम थोक राजा कहावौ चाकरा कना,
सहावौ सोभाग विना निकाजा सम्वन्ध।
खाग दान आजा वरसिध ज्यू ताहरा खवा,
साचो राजा उमेद जाहरा पाज सिध ॥४॥

२३ गीत ठाकुर दलपतसिंघ सेखावत रौ मानपुर रा जंग रौ

मरद वोलियौ अेम खग तोल आपहमलौ,
मन अडर यसो पलौ पकडे मीच।
कमळ धड ऊपरा थका सूपै किलौ,
भड जिका दलौ लानत कहै भीच ॥१॥

---

२३ गीतसार—ऊपरलिखित गीत ठाकुर दलपतसिह शेखावत पर रचित है। मानपुर पर अधिकार करने के लिए जयपुर की सेना ने आक्रमण किया था। उसका सामना करते हुए गीतनायक के प्राणोत्सर्ग करने का गीत मे वर्णन है। गीतकार ने लिखा है कि दलपतसिंह ने किले पर विपक्षियो का अपने निधन के वाद ही आधिपत्य होने दिया।

---

२ ऊधरी ताणै—वीरता एव दानादि श्रेष्ठ कार्य करने मे सर्वाग्र रहने की आकाक्षा करे। गाढेराव—समर्थ वीर। चाव माणे—चाह कर भोगता है। यळाधीस—राजाओ का। आचार सार—दान एव वीरता का व्यवहार। गजानन्द—गजसिंह का पुत्र उम्मेदसिंह।

३ दहू पाखा—मातृ एव पितृ दोनो पक्ष। नीर चाढे—गौरवान्वित करे, कान्ति चढावे। निवाजे—कृपा करे। हेळा हमीर—दानी विशेष। कोरा—खाली, दिखावटी। निकम्मी—व्यर्थ की। मरोड—ऐंठ। दूजा धीर—द्वितीय धीरसिंह, उम्मेदसिंह। छाजे—शोभित हुवे।

४ थोक—समूह। कना—पास से, अथवा। सहावौ—अपने मे थोथा गर्व करने का भाव। ताहरा—तेरे। पाज—पाल, मर्यादा।

१ खग तोल—तलवार को प्रहार हेतु ऊपर उठाते हुए। आपहमलौ—स्वेच्छाचारी योद्धा। यसो—ऐसा। पलौ—वस्त्राञ्चल। मीच—मृत्यु का। कमळ—सिर। ऊपरा थका—ऊपर रहते हुए। सूपै—दूसरो के सुपुर्द करे। जिका—जिनको। भीच—वीर, योद्धा।

अभग छळ राव आवेर दळ आवता,
उजाळी सरव सेखावता ओघ ।
जमी न पडै भ्रगुट कट दुरग जावता,
जोध सुत रावता न मानै जोध ।।२।।

प्रवाडा जीत साकौ कर मानपुर,
सधर गिरमेर दीठौ सवाही ।
निळज भुरजाळ भिळता जकौ सिर न दै,
नरा हठमाल हर वदै नाही ।।३।।

सार री भीत जिम् हुवौ उडियै सुरंग,
रूक झट तमासे मीत रीधौ ।
पिसण सैंलोट कर घणा रिण पौढियो,
दियै रजपूत जिम कोट दीवौ ।।४।।

---

२ अभग–वीर, अडिग । छळ–युद्ध, लिए । राव–मनोहरपुर शाहपुरा के महाराव पद वाले शासक । आवेर दळ–जयपुर की सेना । ओघ–औलाद, वश । भ्रगुट–भ्रकुटि, शीश । दुरग–दुर्ग । जोध सुत–जोधसिंह का पुत्र । जोध–योद्धा, वहादुर ।

३ प्रवाडा–यश के कार्य । साकौ–केशरिया वस्त्र धारण कर रण मे प्राणोत्सर्ग करने को साका करना कहा जाता है, युद्ध । सवाही–सवने सभी ने । निळज–निर्लज्ज । भुरजाळ–किला । भिळतां–पराधिकृत होते समय । जिकौ–जो । नरा–पुरुष, वीर । हठमालहर–हठी सिंह का वशज, गीतनायक दलपतसिंह ।

४ सार री भीत–लोहे की भीत्ति । रूक झट–तलवार के प्रहारो के । मीत–मित्र, सूर्य । रीधौ–प्रसन्न हुआ, मुग्ध हुआ । पिसण–पिशुन, वैरी । सैंलोट कर–रणभूमि मे मारकर छितरा दिए । घणा–वहुत । कोट दीवौ–किला दिया ।

२४ गीत ठाकुर जोगीदास सेखावत महरौली रौ

पडै गोळा सरां अलगा उड उड पडै, गयण रथ अडवडै परी गैला ।
किला मत डिगमगै सूर जोगो कहै, परम मौ जीवता न द्यूं पैला ।।१।।
भलाई लाज सेखा धणी मौ भुजा, गरट थट हैमरां करूं गज गैर ।
ओझकै मती छिवती रहे आभ सूं, असन रा तमासा देख आसेर ।।२।।
भडा भुरजाळ हूं जोध रौ महा भड, घडा लख वैरिया हूंत घावै ।
सावतो जितै घड़ ऊपरा मूझ सिर, अतै अरि तूझ नाह आवै ।।३।।
पाड खळ हजारा पछै रण पौढियो, भर पतर ईसुरी रुधर भोगे ।
कमळ पडिया पछै अमल दुसहा कियौ, जीवता दियौ गढ नाह जोगे ।।४।।

---

२४ गीतसार—उपर्युक्त गीत अमरसरवाटी के महरौली ग्राम के ठाकुर जोगीदास शेखावत्त पर रचित है। जोगीदास ने शाहपुरा (मनोहरपुर शाहपुरा) के दुर्ग की शत्रुओ से रक्षा करते हुए प्राण विसर्जन किया था। गीत मे गोले एव बाणो की वर्षा से विचलित दुर्ग को विश्वास प्रदान करते हुए कहा है कि जब तक जोगीदास के धड पर शीश है, तब तक हे किला, तुमको शत्रुओ का भय करने की आवश्यकता नही है।

---

१ सरा—बाण। अलगा—ऊचाई से, दूर से। गयण—आकाश। अडवडै—भीड के कारण शीघ्रता मे आपस मे भिड कर लडखडाते है। परी—अप्सराओ के। गैला—मार्ग मे। सूर—वीर। जोगो कहै—जोगीदास कहता है। मौ—मेरे। न द्यू—नही दूगा। पैला—दूसरो को, उधर वालो को।

२ भळाई—सुपुर्द की है। सेखा धणी—शेखावतो के स्वामी ने, शाहपुरा के शासक ने। मौ भुजा—मेरी भुजाओ। गरट थट—सैन्य समूह। हैमरा—घोडो। ओझकै—चौंके, भयचकित। छिवती रहे—सुशोभित होता रह। आभ सू—आकाश से। असन रा—गोलो के। आसेर—दुर्ग, किला।

३ भडां—योद्धाओ। भुरजाळ हू—बुर्जो वाले से, किले से। जोध रौ—जोधसिंह का पुत्र। घडा—सेना। हूत—से। सावतो—अक्षत, अखडित। जितै—जितने, जब तक। अतै—इतने। अरि—वैरी। नाह—नही।

४ पाड—गिरा कर। खळ—शत्रुओ को। रण पौढियो—रण क्षेत्र रहा। पतर—पात्र। ईसुरी—रण दुर्गा का। कमळ—मस्तक। पडिया पछै—कट कर गिर जाने के पश्चात्। अमल—अधिकार। दुसहा—वैरियो का। जोगे—जोगीदास ने।

२५ गीत ठाकुर जोगीदास सेखावत रौ जुद्ध रौ

मारे वैरिया अखूटी आव भूपाळा खांडियौ मांण,
तेग धारे नकौ पाण छाडियौं तमाम।
वीर राव छळां जाग ताडियां दला रै वैर,
राडिगारे उखेलो माडियौ जोगीराम ॥१॥
खेडै फौजां चहुवळा फतै आसमान खाटै,
काहुळा नीघसै जागी ऊपटे क्रोधार।
केवै लाग आत रै नाथ रै आगे वळाकारी,
जोध रौ धूखळा करै हमेसा जोधार ॥२॥
तोडै वका मेवासा वरत्ती आण जठी तठी,
आग तत्ती लोह लठी आराण अबीह।
जूथ घोडा भडां लीधा पाट-पत्ती छठी जागे,
दूजौ हठी वरत्ती धूपटै ऊगे दीह ॥३॥

---

२५ **गीतसार**—ऊपरांकित गीत ठाकुर जोगीदास उग्रसेनोत शेखावत कछवाहा पर कथित है। जोगीदास ने मनोहरपुर शाहपुरा का पक्ष तथा दलपतसिंह के प्रतिशोध को लेकर जयपुर की सेना मे लडाई लडी थी। गीत मे उसको राठौड वीर दुर्गादास के समान वीर अकित किया गया है। जोगीदास ने जयपुर के इलाको मे धावे मार कर आतकित कर दिया था।

---

१ अखूटी—जो समाप्त न हुई थी। आव—आयु। भूपाळा—राजाओ का। खाडियौ—खडित किया, खवित किया। माण—मान, प्रतिष्ठा। तेग धारे—तलवार ग्रहण करे। नकौ—कोई नही। पाण—वल, शक्ति। छाडियौ—त्याग दिया। छळा—युद्धो। ताडियौ—दहाडा। दला रै—दलपतसिंह के। राडिगारे—युद्ध प्रेमी। उखेलो—युद्ध। माडियौ—रचा, किया।

२ खेडै—प्रस्थान करे। चहुवळा—चौतरफ। फतै आसमान खाटै—आकाशी फतह प्राप्त करता है, जहा आक्रमण करता है वही सहजता से विजय लाभ करता है। काहुळा—विषम, भयानक, वाद्य विशेष। नीघसै—वजते हैं। जागी—नगाडे। ऊपटे—उमड कर, वढ कर। क्रोधार—क्रोधान्वित हो। केवै—वदले, प्रतिशोध। नाथ रै—स्वामी के अथवा महाराव नाथूसिह शाहपुरा मनोहरपुर के। वळाकारी—महावली। जोध रौ—जोधसिंह का पुत्र। धूखळा करै—युद्ध करता है। जोधार—योद्धा।

३ तोडै वका मेवासा—दुर्गादि विकट आश्रय स्थलो का नाश करता है। वरत्ती—हुई। जठी तठी—जहाँ तहाँ। तत्ती—तप्त। आराण—युद्ध। अबीह—निडर। जूथ—समूह। भडां—योद्धाओ। पाटपत्ती—पट्टाधिकारी। छठी जागे—सहायतार्थ उद्यत हो कर। दूजौ हठी—अभिनव हठीसिह। धूपटै—अधिकार मे लेता है, लूटता है। ऊगे दीह—प्रतिदिन, सूर्योदय होते ही।

राठौड़ा दुरगा जेम कूरमा आज जोगीराम,
जोड़ै नकौ राज बसी तीजौ भीच जेण ।
राव लूणक्रण रा थान री भुजा लाज राखी,
सारा सेखा समाजा गरब्वे उग्रसेण ।।४।।
—बनजी खिडिया रौ कह्यौ

२६ गीत राव जगतसिंघ सेखावत कासली रौ

करग झालि किरमाळ लकाळ जगता कंवर,
खळा खैकाळ रिणताळ खानै ।
तौ जही काळ सू चाळ बाँधै तिके,
त्या सू खड़ै टाळि कांनै ।।१।।
तेज वळवन्त सावन्त स्यामे तणा,
खडग झळकत खळकत खापे ।
अन्त सू होइ चौदन्त तौ जिम अडै,
अन्त त्या हूंत टळि खडै आपे ।।२।।

---

२६ गीतसार—उपर्युक्त गीत सीकर के रावराजा के पूर्वज राव जगतसिंह शेखावत कासली के स्वामी पर सर्जित है। कवि कहता है कि हे कुमार जगतसिंह, तूं खड्ग धारण कर शत्रुओ का रणस्थल मे सहार करता है। तेरी तरह जो यमराज का अञ्चल पकडे उनसे वह भी भय खाते हुए एक ओर बच कर निकलता है।

---

४ राठौडा दुरगा जेम—राठौड क्षत्रियो मे दुर्गादास राठौड की ज्यो। कूरमा—कछवाहो मे। जोडै—बराबर, समतुल्य। नकौ—कोई अन्य नही। राजबसी—अन्य हाडा सीसोदियादि राजकुलो मे। तीजौ—तीसरा। भीच—योद्धा। थान री—स्थान की। राखी—रक्खी। सेखाँ—शेखावतो मे। गरब्वे—गर्व करता है। उग्रसेण—उग्रसेन जिसकी सतति परम्परा मे गीतनायक था।

१ करग—कराग्र, हाथ। झालि किरमाळ—तलवार ग्रहण कर। लकाळ—सिंह, बहादुर। खळा—दुश्मनो का। खैकाळ—नाश, सहार। रिणताळ—रणभूमि, रण समय। तौ जही—तेरी ज्यो। काळ सू—मौत से। चाळ बाघे—पल्ला पकडे, कमर कसे। खडै—चलता है। टाळि कानै—एक ओर बहाना बना कर, एक तरफ बच कर।

२ वळवन्त—बलवान। सावत—सामन्त, महान् वीर। स्यामे तणा—राव श्यामराम के पुत्र जगतसिंह। खडग—तलवार। झळकत—चमकती। खळकत—खनकती, खडकती। खापे—म्यान से बाहर। अन्त सू—यमराज से। चौदन्त—आमने-सामने, चौनजरें। अडै—सामना करे, मुकाबिला करे। त्या हूत—उनसे। खडै—चले। आपे—अपने आप ही, स्वय।

२८ गीत राव सिवसिंघ सेखावत सीकर रौ

रैंणा ऊजाळ अठेल रूका भाराथ आमरखां,
सोहै गढा सीस हकां पाथ ज्यूं समाथ ।
आगाहटां हाथियां वरीस हाथ तूझवाळा,
हीलोळै छखडा खुरासाणा तूझ हाथ ।।१।।

केवियां ऊधाम सैला उडडा भेळणा किलां,
ओपै हेट हेट खडा खड जैतवार ।
समाप गयदा गावा भूडडां तुहाळा सिवा,
धकावै दिलेस थडा भूडडा जोधार ।।२।।

२८– गीतसार–प्रोक्त गीत शेखावाटी के सीकर राज्य के शासक राव शिवसिंह शेखावत की वीरता एव उदारता का परिचायक है। कवि कहता है कि हे शिवसिंह, तुम्हारे हाथ कवियो को गज एव ग्राम देने तथा मुसलमानो की सेनाओ को युद्ध मे विचलित करने मे सशक्त हैं। अत इस कलिकाल मे दान और वीरता की तुम्हारी कीर्त्ति गाथा समुद्र पर्यन्त फैल गई है।

---

१ रैंणा–पृथ्वी। ऊजाळ–उज्ज्वल। अठेल–अविचल। रूका–खड्गो। भाराथ–युद्ध। आमरखा–अमर्षता रखनेवालो, वैरियो। सोहै–सुन्दर लगता है, शोभा पाता है। गढा सीस–दुर्गों पर। हका–हमला, हाक। पाथ–पार्थ, अर्जुन। समाथ–समर्थ, बलवान्। आगाहटा–चारण, राव आदि याचको, कवियो को। वरीस–दान करने। तूझ वाळा–तेरे वाले, तुम्हारे। हीलोळै–आन्दोलित करे। खुरासाणा–खुरासान देश वालो, मुसलमानो।

२ केविया–शत्रुता रखनेवालों। ऊधाम–उत्पात, युद्ध। सैला–भालों। उडडा–घोडो। भेळणा–आक्रमण कर अधिकार मे लेना। ओपै–शोभित होते है। खडा खड–खण्ड प्रति खण्ड, भूखण्ड। जैतवार–विजय करने वाला। समाप–समर्पित कर, दान देकर। गयदा–हाथियो। गावा–ग्रामादि भूमिदान। भूडडा–भुजदण्ड। सिवा–हे राव शिवसिंह। धकावै–पीछे हटावे। दिलेस–दिल्लीश्वर, बादशाह। थडा–सेना, समूह। जोधार–योद्धा।

सोहै जागीरोड धूसां दला रा बेछाड सेखा,
वकै सांच औनाड पांडवा मुदी वाच।
ऊपड़े गैजूह आगाहटा धाड धाड आचा,
ऊथाळे जवन्ना धाड धाड आच ।।३।।
पूगी कीत चहुकूटा अपार समदा पार,
लगाया पागडे घणा दावादार लार।
सोहै मठी वार तू उदार अनै वार सिवा,
सार धार आचार ससार सिरै सार ।।४।।

२६ गीत राव सिर्वासघ सेखावत सीकर रौ

कळू माभ पाराथिया भोज वीकम करण,
अनत नी आथिया मेळणा आथ।
साथिया देख दै वलिवा सिवपति,
हाथिया दाण ऊपाडिया हाथ ।।१।।

---

२. गीतसार—उपराकित गीत सीकर के अविपति राव शिर्वासह शेखावत की वदान्यता से सम्वन्धित है। कवि कहता है कि याचना करने पर वह प्रसिद्ध दानी राजा भोज विक्रमादित्य और कर्ण की भाति धन वितरित करने वाला है और विरोव करने वालो का उन्मूलन करने मे समर्थ है। उसने कवियो पर प्रसन्न होकर उन्हे 'हाथी बध' जीविका के स्वामी वना दिए।

---

३ जागीरोड—नगाडो की निनाद ध्वनि, नगारचियो द्वारा नगाडो को वजाए जाने। धूसा—वादित्र विशेष, वडा दमामा। दलारा—राव दौलतसिंह तनय राव शिर्वसिंह। वेछाड—विकटवीर। सेखा—शेखावत। वकै—कहता है। औनाड—किसी के समक्ष न झुकने वाला, अनम्र। पांडवा मुदी—पाण्डवो मे मुख्य, युधिष्ठिर। वाच—वाणी। ऊपडे—उमडे, मर्यादा से वाहर निकल कर। गैजूह—गजसमूह। आगाहटा—दान, याचको को ग्रामादि देना। ऊथाळे—उन्मूलन करे। धांड धाड—धन्य धन्य, आक्रमण। आचा—भुजाओ, हाथो।

४ पूगी कीत—कीर्त्ति पहुची, यश फैला। चहुकूटा—चारो दिशाओ मे। समदा पार—समुद्रो के उस पार तक, समुद्रो के आगे उस ओर तक, विदेशो मे। लगाया पागडे—अधीन वनाए। घणा—घने। दावादार—अपना हक जताने वाले, भागीदार। लार—पीछे, आज्ञानुवर्त्ती। मठीवार—वुरे समय मे, दुर्दिनो मे। अनै वार—अनेक वार, अन्य समय। सारधार—खड्ग धारा। आचार—आचरण, दानादि व्यवहार। सिरै—श्रेष्ठ, पात्क्तेय।

१ कळू माभ—कलियुग मे। पाराथिया—प्रार्थियो को, याचको को। अनत नी—अन्य लोगो की। आथिया—धनवानो की। मेळणा—मिलाने वाला, लूटने वाला। आथ—अर्थ, धन। सिवपति—राव शिर्वसिह। दाण—दान, मद। ऊपाडिया—उठाया, दानादि दिए हुए।

अतुळवळ धरण खग गगहर आभरण,
जग अजरा जरण करण जोडे।
मरण सू अड़े तौ जेम माडे मरण,
मरण त्या आगळी चरण मोड़े ।।३।।

कूत हथ जगा जम हूत वादे कळह,
टळै जमदूत त्या हूत त्रहियै।
तिके अवधूत विपरूत तौ सारिसा,
कारणाभूत रजपूत कहियै ।।४।।

—कुम्भा दसोवी रौ कह्यौ

२७ गीत राव सिवसिंघ सेखावत सीकर रौ

सत सूरित सहत सेवा प्रथमी सिरि, वित देणा अठारह वरग।
जगत सधार राजि राजा रा, रिण कटका आडा करग ।।१।।

---

२७ गीतसार-ऊपर लिखित गीत शेखावाटी के सीकर राज्य के शासक राव शिवसिंह शेखावत की युद्ध वीरता एवं दान वीरता की श्लाघा में रचित है। कवि कहता है कि राव शिवसिंह अपनी भुजाओं से दरिद्रता और शत्रुता का नाश कर डालता है। उसके हाथ अशरण के शरणदाता हैं। वह गिरते हुए आसमान को भुजाओं से रोक देने जैसा समर्थ है।

---

३ अतुळ वळ—अतुल्य शक्तिशाली। खग—तलवार। गंगहर आभरण—राव गंगाराम के कुल भूषण। अजरा जरण—जबरदस्तो को मातहत बनाने वाला, स्वाधीनो को अधीन बनाने वाला, शिव। जोडे—बराबरी करने वाला। तौ जेम—तुम्हारी तरह। मरण—मौत। आगळी—आगे, समक्ष। चरण मोडे—पीछे की ओर हट चले।

४ कूत—तलवार, भाला। हथ—हाथ। जगा—कुवर जगतसिंह। जम हूत—यमराज से। वादे—विवाद करे। कळह—युद्ध, विपत्ति। टळै—बच कर निकले। त्रहियै—डरपता-भय मानता। तिके—वे। सारिसा—सदृश। कारणा भूत—कारण स्वरूप, कार्य सिद्धि का कारण। रजपूत—राजपूत, क्षत्रिय।

१ सत—शक्ति, सत्व। सेवा—गीतनायक राव शिवसिंह। प्रथमी सिरि—पृथ्वी पर, भूलोक पर। वित देणा—दातार। अठारह वरग—अठारह वर्णों को। जगत सधार—संसार में निराश्रितो को आश्रय देने वाला। राजि—आपका, तेरे। कटका—सेनाओ। आडा—ओट, रक्षक। करग—हाथ।

दळ मेळ थभ हाथ दौलावत, दुजड़े खळ बाहणा बळ धीठ ।
वोळै कुरिन्द समद विरोळै, गिरद उतोलै तसा गरीठ ।।२।।

करणा दुरड वयड घड कूरम, महियड़ वळि बड समर मड ।
घूण नव खड प्रचण्ड अधारे, डिगता व्रह्म ड भुजा-डड ।।३।।

पौरिस वरा काम रा पिडि भव, व्रवण लखा लाख रा चीत ।
चरा सिणगार ऊधरा धजबध, जसवन्त हरा करा जग जीत ।।४।।

आरण धीग ससार ऊपरा, धारण धजवड़ अनड धुज ।
थाभे गयण तिसा भुज थारा, भाजे बारण तिसा भुज ।।५।।

---

२ दळ मेळ—सेनाओ के शस्त्रसघात करते समय । थभ—स्तम्भ । दौळावत—दोलतसिंह पुत्र राव शिवसिंह । दुजडे—तलवार । वाहणा—चलाने, प्रहार करने वाला । बळ धीठ—महावली, दुर्धर्ष वीर । वोळै—डुवोवे, नाश करे । कुरिन्द—दारिद्य । बिरोळै—विलोडे । गिरद—पर्वत । उतोळै—ऊपर उठा लेवे । तसा—तैसे, वैसे । गरीठ—बलवान्, महाबली ।

३ दुरड—काट कर टुकडे करना । वयड—हाथी, घोडे । घड—सेना । कूरम—कूर्म, कछवाहा शिवसिंह । महियड—पृथ्वी तल पर, नरलोक मे । वळि बड—महान् बली । समर मड—युद्ध लड कर । घूण—झकझोर कर, मथन कर । अधारे—आधार, सहारा । भुजा-डड—भुजदण्ड, बाहुदण्ड ।

४ पौरिसवरा—श्रेष्ठ पौरुषवान् । काम रा—सुकार्यों का । पिडि भव—पृथ्वीलोक, युद्धस्थल । व्रवण—देने वाला । ऊधरा—ऊर्ध्व, उदारता । धजबध—राजा,वीर । जसवन्तहरा—जसवन्तसिंह का पौत्र । करा—हाथो के ।

५ आरण—रणभूमि का । धीग—जबरदस्त योद्धा । धजवड—तलवार । अनड—स्वतत्र, किसी की अधीनता स्वीकार न करने वाला, अनम्र । धुज—श्रेष्ठ, योद्धा । गयण—गगन, आकाश । थारा—तेरे, तुम्हारे । भाजे—नाश करे । बारण—हाथी । तिसा—वैसे सशक्त । भुज—हाथ ।

झलां व्रद झूल अविरच पला झालिया,
सुपह आपहमला परखणा साच ।
अड़सगर जला पाड़ण गजा ऊपाड़ण,
उठाया दला सभ्रम चला आच ।।२।।

असी चव वंध रूपक गुणां आदरैं,
विभौ छत्रवध कूरम वणी वार ।
प्रथी ऊपर थिया आच घजवध पणौ,
कविन्द गजवध किया भणै कै वार ।।३।।

३० गीत राव समर्थसिंघ सेखावत सीकर रौ

वाका रावतां दरगह थाट सेखावता रूप वणै,
ऊफणै अमामे जोम पौरिस मे अथाह ।
सेवा रौ अजानवाह सामरथो महासूर,
नीपणा निवाजे छाजै राजै नरा नाह ।।१।।

---

३०. गीतसार—यह गीत राव शिवसिंह के पुत्र राव समर्थसिंह शेखावत सीकर की उदारता पर सर्जित है। कवि कहता हैं कि समर्थसिंह की सभा मे वहादुर सरदारो का ठाट लगा रहता है। वह प्रतिष्ठा और पौरुष मे सदैव गौरवान्वित रहता है। कवियो को ग्राम, हाथी और अश्व वख्शता रहता है।

---

२ व्रद—विरुद। झूल—समूह। पला झालिया—वस्त्र का छोर पकडे हुए। सुपह—योद्धा, राजा। परखणा—परीक्षा करने, पहिचानने। अडसगर—विरोध रखने वालो, शत्रुओ। ऊपाडन—उन्मूलन। दला सभ्रम—राव दलेलसिंह का भ्रम देने वाला, दलेलसिंह तनय शिवसिंह। आच—हाथ।

३ असी चव—चौरासी। रूपक—गीत छंदो। आदरैं—आदर करने, स्वीकार करने। विभौ—वैभव। छत्रवध—राजा। वणी वार—शुभ वेला, समय आने पर। थिया—हुए। गजवध—जिनके यहा हाथी वँधे रहते हैं, वडे कवि। भणै—कहे। कै वार—कई वार।

१ दरगह—दरवार, सभा। थाट—सेना, समूह। ऊफणै—उवले, उमडे। अमामे—अप्रमाण, वहुत। जोम—गर्व। अथाह—अपार। सेवा रौ—राव शिवसिंह का पुत्र राव समर्थसिंह। सामरथो—समर्थसिंह। नीपणा—याचको, चारणों। निवाजे—प्रसन्न होकर दान देता है। छाजै—शोभित होता है। राजै—शोभित होता है, रजन करता है। नरा नाह—नरेश, राजा।

बांकड़ा विडगा वाली गिडगा अनेक गाज,
सारसी करता द्वारि सोहियौ सुडाळ।
घणा आडो जाडे लोहे गाह्डी रौ गाडो गिणा,
लाज पुज कीत लाडो ओपियौ लकाळ ॥२॥

फूल मदा प्याला फिरै भूजाई अनेक भाति,
ऊपर कपूर पान अरोडी अमल्ल।
केसर गुलाब आब किसतूरी सौधा केई,
माणै माया महिपती राज मे महल्ल ॥३॥

साख साख ओळखै अनेक भूप सेवा काज,
लाख लाख गावै कै रीझावै तान लाय।
लाख लाख मौजा हुवै लोहे भाजे फौज लाख,
प्रथी सारी लाख लाख लागै आय पांय ॥३॥

---

२. बाकडा—बाँकुरे, विकट। विड़ंगा—घोडो। वाली—प्यारी, सुहावनी, वाली, की। गिडगा—ऊँटो की। गाज—गर्जना। सारसी—मस्ती। द्वारि—दरवाजे पर, द्वार पर। सोहियौ—सुहावना लगा। सुडाळ—शुण्ड वाला, हाथी। घणा—बहुतो के। आडो—ओट। जाडे लोह—सघन शस्त्र प्रहार होते। गाहडी रौ गाडो—अत्यत गर्वीला, महा अभिमानी। लाज पुज—लज्जा-पुज। कीत लाडो—कीर्त्ति का वरण करने वाला, कीर्त्ति का दुलहा। ओपियौ—शोभित हुआ। लकाळ—सिंह, तेजस्वी वीर।

३ फूल मदा—शराब विशेष के। भूजाई—लोहे अथवा बास की खपचियो पर अगारो के ताप से पकाया हुआ मास। अरोडी अमल्ल—केशर-कस्तूरी के पुट से तैयार किया जाने वाला एक प्रकार का बढिया अफीम। आव—जल। सौंधा—सुगधित पदार्थ। माणै—उपभोग करता है, खर्चता है। माया—धन।

४ साख साख—क्षत्रियो की प्रत्येक शाखा वाले। ओळखै—पहिचानते हैं, जानते हैं। सेवा काज—राव शिवसिंह के कारण, शिवसिंह की अति परिचिति एव प्रसिद्धि की वजह से। रीझावै—प्रसन्न करते हैं। मौजा—दान, प्रसन्न होकर द्रव्य, भूमि, वाहन आदि देना। लोहे भाजे—युद्ध मे शस्त्रो से मारे। प्रथी सारी—समस्त ससार, समग्र पृथ्वी लोक के निवासी। लागै आय पाय—सेवा मे उपस्थित होकर चरण स्पर्श करते हैं, अधीनता स्वीकार करते हैं।

भुजा लाख सिरा ताज भेटिया कुरिद भाजे,
सकाजा सकाज आज सोहियौ सधीर ।
झरोखा अनोखा गोखा कूरमा रौ रांव झिलै,
किले बागा जैतखभ अग्राजे कठीर ।।५।
करावा सरावा पीजै गोठिया दपट्टा कीजै,
लोभिया सुधन दीजै लीजै जस लाह् ।
ईढगारा नरा हूत आचार सार रै आज,
दला हरो भारी ब्रद धारिया दुवाह ।।६।
नाहरा रावता लीधा नगारां अकासा नाद,
सारधारा जीपणो अखाडे महासूर ।
दीहाडे सवाडे आज प्रवाडा गवाडे दूठ,
चोडै धाडै चापडे पछाड़े सत्रा चूर ।।७।।
जसा स्याम गग राव राइसाल सूजै जिसा,
लीवा भुजा संघणा मलैसी वाला लाज ।
कवेसरा भाग भूरौ घणा दीह राज करौ,
सामरथो अेता पाटि सोहियौ सकाज ।।८।।

---

५ सिरा ताज–सरताज, शिरोमणि । भेटिया–मुलाकात करने पर, मिलने पर । कुरिद–दरिद्रता, निर्धनता । भाजे–नाश करे । सकाजा–कार्यार्थियो के । सोहियौ–सुन्दर लगा । झरोखा–गवाक्षो । गोखा–वातायनो । कूरमा रौ–कछवाहो का राजा । झिलै–वैभव मे पूर्ण, शोभित हुए । बागा–उद्यानो । जैत खभ–विजय स्तम्भ, महावीर । अग्राजे–गर्जना करता है । कठीर–सिंह, प्रचण्ड वीर ।

६ करावा–पेय पदार्थ, मद्य । सरावा–मदिरा । गोठिया–दावतें । दपट्टा कीजै–खूब खाना-पीना । जस लाह्–यश लाभ । ईढगारा–बराबरी करने वालो, ईर्ष्यालुओ । हूत–से । दला हरो–दलेलसिंह का पौत्र । भारी–बडा । ब्रद–विरद । दुवाह–दोनो हाथो से शस्त्र प्रहार करने वाला ।

७ सारा धारा–खड्ग धाराओ । जीपणो–विजय करने वाला । अखाडे–युद्ध मैदान मे । दीहाडे सवाडे–प्रतिदिन प्रभातकाल मे । प्रवाडा–विरदावली काव्य । गवाडे–गान करवाता है । दूठ–वीर । चापडे–युद्ध मे । पछाडे–पराजित करे । चूर–नाश, चूर्ण ।

८ जसा स्याम · · सूजैजिसा–जसवतसिंह, स्यामराम, गगाराम, राव तिरमल्ल, राज रायसल, राजा सूरजमल्ल जैसे । मलैसी–राजा मलयसिंह । वाला–राव वालाजी । लाज–लज्जा । भूरौ–सिंह, वीर । घणा दीह–बहुत दिनो तक । अेता–इतने को । पाटि–सिंहासन । सोहियौ–शोभित हुआ ।

३१ गीत राव देवीसिंघ सेखावत सीकर रौ

ग्रंथा पैराका ग्रेराका खेत वैराका सुथड ग्राहा,
जुद्ध रूका सैराका तेज छाका जुधार।
वाका ज्यू वळाका भीम भुजाका साचा भूप,
देवौ दूथिया वैंडाका भडा ग्ररघै उदार ॥१॥
गीतां भेद चीतां झप लीतां गीता सात्रा गढा,
भारथी समाथ रथी पारथियां भेस।
वाणां कथा डाणां तत्तां पाणां सत्रां घाणा बदै,
नीपणा केकाणा नरा चद रौ नरेस ॥२॥
ग्रारोधीस येडा मड ऊचश्रवा पड ग्रसी,
वाचा जे प्रलव त्राचा ग्राचाग विभाड।
उरगा ग्रभासी रगा प्रभा जगा जीप ग्रगा,
वीदगा तुरंगां जोधा रखै बांमराड ॥३॥

---

३१. गीतसार—यह गीत सीकर नरेश देवीसिंह शेखावत के पराक्रम तथा वदान्यता पर कथित है। इसमे कवि ने लिखा है कि युद्ध ग्रौर दान की कीर्त्ति कथा श्रवण कर राव देवीसिंह कवियो, योद्धाग्रो ग्रौर घोडो की छान-वीन कर उन्हें खरीद लेता है ग्रर्थात् ग्रति सम्मानित कर ग्रपने वना लेता है।

---

१ ग्रथा पैराका—काव्य ग्रथो की रचना मे प्रवीण। ग्ररोका खेत—रणक्षेत्र मे काम ग्राने वाले हयराज, ईराक क्षेत्र के घोडे। वैराका सुथड ग्राहा—वैरी समूह को पकडने मे समर्थ योद्धाग्रो। रूका—तलवारो। सैराका—वरावरी वालों मे। छाका—छके हुए, ग्रापूर्ण। जुधार—योद्धा। वाका—विकट। वळा का—वलवान। भीम भुजा का—भीम जैसा भुजवली। दूथिया—कवियो को। वैडाका—घोडो। ग्ररघै—पूजा करता है, सम्मानित करता है।

२ गीता भेद—गीत छदो के भेद। चीता—चित्त मे। झप लीता—कूदान लेते। सत्रा गढा—शत्रु दुर्गों को। भारथी—भारत, युद्ध मे। समाथ—समर्थ। पारथिया—ग्रर्जुन के, प्रार्थना करने पर। वाणा—वाणी। डाणा—चाल। तत्ता—तेज। पाणा—वल। घाणा—घमासान, मथने, मारने। बदै—वन्दना करता है। नीपणा—कवियो। केकाणा—घोडो। नरा—योद्धाग्रो। चद रौ—राव चाँदसिंह का पुत्र राव देवीसिंह।

३ ग्रारोधीस—शस्त्र, रोकने वाले। येडा—ऐसे। ऊचश्रवा—उच्चै श्रवा। पड—शरीर। वाचा—वचन के। प्रलव—लम्बी। त्राचा—कूदान। ग्राचाग—भुजाएँ। विभाड—विनाश करने वाले। उरगा—वक्षस्थल। जीप—जीतने वाले। वीदगा—विदग्धो। बामराड—जबरदस्त।

सेस वाणी सथा घाट काठयाणी दती सूडा,
जीहा अम्मी जम्मी धावा धावा सत्रां जंद ।
वायका कहावा नगा तावा अंगा वाहा वका,
रेणवा त्रिड़गा वीरा परक्खै राजद ।।४।।

कविंदा सजोडा राखि चहूओडा कीत कथै,
साकुरा तातोडा रीवै प्रससे सादेस ।
लडाळा अरोडा भडा पाण सत्रा भौम लीधी,
दीधी झोक राजा सके मीढ रा आदेस ।।५।।

सेवा दला जसा स्याम गग राव रासा जिसा,
येता भूपा वूजळा व्रणा पाळ आप ।
पडा रावता छतीस वस तणौ पती,
प्रथीनाथ तपौ देवौ चौगणौ प्रताप ।।६।।

—नवलराम कविया रौ कह्यौ

---

४ सथा—सहिता । घाट काठयाणी—काठियावाड स्थान के । दती—हाथी । सूडा—शुण्डधारी । जीहा अम्मी—जिह्वा से अमृत वाणी बोलने वाले । जम्मी धावा—पृथ्वी पर दौडने वालो मे । धावा सत्रा—शत्रुओ पर धावा मारने वालो । वायका कहावा—यश कथा काव्य कहलवाने वाले । नगा तावा—हाथियो से तेज गति वाले । अगा वाहा वका—शरीर वल तथा विकट भुजा वाले । रेणवा—कवियो । विड़गा—घोडो । परक्खै—परीक्षा करता है ।

५ चहु ओडा—चारो तरफ । साकुरा—घोडे । तातोडा—तेज गति वाले । रीवै—प्रसन्न हो । लड़ाळा—जूझने वाले । अरोडा—जवरदस्तो । पाण—भुजाएँ, वल । झोक—धन्य, वाह । सके—शकित, डरते हैं । मीढ रा—वरावरी वाले । आदेस—नमस्कार, आज्ञा ।

६ सेवा दला' ' ' रासा—राव शिवसिंह, दौलतसिंह, जसवन्तसिंह । श्यामराम, गगाराम राव तिरमल्ल और राजा रायमल जैसे । येता—इतने । वूजळा—उज्ज्वल । व्रणा पाळ—पट् वर्णो का पालक । पडा—आप, शरीर का । तपौ—राज्य करो । देवौ—देवीसिंह ।

३२ गीत राव देवीसिंघ सेखावत सीकर रौ

आया असुराण खडै धर ऊपर, प्रगट करै खत्रवट पणौ।
दुजडा पाण राखियौ देवा, तै पाणी ढूंढाड तणौ ॥१॥
अनमी कध चद रा अवतारी, साहा दळ आया सबळ।
चवदा चाळ तणौ बध-चाळा, जुध कर तू राखे सुजळ॥२॥
जग सारे आछत छत जांणी, खागा जुध जुध जैतखभ।
अमरसरा राखियौ अणभग, आबानयरि धरा चौ अभ ॥३॥
सामत रूप दूसिरा सेवा, पाथ करण जुध धीर पुडीर।
रवदा भाज पाधरा रूका, नरद गिरा चाढियौ नीर ॥४॥

---

३२ गीतसार—यह गीत राव देवीसिंह शेखावत सीकर के स्वामी पर सर्जित है। इसमे राव देवीसिंह द्वारा जयपुर राज्य की ओर से युद्ध मे शाही सेना के विरुद्ध लड कर विजय प्राप्त करने का सकेत है। देवीसिंह ने नजबकुली और मुरतजाअली शाही सेनानायको को तवरावाटी के सिरोही और रामगढवाटी के खाटू स्थानो पर युद्ध कर पराजित किया था।

---

१ असुराण—मुसलमान। खडै—प्रस्थान कर। खत्रवट—क्षत्रियत्व। दुजडा पाण—खड्ग बल से। देवा—देवीसिंह। तै—तुमने। पाणी—काति। ढूंढाड—जयपुर राज्य का प्राचीन नाम। तणौ—का।

२ अनमी कध—जो अपना कधा न झुकने दे, महान् बली। चद रा अवतारी—राव चांदसिंह का अवतार, देवीसिंह। साहा दळ—शाही सेना। सबळ—बलवान। चवदा चाळ—चौदह परगने। बंध-चाळा—वस्त्रो के पल्ले बांध कर, राजा। सुजळ—कीर्ति।

३ सारे—समग्र। आछत—अभाव, छिपे रहने का भाव, टोटा। छत—पृथ्वी, छत्र, राजा। खागा—तलवारो। जैतखभ—विजयस्तम्भ, दुर्धष वीर। अमरासर—शेखावतो की प्राचीन राजधानी का नाम, अमरसर पर राज करने वाला। अणभग—अखड, अटल, बहादुर। अबानयरि—आमेर। धरा चौ—राज्य को। अभ—आब, काति, जल।

४ दूसिरा सेवा—द्वितीय राव शिवसिंह, राव देवीसिंह। पाथ—पार्थ, अर्जुन पाण्डव। करण—राजा कर्ण, करने वाला। जुध—युद्ध। धीर पुडीर—सम्राट पृथ्वीराज चौहान का प्रसिद्ध सामन्त धीरपुडीर। रंवदा—मुसलमानो का। भाज—संहार। पाधरा रूका—सीधी तलवारो से। नरद—राजा। गिरा चाढियो नीर—पर्वतो को कीर्तिमान् किया।

पौढा जिम चढियौ परमाणै, जाणै न्रप उपगार जूवौ।
तनसा सौच हुवौ तुरकाणै, हिंदवाणै उदमाद हूवौ ।।५।।

३३ गीत राव देवीसिंघ सेखावत सीकर रौ

दिये ग्रेरापती रूप रा गयंदा ग्रागाहटा दान,
ग्राकारीठा धूप रा विरद्दा लीधा ग्राद।
जावूदीप ऊपरा मंगळी डका ग्राठ जाम,
सेखावता भूप रा रणकैं जैत साद ।।१।।

इलोळा सासणा मौजाक दातारा इद,
मगजी सार रा कोट धारियां मरोड।
रैण धू ग्रडोल ग्रेण वार रा वीजाई रासा,
ग्राचार रा घूरै तासा ताहरा ग्ररोड ।।२।।

---

३३ गीतसार—उपर्युक्त गीत शेखावाटी के सीकर सस्थान के राव देवीसिंह शेखावत के दान ग्रौर वीरता पर सर्जित है। कवि ने गीत मे लिखा है कि देवीसिंह याचको को ऐरावत हाथी जैसे हाथी दान मे देता है। उसकी उदारता ग्रौर वीरता के यश का घोप ग्राठोयाम जम्बूद्वीप मे गूजता रहता है। इस समय वह ग्रपने यशस्वी पूर्वज राजा रायसल की समता करता है।

---

५ पौढा—प्रौढ, चतुर। जिम—ज्यो। जाणै—जानता है, मानो। उपगार—उपकार। जूवौ—ग्रलग, पृथक। तुरकाणै—मुसलमान राज्यो मे। हिंदवाणै—हिन्दू प्रान्तो मे, हिन्दू समाज मे। उदमाद—हर्ष, ग्रानद।

१ ग्रेरापती—इन्द्र का हाथी ऐरावत। रूप रा—ग्राकृति का। गयदा—हाथियो। ग्रागाहटा—चारणो ग्रादि को दिए गए दान के ग्राम। ग्राकारीठा—महाघोर सग्राम। धूप रा—तलवार के। विरद्दा लीधा—विरुद ग्रहण किए। ग्राद—ग्रादिकालीन, पूर्व परम्परागत। जावूदीप—जम्वू द्वीप। मगळी डका—मागलिक ध्वनि। ग्राठ जाम—ग्राठोयाम। रणकैं—वजते हैं। जैत्र साद—विजयनाद, जय घोप।

२ इलोळा—हिलोर, लहर। सासणा—चारण कवियो को दान मे प्रदत्त ग्राम ग्रौर भूमि को 'सासण' कहा जाता है। ऐसे ग्रामो पर किसी प्रकार का लगान ग्रादि नही लिया जाता है। इद—इन्द्र। मगजी—मगज, गर्व भरे। सार रा कोट—लोह दुर्ग, जवरदस्त वीर। धारिया—धारण किए हुए। मरोड—ऐंठ। रैण धू—पृथ्वीलोक मे ध्रुव की भांति। ग्रडोल—ग्रटल, ग्रडिग। ग्रेण वार रा—इस समय का। वीजाई रासा—द्वितीय राजा रायसल सदृश राव देवीसिंह। घूरै—घोप करते हैं। तासा—वाद्य विशेप। ताहरा—तेरा, तुम्हारा। ग्ररोड—नही रुकने वाला, वलवान्।

पती सुरा चीत रा देवाळ करी ताकवा पत्रा,
झोक जगा जीत रा धननजै क्रोध झाळ।
चीत रा अथाग जोस ध्राहुड़े बिजाई चद,
ताबाळा भूलोक माथै क्रीत रा त्रबाळ ।।३।।

इद रवि साज रा सिंधुरा गावा दैण आथ,
दोयणा समाज रा दैवाळ जंगा दाह।
वडा भप देवसा आज रा झोका दान बाता,
राज रा नीधसे डका सिरै दहू राह ।।४।।

---

३ पति सुरा चीत रा—देवराज इन्द्र के समान उदार चित्तवाला, महादानी। देवाळ—दानदाता, देनेवाला। करी—हाथी। ताकवा—कवियो, चारणो को। पत्रा—ताम्रपत्र देकर ग्रामादि। झोक—धन्य धन्य। जगा—युद्धो। जीत रा—विजय का। धननजै—अर्जुन। क्रोध झाळ—क्रोधाग्नि, कोपानल। चीत रा—चित्त के। अथाग—अथाह, उदार। ध्राहुडे—गर्जन करे, भस्म करे। बिजाई—द्वितीय। चद—गीतनायक का पिता राव चाँदसिंह शेखावत। यहाँ देवीसिंह को अपने पिता के समान पराक्रमी कहा गया है। ताबाळा—ताम्रपत्रो, नगाडो। माथै—पर। क्रीत रा—कीर्ति का। त्रबाळ—नागडे, जिन नगाडो का पेंदा (कुण्डी) ताम्रधातु से निर्मित होता है उन्हे ताम्बागळ, त्रम्बाळ आदि कहा जाता है।

४ इद रवि—इन्द्र और सूर्य के। साज रा—सजावट वाले, ऐरावत और उच्चैश्रवा जैसी साजत वाले। सिंधुरा—हाथियो। आथ—अर्थ, धन। दोयणा समाज—वैरियो का समूह, दुश्मनी रखनेवाला समूह। दैवाळ—देने वाला। जगा—युद्धो मे। दाह—दग्ध, जलन उत्पन्न करने, नाश करने। देवसा—राव देवीसिंह। झोका—शावाश। राज रा—आपश्री के। नीधसे—ध्वनित होते हैं, आवाज करते हैं। डका—दण्डक, नगाडे वजाने के दण्डक। सिरै—ऊपर, श्रेष्ठ। दहू राह—हिन्दू और मुसलमान दोनो धर्मों के माननेवाले।

३४ गीत राव देवींसिघ सेखावत सीकर रौ

अडर झोका देवा उरड खटै व्रद अछूता,
भुजा रज ऊपटै सिखर कुळ भाण ।
घर थटै तूझ खग लार हीन्दू धरम,
समर भर कटै खग धार खुरसाण ।।१।।

पाथ जिम चंद सुत जुध विजै मत्र पढै,
गाथ मरदां जरद मंढै अवगाढ़ ।
पूठ थारै खड़ग चढ़ै न्रप कुळ प्रभत,
वढ़ै कुळ असुर थारै खडग वाढ ।।२।।

---

३४ गीतसार—ऊपरांकित गीत सीकर के राव देवीसिंह शेखावत पर लिखित है । गीतकार ने इस गीत मे लिखा है कि वह वीर देवीसिंह नवीन विरुद प्राप्त करने तथा अपनी खड्ग शक्ति से नए नए राज्यो पर अधिकार स्थापित करने वाला है । और युद्धो मे मुसलमानो का सहार करने मे समर्थ है ।

---

१ अडर—निडर । झोका—धन्य धन्य । देवा—राव देवीसिंह । उरड़—जोश मे उमड कर, उत्कट इच्छा, युद्ध, पराक्रम । खटै—प्राप्त करे, अर्जित करता है । व्रद—विरुद । अछूता—ऐसे जो किसी अन्य ने प्राप्त न किए हो । अछूते—नवीन । रज—रजपूती, क्षत्रियत्व । ऊपटै—उमडता है । सिखर कुळ—शेखावत वश के । भाण—भानु, रवि । घर थटै—शोभा धारण किए, शोभायमान, एकत्रित हुए । खग—खड्ग । लार—पीछे । समर—युद्ध । खगधार—खड्ग धारा मे, योद्धा । खुरसाण—मुसलमान ।

२ पाथ—अर्जुन । चद सुत—राव चाँदसिंह तनय गीतनायक देवीसिंह । विजै—विजय के । गाथ—गात्र, शरीर । मरदा—मर्दों के, वीरो के । जरद—कवच । मढै—मण्डित । अवगाढ—गाढा, युद्ध, वलवान् । पूठै—पृष्ठ पर, अनुगामी । थारै—तेरे, तुम्हारे । प्रभत—अनेक, प्रभुत्व वाले । वढै—कटते हैं, नाश होते हैं । कुळ—वश । असुर—राक्षस, मुसलमान । वाढ—धारा मे, कृपाण की तीक्ष्ण धारा मे ।

भुजवळा तपै सिवसिंघ हर भवानी,
अपै पळचर गळा धर कळा ऊक।
थिर मगर रूक तौ राजवसी थपै,
रिण कवै मेछवसी अगर रूक ।।३।।
तिजड व्रत धू-धारियाँ सगत तायणी,
नित फतै पायणी वाधिया नेत।
धूधडे अभै वरदायणी छत्र धरा,
खायणी आसुरा डायणी खेत ।।४।।
—उम्मेद सादू सीहू रौ कह्यौ

३५ गीत राव देवीसिंघ सेखावत रौ खाटू रा जुद्ध रौ

उरड मुरतजाखान घण वाणा उठी,
अठी देवौ खगां ऊवाणा आडि।
पागरे खेत सेखावता पठाणां,
रावता दीवाणा मंडे राडि ।।१।।

---

३५ गीतसार—यह गीत सीकर के राव देवीसिंह ने शेखावाटी के खाटू स्थान पर शाही सेनानायक मुर्तजाअली भडेच को पराजित कर प्रसिद्धि प्राप्त की, उसका परिचायक है। गीत मे लिखा है कि उधर से तो नवाव मुर्तजाअली ने तोपो की आग वरसाते हुए आक्रमण किया और इधर से राव देवीसिंह ने नग्न तलवारो से खुले मैदान मे युद्धारम्भ किया।

३ सिवसिंघ हर—राव शिवसिंह का पौत्र राव देवीसिंह। भवानी—दुर्गा। अपै—अर्पित करे। पळचर—मासाहारी। गळा—मास पिण्ड, ग्रास। ऊक—अग्नि। थिर—स्थिर। रूक—तलवार। थपै—स्थापित करे। कवै—ग्रास। मेछवसी—मुसलमान। अगर—आगे, सामने।

४ तिजड—तलवार का। धू धारिया—अटल, अडिग। सगत—शक्ति, रण चढी। तायणी—ताप देने वाली। पायणी—प्राप्त करने वाली। वाधिया नेत—वीरता सूचक चिह्न धारण किए। धू धडे—खुले आम, निशक, अटल। अभै—अभय, दोनो। वरदायणी—वरदात्री। छत्रधरा—छत्रधारिणी, देवी। खायणी—विनाशकारिणी। डायणी—डाकिनी, रण चण्डी। खेत—समरस्थल मे।

१ उरड—आगे वढ कर, उमड कर, बल पूर्वक बढ कर। घण वाण—घन वाण, तोपें। उठी—उधर से। अठी—इधर से। देवौ—राव देवीसिंह। खगा ऊवाणा—नगी तलवारें। आडि—जोडी, वरावर की, भिडाई। पाधरे खेत—सीधे मैदान मे, खुली युद्ध भूमि में। मडे—लडे। राडि—लडाई, युद्ध।

नूरिमा रौद्र रसि वीर बावन नचै,
निछट खग धूरिमा खचै ग्रह नाथ।
सचै खत्रवट विरद सरीखा सूरिमा,
भडेचा कूरिमा रचै भाराथ ॥२॥

कुहरि मच जिण समै धूम ग्रातस कौहोर,
चौहोर भिड भूह मूछा सुतन चद।
विजड झड चत्र पौहोर नरा लूथ वत्थै,
सुरा ग्रसुरा मत्थै वौहोर समद ॥३॥

वहसि छळ हिदवाकार सिवपत वियौ,
लोभवत धार खग दियौ लोभो।
जखम हुय मुरतजा ग्रर हार तजियौ,
सरब गारत कियौ मार सोभो ॥४॥

पाट उधोर खत्रवाट धिन पराकम,
भिड़ज ग्रवियाट खग झाट भेळै।
ग्रनम कध प्रवाडो खाट थह ग्रावियौ,
मुगल्ला थाट दहवाट मेळै ॥५॥

२ नूरिमा—कांति वाले। रौद्ररसि—रौद्ररस, भयानक। नचै—नाचे। निछट—पछांट देकर। धूरिमा—शत्रु मस्तको। खचै—खेंची। ग्रहनाथ—सूर्य ने। सचै—सच्चे। खत्रवट—क्षत्रियत्व। सरीखा—समान। भडेचा—भड़ेच जातीय यवन, मुर्तजाग्रली के सैनिक। कूरिमा—कछवाहो। रचै—लडा। भाराथ—युद्ध।

३ कुहरिमच—कोलाहल होकर। समै—वक्त। धूम—धूम्र। ग्रातस—ग्रातिश, ग्रग्नि। कौहोर—कुहरा। चौहोर—चिहुर, केश। भिड—मिल कर। भूह—भ्रूहे। सुतन चद—राव चांदसिह का पुत्र, राव देवीसिह। विजड—तलवार की। झड—झडी, वौछार। चत्र पौहोर—चार प्रहर। लूथ वत्थै—गुत्थमगुत्थ। मत्थै—मथन कर। समद—समुद्र।

४ वहसि—जोश मे भरकर। छळ—युद्ध। सिवपत वियौ—दूसरा राव शिवसिह, राव देवीसिह। लोभवित—लोभवृत्ति, लुब्ध धन। धार—ग्रहण कर। लोभो—लुब्धता। जखम—घायल। ग्रर—ग्ररि, वैरी। गारत—गर्त्त, नष्ट भ्रष्ट। सोभो—सूवा, प्रान्त।

५ पाट उधोर—सिंहासन का उद्धारक। धिन—धन्य। पराकम—पराक्रम। भिडज—घोडे। ग्रवियाट—युद्ध। खगझाट—खड्गाघात। भेळै—मिला कर। ग्रनम कध—ग्रनम्र स्कन्ध, ग्रविनत कध। प्रवाडो—कीर्त्ति। खाट—प्राप्त कर। थह—दुर्ग। मुगल्ला थाट—मुगल सेना। दहवाट—नष्ट। मेळै—मिला कर।

भडा सिध तणै भय खाग अळगा भमै,
कदै नह आगसे लाग केवै ।
दूसरै रायसल्ल पातिसाही दळा,
दमगळा दिरवा झाट देवै ।।६।।

३६ गीत राव देवींसघ सेखावत सीकर रौ

दाता सताप मेटियौ भलो सुपात आसीस दखै,
रोपे खभ तलाका साभळो उभै राह ।
कूजळो चाढियौ रग नाणो ले सासणा केई,
सोभा अग ऊजळो काढियौ देवसाह ।।१।।
मेखा ग्राव दीधी चारणा रा कुरिन्द रै माथै,
पलावध इन्द रै धारणा कीधी पाळ ।
लोभ रा फद रै सगी लगायौ रसतौ लोप,
भाजियौ दसतौ पगी चद रै भुजाळ ।।२।।

---

३६ इस गीत मे कवि ने सीकर राज्य के शासक राव देवीसिंह शेखावत द्वारा सुरह स्थापित कर चारण ब्राह्मणादि के भूम्याधिकार को सुरक्षित करने की प्रशसा की गई है । कवि कहता है कि कतिपय शासको ने चारणादि षट् वर्णों की दान मे प्राप्त भूमि को वापस लेकर कलक-अपयश-का टीका लगवाया । किन्तु देवीसिंह ने उनकी दान की भूमि बहाल कर कलक का धव्वा मिटा कर दिया ।

---

६ भडा–योद्धाओ। अळगा–अलग, दूर । भमै–फिरते हैं । कदै–कभी भी, कब । आगमे–अगीकार करे । लाग केवै–पीछे पडकर, प्रतिशोध लगकर । दमगळा–युद्धो मे । झाट–आघात, झटका। देवै–देकर, राव देवीसिंह ।

१ दाता–दानदाता, स्वामी । भलो–अच्छा । सुपात–सत्पात्र, सुकवि गण । दखै–बोलते हैं । रोपे खभ तलाका–तलाक के स्तम्भ स्थापित कर । साभळो–सुनो । उभै राह–दोनो मार्ग वाले, हिन्दू और मुसलमान । कूजळो–कुजल, कलक । चाढियौ–चढाया, लगाया । नाणो ले–रुपये लेकर । सासण–चारणो को दान मे की हुई भूमि । ऊजळो–उज्ज्वल । देवसाह–राव देवीसिंह ने ।

२ मेखा ग्राव–गौमुखाकृति पत्थर का स्तम्भ जिस पर राज्याज्ञादि उत्कीर्ण की हुई होती है। कुरिद रै माथै–दरिद्रता के सिर पर । पलाबध–वस्त्रो का छोर बाँध कर चलने वाले, बडे राजा । पाळ–पालन, पैंज । रसतौ–रास्ता, पथ । लोप–उल्लघन । भाजियौ–मिटाया, नष्ट किया । दसतौ–दहसत का, दस्तूर । पगी–कीर्ति । चद रै–राव चाँदसिंह के पुत्र देवीसिंह । भुजाळ–भुजबली ।

तसा मठा दवे पायौ तमाम दीत रौ तेज,
　　सारी धरा थायौ ताम चीत रौ सोभाग।
अनीत रौ दाम लै लगायौ रोग आगाहटा,
　　दूजै सिवै क्रीत रौ मिटायौ स्याम दाग॥३॥

चाव गजा गामा दैण हमेसा चोगुणौ चाळो,
　　तेण भाळो नरेसा तोगणौ मीढ तास।
क्रीत कामली रा तणी ओगणौं मेटतां काळो,
　　आप क्रीत वाळो वधै सोगणौ ऊजास॥४॥

घडाय देवळा त्रहूं ठिकाणा तलाक घतै,
　　अखै पात चहूवळा सोभाग अेसोत।
सेखा यन्दु प्रसधि प्रकास कळा अग्र सारा,
　　दीसै आसपास तारा धूधळा देसोत॥५॥

---

३ तसा–तैसे, उसी ओर। मठा–कृपणो। दीत रौ–आदित्य का। थायौ–हुआ। ताम–तुम्हारी, तव। चीत रौ–चित्त का, मन का। अनीत रौ–अनीति का। दाम–रुपये, प्राचीन कालीन एक सिक्का। आगाहटा–चारणो को पुरस्कार अथवा दान मे प्राप्त ग्राम। सिवै–शिवसिंह। क्रीत रौ–कीर्ति का। मिटायौ–नष्ट किया। स्याम दाग–काला धब्बा।

४ गजा–हाथियो। चौगुणो चाळो–चौगुनी क्रीडा, चाल। तेण भाळो–उससे। मीढ–बराबरी। ताम–उस, वह। क्रीत–कीर्ति। कामली रा तणी–कासली ठिकाने के स्वामी की, राव देवीसिंह के राज्य मे कासली का परगना था। ओगणौ–अवगुण का। मेटता–नाश करते। काळो–कलंक, दाग। वधै–बढा, वर्द्धित। ऊजास–प्रकाश, रोशनी।

५ घडाय–घडवा कर, निर्मित कराकर। देवळा–पाषाण मूर्त्तियां। त्रहू ठिकाणा–सीकर, कासली फतहपुर आदि तीनो ठिकाने। घतै–दिलवा कर, घोषणा कर मुनादी करना। अखै पात–अक्षयपत्र, कवि वर्णन करते हैं। चहूवळा–चौतरफ। अेसोत–ऐसा। सेखा यन्दु–शेखावतो का चन्द्र, कुलचन्द्र। कळा–कान्ति। सारा–समस्त। धंधळा–धूमिल, धुधले। देसोत–राजा, देशपति।

३७ गीत रावराजा लिछमणसिंघ सेखावत सीकर रौ

जरद पोस दळ सालुळे सेस सिर दरद जद,
असह गळ करद कीजै उखेळे।
दुरद घड सरद घण लछौ मारुत दिखण,
मरद पर गढां नू गरद मेळे ॥१॥

कुरंग छेका तुरंग पीठ पाखर कसे,
रोस अग खळां रा राह रूधा।
देवसुत धकै नह रहै सावत्त दुरग,
सुरंग लागे ढहै नीम सूधा ॥२॥

भड चडा पाण अवसाण बाथा भरै,
मंडे जुध करै मन छकु मेळां।
चड सज जिला कछवाह जावै चढै,
पडै पाधर हुवै किला पैला ॥३॥

---

३७ गीतसार—कवि का कथन है कि सीकर नरेश रावराजा लक्ष्मणसिंह अपने सैनिको को युद्ध सजा से सजाकर शत्रुओ पर चढता है तो शेषनाग का मस्तक पीडित हो उठता है। वह हस्ति सेना रूपी शरदकालीन मेघघटा को छिन्नभिन्न करने वाले दक्षिण दिशा का प्रभजन तुल्य लगता है। शत्रुओ के सुदृढ दुर्गों को वह बात की बात मे भूमिसात् कर देता है।

---

१ जरद पोस—जिरह बख्तर। सालुळे—उमडकर चले। सेस सिर—शेषनाग का शीश। दरद—दर्द, पीडित। जद—जव। असह—शत्रु। गळ—मास, कठ। करद—तलवार। उखेळे—युद्ध क्रीडा। दुरद घड—गज सेना। मरद घण—शरद ऋतु के मेघ। लछौ—रावराजा लक्ष्मणसिंह। मारुत दिखण—दक्षिण दिशा का प्रभजन। मरद—वीर। पर गढ़ा नू—शत्रुओ के दुर्गों को, पराये किलो को। गरद मेळे—धूलि मे मिलाता है।

२ कुरग छेक—मृगो को भी गति मे पीछे छोड देने वाले। तुरग—घोडे। पाखर—घोडो के कवच। कसे—कसकर, बांधकर। रोस—रोष। राह—मार्ग। रूधा—रोके, रुद्ध किए। देव सुत—देवीसिंह के पुत्र लक्ष्मणसिंह के। धकै—सम्मुख। सावत—सुरक्षित, सही सलामत। दुरग—किले। ढहै—गिर पडते हैं। नीम सूधा—नीव (बुनियाद) सहित।

३ पाण—बल, भुजाएँ। अवसाण—दाव, मौका आने पर। बाथा भरै—भुजपाश मे लेवे। मडे जुध—युद्ध होने पर। छकु—छके, मस्त हुए। चड—सवारी कर, सहायता पर। पाधर—सीधे, सपाट। पैला—विपक्षियो के, वैरियो के, उधर वालो के।

निज मते वहै घण ज्यू घूरै नौवता,
सिलक तोपा फतै दीह साजा।
पर गढा भीलण डाकी घणै सूर पण,
राव रा सिरोमण राव राजा ।।४।।

३८ गीत रावराजा लिछमणसिंघ सेखावत सीकर रौ

भडा मेळिया थाट भिडजा कडा भेडियाँ, खेडिया सिंघ उठै खिजायौ।
औद्रका पडै अरिया धरा ऊपरा, ओ लछौ फतैपुर नाथ आयौ ।।१।।

वाजे धूसा डका चका वध वाजदा, चढे भड कजाका मेळ चाळौ।
प्रगट प्रसणा धरा दीह धाका पडै, आवियौ सिघ नर देव वाळौ ।।२।।

---

३८ **गीतसार**–उपर्युक्त गीत सीकर के रावराजा लक्ष्मणसिंह शेखावत के शत्रुओ पर आतक का वोधक है। गीतकार का कथन है कि लक्ष्मणसिंह जव अपनी सेना को सज्जित कर शत्रुओ पर चढाई करता हे तो वह हाका द्वारा छेडछाड किए हुए सिंह की भाँति सत्वरता से प्रस्थान करती है। अत शत्रुओ के दिलो पर रात दिन यह आतक छाया रहता है कि–वह फतहपुर का स्वामी लक्ष्मणसिंह चढ आया।

---

४ निज मते–अपने मत से, स्वेच्छा पूर्वक। वहै–चलते हैं। घण ज्यू–मेघो की तरह। घूरै–घोप करे। सिलक–तोपो की गर्जन ध्वनि। दीह–दिन। भीलण–गिराने, लेने। डाकी–दुर्धर्प योद्धा। घणै–अधिक, घने। सूर पण–शूरवीरता। राव रा–राव देवीसिह का।

१ भडा–सुभटो। मेळिया थाट–सेना एकत्रित किए। भिडजा–घोडो। कडा भीडियाँ–जीनपोश एव कवचादि के कडे कस कर मिलाए हुए। खेडिया–हाके मे उठाए हुए। सिघ–सिंह। खिजायौ–क्रोधित। औद्रका–आतक, भय। अरिया–वैरियो की। लछौ–रावराजा लक्ष्मणसिह।

२ धूसा–वादित्र विशेप। डका–दण्डक। चकावध–सेना, निशाना लगाकर। वाजदा–घोडो के। भड–वीर। कजाका–योद्धा, वलवान, लुटेरा। मेळ चाळौ–युद्धार्थ सम्मिलित हो। प्रसणा–वैरियो। दीह–दिन। धाका पडै–धाक पडती है, आतक फैला रहता है। सिघनर–नरशार्दूल, नृसिह। देववाळौ–राव देवीसिह का पुत्र लक्ष्मणसिह।

प्रगट भालां भडा दमग झडता चखा, प्रवाडा खाग बळ फतै पावै ।
अचीतौ राव सेखौ खळा ऊपरे, यसे अध्रियामणे रूप आवै ।।३।।

—जीवण मोतीसर रौ कह्यौ

३६ गीत रावराजा लिछमणसिंघ सेखावत सीकर रौ

अघट दान झड़ रूप आचा लछा अहोनिस,
इळ क्रन भोज वड रखण अखियात ।
सरस दुत मिली नभ गग तव मही सिर,
छिली जस तरंग सेखावता छात ।।१।।

सुद्रव जळ रीझा सघण साझ री,
व्रवण गज वाज री सहल बरता ।
अर तर ठम तोड़ हाले सजव आज री,
राज री देव सुत सुजस सरिता ।।२।।

---

३६. गीतसार—इस गीत मे कवि ने सीकर के रावराजा लक्ष्मणसिंह शेखावत की दान वीरता का वर्णन किया है । वह कहता है कि शेखावत नरेश लक्ष्मणसिंह पृथ्वी पर दानी कर्ण और राजा भोज की भाँति अपनी प्रसिद्धि अक्षुण्ण रखने के लिए रात दिन अपार दान देता रहता है । उसके दान की सरिता शत्रु रूपी तरुओ की बाधाओ का उन्मूलन करती प्रवाहित होती रहती है ।

---

३ दमंग—अग्निकण । चखा—चक्षुओ से । प्रवाडा—यशकाव्य । खाग बल—खड्ग की शक्ति से । अचीतौ—अचित, यकायक । सेखौ—शेखावत लक्ष्मणसिंह । यसे—ऐसे । अध्रियामणे—भयानक, आतककारी । आवै—आता है ।

१ अघट—अपार । दान झड—दान की झडी । आचा—हाथो से । लछा—रावराजा लक्ष्मणसिंह । इळ—पृथ्वीतल पर । अखियात—अक्षय कीर्ति, प्रसिद्धि । दुत—द्युति, शोभा । नभ गग—आकाश गगा । तव—तेरी । मही सिर—पृथ्वी पर । छिली—छलकी । जस तरग—यश की तरग । छात—छत्र, राजा ।

२ सुद्रव जळ—सुधन रूपी जल । रीझा—दान की बौछारें । सघण—सघन । व्रवण—देने । वाज—घोडे । बरता—व्यवहृत, वर्त्तमान मे । अर तर—शत्रु रूपी वृक्षो की । ठम—बाधा, रोक । हाले—चले । राज री—आपकी । देव सुत—देवीसिंह तनय । सुजस सरिता—कीर्ति रूपी नदी ।

दान वरसाळ अणथाग देवण सुद्रब,
भाग धिन जिकां सुभ निजर भाळी।
वहै अणथाग अति आघ खट व्रन तणी,
आपगा अघट सोभाग वाळी ।।३।।

वहै अेकण दिसा रीत सरिता सरब,
निज मिळे अेक सामद करै नाह।
रवि रसम जेम चहुँ तरफ फैली रसा,
क्रीत नद ताहरी राव कछवाह ।।४।।

४० गीत कुँवर करणसिंघ सेखावत डूंगरियास रौ

पति असमर संकर सकति अपछर,
विजय पिण्ड सिर रुधिर वर।
कारण पंच पूगौ भड करणौ,
कळह रिमागा हठ कंवर ।।१।।

---

४० गीतसार—उपर्युक्त गीत कवर करणसिंह शेखावत डूगरियास पर कहा हुआ है। गीतनायक ने दस्युदल का साहस पूर्वक सामना कर समरस्थली मे मृत्यु प्राप्त की थी। गीत मे वर्णन है कि गीतनायक ने स्वामी को विजय, तलवार को शरीर, शिव को मस्तक, दुर्गा रुधिर और अप्सरा को वर प्रदान कर यश-अर्जन किया।

---

३ वरसाळ—वर्षा की झडी। अणथाग— अथाह, अपार। जिका—जिनका। भाळी—देखना। वहै—वहती है। आघ—आदर। खट व्रन—पट् वर्ण, ब्राह्मण, चारण, जोगी आदि जाति के। आपगा—नदी। अघट—अद्‌भुत, विना घटे।

४ अेकण दिसा—एक ही दिशा की ओर। सरव—सर्व। मिळे—मिलकर। नाह—पति, स्वामी। रवि रसम जेम—रवि रश्मियो की तरह। रसा—पृथ्वी पर। क्रीत नद—कीर्ति रूपी नदी। ताहरी—तेरी।

१. पति—स्वामी। असमर—असिवर, तलवार। सकति—रणदेवी। अपछर—अप्सरा। पिण्ड—शरीर। रुधिर—लोहू। वर—पति, दुलहा। पूगौ—पहुचा, गया। भड करणौ—वीर करणसिंह। कळह—युद्ध मे। रिमागा—शत्रुओ से। हठ—हठ ठान कर, जिद्द कर।

स्याम सार सिव सिवा सुरंगना,
रिण जै अग धू रत भरतार।
आरण सजि अरि भजि उमाहत,
विलगौ पच कारण उण वार ॥२॥

राजिद खड्ग सिभू जोगरण रभ,
जै वप मस्तक रगत जुवाण।
सत्र संघारि नूरहर समहर,
पड़ियौ पच अरथ घण जांण ॥३॥

धणी रूक हर उमा अमर-घण,
फतह अग कमळ श्रोण फाब।
परस दूसरौ सुरग पूगियौ,
सजि हेक पिंड पच हिसाब ॥४॥

—कवि हणूदान रौ कह्यौ

---

२ स्याम–स्वामी। सार–तलवार। सिवा–पार्वती, दुर्गा। सुरगना–अप्सरा। रिण जै–युद्ध मे विजय। धू–मस्तक। रत–लोहू। भरतार–भर्त्तार, पति। आरण–युद्ध। भंजि–सहार कर। उमाहत–उत्साह पूर्वक। विलगौ–लगा, जुटा।

३. राजिद–राजा को, स्वामी को। खड्ग–तलवार। सिभू–शभू, शिव। जोगण–योगिनी, देवी। रभ–अप्सरा। वप–वपु, शरीर। रगत–रक्त। जुवाण–युवक, दुलहा। सघारि–सहार कर। नूरहर–नूरसिंह का पौत्र। समहर–युद्ध मे। घण जाण–बहु ज्ञाता।

४ धणी–मालिक। रूक–तलवार। हर–शिव। अमर-घण–अप्सरा। कमळ–सिर। श्रोण–रक्त। फाव–फबना, शोभित। परस दूसरौ–अभिनव परशुराम। हेक–एक। पिण्ड–शरीर से। पंच हिसाब–पांचो बातें पूर्ण कर।

४१ गीत कंवर करणसिंघ सेखावत डूंगरियास रौ

तरण रथ थाभि अरण देखण भिडण तमासो,
थाट भड मरण री वेळ थाई।
करण कर वरण अति वीद चै कारणै,
इद री तरण सह चालि आई ॥१॥

आरकत नयण क्रोधा-अगनि ऊभळे,
सार धारा अणी घट समावै।
करी धुज तणी कै सुहागणी कामणी,
आठ पट रागणी वाट जोवै ॥२॥

सावळा हूल वीजूजळा साहतो,
खळ दळा गाहतो करत खूवी।
सुतन ऊमेद रै हूर सुख साजवा,
उरवसी सची वेहूँ तरफ ऊवी ॥३॥

---

४१ गीतसार—प्रोक्त गीत सीकर के सामन्त कुवर कर्णसिह परसरामोत शाखा के शेखावत ग्राम डगरास के युद्ध मे वीरगति प्राप्त करने की घटना से सम्वद्ध है। गीत मे लिखा है कि कर्णसिह के युद्ध कौशल को देखने के लिए अरुण ने सूर्य का रथ आसमान मे ठहरा लिया और अप्सराएँ स्वर्ग से पति प्राप्ति की कामना से रणभूमि मे उतर आई।

---

१ तरण—सूर्य। रथ थाभि—रथ को ठहरा कर। अरण—सारथी अरुण। भिडण—लडने का। थाट भड—योद्धा समूह की। वेल—समय। थाई—हुई। करण—कुमार कर्णसिह की। वीद चै—दूलह के। तरण—तरुणी, अप्सरा। सह—समस्त।

२ आरकत नयण—आरक्त नेत्र, लाल नेत्र। क्रोधा-अगनि—क्रोधाग्नि। ऊभळे—छलके। सार धरा—शस्त्रधाराओ मे। अणी—नोक, सेना। घट—शरीर। करी धुज तणी—इन्द्र की (?) पट रागणी—पट्ट गायिकाएँ, अप्सराएँ। वाट जोवै—प्रतीक्षा करती है।

३ सावळा—भालो के, बर्छियो के। हूळ—प्रहार, शस्त्र घुसेडने को हूलना कहते हैं। वीजूजळा-तलवारें। खळ दळा—वैरी समूह को। गाहतो—कुचलता, नाश करता। हूर सुख साजवा—अप्सराओ के साथ भोग विलास करने के लिए। वेहू—दोनो। ऊवी—खडी।

तरणपुर छेदि सुरलोक माल्हण तणी,
राति दिन घणी मन हूस रहती।
ले गई परी मिळी सुरलोक मे,
कवर अलवेलियो खमा कहती ॥४॥

४२ गीत कंवर करणसिंघ सेखावत डूँगरास रौ

परब वाछतो जिसौ ही लह्यो धारा परब, जई छत्र ध्रम मेद सुजाव।
पैड पैड असमेद पहूतौ, वेध ग्रहा ओता वरदाव ॥१॥

अेको लखा आगमे अेहा, हैवर झोके नूरहर।
वागौ कवर बीर नद बाजा, राखण राजा सुत धजर ॥२॥

---

४२ गीतसार–ऊपर कथित गीत कुवर कर्णसिंह शेखावत के युद्धस्थल मे वीरगति प्राप्त करने का परिचायक है। इसमे कवि ने लिखा है कि मेदसिंह तनय कर्णसिंह जिस तरह के पर्व की प्रतीक्षा मे रहता था उसी तरह का धारा पर्व उसे प्राप्त हुआ। अभिलषित पर्व प्राप्त कर वह ससार मे अपना उज्ज्वल यश छोड कर स्वर्ग गया।

---

४ तरणपुर–सूर्यपुरी, सूर्यलोक। छेदि–पार कर। माल्हण तणो–जाने की। घणी–बहुत अधिक। हूस–उमग। परी–अप्सराएँ। अलवेलियो–शौकीन, रसिक। खमा कहती–अभिवादन करता, जो क्षमा शब्द का उच्चारण करती हुई, राजा महाराजाओ के किसी प्रश्न के उत्तर मे हाँ अथवा ना कहने के साथ पर 'खमा' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

१ परब–पर्व। वाछतो–चाह करता था, वाछनीय। लह्यो–लिया, प्राप्त किया। धारा परब–तलवार की धारा का पर्व। मेद सुजाव–मेदसिंह के पुत्र ने। पैंड पैंड–कदम कदम। असमेद–अश्वमेध यज्ञ। पहूँतौ–पहुचा। वेध ग्रहा–धराने के लिए युद्ध, ग्रहों को पार कर। वरदाव–विरुद गान, यश।

२ आगमे–दबाने वाला, पराक्रमी, स्वीकार कर। अेहा–ऐसा। हैवर–घोडा। झोके–धकेले। नूरहर–नूरसिंह का वशज कर्णसिंह। वागौ–जुट पड़ा, लडा। बीर नद बाजा–वीरनाद होने पर। धजर–शान, कीर्ति, मान।

बीजा परस किया वहरम, वारिद छोळ लोहडा वोह।
पख उजवाळ प्रथी जस पढिया, सवद ग्रहा चढिया ब्रद सोह ।।३।।

खागा वहै खड खड सेखावत, आहुटियौ लिछमण अरथ।
अकथ कथा जिण नाम न आई, काना आई सुकथ कथ ।।४।।

समहर भगौ सुणियौ नह श्रवणा, गहमह सुणियौ अपछर गठ।
ओ भुवलोक ऊजळ जस ऊगो, करणसिंध पूगो वैकूठ ।।५।।

—गगाराम देभल नेतडवास रौ कह्यौ

४३ गीत कंवर करणसिंघ सेखावत डूंगरास रौ

अई दूसरा परस खत्रवाट वट वाहरे,
लखा गजि नाहरे सुजस लीधा।
यो गयौ धाडव्या सीस छिवतौ उरस,
कूत ऊलोळ रग चोळ कीधा ।।१।।

---

४३ **गीतसार**—उपरांकित गीत कुवर कर्णसिंह शेखावत डूगरास द्वारा डकैतो का दमन कर वीरगति प्राप्त करने विषयक है। गीत मे लिखा है कि वह वीर क्षात्रधर्म का पालन करने के लिए शत्रु दल पर सिंह की भाति झपटा और उनके लोहू से अपने भाले को तरवतर कर जन्म-मरण के आवागमन से मुक्ति प्राप्त कर ब्रह्म ज्योति मे अन्तर्लीन हो गया।

---

३ बीजा परस—द्वितीय परशुराम, कर्णसिंह। वहरम—वह्न, समुद्र ? । वारिद छोळ—मेघ धारा। लोहडा वोह—शस्त्रो के वार। पख—पक्ष को, मातृ तथा पितृपक्ष। जस—यश। ब्रद—विरुद।

४ खागा—तलवारो। वहै—चलकर। आहुटियौ—लड कर मरा, वीरगति प्राप्त की। लिछमण अरथ—लक्ष्मणसिंह के निमित्त। अकथ—अकथनीय, अयशकारी। काना—सुनने मे, कर्णों मे। सुकथ—सुन्दर कथा सुकहानी।

५ समहर—युद्ध। गहमह—धूमधाम, भीड, उत्सव। अपछर—अप्सरा। गठ—गंठजोडा, ग्रथि बधन। ऊगो—उदय हुआ। पूगो—पहुंचा।

१ दूसरा परस—द्वितीय परशुराम, कर्णसिंह। खत्रवाट—क्षत्रिय पथ। वट—मरोड़, वल। गजि—नाश कर। नाहरे—सिंह। धाडव्या—लुटेरो। छिवतौ—स्पर्श करता, शोभा पाता। उरस—आकाश। कूत—बर्छी, भाला। ऊलोळ—प्रहार हेतु झुका हुआ। रग चोळ—लोहू, लाल रग।

वाजि बीराण उक वीर हक बळोबळ,
हळोवळ कायरा जीव हलियौ।
ताणि मूछा तठै वीर ऊमेद तण,
घेंचि अरियाण सिर घाव घलियौ ।।२।।

वहे किरमाळ रण आत रत बीखरे,
झड़े अग दुवग जग भूम झटका।
भेदगर अणी रौ हुवौ अलियो भंवर,
काळ रूपी कवर हुवौ कटका ।।३।।

निमख उजवाळि श्री फतैपुर नाथ रौ,
चाहि भारी करे वस चेळो।
मारि थट द्रोयणा मेटि जामण मरण,
मिळी गयौ करणसिंघ जौति भेळो ।।४।।

---

२ डक—डाक वादित्र। वीर हक—वीर नाद। बळोबळ—पुन पुनः। हळोवळ—हलचल। हलियो—आन्दोलित हुआ, कपित हुआ। ताणि मूछा—मूछो पर ताव देकर। तठै—वहाँ। घेंचि—घसीट कर, हाक कर। अरियाण—वैरियों के। घाव घलियो—घाव किया, जख्मी कर दिए।

३ वहे—चले, वार हुए। किरमाळ—तलवार। आत रत—आन्त्र और रक्त। बीखरे—बिखेरने का भाव, यत्र तत्र छितराना। झडे—कटकर गिरे। दुवग—अग्निकण, चिनगारी, दूसरे का अग। झटका—प्रबल आघात। अणी रौ—सेना को। अलियो भवर—अलवेला, रसिक, रण दूलहा। कटका—सेना के लिए।

४ निमख—नमक। फतैपुर नाथ—फतहपुर के स्वामी रावराजा लक्ष्मणसिंह। चेळो—पलडा, शिष्य। थट—सेना, समूह। द्रोयणां—दुश्मनो का। मेटि—नष्ट कर। मिळी गयौ—जा मिला, विलीन हो गया। जौति भेळो—ज्योति मे।

४४ गीत ठाकुर मोहबर्तसिंघ सेखावत दूजोद रौ

सबळ लूबिया आणि दळ साहिपुर सावठा,
वळोवळ वीररस भडा वसियौ।
चळविचळ हुवै मत दुरग मोबत चवै,
कमळ मणि नाग जिम कमळ कसियौ ॥१॥
हुवै हमला हला न द्यू जीवत हथा,
थट खळा वळोवळ आणि थहियौ।
किळा मत हलचले कप म कुरम कहै,
नग भमग जेम मौ सीस नडियौ ॥२॥
भवानीसिंघ रौ जुड्यौ जुध काळ भत,
अडै विकराळ घट अरचा आघौ।
कहै भुरजाळ नू न द्यू घड जितै कध,
व्याळ भूखण भती भाळ वाघौ ॥३॥

---

४४ गीतसार—उपर्युक्त गीत ठाकुर मोहवर्तसिंह शेखावत दूजोद पर रचित है। मोहवर्तसिंह ने शाहपुरा दुर्ग पर जोधपुर की सेना के साथ एक माह तक युद्ध कर वीरगति प्राप्त की थी। गीत मे कवि ने गीतनायक के मुख से किले को आश्वस्त करते हुए कहलाया हैं कि जिस प्रकार सर्प के मस्तक से मणि जीवित रहते अलग नही हो सकती उसी प्रकार मोहवर्तसिंह की जीवितावस्था मे किले पर शत्रुओ का अधिकार नही हो सकता।

---

१ लूविया—चारो ओर से घेरकर लडनेलगे। आणि—आकर। साहिपुर—शाहपुरा नामक ग्राम, यह सीकर राज्य मे था। सावठा—बहुत से, अत्यधिक। वलोवळ—पुन: पुन, अनवरत। भडा—वीरो। चळ-विचळ—चलायमान। दुरग—दुर्ग। मोवत चवै—मोहवर्तसिंह कहता है। कमळ मणि नाग—सर्प के मस्तक की मणि। कमळ—मस्तक से। कसियौ—कसा हुआ है, बँधा हुआ है।

२ न द्यू—नही दूँगा। जीवत हथा—जीवन रहते अपने हाथ से शत्रु को नही दूगा। थट—समूह। खळा—वैरियो। थहियौ—रुका, ठहरा। हलचले—भय से चलायमान। कप म—कम्पित मत हो। कुरम—कछवाहा, दुर्गपाल मोहवर्तसिंह। नग भमग—सर्प। मौ—मेरे। नडियौ—बँधा हुआ है।

३ जुड्यौ जुध—युद्ध मे भिड गया। काळ भत—यमराज की तरह, यम के भृत्य-सा। अरचा—शत्रुओ। आधौ—अर्द्ध, आधा। भुरजाळ नू—किले को। धड—शरीर। कध—कधो पर। व्याल भूखण—सर्प की मणि। भती—भाँति। भाळ—ललाट से, मस्तक से, वाधौ—बँधा है।

वहै अणपार सर वाण गोळा विकट,
रवि गयण पेखि जग भार रीधौ।
मोट मन धारि अब कोट धडके मति,
कोट धू पनग अलकार कीधौ ॥४॥

लड़े इक मास अखमाल हर लोहड़े,
चढ़े खग धार तन परब चढ़ियौ।
अड़े मोबत तितै रखे मिण भत अचळ,
पडे मोवत किले ताव पडियौ ॥५॥

वधायौ अपछरा पेखि अन वाहरा,
मिळे अण थाहरा सुरा मेळो।
धाय घासाहरा नाहरा जेम घड,
मिळे हर थाहरा जौति भेळो ॥६॥

---

४ वहै–बहते हैं, चलते हैं, प्रहार होते हैं। अणपार–अपार। सर–तीर। वाण–तोपें। रवि गयण–सूर्य ने आकाश मे से। पेखि–देख कर। जग भार रीधौ–युद्ध के भार पर प्रसन्न हुआ, युद्ध की विकरालता के दायित्व को वहन करते देख कर प्रसन्न हो उठा। मोट मन–विशाल चित्त। कोट–दुर्ग। धड़के मति–कम्पित न हो। धू–मस्तक। पनग–सांप। अलकार–मणि, आभूषण।

५ इक मास–एक मास तक। अखमाल हर–अक्षयसिंह का पौत्र, मोहवतसिंह। लोहडे–शस्त्रो से। खग धार–तलवार की धारा पर। परब–पर्व। मिण भत–सर्प की मणि की तरह। अचळ–अविचल, अडिग। ताव–ताप, जोर। पडियौ–पडा।

६ वधायौ–स्वागत किया। अपछरा–अप्सराओ ने। पेखि–देख कर। मिळे–मिले, भेंट की। अण थाहरां–अपार, असख्य, अथाह। सुरा–देवताओ। घासाहरां–सेना, युद्ध। घड–घट, सेना। मिळे–मिल गया। हर थाहरा–शिव के स्थान कैलाश पर। जौति–ज्योति। भेळो–शामिल।

४५. गीत राजा भोपालसिंघ सेखावत खेतड़ी रौ

सरण रायजण चरण वाखाण करै सिध,
दान वाखाण कवि रसण देवी।
कळाधर बदन वाखाण तरुणी करै,
करै ग्ण करग वाखाण केवी ॥१॥
किलम उतराध दिखणाध दळ क्रोधता,
छत्रधरण रोधता माण छीजा।
कहर खूनी सबळ साल राखे कवण,
वीर तो विना रायसाल वीजा ॥२॥
श्रोघ श्रघवन दघन ध्यान श्रातम श्रगन,
श्रधोखज लगन उडगन श्रसोगी।
ग्यान उमगन छिळै छरित छविता गगन,
जोग तज जग नमत मगन जोगी ॥३॥

---

४५ गीतसार—इस गीत मे कवि ने खेतडी के राजा भूपालसिह शेखावत के पराक्रम, विवेक, सुन्दरता और दानादि गुणो का वर्णन किया है। वह कहता है कि भूपाल-सिह के चरणो का सिद्ध, दान का कवि, सुन्दरता का तरुणियो और रण मे हस्त लाघवता का शत्रुगण वर्णन करते रहते है। किन्तु उत्तर दिशा का अन्त और गीतनायक के गुणो की थाह प्राप्त करना असम्भव है।

---

१ रायजण—राजागण। चरण—कदम, पैर। सिध—सिद्ध पुरुप। कवि रसण देवी—कवियो की रसना रूपी सरस्वती। कळाधर वदन—चन्द्र मुख का। तरुणी—तरुण नारियाँ। करग—हाथ। केवी—शत्रु।

२ किलम—मुसलमान। उतराध दिखणाध—उत्तर और दक्षिण के, उत्तर तथा दक्षिण के प्रान्तो के शाही सूबेदारो, शाहजादो। दळ—सेना। छत्रधरण—छत्रपति, बादशाहो। रोधता—वन्धन मे डालते समय, रौंदते। माण—मान, प्रतिष्ठा। छीजा—जल कर समाप्त होते समय। कहर—विपत्ति। खूनी—दोपी। साल—शल्य। राखे कवण—अपनी शरण मे कौन रखे। रायसाल वीजा—दूसरे रायसल, राव देवीसिह।

३ ओघ—समूह। अघवन—पापो का वन, पाप समूह। दघन—दग्ध करने। अगन—अग्नि। अधोखज—विष्णु, जिसका स्वरूप इन्द्रियो द्वारा जाना न जा सके, परब्रह्म। उडगन—नक्षत्र। असोगी—अशोकी। उमगन—उमगो मे। छिलै—छलके, पूर्ण। छरित—सरिता, षट् ऋतु। छविता—छविता। गगन—व्योम। नमत—झुकते है, नमन करते हैं। मगन जोगी—योगस्थित।

मतंग हलका तुरग तबेला मुगत मण,
पदम निध महासिध सम्रध अणपार ।
त्राण कोडिक कवि ओक कीरत वरण,
दान कोडा करण जोग दातार ।।४।।

ओक चव पंच खट नव दसो अठारे,
सोध सरसत अगम बोध सरसे ।
अभग अणडोल अणमोघ सासत्र अयण,
वयण असत अम्रत ओघ बरसे ।।५।।

बदन चद कळाकर कज कोयल वयण,
नता विण जिकै म्रग नयण आनूप ।
छटाघर रूप लख काम अभिराम छिब,
भाम भरतार चाहै करण भूप ।।६।।

कळह दळ सगाथा रड़ै चढिया कड़ै,
विखम खळ अडै बळ भीम बाथा ।
पड़ै वज्र कोप खग करग काथा पडै,
मेर शृंग ओप उड पडै माथा ।।७।।

---

४ मतग हलका—हाथियो का हलका, एक सौ हाथियो का समूह एक हलका कहलाता है। तुरग—घोडे। तबेला—पायगाह, अश्वशाला। सम्रध—समृद्धि, धन-सम्पदा। अणपार—अपार। कोडिक—करोडो। ओक—घर, जगह-जगह। कोडा—करोडो का।

५ ओक—ईश्वर। चव—चारो वेद। पच—पचेन्द्रिय (?)। खट—षट् शास्त्र। अठारे—अठारह पुरान। सोध—छानबीन कर, खोज कर। अगम बोध—अगम्य ज्ञान। अभग—वीर। अणडोल—अडिग, अविचल। अणमोघ—अमोघ। सासत्र—शास्त्र। अयण—चाल, चरण। वयण—वचन, वाणी। ओघ—राशि, समूह।

६ कंज—कमल। कोयल वयणी—मधुर भाषिणी। नता विण—विना नम्रता, विना लज्जा से झुके हुए। म्रग नयण—मृग जैसे नेत्र। आनूप—अनुपम। छटा घर—योद्धा, सुन्दर रूप। अभिराम छिब—सुन्दर छवि। भाम—कामिनी। भरतार—भर्त्तार, पति। चाहै—चाह करे, इच्छा करे।

७ कळह—युद्ध। सगाथा—साथियो। कड़ै—निकट, नजदीक। विखम—विषम। खळ—शत्रु। अडै—सामना करने पर। बाथा—भुजालिंगन, भुजपाश। खग—तलवार। करग—हाथ। काथा—उतावले। मेर शृंग—गिरि शिखर। उड पडै—कट कर धरती पर गिरते हैं। माथा—शीश।

इरा किसन नद छटू विध सू अधिक,
चौजवाना अवर विरद चढतां।
कहण ससमथ कवि पार लांघत कुण,
पथ उतराध गुण ग्रथ पढ़ता ।।८।।

—हुकमीचन्द खिड़िया रौ कह्यौ

४६. गीत राजा भोपालसिंघ सेखावत खेतड़ी रौ

सिधा अपारा नागेसहारा पारावारा खीरसध,
धीर तेज धारा धाम उधारा ध्रूपाळ।
तारकी आकास-चारा मौड ज्यू राकेस तारा,
भूगोल दातारा सारा सेखाणी भूपाळ ।।१।।

---

४६. गीतसार—ऊपर प्रस्तुत गीत मे कवि ने शेखावाटी के खेतडी राज्य के राजा भोपालसिंह शेखावत की दानवीरता आदि गुणो का वर्णन किया है। वह कहता है कि भोपालसिंह सिद्ध पुरुषो मे शिव, समुद्रो मे क्षीर सागर, तेजस्वियो मे सूर्य और उद्धारको मे विष्णु प्रसिद्ध हैं ज्यो ही पृथ्वी लोक के दान दातावो मे शेखावत भूपालसिंह शिरोमणि है।

---

८ इरा—पृथ्वी। किसन नद—राजा किशनसिंह का पुत्र राजा भूपालसिंह। चौजवाना—चोजकरने वालो, आनन्द लूटने वालो। विरद—विरुद प्रसिद्धि। कहण—कहने, वर्णन करने। ससमथ—समर्थ। पार लाघत कुण—कौन पार पासकता है। गुण ग्रथ—गुणो के वर्णन का ग्रथ, कीर्ति काव्य।

१ सिधा अपारा—अपार सिद्ध ऋषि मुनियो मे। नागेसहारा—नाग का हार पहिनने वाला, शिव। पारावारा—समुद्रो मे। खीर सध—क्षीरसागर। तेजधारा—प्रचण्डो मे, तेजधारियों मे। ध्रूपाळ—ध्रुव को पालनेवाला, विष्णु। तारकी—गरुड। आकास चारा—आकाशगामियों मे। मौड—सिरताज। राकेस—चन्द्रमा। सारा—सब मे। सेखाणी भूपाळ—शेखावत भूपालसिंह।

जटी जोग पारावारा धावा सुभ्रतटी जाणै,
गैणवटी तावा ऊच सुभावा गोविन्द ।
चिलार पुलिंद्र धावा चन्द्र ज्यू नखत्रा चावा,
नरा लोक दावा रूप किसन्नेस नद ।।२।।

ईस धू रती रा धाम नीरा तात रंभा ओप,
सूर तेजगीरा सत भीरां दैत साल ।
धखी पख खगा सुधा सीरा ज्यू मुनिन्द्र धीरा,
मही आसतीक वीरा दूजौ रायमाल ।।३।।

चन्द्रभाळ पैउताळ बरस्साळ तेज चण्ड,
गोपाळ नागेन्द्र भाळ सुधा गज गेर ।
प्रथी पाळ पचमेक दातार ज्यू उजाळ प्रथी,
सोहियौ भूपाळ माळ दातारा सुमेर ।।४।।

—हुकमीचन्द खिडिया रौ कह्यौ

---

२ जटी जोग—योगियो मे महादेव । धावा—प्रवाह, लहरो की टक्कर मारने वाला । सुभ्रतटी श्वेततटवाला, क्षीरसागर । गैणवटी—आकाशमार्गी, सूर्य । तावा—प्रचण्ड आतपी । सुभावा—स्वभाव वालो मे । चिलार—गरुड । पुलिन्द्र—गमन करने वाला । नरवत्रा—नक्षत्रो । किसन्नेस नद—किशनसिंह का नन्दन; राजा भूपालसिंह ।

३ ईस—महादेव । धू—मस्तक । धाम नीरा—क्षीरोदधि । तात रभ—लक्ष्मी का पिता । सूर—सूर्य । सत भीरा—सन्तो का सहायक । दैतसाल—दैत्यो का वैरी, विष्णु । धखी पख—गरुड । खगा—पक्षियो मे । सुधा सीरा—अमृत स्रोतो में, अमृत श्रावको मे । मही—पृथ्वीलोक मे । आसतीक—आस्तिक । दूजौ रायमाल—द्वितीय रायमल, राजा भूपालसिंह ।

४ चन्द्रभाळ—चन्द्रमौलि, शिव । पै उलाळ—जल तरगी । वरस्साळ—वर्षाकाल मे । तेज चड—तेजस्वी, सूर्य । गोपाळ—श्री कृष्ण, विष्णु । नागेन्द्र भाळ—सर्पों को पकडने वाला, गरुड । सुधा गज—अमृत भण्डार । प्रथीपाळ—राजा । पच मेक—पाँच और एक, छह । सोहियौ—शोभित हुआ । माळा दातारा सुमेर—दानियो की माला मे सुमेरु मणि ।

४७ गीत राजा भोपालसिंघ सेखावत खेतड़ी रौ

हरी अवाडी अनोप रगा झूळ सिरि जरी हेम,
रूप अगा सचै भरी नचै परी रभ।
आहसी ऊवरी क्रीत वरी किसनेस वाळा,
करी मेघमाळा मौजा करी तै कुरभ ॥१॥
गोड मद्दा छाजे हद्दा घटा भाद्रवा-सी गाजे,
महावीर सद्दा वाजे घटा झिली माळ।
लाल रगी मत्था सुभा सुभ्र पगी लेवै,
भामी तूझ हत्था देवै मातगी भूपाळ ॥२॥
पेसे वेग पथा पोत पाथोद पैराक पाणी,
दळा अग्रवाणी होते जाणी जावूदीप।
बोलै नरा लोक क्रीत ओरवो मुनिन्द्र वाणी,
मौज मत्ते सिंधु री झोका सेखाणी महीप ॥३॥

---

४७ गीतसार—उपर्युक्त गीत मे कवि द्वारा राजा भोपालसिंह शेखावत के दान की प्रशसा की गई है। गीत नायक ने अवाडी, झूल, श्री और स्वर्ण सज्जा से सज्जित हथिनी गीत कवि को दान मे वख्शी थी। कवि ने मेघघटा तुल्य गर्जना करती श्यामल हथिनी कवि को प्रदान कर उज्वल कीर्ति प्राप्त करने का गीत मे वर्णन किया है।

---

१ हरी अवाडी—हरे रग का हाथी का हौदा जो स्वर्ण और चाँदी धातु का वना होता है। झूल-गज की झूल जो युद्ध मे लोहे की जजीरो की तथा जलूसो मे वहुरगे वस्त्रो की वनी होती है। सिरी—श्री नामक हाथी का आभूषण। जरी हेम—स्वर्ण तथा जरी के तारो की। सचै भरी—साँचे मे ढली हुई। नचै—नृत्य करती है। परी—अप्सरा। आहसी—शक्तिशाली, साहसी। ऊवरी क्रीत—श्रेष्ठ कीर्ति, अत्यधिक यश। वरी—वरण की। किसनेस वाळा—राजा किशनसिंह का पुत्र भोपालसिंह। करी—हथिनी। मेघमाळा—मेघघटा। कुरभ—कछवाहा।

२ गोड मद्दां—मद मे उन्मत्त हुई समुद्र की गर्जना सी गर्जन करती है। छाजे—फवती है। हद्दा—वेहद। घटा भाद्रवा-सी—भाद्रपदमास की घन घटा-सी। गाजे—गर्जना करे। सद्दा—शब्दो। वाजे-शब्दित, ध्वनि करे। घटा—गजघट। झिल्ली—झिंगुर समूह तुल्य। मत्थाँ—मस्तक। सुभ्र पगी—श्वेत कीर्ति। भामी—पिता। हत्था—हाथो। मातगी—हथिनी। भूपाल—हे राजा भूपालसिंह।

३ पेसे—प्रवेश करे। पथा—मार्गो। पोत—जहाज। पाथोद—सागर। पैराक पाणी—जल मे तरने वाली। दळा—सेना की। अग्रवाणी—आगे, अग्रिम पक्ति मे। ओरवो—झोकना, उच्चारण करना। मौज मत्तो—आनन्द मे। सिंधु री—समुद्र की, हथिनी। झोका—धन्य धन्य। सेखाणी— शेखावत।

तोडते कुरिन्दा ताळा लोभ खगा वाळा तेज,
प्रथमी ऊजाळा पखा सखा छटा पाळ।
दतवाळी मौज तै सामळी मेघ-माळा दीधी,
लीधी वीर काळा कीत ऊजळी लकाळ ।।४।।

—हुकमीचन्द खिड़िया रौ कह्यौ

४८ गीत राजा बाघसिंघ सेखावत खेतड़ी रौ

चमू साज कर चहुवळा सीम मे नह चढै,
समर वह गयद सह अरिंद साकै।
गाड रौ वीटियौ अग्राजै भरे गह,
बाघ थह खेतडी गिरद बाकै ।।१।।

---

८ गीतसार—ऊपरलिखित गीत शेखावाटी के खेतडी राज्य के नरेश बाघसिंह शेखावत पर रचित है। कवि का कथन है कि सिंह रूपी बाघसिंह अपनी सेना को सजा कर गज रूपी शत्रुओं को आतंकित करता चलता है। उसके भय के कारण अन्य नरेश अपनी सेना को सजा कर खेतडी राज्य की सीमा मे से नही गुजरते हैं। वह खेतडी दुर्ग रूपी सिंह-कंदरा मे नि शक भाव से गर्जता रहता है।

---

१ कुरिन्द ताळा—दरिद्रता के ताले। खगा वाळा—कृपाणो वाला, युद्ध लडने के लिए। ऊजाळा पखा—उज्ज्वल पक्ष, निर्दोष पक्ष। दतवाळी—हथिनी। सामळी—श्यामल। दीधी—दी, प्रदान की। लीधी—प्राप्त की। बीर काळा—महान् वीर। ऊजळी—श्वेत, उज्ज्वल। लकाळ—सिंह, वीर।

२ चमू साज कर—सेना सजा कर। चहुवळा—चारो तरफ। सीम—सीमा, हद। नह चढै—नही उलाघते, प्रवेश नही करते। अरिंद—शत्रु राजा। साकै—डरते हैं, शका करते। गाढ रौ बीटियौ—बल से भरा हुआ, शक्ति से आवेष्टित। अग्राजै—गर्जना करता है। भरे गह—गर्व पूरित। बाघ—राजा बाघसिंह। थह—सिंह की कदरा, गढ। गिरद—पर्वत। वाकै—विकट।

प्रवाड़ा जीत जोधार जाहर प्रथी,
ठाहर आहर गजा करण ठाळै।
गाज नाहर करै किसन सुत धर गुमर,
अगज थाहर दुरग भूप वाळै ।।२।।

विभौ सुरपत थियौ विसभर दियौ वर,
प्रभाकर सरोतर तेज पूजौ।
.कठीरां मौड कर जोम होफर करै,
दुगम गिर ठौड सादूळ दूजौ ।।३।।

अभग मरदां मरद रायसल अभिनिमौ,
दुजड जिण रै थई वरद देवी।
सीघळी गाज सद जिती हद साभळे,
कदै मद न आवै दुरद केवी ।।४।।

---

२ प्रवाडा—कीर्ति अथवा प्रख्याति। जीत—जीतने वाला। जोधार—योद्धा। जाहर—प्रकट। ठाहर—स्थान, ठहराना। आहर—आहार, शिकार। ठाळै—खोजने का भाव। गाज—गर्जना। धर गुमर—गर्व धारण कर। अगज—अजेय, जो जीता न जा सके। थाहर—सिंह की गुफा। दुरग—दुर्ग। भूप वाळौ—राजा वाघसिंह का।

३ विभौ—वैभव। सुरपत थियौ—इन्द्र के समान हुआ। विसभर—विश्वभर ने। वर—वरदान। प्रभाकर—सूर्य के। सरोतर—समान। तेज पूजौ—तेज पुज। कठीरा—सिंहो का। मौड—सिरताज। जोम—गर्व। होफर करै—सिंह की भाँति गर्जना करता है, दहाडता है। दुगम—दुर्गम। गिर ठौड—गिरि स्थान पर। सादूळ दूजौ—दूसरा शार्दूलसिंह, गीतनायक राजा वाघसिंह शेखावत।

४ अभग—वहादुर, निशक। रायसल अभिनिमौ—अभिनव राजा रायसल, गीतनायक राजा रायसल के पुत्र भोजराज का वशज होने से उसे अभिनव रायसल कहा गया है। दुजड—तलवार। थई—हुई। वरद—वरदायिनी। सीघळी—सिंह की, श्रेष्ठ। गाज—गर्जना। सद—शब्द। साभळे—सुने। कदै—कभी भी। दुरद केवी—हाथी रूपी शत्रु।

४६ गीत राजा अभैसिंघ सेखावत खेतड़ी रौ

सिखर वस कुळ तिलक दादा किसन सारसो,
लियण ज्यादा सुजस उरस लागै ।
समजती कवादा डवर दब जाय सह,
अभा सादा गुमर तणै आगै ।।१।।

हजारा तुरा दरगह भडा हळोवळ,
डडाळां धुरा नित क्रीत डका ।
गुमेज तज देख झखा हुवै होडगर,
बाघ नद सू धमै कुण मगज बंका ।।२।।

जग अभग फिरग चतुरग प्रथी जीपिया,
ज्या दुरग दिया कर कुरम जादा ।
किता समबादिया तणा छक र· ·······मा,·
सुपह सादी तरह बिया सादा ।।३।।

---

४६ गीतसार—इस गीत मे खेतडी के राजा अभयसिंह शेखावत् के वैभव का वर्णन किया गया है । गीत मे वर्णन है कि वह अपने पितामह राजा किशनसिंह के सदृश उदार एव वीर तथा शेखावतो मे अग्रणी है । उसकी बराबरी की आय वाले उसके राज्य वैभव एव सादगी के समक्ष हतप्रभ हो जाते हैं ।

---

१ सिखरवस—शेखावत राजकुल का । कुळ तिलक—शिरोमणी । सारसो—सदृश । लियण—लेने वाला । उरस—आकाश । समजती—समानता वाले । डबर—आडबर, वैभव । दव जाय—छिप जाते हैं । सह—सब । अभा सादा—शार्दूलसिंह के वशज अभयसिंह से । गुमर—अभिमान । आगै—सामने ।

२ तुरा—घोडे । दरगह—दरगाह, सभा । हळोवळ—हलचल । डडाळा—नगाडे । धुरा—घोष करवाकर, बजवाकर । डका—दण्डक । गुमेज—घमण्ड । झखा—धु धले, प्रभाहीन । होडगर—प्रतिस्पर्धा करने वाले, बराबरी वाले । बाघनद—बाघसिंह का पुत्र अभयसिंह । धमै—करने की इच्छा, मोल लेना चाहे । मगज—गर्व, मस्तिष्क ।

३ अभंग—निडर, अखण्ड । फिरग—फिरगी, अग्रेज । चतुरग—सेना । जीपिया—विजय किए । दुरंग—किला । कुरम जादा—कछवाहाकुमार को, अग्रेजो ने अभयसिंह को कोट पूतली का प्रान्त दिया था । सुपह—राजा । सादी—सादी—सादगी, सरलता । बिया सादा—दूसरा शार्दूलसिंह ।

मुदी सेखावता कूरमा धर मुगट,
छत्रीवट प्रगट कुळवट अछेही ।
जोड़ रा छभा री दवै सारी जिलह,
अभा री सादगी फवै अेही ।।४।।

५०. गीत सुजाणसिंघ सेखावत राजसिंघ राठौड़ रौ मेळो

आया दळ असुर देवरा ऊपर, कूरम कमधज अेम कहै ।
ढहिया सीस देवळ ढहसी, ढहिया देवळ सीस ढहै ।।१।।

मालहरौ गोपालहरौ मढ, अडिया दहु खागा अणभग ।
उतमग साथ उतरसी अडो, अडा साथ पड़ै उतमंग ।।२।।

---

५० गीतसार–उपर्युक्त गीत कछवाहो की शेखावत शाखा के वीर सुजानसिंह छापोली और राठौडो की मेडतिया खांप के योद्धा राजसिंह आलनियावास पर कहा हुआ हैं। कथित उभय वीरो के क्रमश खण्डेला और मेडता के मदिरो की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त कर यश-अर्जन करने का वर्णन है ।

---

४ मुदी–मुखिया, प्रमुख । मुगट–मुकुट । छत्रीवट–क्षत्रिय पथ । कुळवट–कुल गौरव का मार्ग । अछेही–अपार, अनन्त । जोड रा–वरावरी वाले । छभारी–छवि की, सभा की । जिलह–प्रभा, कान्ति । अभा री–अभयसिंह की । फवै–फवती, शोभित होती । अेही–ऐसी ।

१ असुर–मुसलमान । देवरा–मदिरो । कूरम–कछवाहा वशीय । कमधज–राठौड कुल वाला । अेम–यो, इस प्रकार । ढहिया–कटकर भूमि पर पड़ने पर । देवळ–देवालय । ढहसी–गिरेगा, ध्वस्त होगा । ढहै–भूमिसात् होगा ।

२ मालहरौ–टोडरमल का पौत्र । गोपाल हरौ–गोपालदास मेडतिया का वशज । मढ–मदिर, मडप । अडिया–अडगए, रक्षक वने । दहु–दोनो । अणभग–अडिग, वीर । उतमग–उत्माग, शीश । उतरसी–उतरेगा, गिरेगें । अडा– मदिर के शिखर का कलश ।

सांम सुतन पातल सुत संभिया, निज भगत्ता बाधौ हर नेह।
देही साथ समाया देवळ, देवळ साथ समाया देह ।।३।।

कूरम खडेले कमध मेडते, मरण तणौ बांधे सिर मौड।
सूजा जिसौ नही कोई सेखो, राजड़ जिसौ नही राठौड ।।४।।

५१ गीत ठाकर नवलसिंघ सेखावत नवलगढ़ रौ

सत्थां जुथ चलत्था भिडज खोल कीजै सिलह,
खहण कसि भारथा जोस खाथै।
ऊबरे सरण गढ पेस लीजै अथा,
नवल ऊनत्थ नथा भडा नाथै ।।१।।

---

५१ गीतसार—उपर्युक्त गीत शेखावाटी के नवलगढ संस्थान के अधिपति ठाकुर नवलसिंह शेखावत की युद्ध वीरता पर कहा गया है। गीत मे लिखा है कि योद्धाओ तथा घोडो को सन्नाह सनद्ध कर नवलसिंह जो उसका अधिकार नही मानते उनको अधिकार मे लेता है और शरणागतो से भेंट लेकर अभय कर देता है। उसके पराक्रम के भय से दिल्ली तक आतंकित रहते हैं।

---

३ साम सुतन—श्यामसिंह का पुत्र सुजानसिंह। पातल सुत—प्रतापसिंह तनय राजसिंह। निज भगता—अपने भक्तो। बाधौ—बढा। हर—हरि, विष्णु, श्री कृष्ण। देही—शरीर। समाया—नष्ट हुए, समाहित।

४. खण्डेले—खण्डेला नामक स्थान। मेडते—मेडता स्थान। बांधे—बांधकर। सिरमौड—मुकुट। सूजा—सुजानसिंह। सेखो—शेखावत। राजड—राजसिंह। जिसौ—जैसा, समान।

१ सत्थाजूथ—साथी समूह। चलत्था—प्रस्थान करते, चिलतः, कवच। भिडज—घोडे। खोल—अश्वशाला से खोलकर। सिलह—कवचयुक्त। खहण—नाश करने, युद्ध। कसि—कस कर। भारथा—युद्धो। जोस—जोश। खाथै—सत्वरता से, जल्दी से। ऊबरे—बचें। सरण गढ—शरणागत रहने वाले दुर्ग। पेस—भेंट, एक कर विशेष। अथा—धन दौलत। ऊनत्थ नथा—बधन न मानने वालो को। भडा नाथै—योद्धाओ को बधन मे लेता है।

धम घोडा भडा बाजि पौडा धमस,
चढै चौडा रचण वीर चाळो।
करै अरजा जगत भरै डड करोडा,
अरोडा रोड सादूळ वाळो ।।२।।

सुभट नाहर त्रबक ठौर भाहर सदा,
फजर जाहर अतर धाह फेरै।
उरै थाहर भरै जवाहर हसत मड,
जगाहर अजेरा भडा जेरै ।।३।।

तोल हिंदवाण हद वधै सेखा तिलक,
पाण केवाण कोटा पजावै।
दवे खुरसाण दळ सहर धूजै दिली,
आण वरतै धरा भोग आवै ।।४।।

---

२ बाजि–होकर, ध्वनि कर। पौडा धमस–कदमो की ध्वनि। चौडा–खुलेआम। वीर चाळो–वीर क्रीडा के लिए। अरजा–अर्ज। भरै डड–दण्ड रूप मे धन देते हैं। अरोडा रोड–न दबने वालो को दबा कर। सादूळ वाळो– शार्दूलसिंह का पुत्र नवलसिंह।

३ त्रबक–नगाडे। ठौर–चोट, ध्वनि। भाहर–भाँति। फजर–प्रात काल। अतर–समुद्र पर्यन्त, अति। धाह–पुकार, चीख। थाहर–किले,कदरा। भरै जवाहर–जवाहिरात नजर करते हैं। हसत मड–गजपति, बडे बडे राजा। जगाहर–जगरामसिंह का पौत्र। अजेरा–जो स्वच्छन्द रहते हैं। जेरै–उन्हे वश मे करता है, अधीन बनाता है।

४ तोल–वजन, बल, मान। हद–असीम, बेहद। वधै–बढ कर। सेखा तिलक–शेखावतो मे श्रेष्ठ। पाण–शक्ति, भुजा। केवाण–तलवार। कोटा–दुर्गों को। पजापै–काबू मे करता है, पराजित करता है। खुरसाण–मुसलमान। धूजै–भय से कांपते हैं। आण–दुहाई, मर्यादा। वरतै–वरतते हैं, व्यवहार मे मानते हैं। भोग–लगान, कर।

५२ गीत ठाकर नरसिंघदास सेखावत मंडावा रौ

अकल सग लिया दळ धार चित उमग अत,
कळह जय निहग भड़ ससत्र कडछै ।
विकट नरसिंघ नरसिंघ जिम जोरवर,
धूपट हिरणाख जिम सार घड़छै ।।१।।
तेज सुभटा गरट धुखै चख अगन तिम,
दुकट जुध प्रतख लख बाज दपटै ।
पुरख हरि नख्ख जिम नवल रौ पाटवी,
प्रगट कुरंगाख्ख अरि खाग पछटै ।।२।।
बस उजवाळ भुज भार सारी बसू,
भिडे ज्या अतुळ अन चमू भिरडै ।
तेज धर सबळ पहळाद रा तात सम,
अगासुर खळां चा कध मुरडै ।।३।।

---

५२ गीतसार—उपर्युक्त गीत मडावा के ठाकुर नृसिंहदास शेखावत की युद्ध-वीरता पर सर्जित है । गीतकार ने गीतनायक को भगवान् नृसिंह और शत्रु को हरिण्याक्ष दानव व्यक्त कर गीत की रचना की है । गीत मे लिखा है कि नृसिंहदास अपने साथ अपरिमित साथियो की सेना लेकर शत्रुओ पर अभियान करता है । और भगवान् नृसिंह ने हरिण्य कश्यप को जिस सहजता से मार पछाडा उसी सहजता से नृसिंहदास भी अपने वैरियो का सहार करता है ।

---

१ अकळ—वीरो को, अगणित, समझदार । अत—अति । कळह—युद्ध मे । निहग—घोडा, अकेला । भड—सुभट्ट । ससत्र—हथियारो । कडछै—सुसज्जित, तैयार । नरसिंघ—ठाकुर नृसिंहदास । नरसिंह—नृसिंह भगवान् । जिम—ज्यो । धूपट—मौज मे, सहजता से । हिरणाख—हरिण्याक्ष । सार—तलवार, शस्त्र । घडछै—सहार करे, टुकडे टुकडे करे ।

२ गरट—सेना, दल । धुखै—क्रोध मे जलते हुए । चख—चक्षु, नेत्र । अगन—अग्नि । तिम—त्यो । दुकट—भयकर, विकट । जुध—युद्ध । प्रतख—प्रत्यक्ष । बाज—घोडे । दपटै—धावा मारे, छलागे भरें । पुरख हरि—नृसिंह । नख्ख—नाखून । नवल रौ पाटवी—नवलसिंह का पट्टाधिकारी । कुरगाख्ख—हरिण्याक्ष । अरि—वैरी । खाग—तलवार । पछटै—पछांट देकर, चोट देकर ।

३ बस उजवाळ—कुल को कीर्तिमान कर । भार—दायित्व । सारी बसू—समस्त पृथ्वी । भिडे—टक्कर ले, मुकाबिला करे । अतुळ—अतुलित । अन—अन्य । चमू—फौज । भिरडै—सहार करे, कुचल डाले । पहळाद रा—प्रह्लाद का । अगासुर—हरिण्याक्ष दैत्य । खळा चा—वैरियो का । कध—कधे, स्कन्ध । मुरडै—मरोडे, तोडे ।

सादहर गुमर धर लिया थट गहर सथ,
रोस कर अडर उर समर धाखै।
बिहर पथ अतर जन बाघ जिम वीर वर,
नहर किरमर सत्रा चीर नाखै ।।४।।

५३. गीत ठाकर अरजनसिंघ सेखावत चौकड़ी रौ

उहीज नाम तन पाण धन बाण प्राकम उहीज,
अकस क्रन खात मन रही आचार।
किसन फुरमाण हूंता सिखर ऊंच कुळ,
अजौ अरजन पड तणौ अवतार ।।१।।
सुपह वडगात ससमाथ खाटण सुजस,
समापण आथ अरक स सुतन सूर।
क्रपा जदुनाथ वखतेस रै क्रामती,
प्रगटियौ पाथ कूरम वरै पूर ।।२।।

---

५३ गीतसार—उपराकित गीत शेखावाटी के चौकडी ठिकाने के स्वामी अर्जुनसिंह की वदान्यता तथा वोरता का वोधक है। गीत मे उसे पाण्डव वीर अर्जुन तुल्य वीर और महादानी कर्ण सदृश उदार चित्रित किया गया है। कथित दोनो गुणो मे वह अद्वितीय कहा गया है। स्वर्ण नगो को वह कौडी के समान तुच्छ गिनता है।

---

४ सादहर—शार्दूलसिंह का पौत्र, झुझुनू के शासक प्रसिद्ध वीर शार्दूलसिंह का वशज नृसिंहदास। गुमर धर—गर्व धारण कर। थट—सेना। गहर—भयकर, अपार। सथ—साथ मे। रोस कर—रोष कर, क्रुद्ध होकर। अडर—निर्भीक। समर—युद्ध। धाखै—इच्छा रखता हैं, दृढ निश्चय। विहर—विदीर्ण। नहर— नाखून रूपी। किरमर—तलवार। सत्रा—शत्रुओ को। चीर नाखै—विदीर्ण कर डालता है, नाश कर देता है।

१ उहीज—वही। तन पाण—शारीरिक वल। धन वाण—धनुषवाण। अकस—द्वेष, ईर्ष्या। क्रन—परमदानी राजा कर्ण। खात—विचार, अभिलाषा। किसन—श्रीकृष्ण। हूंता—मे। सिखर ऊँचकुळ—शेखावतों के उच्चकुल। अजौ—गीतनायक अर्जुनसिंह। अरजन पड—पाण्डव अर्जुन। तणौ—को।

२ सुपह—योद्धा, राजा। वडगात—विशालकाय। ससमाथ—ससमर्थ। खाटण—प्राप्त करने। समापण—समर्पित करने, दान देने। आथ—अर्थ, धन। अरक—सूर्य। क्रपा—कृपा। जदुनाथ वखतेस रै—यदुपति तुल्य वख्तसिंह के। क्रामती—कान्तिमान, करामातवाला। प्रगटियौ—प्रकट हुआ, उत्पन्न हुआ। पाथ—पार्थ, गीतनायक ठाकुर अर्जुनसिंह। कूरम—कछवाहा। वरैंपूर—अनेक वरदानो से भरपूर, योद्धा।

ऊधरी ताण कँवार खाटण यळा,
भाण सुत हूँत अहकार भरियौ।
घणै तप अनम सादूळ रै घराणे,
धनजय दूसरौ जनम धरियौ ॥३॥

पांण देतौ सुब्रण क्रन समै दवा पूर,
तरण चढतौ सवा पौहर ततरै।
पना हीरा ब्रवै गाम गज चत्र पौहर,
अभनमौ जोर वर बाघ जतरै ॥४॥

ब्रवतौ देख अप्रमाण वित खट बरण,
सुपह घण जाण अरजुण सिंघाळौ।
कथन बाखाण सुत अगै सूरज करै,
ऊतरै माण तै करण-वाळौ ॥५॥

---

३ ऊधरी ताण—महत्वाकाक्षी, श्रेष्ठ कार्य करने वाला। कँवार—कितनी ही वार, यश। खापण—अर्जित करने। यळा—पृथ्वी, इला। भाण सुत—राजा कर्ण, रविनदन। भरियौ—भराहुआ, आपूर्ण। घणै—घने, अधिक। अनम—किसी के आगे न नमने वाला, अनम्र। सादूळ रै—शार्दूलसिह के, शार्दूलसिह ने अपने सजातीय राव शिवसिह सीकर गुमानसिह रामगढ प्रभृति का सहयोग प्राप्तकर नरहड, सुल्ताना और झुझुनूं आदि कायमखानियो के राज्यो को समाप्त कर अपना अधिकार स्थापित किया था। घराणै—घर मे, कुल मे। धनजय—अर्जुन पाण्डव ने। धरियौ—लिया, धारणकिया।

४ पाण—हाथ से। सुब्रण—स्वर्ण। क्रन समै—राजा कर्ण की तरह, राजा कर्ण के समय, प्रात काल सवा प्रहर दिन चढने तक कर्ण का समय कहलाता है। दवापूर—द्वापर युग। तरण—सूर्य। सवा पौहर—सवा प्रहर। ततरै—तब तक, जितने। ब्रवै—दान करे। चत्र पौहर—चार प्रहर, दिन भर। अभनमौ—अभिनव। जोरवर—जोरावरसिह, गीत-नायक के पितामह का नाम, जोरावर। बाघ—व्याघ्र, सिह। जितरै—जबतक, जितने, उतने।

५ ब्रवतौ—देते हुए। वित—द्रव्य। खट बरण—षट्वर्ण, यती, योगी, सन्यासी, चारण, ब्राह्मण आदि जातियो की षट्वर्णो मे परिगणना की गई है। सुपह—राजा। घण जाण—बहुज्ञानी। अगै—अग्र, आगे, सम्मुख। माण—मान, गर्व। करण वाळो—कर्ण का।

५४ गीत ठाकर अरजनसिंघ सेखावत चौकड़ी रौ

व्रवण हजारी भिड़ज गज गाम चेतन बड़े,
हुवा धारी छतर देख हावै ।
कहो ढूढाड सारी मही यसौ कुण,
अडसगर अजा री मीढ आवै ॥१॥

करण जिम चढती वेस रीझां करै,
मयद आवेस जुध घडा मोडै ।
वादगर कूरिमा देस मझि वतावौ,
जिकौ वखतेस सुत तणै जोड़ै ॥२॥

---

५४ गीतसार—उपरोक्त गीत शेखावाटी के चौकडी ठिकाने के ठाकुर अर्जुनसिह शेखावत पर कथित है। कवि ने गीतनायक की वीरता और उदारता को व्यक्त करते हुए कहा है कि घोडे, हाथी, ग्राम और हजारो रुपयो का दान देने तथा शत्रुओ का दमन करने मे ढूढाड देश मे अन्य कौन ऐसा व्यक्ति है जो अर्जुनसिह की समता करे।

---

१ व्रवण—देनेवाला। हजारी भिडज—हजार-हजार रुपये मूल्य के घोडे। गाम—ग्राम। धारी छतर—छत्रधारण करने वाले, राजा। हावै—विस्मित। कहो—कहिए। ढूढाड—जयपुर राज्य का प्राचीन नाम। सारी—समस्त। यसौ कुण—ऐसा कौन है। अडसगर—प्रतिस्पर्द्धा मे, होड मे, आट मे। अजारी—ठाकुर अर्जुनसिह की। मीढ—वरावरी मे।

२ करण जिम—दानवीर कर्ण की भाँति। चढती वेस—वयस्क होते समय। रीझा करै—मौज आनन्द मे दान करता है। मयद—मृगेन्द्र, सिह, हाथी। आवेस—आवेश। घडा—सेना। मोडै—पीछे की ओर भगाता है। वादगर—विवाद करने वाला, स्पर्द्धा करने वाला। कूरिमा देस—कछवाहो के ढूढाड देश मे। वतावौ—कहिए। जिकौ—जो, जो कोई। वखतेस सुत—ठाकुर वख्तसिह के पुत्र ठाकुर अर्जुनसिह के। जोडै—समता में, वरावरी मे।

छोळ धन सुपाता निवाजै बराछक,
धू गजा समर खग छरा धड़छै।
दाखवो वळे जैपुर धरा दूसिरो,
पलावध जोरवर हरा पड़छै ॥३॥

अखै कव साच खग चाप दाता उभै,
निरखता तोय कुळ चौज नवरा।
जोड़ रा भडां बह जाय सारो जनम,
अजा री घडी रै माहि अवरा ॥४॥

५५. गीत ठाकुर अरजनसिंघ सेखावत चौकड़ी रौ

महण सभावा कुळ मुगट गुमर दावा मिळै,
काढबा सुजस जग सिर कहावै।
अजौ अवगाढ मन धन लहर आविया,
आठ सम कनक गिर निजर आवै ॥१॥

---

५५ गीतसार—ऊपराकित गीत चौकडी ठिकाने के भोजराजोत शेखावत शाखा के ठाकुर अर्जुनसिंह की बहादुरी और उदारता से सम्बद्ध है। कवि का कथन है कि अर्जुनसिंह आनन्द की तरग मे राशि राशि स्वर्ण याचको को कवड्डियो की भाँति तुच्छ मानकर दान मे दे देता है। अन्य कोई ऐसा उदार नही है जो उसकी समता कर सके।

---

३ छोळ—तरग, लहर। सुपाता—सुपात्रो, कवियो। निवाजै—कृपा पूर्वक देता है। बराछक—भरपूर, वीर। धू गजा—गज मस्तको। छरा—भालो, बाणो। धडछै—टुकडे टुकडे करे, विदीर्ण करे। दाखवो—कहिए। वळे—फिर। पलावध—वस्त्रांचल बाँधने वाले, कमर बाँधकर। जोरवर हरा—जोरावरसिंह के पौत्र अर्जुनसिंह। पडछै—पकडते हैं, अपुगमन करते हैं।

४ अखै—कहता है। कव—कवि। खग चाप—तलवार से दमन करने वाले, तलवार और दान की। उभै—दोनो, उभय। निरखता—देखते हुए। तोय—तुझे, आपके। कुळ—वश। चौज—मौज, उमग। नवरा—व्यर्थ। जौड रा—बराबरी के। भडा—योद्धाओं का। वह जाय—व्यतीत हो जावे। सारो जनम—समस्त जीवन, समग्र जन्म। घडी रै—एक घडी के। माहि—मे। अवरा—अन्य के।

१ महण सभावा—समुद्र की सी प्रकृति। कुळ मुगट—वश का शिरमौर। गुमर—गर्व। दावा—होड, स्पर्द्धा, हक। जग—ससार। अजौ—अर्जुनसिंह। अवगाढ—युद्ध, वहादुरी मे। लहर—तरग। आविया—आने पर। आठ सम—आठ पर्वतो के समान। कनकगिर—स्वर्णगिरि। निजर—दृष्टि मे।

अखाडा जीत खत्रवट भुजा ऊफणै,
कहो अनि भडा समवड तणै केम।
वखत सुत रीझणै यसौ चेतन वधै,
हेक कवुडी जिसौ गिणै नग हेम ।।२।।

भरण नित चढै लोयण सरस भरिया,
तसा छत्रधारिया दिखावण तीख।
दूसरौ जोरवर करण आचार दिल,
सुव्रण गिर लेखवै व्राट सारीख ।।३।।

रेण कण गिणै हाटक अनड़ जग रटै,
ऊपटै रीझ जद चीत उदार।
मौज लेवाळ री सरब त्रसना मिटै,
दान दीयण हटै नह अजौ दातार ।।४।।

---

२ अखाडाजीत–युद्धविजयी। खत्रवट–क्षात्रपथ, क्षत्रित्व। ऊफणै–उफनती है, उमडती है। अनि–अन्य। भडा–योद्धाओ। समवड–बराबरी मे। केम–कैसे। वखत सुत–ठाकुर वख्तसिह तनय अर्जुनसिह। रीझणै–दानदेने। यसौ–ऐसा। चेतन वधै–मन उमगित हुए, मन बढता है। हेक–एक। कवुडी–कौडी। जिसौ–जैसा। नग हेम–सुमेरुगिरी।

३. भरण–बराबरी, पूर्ति मे। नित–नित्य प्रति। लोयण–नेत्र। तसा–तैसे, ऐसे। दिखावण–दिखाने के लिए। तीख–श्रेष्ठता, उच्चता। जोरवर–जोरावरसिह। करण–राजा कर्ण, करनेवाला। आचार–आचरण। सुव्रणगिर–सुमेरु पर्वत। लेखवै–विचारता है, देखता है। व्राट–कौडी। सारीख–सदृश।

४. रेण कण–धूलिकण। हाटक–स्वर्ण। अनड–पर्वत। ऊपटै–उमडता है। रीझ–दान। जद–जब। चीत उदार–उदारचित्त। मौज–आनन्द। लेवाळ–लेनेवाला। सरव–सर्व। दीयण–देने मे। हटै नह–पीछे नही हटता है। अजौ–ठाकुर अर्जुनसिह।

५६. गीत ठाकर स्यामसिंघ सेखावत बिसाऊ रौ

इळा राज धन जतन धीरज कनळ अखावै,
धखावै अनळ खळ उतन धामां।
जैनगर लिखाबै सदर कागद जिता,
सिखावै तूहिज अवसाण स्यामा ॥१॥

नीति विधि वेद अतमाम थड जोर निध,
साम दंड भेद रज रीत सारां।
तौल गिर झुकत बळ फिरग अबद तठै,
थटै खावंद पुखत बोल थारां ॥२॥

नजि सचळ सल्हा मजकूर नर नाहरां,
धर अचळ थाहरा नूर धरतै।
राज रजपूत आंबेर दोइ राह रा,
वचन मुख ताहरा सूत बरतै ॥३॥

---

५६ गीतसार—यह गीत शेखावाटी के बिसाऊ सस्थान के ठाकुर श्यामसिंह पर रचित है। इसमे क्षत्रियो और अग्रेजो उभय पक्ष वालो द्वारा गीत नायक की मत्रणाओ पर राज्य सचालन करने का वर्णन किया है। इस प्रकार उसके कार्यों की पर्वतो पर छाया करना कहकर प्रशसा की गई।

---

१ इळा—पृथ्वी। कनळ—निकट वालो को। अखावै—अमरता प्रदान करता हैं, कहलवाता है। धखावै—जलाना, ढकेलना, हराता है। अनळ—अग्नि अन्य। खळ—शत्रु। उतन धामा—निवास स्थानो, वतन के ग्रामो मे स्थित निवास स्थानो। जैनगर—जयपुर। जिता—जितने। तूहीज—तुम ही। अवसाण—दाव, अवसर।

२ अतमाम—अपार, अति प्रतिष्ठित। थड—सेना, समूह। निध—निधि। रज रीत—राज रीति, राज्य सचालन की प्रणाली। सारा—समस्तो। गिर—वचन पर। फिरग—अग्रेज। अबद—मुक्त, बधन हीन। तठै—वहां। थटै—डटे, पक्का रहे, शोभित हुवे। खावंद—पति, स्वामी। पुखत—पुख्ता, दृढ। थारा—तेरे, आपके।

३ सल्हा—सलाह मत्रणा। थाहरा—गढो। नूर—कान्ति। राज—राज्य। आबेर—आमेर रियासत। दोइ राहरा—दोनो धर्मों के मानने वाले। ताहरा—तेरे, तुम्हारे। सूत—विचार, परामर्श। बरतै—व्यवहार करते हैं।

रीत रजवाट अवनाड़ कायव रता,
कूरम थाट नायब कजाकी।
तू करै वाहवळ आजि सूरज तणा,
डूगरां तणै सिर छाह डाकी ।।४।।

५७ गीत ठाकर दूलहसिंघ सेखावत खाचरियावास रौ

दाखै भोक भोक प्रथी सारी तोखारां ओरणा देणा,
घूखळा आच रा छळा दहुवा रा धीग।
बधै सारा हूत घड़ा कवारी कीरति वरै,
सिरै सूरा दातारा दूलहौ दूलैसीग ।।१।।

---

५७ गीतसार—उपर्युक्त गीत ठाकुर दूलहसिह शेखावत खाचरियावास पर रचित है। कवि ने इसमे गीतनायक की दान एव युद्धवीरता का उल्लेख करते हुए कहा है कि युद्ध मे घोडे भोकने और दान देने इन दोनो वातो मे दूलहसिह की समस्त ससार सराहना करता है। वह अपने समसामयिको मे सवसे अधिक अविजित सेना को पराजित कर कीर्ति कामिनी के साथ विवाह करता रहता है।

---

४ रजवाट—राजकार्य-प्रणाली, क्षत्रियत्व। अवनाड—अनम्र, स्वतन्त्र। कायव रता—काव्य अनुरक्त, कायदे अनुसार। कूरम—कछवाहो का। थाट—वैभव, सेना। कजाकी—योद्धा, लूटनेवाला। वाहवल—वाहुवल, युद्ध। आजि—आज के समय मे, युद्ध। सूरज तणा—सूरजमल्ल के पुत्र। डूगरा तणै—पर्वतो के। डाकी—महान् वीर।

१ दाखै—कहते हैं। भोक भोक—वन्य धन्य। सारी—समस्त। तोखारा—घोडे। ओरणा देणा—युद्ध मे भोकने और दान देने। घूखळा—युद्ध, उपद्रव। आच रा—हाथ का। छळा—लिए, युद्ध। धीग—जवरदस्त, प्रहार करने मे सवल। वधै सारा हूत—सवसे आगे वढ कर। घडा कवारी—विना लडी हुई सेना रूपी। कीरती वरै—कीर्ति का वरण करता है। सिरै—शिरमौर, श्रेष्ठ।

निघातां गडीरै तुरां रीझां करै गुणां नातां,
उभै बाता छातां सिरै गरब्बे उतन ।
चाहै चमू अमांमी समांमी पंगी चढा बानै,
सोहे मौड बध नांमी गुमांन सुतन ।।२।।

पांडीसां भाराथां वाजै गंजी धार ओतपोतां,
सुपातां निवाजे कडा मोती कियौ नाम ।
बरूथां अछूती कीत दौती राजै पलावंध,
सदा वीद छाजै बिंद गोती बियौ स्यांम ।।३।।

जोतां सार आचार जोड रां हूत बणी ज्यादा,
राजेस सवादा बनां तणी ओढी रीत ।
मांण नौढ़ा अणी जगा पिलगा पीहरा मेळै,
पगी प्रौढ़ा हूत रगां खेलै घणी प्रीत ।।४।।

---

२ निघाता–प्रहारों । गडी रै–, गडगड ध्वनि करते हैं । तुरा–घोडों का । रीझां–दान । नाता–सम्बन्ध से । उभै–दोनों । छाता सिरै–छत्रपतियो मे श्रेष्ठ । गरब्बे–गर्वित होता है । चमू–सेना । अमामी–अप्रमाण । समामी–सप्रमाण, श्रेष्ठ । पगी–कीर्ति । मौड़ बध नामी–मुकुट बांधने वाले नाम वाला, दूलहसिह ।

३ पाडीसा–तलवारें । भाराथ–भारत, युद्ध । गजी–विनाशक । धार–धारा, तलवार का तीक्ष्ण भाग । ओत पोता–ओतप्रोत । सुपाता–सुपात्रो, सुकवियो । निवाजे–पारितोषक दे, दान दे, तुष्ठ हुए । कडा मोती–हाथ मे पहनने के कडे और कानो के मोती । बरूथा–सेनाएँ । अछूती–अस्पर्शित, बिना भोगी, विना लडी हुई । दौति–द्युति । पलाबध–अगरखे का छोर बाधे चलने वाला । वीद–दूलहा । छाजै–शोभा पाता है । विंद गौति–वर के गोत्र वाला, दूलहसिह । वियौ स्याम–दूसरा श्यामसिंह ।

४ सार–तलवार । आचार–आचरण, दान ।, जोड रां हूत–बराबरी वालो से । वना तणी–दूलहा की । ओढी रीत–टेढी रीत, विकट रीति, अनोखी रीति । माण–भोग कर । नौढ़ा–नवोढ़ा । अणी–सेना । पीहरा–पितृगृह । पगी–कीर्ति ।

५८. गीत ठाकर सिवदानसिंघ सेखावत खाचरियावास रौ

डडा रोड ग्रम्बागळां तुरी भरतां डकर,
धूपटण ग्ररी ग्राडा खडां धार।
ग्रोपियौ ग्रवरके साच चित ग्राणिया,
सिवौ लाडाणिया तणौ सिरदार ॥१॥
वधवा चाड धिखतै उर महावळ,
सत्रहरा विरोळै होय साजा।
सोहियौ बीर ग्रवगाढ़ दूला सुतन,
रचेवा राड माधव मडळ तणौ राजा ॥२॥
सावळा ग्रणीधारा साकळे,
भमाया ग्ररि थटा बाघ भूरै।
गोत रखवाळ व्रद ग्राद सू गिणता,
सुरिंद कीधौ प्रगट वियै सूरै ।३॥

---

५८ गीतसार—प्रस्तुत गीत शेखावाटी के रामगढ परगने के खाचरियावास ठिकाने के ठाकुर शिवदानसिंह शेखावत पर सर्जित है। गीत मे लिखा है कि स्वजातीय वीरो की सहायता करने तथा उनके शत्रुग्रो का उन्मूलन करने हित माधव मण्डल का शासक शिवदानसिंह सज्जित रहता है।

---

१ डडा रोड ग्रम्बागळा—दण्डको की चोटो से नगाडे बजवा कर। तुरी भरता डकर—घोडो की छलाँगे भरवाता। धूपटण—लूटना, ग्रधिकार करना। ग्राडा खडा धार—शमशेरो की तिरछी धाराग्रो से। ग्रोपियौ—शोभित हुग्रा। ग्रवरके—ग्रव की वार। सिवौ—शिवदानसिंह। लाडाणिया—शेखावतो की लाडखानोत शाखा वालो का। यह शाखा लाडखान (लालसिंह) के नाम से प्रचलित हुई थी।

२ चाड—सहायता। धिकतै—क्रोधित। सत्रहरा—शत्रुग्रो। विरोळै—कुचले, दमन किए। सोहियौ—शोभित हुग्रा, सुहावना लगा। ग्रवगाढ—वहादुर, युद्ध। दूला सुतन—दूलहसिंह का पुत्र शिवदानसिंह। रचेवा—करने, रचने। राड—लडाई। माधव मण्डळ—गीतनायक के पूर्वज माधोसिंह के नाम पर लाढखानोतो द्वारा शासित ग्राम समूह मावो मण्डल कहलाते हैं।

३ सावळा—भाले। ग्रणी धारा—नोके, धाराएँ। साकळे—युद्ध। भमाया—भ्रमित किए। ग्ररि थटा—वैरी समूह। बाघ भूरै—वब्बर सिंह, जवरदस्त वीर। गोत रखवाळ—गोत्र-रक्षक। ग्राद सू—ग्रादिकाल से। वियै सूरै—दूसरे शूरसिंह ने, शिवदानसिंह ने।

इळा रजवट वट तणी राखी अचड,
छता ब्रद भुजा दै जैत छाजै।
इण तरै जकै बदला लियौ असारा,
बस रा मुदायत भला वाजै ।।४।।

५९ गीत ठाकर खंगारसिंह सेखावत खोरा रौ

बाका फाट बादगरा हुआ सह हकबका,
रतन तण जस-हका अमर रहिया।
भ्रग लता कुवर सहिया जिका विसभर,
सकव चा चाबका तिकै सहिया ।।१।।

---

५९. गीतसार–उपर्युक्त गीत दातारामगढ़वाटी के खोरा स्थान के ठाकुर खगारसिंह शेखावत्त की प्रशसा मे कहा गया हैं। गीत मे गीतनायक के कवि द्वारा अबोधता से किए गए चाबुक प्रहारो की प्रसिद्धि घटना की तुलना भगवान् विष्णु के हृदयस्थल पर भ्रगु ऋषि के पाद प्रहार से साम्यता दिखाते हुए वर्णन किया गया है।

---

४ इळा–पृथ्वी। रजवट वट–क्षात्र धर्म के मार्ग की, क्षत्रियत्व के बल की। अचड–उत्तम कार्य, महानता। छता–पृथ्वी, वर्त्तमान। ब्रद–विरुद। जैत–विजय। छाजै–शोभा होती हैं। इण तरै–इस तरह। जकै–वे, जो। मुदायत–मुखिया। भला वाजै–अच्छे कहलाते हैं।

१ वाका फाट–भय अथवा विस्मय से मुख खुला रह जाना। वादगरां–विवाद करने वालो, हठ करने वालो, दावा करने वालो के। हक वका–विस्मित, स्तब्ध। रतन तण–रतनसिंह तनय। जस हका–कीर्ति की शोहरत। भ्रगलता–भ्रगु ऋषि के पाद प्रहार। वुवर–उर, वक्षस्थल। सहिया–सहन किया। जिका–जो, जिन्होंने। सकव चा–सुकवि का। चाबका–चाबुक, कोरडे। तिकै–वे, उन।

कूरमा छात अखियात कीनी अकळ,
त्रिभँ कीधी बात भ्रुग लात नग नाम ।
धरी द्विज तणी पद लात उवर गिरधरण,
ताजिणां पात ना गात रखि ताम ॥२॥

भोज विक्रम करण सिवर जगदेव भणि,
दान खत्रियां घणा घणा दीना ।
अनत ध्रम काज रिख लात लीधी अगर,
कोरड़ा फताहर अमर कीधा ॥३॥

ब्रह्म सुत जेम पारख करी बीदगां,
देव पण भवक पण अधक दातार ।
विसन देवां सिरै हुवौ म्हां लोक विच,
खत्र्या खटतीस जग सिरै खगार ॥४॥

—देवा महियारिया रो कह्यौ

---

२. कूरमां छात—कछवाहों के स्वामी । अखियात—प्रसिद्ध । अकळ—अखिल । द्विज तणी—द्विजराज की, ऋषि भृगु की । गिर धरण—विष्णु ने । ताजिणां—चाबुक । पात ना—कवि का । गात—गात्र, शरीर । ताम—तब ।

३ बीकम—राजा विक्रमादित्य । सिवर—राजा शिवि । जगदेव—प्रसिद्ध दानी जगदेव पवार । खत्रिया—क्षत्रियों ने । रिख लात—भृगु ऋषि की चरण चोट । कोरड़ा—चाबुक । फताहर—फतहसिंह के पौत्र ने ।

४. ब्रह्म सुत—विष्णु भगवान् । जेम—ज्यों । पारख—पहिचान, परीक्षा । बीदगा—विदग्धों, कवियों की । विसन देवा—देवताओं में विष्णु की भांति । सिरै—श्रेष्ठ, शिरोमणी । खत्र्या—क्षत्रियों के । खटतीस—छत्तीस राजकुलों में । खगार—ठाकुर खगारसिंह ।

६० गीत ठाकर खंगारसिंघ सेखावत खोरा रौ

वडा बांटणा वीत बड चीत ताळा बिलद,
अखाड़ां जीत बिडदां उजाळा।
क्रीत रा बिसाऊ वाद वगा कळह,
उरस छिबत्ता बहै खान वाळा ॥१॥
पमग चढ़े खडै पथ प्रथी भैचक पडै,
झडै साबळ दमग आभ झेलै।
कूरमां राण व्रदधारियां करारा,
खेल तरवारिया पाण खेलै ॥२॥
लोह बळ वित्त पैलां तणा लियावै,
मौड अरि फतै ले आसमानी।
तला जोडा लगा बहै तरवारिया,
खरड घोडा किया लाडखानी ॥३॥

---

६० **गीतसार**–ऊपर लिखित गीत खोरा ग्राम के ठाकुर खगारसिंह शेखावत की उदारता तथा वीरता से सम्बद्ध है। कवि ने गीतनायक को दानी, उदार चित्त, भाग्यवान् और युद्ध विजेता विरुदधारी के रूप मे चित्रित किया है। वह कहता है कि युद्ध समय मे लाडखान के वंशवाला खंगारसिंह आकाश को स्पर्श करता चलता है और इस प्रकार दान और युद्ध दोनो मे यश प्राप्त करता रहता है।

---

१ बाटणा–वितरित करने वाला। वीत–वित्त, द्रव्य, घोडे, ऊँट आदि को भी राजस्थानी मे वित्त कहा जाता है। वड चीत–उर्दार चित्त। ताळा बिलद–भाग्यशाली। अखाडां जीत–युद्ध विजयी। विडदा–विरुदो का। क्रीत रा–कीर्ति का। बिसाऊ–क्रयता, खरीददार। कळह–युद्ध। उरस आकाश। छिबता–शोभित होते। बहै–चलता है। खान वाळा–लाडखान का वंशधर।

२ पमग–घोडे पर। खडै–चलता है। भैचक पडै–आतक फैल जाता है, भय चक्रित हो उठती है। झडै–झडते हैं, गिरते हैं। सावळ–भाले (?)। दमग–अग्निकण। आभ–आकाश। कूरमा राण–कछवाहो का राजा, कछवाहो का प्रमुख। व्रद धारिया–विरुद धारण किए। करारा–शक्तिशाली, कठोर। पाण–बल। खेलै–खेलता है।

३ लोह वळ–शस्त्र शक्ति से। वित्त–द्रव्य। पैला तणा–दूसरों का। लियावै–ले आता है। मौड अरि-शत्रुओ को पीछे भगा कर। फतै-विजय। तला जोडा-अपने रिश्तेदारो सहित। खरड–सेना, योद्धा। लाडखानी–शेखावतो की लाडखानी शाखा वाला खगारसिंह।

सूर अवसाण सिध अनड़ ऊचा सिरा,
यळा ऊधम धमे वीत आणे।
ताईया गमे जड सदा वाहे तिजड,
तिके भड भलाई मूछ ताणे ।।४।।

६१ गीत भोजराज खंगारोत नराणा रौ

कळि चालण अकळ महा भड कूरम, मन महिराण निरेहण मौज ।
द्रोमभ्र जितै रचे दिलेसुर, भेडुक तितै मुहियड़ भौज ।।१।।

ढलि दळ आगळ ढूढाडौ, सुतन मनोहर मेर समाण।
पाधरि चढै कळोधर पीथळ, पिडि जेतला तेतला प्रमाण ।।२।।

---

६१ गीतसार—यह गीत जयपुर राज्य के नरायना सस्थान के स्वामी भोजराज खगारोत शाखा के कछवाहा योद्धा पर कथित है। गीत मे उसे चित्त का उदार और कुलोद्धारक वताते हुए शाही पक्ष के युद्धो मे वीरता दिखा कर आमेर को गौरवान्वित करते रहने वाला घोषित किया है।

---

४ सूर—शूर। अवसाण सिध—युद्ध मे विजयी योद्धा, समय पर कार्य सिद्ध करने वाला। अनड—किसी का वधन न स्वीकारने वाला। ऊचा सिरा—गर्वोन्नत मस्तक। यळा—पृथ्वी। ऊधम धमे—विजय कर भोगता है। आणे—ले आता है। ताईया—आततायियों। गमे जड—जड से नाश कर देता है। वाहे तिजड—तलवार चलाकर। तिके—वे। भलाई—भले ही। मूछ ताणे—मूछो पर वल देवें।

१. कळि चालण—कलियुग मे मर्यादाओ का पालन करने वाला, युद्ध, वहादुर। अकळ—अव्यग्र, व्याकुलता रहित, निर्भीक। कूरम—कछवाहा। मन महिराण—चित्त का उदार। निरेहण—निष्कपट, निष्पाप। मौज—दान। द्रोमभ्र—युद्ध। जितै—जितने। रचे—किए। भेड्डुक—भिडने वाला, सहायक। तितै—तितने, उतने। मुहियड—मुह आगे, अग्रिम पक्ति मे आगे। भौज—भोजराज।

२ आगळ—अग्रिम। ढूढाडो—ढूढाड प्रदेश वाला, भोजराज। सुतन मनोहर—मनोहरदास का पुत्र। मेर समाण—गिरि शृ ग तुल्य, अचल। पाधरि—सीधे। कळोधर पीथळ—राजा पृथ्वीराज की कला को धारण करने वाला, भोजराज। पिडि—युद्ध। जेतला—जितने। तेतला—उतने।

ओखडमाल अभग अतुळीबळ, भिडि भांजे भाले गज भार।
खाटे विरद ऊजळे खत्रवटि, खगि प्रवि प्रवि दूसरौ खगार ॥३॥

पाट ऊधोर हेकळ पाखरियौ, लख पाखर समरि समरि जीवत सभ।
ओपै न्रप दरगाहि आवेरौ, थाट विडार वडाळौ थभ ॥४॥

६२ गीत कुसळसिंघ नाथावत चौमू रौ

कवि सरिस नमै अनमी वसि कीजै, विसम समै असहा बळ।
ऊचा वस तणौ आवेरा, कुसला तत लाधौ अकल ॥१॥

चौरगी गज डसणां अत चाढे, भेड़ूक अरोडै गज भार।
थाणा प्रवळ लाख दळ थोभै, अे कूरमा तणा अधिकार ॥२॥

---

६२ **गीतसार**—उपर्युक्त गीत चौमू के स्वामी कुशलसिंह नाथावत की वीरता का वोधक है। कवि कहता है कि चतुरगिनी सेना, हाथियो तथा प्रवल सहायको द्वारा रक्षित शत्रुओं से लड कर कुशलसिंह क्षत्रियत्व को प्रकट करता है और याचको को दान-सम्मान से प्रसन्न कर कछवाहा कुल को यशस्वी वनाता है।

---

३ ओखडमाल—भहादुर। अभग—पूर्ण निश्चयी। अतुळी बळ—अतुल्य बल वाला। भिडि—भिड कर। भाजे—सहार किए। भाले वलम। खत्रवटि—क्षत्रियत्व। खगि—खड्ग। प्रवि प्रवि—प्रति पर्व। दूसरौ खगार—द्वितीय खगार, भोजराज खगार का पौत्र था।

४ पाट ऊधोर—सिंहासन का उद्धारक। हेकळ—ऐकाकी, अकेला रहने वाला, महान् वीर। पाखरियौ—कवचधारी, योद्धा। पाखर—अश्व सैनिक। समरि—युद्ध। जीवत संभ—युद्ध मे घायल होकर वच जाने वाला योद्धा। ओपै—शोभित होता। दरगाह—दरबार, सभा। आवेरौ—आमेर वाला, भोजराज। थाट—सेना। विडार—नाश कर। वडाळौ—वडा, महान्। थभ—स्तम्भ।

१ सरिस—सदृश। नमै—झुकते हैं। अनमी—अनम्र, उद्धत। वसि—वश मे। विसम समै—विषम समय मे। असहा—शत्रुओ। ऊचा वंस तणौ—उच्च वश को। आवेरा—आमेर राज्य के कछवाहा। तत—तत्व। लाधौ—मिला।

२ चौरंगी—चतुरगिनी सेना, गज, रथ, अश्व और पैदल सेना। गज डसणा—गज दन्त। 'भेड़ूक—सहायक, भिडने वालो। 'अरोडै—रोकने वाले,जबरदस्त। थाणा—सैनिक चोकिया। थोभै—रोके, आगे न बढने दे। कूरमा तणा—कछवाहो का।

जुधि प्रवि सुसवळा जूटवौ, चाग्रे वित ऊपरौ चित ।
राम सुजाव ऊजळे रजवटि, कुळ मोटे मोटा स सुक्रित ।।३।।

कळि ग्रवधूत कळोधर कूतळ, ग्रमिया धूतग वरियाम ।
ग्रागे जग तू जिम ग्रोळखिया, नाथहरा रहिया त्या नाम ।।४।।

६३. गीत ठाकर रणजीतसिंघ रौ भाभ्फ रा जुद्ध रौ

भ्फडा खूटिया तमाम फीला हजारी हालिया जगां,
ऊडे़ तोपां सोर जोर ढके गौ ग्रादीत ।
भैंचके कारिमा हियेे ग्रान भडां माण भागा,
जाडा वोहा वीच वैंड भ्फोकिया रणजीत ।।१।।

---

६३ गीतसार–उपराकित गीत मे जयपुर के चौमू ठिकाने के स्वामी रणजीतसिंह नाथावत ने शेखावाटी के फतहपुर स्थान पर जार्ज टामस को पराजित कर विजय प्राप्त की थी, उसका वर्णन किया गया है। कवि कहता है कि गजराजों पर ध्वज फहराते हुए रणजीतसिंह ने युद्ध भूमि मे प्रवेश किया। अग्रेजो की तोपो के धुग्रे से ग्राकाश मे सूर्य का तेज मन्द हो गया ग्रौर कितने ही किंपुरुप युद्ध स्थल से घर की ग्रोर भाग चले। उस समय रणजीतसिंह ने ग्राक्रमण कर सेनानायक जार्ज टामस को परास्त किया।

---

३ जुधि–युद्ध। प्रवि–पर्व। सुसवळा–सु समर्थो, सशक्तों। जूटवौ–भिडना, टक्कर लेना। वित–धन, दौलत। चित–चित्त, मन। राम सुजाव–रामसिंह का पुत्र कुशलसिंह। ऊजळे–उज्ज्वल, निर्दोप। रजवटि–राजपूती, क्षत्रिय पथ। कुळ मोटे–महान् कुल। सुक्रित–सुकृत, सुन्दर कार्य।

४ कळि–कलियुग मे, युद्ध मे। ग्रवधूत–योगी, सिद्ध पुरुप। कळोधर–कला को धारण करने वाला। कूतळ–राजा कुतिल देव की। धूतग–योद्धा। वरियाम–श्रेष्ठ। ग्रोळखिया–पहिचाने। नाथहरा–नाथ (नाथा) के वशधर। रहिया त्या नाम–उनकी यश गाथा रही, ग्रमर नाम रहा।

१ खूटिया–खुले। फीला–हाथियो। हालिया–रवाना हुए। सोर जोर–घनी प्रचण्ड वारूद। ढके गौ–छिप गया। ग्रादीत–सूर्य। भैंचके–भयचक्रित हुए। कारिमा–किंपुरुप। हिये–हृदय, मस्तिष्क। ग्रान–ग्रन्य। माण–मान, गर्व। भागा–नष्ट हुग्रा। जाडा वोहा–सघन प्रहारो मे। वैंड–घोडा, हाथी। भ्फोकिया–धकेले, भ्फोके।

आरबा कड़कै चकै धडक्के ऊरब्बी आभ,
बडकै डूगरा शृग झगरा बिछोड।
झडक्कै लाज रा लग्र रतन्नेस वाळौ जोध,
आभ हू अडक्कै जोस बभके अरोड ।।२।।

ओळा भत्ती रीठ जूला भे दुरद अगा,
लुभट्टा सबोळा टोळा हबोळा सकाज।
बिरोळा गैंजूहा सीह ऊतौला गैणाग बीर,
राघौ नाम रटै जीह हके बाजराज ।।३।।

कोमडा भणके चिल्लां रणकै भूडडा कूत,
ठणकै झाझरा परी हाका ठाम ठाम।
हरक्खे झणकै जत्र नारदेस मुनी हत्था,
तेग भट्टा पछट्टा घू खणक्के तमाम ।।४।।

---

२ आरबा–तोपें। कडक्के–गरजती है। चकै–भयचकित, विस्मित। धडक्के–धड धड की ध्वनि, कपन। ऊरब्बी आभ–भूमि और आकाश। बडकै–बडड की ध्वनि, टूटते समय होने वाली आवाज। झगरा–वन, झाडियां। बिछोड–छिन्न होकर, छोड कर। लग्र–लंगर। जोध–पुत्र, योद्धा। आभ हूं–आसमान से। अडक्के–स्पर्श कर, अड कर। अरोड–जबरदस्त।

३ ओळा भत्ती–उपल वर्षा की तरह। रीठ–युद्ध। जूळा–पृथ्वी, अलग। दुरद अगां–हाथियो के अगो पर। टोळा–समूह। बिरोळा–मथन कर, विनाश। गैंजूहा–गज यूथो। ऊतौला–प्रहार हेतु शस्त्र ऊपर उठाए हुए। गैणाग आकाश। राघौ नाम–अपने इष्ट देव राघव का नाम। जीह–जिह्वा से। हके–हांके, तेजी से चलाए। वाजराज–अश्वराज, श्रेष्ठ घोडे।

४. कोमडा–धनुषो के। भणकै–आवाज करे। चिल्ला–प्रत्यचाएँ। रणकै–रणन ध्वनि। भूडडा–भुजदण्ड। कूत–वर्छे, भाले। ठणकै–ठणण की ध्वनि। झाझरा–नूपुरें। परी–अप्सराओ। हाका–हल्ला। ठाम ठांम–स्थान स्थान पर। झणकै–झनकार, झणण ध्वनि। जत्र–यत्र, वीणा। हत्था–हाथो मे। तेग–तलवार। पछट्टा–पछांटे, शस्त्राघात। घू–मस्तको पर। खणक्के–खणण करती चले।

टूटे सीस केई पार पंजरा कूत फूटै,
रुण्ड धरा लूटै केई छूटै लाल रग।
विछूटै जूसणा कडा केई बीर धसै वोम,
जाडा थडा फसै केई जूटै जोम जग ।।५।।

ओरम्मे ब्रहास सप्पतास चौजा चाव लागै,
हुलासा सूरमां फौजा वागै चन्द्रहास।
रिखां हास मौजा हेत तमास तास देव रंजै,
खडै जोस खाथै नाथै झाझवाड़ो खास ।।६।।

त्रभागा धमाका खाथा बीजळा प्रभाका तेगा,
फते वाका हाका धाका उड़ै कुभा फाड़।
डमरू डकै डाका साकाबध चाका डोह,
बराका सिराका जूटा सुभट्टा वाबाड़ ।।७।।

---

५ पार–उस ओर, इधर से उधर। पजरा–अस्थिपिंजरो के। कूत–भाले, बर्छे। फूटै–चीर के निकलते है। रुण्ड–कटे हुए शीश। धरा लूटै–रणस्थल पर लुढकते हैं। छूटै–वहे। लाल रग–लोहू। विछूटै–खुले, टूटे। जूसणा–कवचो के। कडा–जजीरो के वधन। धसै–धँसते है। वोम–ताकत लगा कर, आकाश। जाडा थडा–घने समूह मे। फसै–फँसते हैं, धिर जाते हैं। जूटै–जुडे, भिडे। जोम–घमण्ड, गर्व। जग–युद्ध।

६ ओरम्मे–झोकते हैं। ब्रहास–घोडे। सप्पतास–सपताश्व। चौजा–मौज, विनोद। वागे–चले। चन्द्रहास–तलवार। रिखा हास–ऋषि नारद हास्य करते हैं। मौजा–आनन्द, दान। हेत–लिए। तास–उस, भय। खडै–खण्डित किया। खाथैं–शीघ्रता से। नाथै–नाथावत वीर रणजीतसिंह ने। झाझवाडो खास–जार्ज टॉमस की स्वय की अग रक्षक सेना।

७ त्रभागा–तीन धार वाले वर्छे, भाले शस्त्र। धमाका–प्रचण्ड चोटें। खाथा–तेजी। वीजळा–विजली की। प्रभाका–कान्ति के, चमक के। तेगा–तलवारे। वाका–मुह। हाका धाका–वलात्, दिन दहाडे। कुभा–गज गुण्डो, कुम स्थलो। डकै–वजे। डाका–डडको से। वध चाका–निशानें, योद्धा। डोह–मथन कर, मस्ती से। सिराका–सिरह, प्रमुख पक्ति के। वावाड–वीर श्रेष्ठ।

खळक्कै नारगा खाळ बीज ज्यूं भळक्कै खगा,
बक्कै बीर किलक्कै चामुंडा छक्खै बेत ।
दडा सा बिछूटा माथा धडा थी रुळन्ता डोलै,
कुरू खेत जूंटा जाणी पाँडू कैरू खेत ॥८॥

पौतारे भडांळां पाळा चाळा लागा बरा पूर,
कुजरा छडाळा घ्रीब-दूसारा काढाळ ।
भाटकै कराळ जोस जगा मुदी लाज भुजा,
बादौबादी महाबीर भाटकै बाढाळ ॥९॥

जोस मे अथागा जडै कुजरा छडाळां जोम
धणी आगा छळा जागा उरिदा उध्राम ।
बीज सा सळाव खाता ऊनागा दुधारा बागा,
आधंतरा लागा भागा फिरगी अमाम ॥१०॥

---

८ खळक्कै—बहने लगे । नारंगा—लोहू के । खाळ—पहाड़ी नाले । बीज—विद्युत । भळक्कै—चमके । बक्कै—बोलते हैं । बीर—बावन वीर, वैताल । किळक्कै—हर्ष ध्वनि करे, किलकते हैं । छक्कै—छकित, उन्मत्त । वेत—अवसर । दडा सा—कदुक तुल्य, बडी गेंद जैसे । बिछूटा—कट कर गिरते हैं । माथा—मस्तक । धड़ा थी—घट से । रुळन्ता डोळे—पैरो की टक्करो से इधर उधर चक्कर खाते फिरते हैं । जूटा—भिडे । पाडू कैरू—पाण्डव और कौरव वीर । खेत—रण क्षेत्र ।

९ पौतारे—प्रोत्साहित करे । भडाळा पाळा-पदाति योद्धाओ को । चाळा लागा—युद्ध कुतूहल लगे । कुजरा—हाथियो । छडाळा—भालो । घ्रीब—प्रहार । दूसारा—भाले । काढाळ—निकालने वाले । भाटकै—टक्करें देते हैं । कराळ—विकराल, करारी । मुदी—प्रमुख । वादोबदी—हठ पूर्वक । भाटकै—जबरदस्त आघात करे । वाढ़ाळ—तलवार के ।

१० अथागा—अथाह, अपार । जडै—वार करे । धणी—स्वामी । आगा—आगे, सामने । छळा—युद्ध । उरिदा—वैरियो के । उध्राम—व्यग्रता से, भयानक, उघेड़ने वाली । बीजळा—विद्युत सदृश । सळाक—चमक । खाता—करते, जल्दी से । ऊनागा—नग्न । दुधारा—द्विधाराओ वाले शस्त्र । बागा—चलने लगे, लडने लगे । आधतरा लागा—आकाश के जा लगे । फिरगी—अग्रेज । अमाम—प्रतिष्ठा खोकर, गर्वविहीन होकर ।

छाजियौ सूरमा पणौ लेता तोपा पूर छका,
धूरिमा बिहंडै माडा चाडा जे विराज।
जोध विना अत्री जौन ऊरमा दिखातो जतु,
जाणतौ कूरमा मही निछत्री जिहाज ।।११।।

—हणूतदान दधिवाडिया रौ कह्यौ

६४. गीत चांदसिंघ बालापौता कघवाहा रौ

घूरे त्रम्वाळा मचायौ जग मेवाड़ चीरवै घाट,
धावियौ जेण वेळां काळा नाग सो धैंधीग।
जटा धार तीजो नयण ज्वाळा सो जगायौ जेम,
स सिंधू कराळो रूप आयौ चाद सीग ।।१।
बागी हाक दवा सु गोळिया ऊजाळे छूटै,
जगै क्रोधवान महाबोला बीर जंग।
मूकां नाद वघूळा सै नग्गी खाग खळा माथै,
तोप दग्गी गोळा जिम मेळियौ तुरंग ।।२।।

---

६४ गीतसार—उपर्युक्त गीत शेखावत क्षत्रियो की बालापोता प्रशाखा के वीर चाँदसिंह पर रचित है। चाँदसिंह द्वारा उदयपुर राज्य के चीरवा घाट नामक स्थान पर लड कर वीरगति प्राप्त करने का गीत मे आलेखन है।

---

११ छाजियौ—शोभित हुआ। सूरमा पणौ—वीरत्व। पूर छाका—पूरे छके हुए। धूरिमा—शत्रुओ के मस्तक। विहडै—खण्डित करें, काटे। माडा—जबरन, बलात्। चाडा—सहायतार्थ। अत्री—इतनी। ऊरमा—पुरुषार्थ। निछत्री—क्षत्रियो से विहीन। जिहाज—जार्ज टॉमस।

१ घूरे—नाद करे, ध्वनि करै। त्रम्वाळा—ताम्र धातु के पेंदे वाले नगाडे। चीरवे घाट—मेवाड की चीरवा नामक गिरि कक्ष या घाट। धावियौ—मारने लगा, बरसने लगा। जेण वेळा—जिस समय। काळा नाग सो—काले सर्प सदृश, काले हाथी के समान। धैंधीग—वीर। जटाधार—शिव। तीजो—तृतीय। ज्वाला सो—ज्वाला तुल्य। जगायौ—जाग्रत किया, समाधि से उठाया।

२. वागी—हुई। जग—युद्ध। मूका—छूटै, मुक्त हुए निकले। वघूळा—वात्यचक्र। नग्गी खाग—नग्न कृपाणें। माथै—पर। मेळियौ—मिलाया, शामिल किया। तुरग—घोडा।

चन्द्रहासा खागा कै प्रचडा भुड वीर चाळै,
खुले रुण्ड मुण्डा कै प्रजाळै लोही खाळ ।
पोतरै बिहारी वाळे रिमा थडा कै पछाडे,
करे सूर धीरा धावा बिहडा कराळ ।।३।।

खिरेगो खळा नू मार मंडे फूलधारा खेत,
धरेगो बिजैत, नाम जूभारा सधीर ।
करेगो प्रीति रा पूर लोही धार छके काळी,
बरेगो अपछरा बालोपोतौ महाबीर ।।४।।

६५. गीत राव करमसीं जोधाउत राठौड़ रौ

राखत जो नही कमौ रिण रहचै,
घाय मिळे रिण असुर घड ।
तो जड जगळ जात जैता,
ज्यू जैतारण ही जात जड ।।१।।

---

६५ गीतसार—ऊपर लिखित गीत राव जोधा राठौड के नवें पुत्र कर्मसी राठौड की युद्ध वीरता पर रचित है । गीत मे कर्मसिंह द्वारा बीकानेर के अपने बधु स्वामी बीका, द्रोणपुर के शासक बीदा, मेडता के शासक दूदा और जैतारण के अधिपति जैतावतो की युद्धो मे सहायता करने का वर्णन है । उसने अपने चारो राव पदधारी बधुओ की सहायता की थी ।

---

३ चन्द्रहासा—तलवारें । खागा—कृपाणें । चाळै—विनोद, युद्ध । खाळ—नाले । पोतरै—पौत्र । रिमा थडा—शत्रुसमूह । बिहडा—खण्डित कर, तितर बितर ।

४ खिरेगो—खंवित हुआ, गिर पडा । फूल धारा—तलवार की धाराओ मे । धरेगो—ससार मे पीछे छोड गया । बिजैत—विजेता का । छकै—तृप्त । बरेगो—वरण करके गया । अपछरा—अप्सरा । वालो पौतो—राव बाला कछवाहा का वशज ।

१ कमौ—कर्मसी, राव जोधा का ९वा पुत्र जिससे राठौडो की कर्मसोत प्रशाखा का प्रचलन हुआ । रिण—युद्ध । रहचै—लड कर । असुर घड—वैरियो की सेना । जगळ—जागल देश, बीकानेर राज्य का प्राचीन नाम । जैता—राव जैतसिह । जड—मूल, जडमूल ।

पौह धमौरो अनै द्रोणपुर,
पौह मेडतो जागळू पह।
काढत जडा सहत किलमायण,
करमसी जौ नह करत कळह ।।२।।
समहर चौ भरभार साहिया,
सीह करत जौ नही समेळ।
बीका बीदा दूद जैतायण,
इतरां होवत जड़ा ऊखेळ ।।३।।
निग्रह भौम घणा नर नामिया,
घण दळ साम्रण रचण घण घाव।
राखी भले कमै चहु रावा,
जड़ ऊपडती जोध सुजाव ।।४।।
—माला सादू भदोरा रौ कह्यौ

६६. गीत राव करमसी जोधाउत राठौड़ रौ

कसे पीठ पाखरा पमग दळा आरभ किया, दूठ वीको सजे आवियौ दाव।
दाख वळ करमसी भलो छळ दाखियौ, राखियौ राव रौ वचन तद राव ।।१।।

---

६६ **गीतसार**—उपराकित गीत राव जोधा के छोटे पुत्र राव कर्मसिह राठौड की रण क्रीडा पर सर्जित है। राव कर्मसिह ने बीकानेर के राव बीका द्वारा जोधपुर के राव सूजा पर आक्रमण करने पर राव सूजा की सहायता की थी। गीत मे सूजा के पक्ष मे लडने का सकेत है।

---

२ पौह—राजा, योद्धा। धमौरो—राव काधल की राजधानी का नाम। अनै—अन्य। काढत—निकाल देता। जड़ा सहत—जड सहित, बुनियाद सहित। किलमायण—मुसलमान, कलमा पढने वाले। कळह—युद्ध।

३ समहर चौ—युद्ध का। भर भार—जिम्मेदारी। साहिया—झेले हुए, उठाए हुए। सींह—कर्मसिह। समेळ—शामिल होने का भाव, समेळ स्थान का युद्ध। इतरा—इतने। ऊखेळ—उपाड, जड रहित, निर्मूल।

४ निग्रह—दमन। घणा—बहुतेरो को। नामिया—झुकाए, अधीन बनाए। घण दळ—बहुत अधिक सेना। साम्रण—सजा देकर, मार कर। कमै—कर्मसिह ने। ऊपडती—उखडती। जोध सुजाव—राव जोधा के पुत्र कर्मसिह ने।

१ पाखरा—घोडो की कवचें। पमंग—घोडे। दूठ—वीर। सजे—सज्जित होकर। दाख—कह कर। छळ—युद्ध। तद—तब। राव—राव कर्मसी।

चढ़े आसोप सु खड़े अति चचळा,
आभ भुज अडे पौरस अछायौ ।
वयण सूजो गहण बीटियौ वीकड़े,
उग्राहण करेवा कमौ आयौ ।।२।।

जोधपुर भीड पडिया थका जोध रै,
लडण भुज नीम उरस लागौ ।
रूक हथ राव सूजै सघर राखियौ,
भिड़े दूजौ वीकम राव भागौ ।।३।।

लग्गर फौजा तणा लार अत लगाया,
धकाया कमधजा कमध धेटौ ।
भाग बळ भलोजी भलो कहियौ,
खाग बळ प्रवाडो लयौ खेटौ ।।४।।

—माला सादू भदोरा रौ कह्यौ

---

२ आसोप—मारवाड के एक ठिकाने का प्रमुख स्थान । खडे—रवाने हुए, प्रस्थान किया । चचळा—घोडे । आभ भुज अडै—भुजाएँ आकाश को स्पर्श करती । पौरस—बल । अछायौ—परिपूर्ण, व्याप्त । वयण—वचन । सूजो—जोधपुर के शासक राव सूजा को । गहण—पकडने के लिए । बीटियौ—चौतरफ से घेर लिया । वीकडे—वीकानेर के राव बीका ने । उग्राहण करेबा—उद्धार करने के लिए, मुक्त करने हेतु । कमौ—आसोप का स्वामी राव कर्मसिह ।

३ भीड—विपत्ति, सहायक । थका—होते हुए । उरस—आकाश के । रूक हथ—खड्ग धारण किए, हाथ मे तलवार लेकर । सघर—दृढता पूर्वक, धैर्य के साथ, वीर ने । भिडे—सामने लड कर ।

४ लगर—समूह, शृ खला । तणा—का । लार—पीछे । धकाया—पीछा किया । धेटौ—धृष्ट, वीर । खाग-बळ—तलवार की ताकत से । प्रवाडो—प्रशसा । खेटौ—युद्ध मे ।

६७. गीत ठाकर उदैसिंघ करमसोत खींवसर रौ

गजा सध निजोडण कमध ओ गाढ गुर,
विढण अणविध अवरी बरूंदा।
असमरा तोल छत्रबध राजा अगै,
आवळो तो जिसा कध ऊदा ।।१।।
हुतासण झड़ै खग सगत भुज हडहडै,
दुरत रण बीछडै गजा दौळा।
जेर हुवै जगत भेळा खड़ै जगत सू,
जिका हूता तूही लड़ै जौळा ।।२।।
नाथ रा अकळ माटी पणै नीबाहर,
अरि दल भखेवा कदळ उरड़ै।
आग झळकिया बीजळ कमा अभनमा,
मंहा वळ पहा सु तूही मुरड़ै ।।३।।

---

६७ **गीतसार**–उपर्युक्त गीत नागौर प्रान्त के खीवसर ठिकाने के करमसोत शाखा के राठौड वीर ठाकुर उदयसिंह पर रचित है। उदयसिंह ने महाराजा अजितसिंह जोधपुर की उनके पुत्र वख्तसिंह द्वारा हत्या करने पर नाराजगी प्रकट करते हुए महाराजा अभयसिंह तथा वख्तसिंह का विरोध किया था। गीत मे महाराजा अभयसिंह का साथ छोड कर अपने ठिकाने मे चले जाने का समकालीन कवि ने आख्यान किया है।

---

१ गजा-सध–हाथियो के सधिस्थलो को। निजोडन–खोलने, सधि-विच्छेद करने। कमध–राठौड वशीय। गाढ गुर–दृढ वीर, श्रेष्ठ वीर। विढण–लड़ने के लिए। अण विध–अभोगी। अवरी–विना वरण की हुई, विना लडाई मे लडी हुई। वरूदा–वरण करने वाला। असमरा–तलवारें। तोल–उठा कर, अनुमान लगा कर। छत्र वध–छत्रधारी। अगै–सम्मुख, अग्रिम। आवळो–वाका, टेढा, सजा हुआ। जिसा–जैसा।

२ हुतासण–अग्नि स्फुलिंग। झडै–गिरते हैं। खग–तलवार। सगत–शक्ति, रणचण्डी। दुरत–प्रचण्ड। बीछडै–बिछुडते है। गजा दौळा–हाथियो के चारो तरफ। जेर–पराजित। भेळा–शामिल। खडै–प्रस्थान करते हैं। जिका हूता–जिनसे, जिनके साथ। जौळा–अकेला, मैदान मे (?)।

३ नाथ रा–हरनाथसिंह के पुत्र, उदयसिंह। माटी पणै–मर्दानगी। नीवाहर–नीमा का पौत्र (?)। भखेवा–भक्ष्य वनाने का। कदळ–युद्ध मे। उरडै–जोश मे आकर आगे घँसता है। आग झळकिया–अग्नि, ज्वाला धधकने पर। बीजळ–तलवार। अभनमा–अभिनव। पहा–राजाओ, योद्धाओ। मुरडै–रोप प्रकट कर लौट आता है।

राज रखपाळ रिछपाळ धर रूक रज,
चाळ-बध समर करण चाळा ।
अजा रै मरण धक-चाळ तू आप रै,
केविया काळ लकाळ काळा ।।४।।

—अनोप सादू रौ कह्यौ

६८. गीत प्रथीराज जैतावत रौ

राणी म रोइ पीथौ रण रीधल,
रिण गा छाडि तिके भड़ रोइ ।
घण जूझै रिणमाल तणै घरि,
हुवै मरण तिम मगळ होइ ।।१।।

पीथल तणौ मकरि दुख पछि अछि,
दिग गा तजि करि तांह दुख ।
आदि तै अेह अखा घरि आगै,
सार मरण घण घणौ सुख ।।२।।

---

६८ **गीतसार**—उपर्युक्त गीत मे कवि ने राठौड वीर पृथ्वीराज की वीरगति पर उसकी पत्नि द्वारा रुदन करने पर उसे चुप करते हुए कहा है कि हे रानी ! विलाप मत कर ! राव रणमल्ल के घराने मे तो तुम्हारे पति की भाँति अनेक वीर युद्ध मे जूझ कर मरें हैं । वीरगति पाने वालो के लिए चिन्ता नही की जाती है । रण से पलायन करने वाले ही वस्तुत रुदन के पात्र हैं ।

---

४ रिछपाळ—रक्षपाल, रक्षक । रूक—तलवार । रज—क्षत्रियत्व, राजपूत का धर्म । चाळबध—वस्त्राचल बाँधकर, सेना को पक्तिबद्ध कर । चाळा—छेडछाड, कुतूहल । अजा रै—महाराज। अजीतसिंह जोधपुर के । केविया—वैरियो के लिए । काळ—मृत्यु । लकाळ—सिंह । काळा—वीर ।

१ म रोइ—रुदन मत कर । पीथौ—पृथ्वीराज । गा छाडि—छोड कर गए, भाग गए । तिके—वे । भड—योद्धा । घण—घने, बहुत । जूझै—युद्ध मे लडते हुए मारे गए । रिणमाल—राव रणमल्ल की सतान वाले राठौड । मगळ—मागलिक ।

२ पीथळ तणौ—पृथ्वीराज का । पछि—पीछे, पश्चाताप । अछी—सुन्दरी । दिग—दिग्गज, योद्धा । ताह—उनका । आदि तै—आदिकाल से ही, परम्परीण । अेह—यह । अखा—अक्षयराज के । घरि—घराने मे, कुल मे । सार—लोहा से, शस्त्र से ।

मकरि अंदोह जैतउत मरतै,
आया भाजि सु रोइ अयार।
अे कुळवट सदा अखैराजां,
चढता कुते मगळाचार ॥३॥

६९. गीत नारायण धनराजोत राठौड़ रौ

रयण गाज आवाज रण तूर पाखर रहच,
सालुळे सिधवौ राग साजै।
दुरति धनराज रौ वैर जळ डोहतो,
मल्हपियो मूगली फौज माथै ॥१॥
धीरवे कमंध खगधार ओलर धीमें,
अरि घड़ा जाणतो जेण आझै।
सार जळ सामहो हस पावासरो,
झीलवै नाराइण लोह झाझै ॥२॥

---

६९ गीतसार—उपर्युक्त गीत वीर श्रेष्ठ नारायण धनराज तनय पर रचित है। नारायण ने मुगल सेना के साथ घमासान युद्ध लड कर मृत्यु प्राप्त की थी। गीत मे लिखा है कि वह समुद्र गर्जन जैसी रणतूर्य्य की आवाज एव सिधु रागिनी की ध्वनि होते समय शत्रु-सेना पर उमड कर खड्ग की वौछार करने लगा। वह वीर शत्रुता रूपी जल-निधि का मथन करने के लिए तीव्रता से मुगल सेना पर झपट कर पहुचता।

---

३ अदोह—चिन्ता, सोच। जैतउत—जैता के पुत्र पृथ्वीराज के। भाजि—माग कर। अयार—अमित्र, शत्रु। कुळवट—कुलवृत्ति, कुल की रीति, वश की मर्यादा। अखैराजा—अखैराज की सतानो की। कुते—तलवार, भाले। मगळाचार—खुशी के आचार-व्यवहार, मागलिक कार्य कलाप।

१. रयण गाज—समुद्र की गर्जना। रण तूर—रण तूर्य्य। पाखर—अश्व सेना, घोडे की कवच। रहच—ध्वस्त करता। सालुळै—उमड कर चला। सिधवौ राग—सिन्धु रागिनी, रणोत्साही रागिनी। साथै—साथ, सग। दुरति—दु.सह्य। वैर जळ डोहतो—शत्रुता रूपी जल का विलोडन करता। मल्हपियो—तीव्रगति से चला, झपटा। मूगली—मुगलो की, वादशाही। माथै—ऊपर।

२. धीर वै—धैर्य पूर्वक, धीरे धीरे। कमव—राठोड। खग धार—खड्ग धारा। ओलर—तेजवर्षा, उमड-घुमड कर। धीमें—वीरता के साथ। अरि घडा—दुश्मनो की फौज। जेण—जो, जिस। आझै—वीरता, जोश, गति, युद्ध। सार जळ—लोह धारा रूपी जल मे। सामहो—सामने, सम्मुख। पावासरो—मानसरोवर का। झीलवै—स्नान करता है। लोह झाझै—शस्त्रो की सघन वौछारो मे।

सती पुहपा अनै सिवाणै,
जाय नह नाम ससार जिम यौ ।
हरी सिंह रहचि तौहि अवहड़ हरौ,
कमध नाराइण सरग क्रमियौ ।।३।।

७०. गीत फहीम राड़दड़े रा धणी रौ

विघन दीह विढता फहीम अपरा वह वही,
जुडे जग पतग ची भात जूवौ ।
हुतो हीदू जनम अछर कहै वरीस हूं,
हूर कहै दूर हुय मीयो हुवौ ।।१।।

---

७० गीतसार—ऊपर लिखा हुआ गीत बाडमेर प्रान्त के राडधडा स्थान के फहीम पूजावत राठोड पर है। गीत मे वीर गीतनायक का सिर धड से विच्छिन्न होने के पश्चात् भी शत्रु सेना का सहार करते रहने तथा पति रूप से अप्सरा और हूर के विवाद करने का वर्णन है। अन्त मे, वह हिन्दू योद्धा है अथवा मुसलमान यह निर्णय पाने के लिए ईश्वर के न्यायालय मे जाने का रोचक वर्णन किया है।

---

३ सती पुहपा—पुष्प कुवरि नामक सती (?)। अनै—और, अन्य। सिवाणै—मारवाड के शिवाना परगने का केन्द्रस्थान। जाय नह नाम—नाम नष्ट नही होगा। जिम—ज्यों, जिस प्रकार। रहचि तौहि—जल मथता, शत्रु नाश करता। अविहड हरौ—निर्भीक रहने वाला, अविहड का वशज। सरग—स्वर्ग। क्रमिया—गया, चला।

१ विघन दीह—विघ्न के दिन, युद्ध काल। विढता—लडते हुए। अपरा—दूसरो, शत्रुओं। जुडे—भिडा, जुटा। पतग—पतगा। ची भांत—की तरह। जूवौ—अकेला, अलग ही। हूतो—होता, था। अछर कहै—अप्सरा कहती है। वरीस हूँ—मे वरण करूंगी। हूर—मुसलमान योद्धाओ को वरण करने वाली मुसलमान अप्सरा। मीयो हूवौ—मुसलमान हुआ।

अरक कहै पूजउत तणा जोय आरिणि,
वावरै तिजड धड़ कमळ वढिया।
कमध चै समधि तैं रभा वरिवा करै,
परी कहै वरीस किम कळम पढिया ॥२॥

रोद फहीम घड रहचतैं हसैं रिव,
परी अछर दुन्है माहि पालौ।
चवैं चपा वदन खुदाय पै न्याय चालो,
वदन वदैं हर कन्है चालौ ॥३॥

कहर कोई पहर सिर विना विढियौ कमध,
कर ग्रहे सूर रथ वळण कीधी।
वाह गहि असुर सुर नारि दरगेह वडे,
दई रिणमाल हरैं दुवैं दीधी ॥४॥

—पदमा सादुवण रौ कह्यौ

---

२ अरक–सूर्य। पूजउत–पूजाराम का पुत्र। जोय–देख। आरिणि–युद्ध। वावरैं तिजड–तलवार का प्रयोग, खड्गाघात। कमळ–सिर। वढिया–कटे हुए। कमध चैं–राठौड कुलोत्पन्न होने के। समधि तैं–सम्वन्ध से। रभा–अप्सरा। वरिवा करैं–वरण करने का प्रयत्न करती है। परी–हूर, पर वारी यवन सदरी। किम–कैसे।

३. रोद–मुसलमानो की। घड–सेना। रहचतैं–विध्वस करते, मारते। रिव–रवि, सूर्य। दुन्है–दोनो। पालौ–रोको, मना करो। चवैं–कहे, कहती है। चंपा वदन–सुर सुन्दरी, अप्सरा। खुदाय पैं–खुदा के पास। न्याय चालो–न्याय के लिए चलो, भले ही चलो। वदैं–कहती है। हर–विष्णु, ईश्वर। कन्है–पास। चालौ–चलो।

४. कहर–युद्ध, विपत्ति। पहर–प्रहर तक। वादियौ–लडता रहा। कमध–धड, राठौड। कर ग्रहे–हाथ पकडे। सूर रथ–सूर्य रथ, अप्सरा का विमान। वळण–चलने की। वाह गहि–भुजा पकडे। असुर–मुसलमान। सुंर–हिन्दू। दरगेह–दरगाह, ईश्वर के दरवार मे। दई–विधाता, ईश्वर ने। दुवैं–आज्ञा, दोनो को।

७१. गीत गोकळदास मानावत राठौड़ रौ

जुग वीता अनत आवता जाता, लागी कसू हबरकै लाय ।
आधौ मेलि आध किम आयौ, खान तणौ हस कहै खुदाय ।।१।।
मान तणौ सुणि अमर तणौ अति, खग आछटियौ खार खध ।
बप कमधज तणौ घाव बहता, आधोई उडियौ उरध ।।२।।
खेचै दम बाही खेडेचै, मै पणि दम खैचियौ महे ।
सुधि नह रही आपौ साभळता, वढ पणि पखै चालियौ बहे ।।३।।
मीरा इम कहै बात अै मानू भाति असी नह कोय भयौ ।
बातो-बात करता बासै, अेतै बीजौ आधै यो हुयौ ।।४।।
भलौ भलौ गोकळ मुख भाखै, पीरा अर पैकमरा परि ।
मीरा हस राखियौ मीरा, केत राहा सारीख करि ।।५।।

---

७१ **गीतसार**—उपर्युक्त गीत मे कवि ने नागौर के राव अमरसिंह राठौड के प्रतिशोध मे मुसलमान अमीर को मारकर गोकुलदास के वीरगति प्राप्त करने का वर्णन किया है। गीत मे कहा है कि जब अमीर अर्द्ध श्वास सहित स्वर्ग मे पहुचा तब खुदा ने विस्मित होकर पूछा कि आज तक तो सब कोई पूर्ण श्वास सहित स्वर्ग आते रहे हैं, आज यह कैसे हुआ ? तब अमीर ने कहा— मानसिंह के पुत्र ने ज्यो ही तलवार का प्रहार किया मैं आधा श्वास ही ले पाया कि शरीर के दो टुकडे हो गए। फलत' आधा ऊपर चढ गया और आधा शरीर मे रह गया।

---

१ आवता जाता—आते और जाते हुए। हबरकै—अब की बार, इस बार। लाय—प्रचण्ड अग्नि। मेलि—छोडकर। किम-कैसे। हस-प्राण।

२. मान तणौ—मानसिंहोत गोकुलदास। अमर तणौ—राव अमरसिंह का। अति—निधन। खग—तलवार। आछटियौ—प्रहार किया। खार खध—अति कुपित होकर। बप—वपु, शरीर। वहता—होते, चलते। आधोई—अर्द्ध ही। उडियौ—उड़ा। उरध—उर्ध्व, ऊपर।

३ दम—श्वास। बाही—प्रहार किया। खेडेचै—राठौड गोकुलदास ने। पणि—परन्तु, भी। महे—भीतर। सुधि—खबर, सावधानी। आपो साभळता—अपने को सम्हालते। वढ—कटकर। पखै—एक तरफ। चालियौ वहे—चल पडा।

४ मीरा—अमीर। असी—ऐसी। बासै—पीछे का पीछे। अेतै—इतने ही मे। बीजौ, आधौ—शेष रहा आधा, दूसरा आधा।

५ भलौ—अच्छा। अर—और। पैकमरा—पैगम्बरो ने। परी—भी, ऊपर। केतराहा—राहु केतु। सारीख—सदृश।

७२. गीत साहबसिंघ राठौड़ री कटार रौ

ताता भड गुड तीसरी ताळी, जेहा जम जाळी जहर ।
मारू राव वाळी प्रतिमाळी, काली रै हाळी कहर ।।१।।

लोटै रसणी अणी लागता, डसणी वाट वजतू डसै ।
माहवा तणी नागणी सुजडी, वहर लागणी मरण वसै ।।२।।

उथापणी थापणी आमख, अख जापणी न जरति वळै ।
कमधज तणी सापणी कटारी, खळ काळिज कापणी खळै ।।३।।

अंब जाप जप जडी अतागी, जागी त्या वागी जहर ।
पाळहरा नागी प्रतमाळी, लागी त्या वागी लहर ।।४।।

---

७२ गीतसार—गीतकार ने उपर्युक्त गीत में राठौड वीर साहबसिंह की कटारी के प्रवाह का वर्णन किया है। वह कहता है कि साहबसिंह की कटारी सर्पिनी की भाँति विषाक्त है जिसके चोट लगती है वही शत्रु पृथ्वी पर लुढ़क पडता है। वह खलो के कलेजों के टुकडे-टुकडे कर देती है।

---

१ ताता भड—फुर्तीले योद्धा, उग्र प्रकृति वीर। गुड—गुड गुड शब्द ध्वनि ? तीसरी ताळी—तृतीय बार की आवाज या ताली वजते ही। जमजाळी—यमराज का पाश। जहर—विष। मारू राव वाळी—राठौड वीर साहबसिंह की। प्रतिमाळी— कटारी। काली—कालिका देवी। हाळी—वाली, की। कहर—विपत्ति।

२ लोटै—लुढके। रसणी—पृथ्वी पर। अणी—नोक। लागता—लगते ही। डसणी—दशनी, काटनेवाली। डसै—काटे, चोट करे। नागणी—सर्पिनी। सुजडी—कटारी। वहर—चीरती।

३ उथापणी थापणी—उन्मूलन तथा स्थापित करने वाली। आमख—मांस। अख—कलेजा, गुर्दा। न जरति—सहन नहीं की जा सकती, हजम नहीं हो सकती। सापणी—सर्पिनी। खळ काळिज—शत्रुओ के कलेजो के। कापणी—टुकडे-टुकडे कर देने वाली।

४ अंब—अम्बिका, दुर्गा के। अतागी—अथाह, न त्यागने वाली। पाळ हरा—गोपालदास के वंशज की। नागी—नग्न, नागिनी। वागी लहर—लहरें आने लगी।

७३. गीत महाराजा जसवंतसिंघ राठौड़ रौ

सरद बांध लीधी नरवदा लगै सीसोदीये,
डाहे जोगणपुर परि डाण।
पातसाही लेत सिवौ हेकण पलक मे,
पातसाही रही जसा रै पाण ॥१॥
फौज खूमाण गे आई रेवा फिरी,
माड दिखणी अणी बांधइ मौड।
ठौड दिली तखत सिवौ ऊठावतौ,
ठांम राखी दिली बडे राठौड ॥२॥
हाक कटका नदी करी दीवाण हृद,
सकळ असुरा तणा मेट उरसाण।
खगा बळ सिवौ खुरसाण साभत खळा,
खाग बळ मारुवै राख खुरसाण ॥३॥

---

७३ **गीतसार**–ऊपरांकित गीत महाराजा जसवर्तसिंह प्रथम द्वारा राजा शिवा मरहठा के विरुद्ध दक्षिण के सैनिक अभियान से सम्बन्धित है। गीतकार का कथन है कि राजा शिवा सिसोदिया ने अपने राज्य का विस्तार कर दक्षिण मे नर्बदा नदी तक अपनी सीमा स्थिर बना ली थी और उसको रोकने के लिए यदि महाराजा जसवर्तसिंह नही जाते तो वह सहजता से दिल्ली पर आधिपत्य स्थापित कर लेता।

---

१ सरद–सरहद, सीमा। लीधी–ली। लगै–तक। सीसोदीये–राजा छत्रपति शिवा ने, शिवा सीसोदिया कुलोत्पन्न होने के कारण उसे सीसोदिया कहा गया है। डाहे–अधिकार करे, दाव मे ले। जोगणपुर–योगिनीपुर, दिल्ली। लेत–ले लेता। हेकण–एक। जसा रै–महाराजा जसवर्तसिंह के। पाण–बल पर।

२ खूमाण री–राजा शिवा की, शिवा उदयपुर के सीसोदिया वशोत्पन्न होने से उसे खुमान कहा गया है। रेवा–नर्बदा। फिरी–घूम फिर कर। माड–बल पूर्वक, जैसलमेर। दिखणी–दक्षिण के, मरहठे। अणी–सेना। ठौड–स्थान। ऊठावतौ–उठा देता, बादशाहत को समाप्त कर डालता। ठाम–स्थान, घर। राखी–रखा। बडे राठौड–महाराजा जसवर्तसिंह ने।

३ हाक–प्रस्थान कर, गर्जना कर। कटका–सेना की। दीवाण–राजा शिवा ने। हृद–सीमा,। असुरा तणा–मुसलमानो का। उरसाण–उत्सव, प्रभाव। खगा बल–खड्ग बल से। खुरसाण–खुराशान देश वालो, मुसलमानो, बादशाह। साभत–मारता। खळा–वैरियो को। मारुवै राव–मारवाड के स्वामी महाराजा जसवर्तसिंह ने।

सिघ गजसाह रै ताम कीनौ सरम,
वळे घर खडा लग सांभळी वात ।
छत्र फिरावतौ सिवौ ओरग छता
छत्र राख्यौ मरद सूरहर छात ।।४।।

७४. गीत महाराजा जसवंतसिंघ राठौड़ रौ

हुतौ जसवत तो थोक सगळा हुता,
हती हिंदुआ तणी वात हाथे ।
देखसै असुर मुख कवण सुण देहरा,
सळकिया देव जसवंत साथे ।।१।।

पड़ै जन जोध पूकार सगळे पडी,
धरै नह अरज पतसाह धीठौ ।
राह वधी हुई रखे कोई रोक से,
देवे जसवत रौ साथ दीठौ ।।२।।

---

७४ गीतसार—उपर्युक्त गीत जोधपुर के महाराजा जसवतसिंह राठौड प्रथम पर रचित है। गीत मे गीतनायक के निधन पर हिन्दू समाज पर वादशाह औरंगजेव द्वारा मदिरादि को ढहा कर अत्याचार करने का वर्णन है। वह कहता है कि जव तक ससार मे जसवतसिंह जीवित था तव तक हिन्दुओ के पास सव कुछ था किन्तु उसके मरते ही देवताओ तक ने अपना स्थान छोड कर स्वर्ग की राह ली ।

---

४ गजसाह रै—महाराजा गजसिंह के पुत्र ने, जसवतसिंह ने । ताम—तव । कीनौं—किया । वळे—पुन , फिर । घर खडा लग—समस्त खडो तक, समस्त देशो तक । साभळी—सुनी । फिरावतौ—फिरवाता । छता—मौजूद रहते । सूरहर छात—महाराजा शूरसिंह के छत्र को धारण करने वाले जसवतसिंह ने ।

१ हुतौ—जीवित था । थोक—सर्व वस्तुएँ, सव वातें । हुता—था । तणी—की । वात हाथे—वात हाथ मे थी, जैसा चाहते वैसा हो जाता था । असुर—दैत्य,मुसलमान । देहरा—देवालय, मन्दिर । सळकिया—चले गए । देव—देवता ।

२ पडै—पडते ही, मृत्यु होते ही । सगळे पडी—सब जगह हुई । धरै नह अरज—प्रार्थना पर ध्यान तक नहीं देता । धीठौ—धृष्ट, ढीठ । राह वंधी—मार्गावरोध । देवे—देवताओ ने । दीठौ—देखा ।

हतौ हिंदुआ तणौ ध्रम सूरा हरौ,
सबळ चिंता पडी देस सारे।
दुख मुरधर तणा हदे कुण देखसै,
लळकिया देव जसवत लारे ।।३।।
सुणी सुरळोक मे वात गजसाह री,
हसै हीदुआ तणी देख हासी।
आपरै बीज निज हस अवतारियौ,
आवियौ आप अब देव आसी ।।४।।

७५. गीत महाराजा अजीतसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

वैर ऊपटै कुरीठ जोम खत्रवाट छोळा वजे,
घरे चखा दावानळा खाडाहळा धीठ।
महा आकारीठ खोध करी अरडावै माता,
गालरा करै जी अजौ सिंघळी गरीठ ।।१।।

---

७५ गीतसार—ऊपराकित गीत मे जोधपुर के महाराजा अजितसिह राठौड के पराक्रम का वर्णन है। कवि ने महाराजा को सिह और दिल्ली के वादशाह को गजराज चित्रित कर रूपकात्मक चित्रण किया है। वह कहता है कि महाराजा के मन मे यवनेश के प्रति भयानक वैर उमड चला। उसके शोधन के लिए क्षत्रित्व में उत्साह वृद्धि होकर तरगे उठने लगी। फलत महाराजा रूपी सिह को घमासान युद्ध मे क्रोध आया देख कर बलवान मुसलमान योद्धा रूपी गज कातर ध्वनि करने लगे।

---

३ हतौ—मर गया। सूराहरौ—महाराजा सवाई शूरसिह का पौत्र महाराजा जसवतसिह। मुरधर तणा—मारवाड देश का। लळकिया—चले गए। लारे—पीछे।

४ गजसाह री—महाराजा गजसिह की। हुसै—होगी। हासी—हँसी, हास्य। हस—जीव। अवतारियौ—अवतरित हुआ। आवियौ—आया। आसी—आएँगे।

१ वैर ऊपटै—वैर बढ कर, विरोध उमड कर। कुरीठ—घना काला, भयानक। जोम—जोश, अभिमान। खत्रवाट—क्षत्रियत्व। छोळा—तरगे। वजे—प्रवाहित हो। चखा—चक्षुओ नेत्रो। खाडाहळा—तलवारो। धीठ—ढीठ, महान् योद्धा। महा आकारीठ—घमासान लडाई, वलवान्। खोध—क्रोध, मुसलमान। अरडावै—चीखे, चिग्घाडते हैं। माता—मोटे ताजे, मत्त। गाल रा—नाश, कलरव। अजौ—महाराजा अजितसिह। सिंघळी—सिह श्रेष्ठ। गरीठ—वलिष्ठ, प्रचड काय, प्रतापी।

फूतकारा उडावै किता किताई नै मारै फेर,
वळा दे मूछारा सारधारा खाघीवंध ।
सुरत्ताणा जाडी जोड़ हसत्ती चाचरा सेतो,
करै वनापती वाकौ डाकरा कमध ।।२।।

भाराथा न भाजै जिको झाटके खगाटा भुजा,
पजा नळा चाटके जडक्कै सेस पाव ।
दाव धाव वारणेस जवन्नेस सीस दे दे,
गज्जणेस हरो सीह गाजै गाढे राव ।।३।।

हिंदू खडा रख्खवाळो गिरंदां घरम हाथा,
वधै स मदाळां रौंदां थाहा वजरैळ ।
चगत्तेस गजराजा प्रसणेस हूँता चोडै,
जसा रा अडेल सीह आदेस जटैल ।।४।।

---

२ फूतकारा–फूत्कारो से । उडावै–मार भगाता है, दूर फेंक देता है । किता–कितनो ही को । फेर–फिर, पुन । वळा–वल, ताव । मूछा रा–मूछो के । सारधारा–शस्त्रधारी । खाघीवध– टेढी पगडी बाँधने वाला, राठौड । सुरत्ताणा–सुल्तानो, मुगल शाहजादो । जाडी जोड–घनी सेना, समूह । हसत्ती चाचरा–गज मस्तको । वनापती–वनराज, शेर । डाकरा–गर्जन, दहाड । कमघ–राठौड, अजितसिंह ।

३ भाराथा–युद्धो मे । न भाजै–रण त्याग कर भागता नही है । जिको–वह । झाटके–करारे प्रहार करता है । खगाटा–तलवारो के । पजा–पज्जे, हाथल । नळा–पैर का भाग विशेष । जडक्के–जमाता है, स्थिर करता है । सेस–शेषनाग । दाव–दाव-पेंच । धाव–आक्रमण । वारणेस–गजराज । जवन्नेस–वादशाह । गज्जणेस हरो–महाराजा गजसिंह का पौत्र, अजितसिंह । गाजै–दहाडता है । गाढे राव–महावीर, समर्थ ।

४. हिंदू खडा–हिंदुओ के राज्यो को । गिरंदा–पर्वतो । वधै–मारता है । मदाळा–मदमत्तो, हाथियो । रौदा–मुसलमानो । थाहा–किलो, कदराओ, निवास स्थानो । वजरैल–वज्र तुल्य । चगत्तेस–वादशाह । प्रसणेस–पिशुनो, शत्रुओ । हूता–से । जसा रा–महाराजा जसवतसिंह का पुत्र अजितसिंह । अडेल–हठीला । आदेस–अभिवादन, नमस्कार । जटैल–वब्बर सिंह, जटाधारी ।

७६. गीत महाराजा अजीतसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

वडा बिन्है अवतार ससार सारा बदै,
स्याम रा काम सारण सकाजा ।
नद रै घरे रहियौ श्री किसन जिम,
प्रोहत जैदेव घर अजण राजा ।।१।।

आपरा सत धू जेम कीधा अडग,
बणी रिध घणी प्रोहित तणी वार ।
प्रगट गोकुळ ज्यूही सिवपुरी पेखता,
अजन राखण जतन किसन अवतार ।।२।।

धणी रौ स्याम ध्रम कियौ जाणै धणी,
दूर कर कस औरग तणौ दाव ।
जादवा राव रहियौ कुसळ जोवता,
रह्यौ जैदेव घर कमधजा राव ।।३।।

---

७६ गीतसार—कवि ने ऊपराकित गीत मे जोधपुर के महाराजा अजितसिंह को पहाडो मे गुप्त रूप से जयदेव पुरोहित के घर पर पोषण प्राप्त करने का श्री कृष्ण के नन्द महर के घर पालित होने के साथ प्रतिमता दिखाते हुए वर्णन किया है । अन्त मे नन्द और जयदेव के उक्त सुकृत की प्रशसा की गई है ।

---

१ बिन्है—दोनो । सारा—समग्र । बदै—कहता है, वर्णन करता है । स्याम रा काम—स्वामी का कार्य । सारण—सफल करने मे । श्री किसन जिम—जिस प्रकार श्री कृष्ण । प्रोहत—पुरोहित । अजण राजा—महाराजा अजितसिंह ।

२ आप रा—अपने । धू जेम—ध्रुव ज्यो, ध्रुव की तरह । अडग—अविचल, निश्चिन्त । वणी—हुई । रिध—ऋद्धि । घणी—बहुत, अधिक । तणी—की । वार—समय, अवसर पर । सिवपुरी—सिरोही स्थान । पेखता—देखते हुए । राखण—रक्षा करने । जतन—यत्न । किसन—श्री कृष्ण ।

३. धणी रौ—स्वामी को । स्याम ध्रम—स्वामिधर्म । जाणै—जानते हैं । औरग तणौ—बादशाह औरगजेब का । दाव—घात । जादवां राव—यादवपति श्री कृष्ण । जोवता—देखते । कमधजा राव—राठौडो का राजा अजितसिंह ।

गौरधन तणौ तौ तणा पेखै गुणा,
सकौ कर जोड़ै वदै सवाया।
नद जैदेव अवचळ रहौ नर भुयण,
उभै अवतार नर भुयण आया ।।४।।

—दुवारकादास दधिवाड़िया रौ कह्यौ

७७. गीत महाराजा अभयसिंह राठौड़ जोधपुर रौ

कळळ माच दळ अकळ कांठळ सवळ कुजरां,
चचळ उछळ सरळ धसळ चाळौ।
जवन दळ ऊपरां खिमै वीजळ ज्यूंही,
अचा सावळ भळळ तूझ वाळौ ।।१।।

---

७७ **गीतसार**-उपरोक्त गीत मे कवि ने महाराजा अभयसिंह राठौड़ द्वारा गुजरात के विद्रोही राज्यपाल सरविलदखाँ पर आक्रमण कर अपदस्थ करने का वर्णन किया है। इसमे कवि ने अभयसिंह के भाले को विजली, गजसेना को मेघ घटा, गजमद को जलवर्षा और अश्वो के पाखरादि की ध्वनि को दादुर ध्वनि वतला वर्षा की क्रियाओ का आरोपण कर युद्ध का रूपकात्मक वर्णन किया है।

---

४ तो तणा—तेरा। पेखै—देखते। सकौ—सब कोई। वदै—वन्दना करते हैं। अवचळ—अटल। उभै—दोनो। भुयण—भूमिलोक पर। आया—उत्पन्न हुए।

१ कळळ माच—कोलाहल प्रारम्भ होकर। दळ—सेना। अकळ—असीम, वीर। कांठळ—घनघटा। कुजरा—हाथियो की। चचळ—घोडे। उछळ—छलाग मारते। धसळ—लम्बे लम्बे डग भरना, आक्रमण करना। चाळौ—युद्ध। जवन दळ—मुसलमानो की सेना, सर विलद की फौज। खिमै—चमकती है। वीजळ—विद्युत। अचा—हाथ मे का। सावळ—भाला, वर्छा। भळळ—दीप्त, चमकता। तूझ वाळौ—तुम्हारा, तेरे वाला।

घटा सिंधुर डमर पटा ओसर घरर,
बाज साकुर पखर ददर वारौ।
छतरधर असुर ऊपर खिवै किर छटा,
थिर अतर अडर नर धजर थारौ ॥२॥

धरा गैंधड उरड गाज तोपा धडड,
कैंमरा सोंक झड कडड काचां।
किळम तड फाडबा बडड ओझड कडड,
अणी छड झबझबै अगड आचा ॥३॥

लाख लसकर डमर अठर वांसै लिया,
दिली सांमा धकै चाढ डहिया।
अजावत ताहरा बीज घासा अगै,
रौद कासा कमळ ढाक रहिया ॥४॥

—बखता खिडिया रौ कह्यौ

---

२ घटा सिंधुर—गजघटा। डमर—आडम्बर, वैभव। पटा—हाथी के मद बहने के स्थान के केश, पटा अस्त्र। ओसर—बरस कर। घरर—मेघ गर्जना, भीषण ध्वनि। बाज—ध्वनित होकर। साकुर पखर—घोडो के रक्षा कवच जो लोहे की ग्रथियां डालकर बनाएं जाते थे। ददर वारौ—दादुरो की, मेढको की ध्वनि। छतरधर—छत्रधर, राजा। असुर ऊपर—नबाव सर बिलदखांन पर। किर—मानो। छटा—विद्युत। थिर—स्थिर। अतर—अत्यधिक। अडर—निर्भीक। धजर—भाला, परशु। थारौ—तेरा, तुम्हारा।

३ धरा—भूमितल पर। गैंधड—गजघटा, गजसेना। उरड—जोश पूर्वक बलात् आगे बढ कर। गाज—गर्जना। धडड—धडधड की ध्वनि। कैंमरा—धनुषो के, कमानो की। सोंक—ध्वनि। कडड—बिजली के कडकने की आवाज, कडड ध्वनि। किलम तड—मुसलमान सेना। फाडबा—विदीर्ण करने। बडड—टूटने की ध्वनि। ओझड—भयकर, चोट। कडड—ध्वनि। अणी छड—भाला, भाले की नोक। झबझबै—चमकती है। आचा—हाथो मे।

४ लसकर—सेना। डमर—आडम्बर पूर्ण। वासै लिया—अपने पीछे साथ मे लिए हुए। दिली—दिल्ली। सामा—सामने। धकै चाढ—अपने आगे कर। डहिया—कुचले, मथ दिये। अजावत—महाराजा अजितसिंह के पुत्र महाराजा अभयसिंह। ताहरा—तुम्हारे। बीज घासा—बिजली रूपी बल्लम के। आगै—आगे, सामने। रौद—मुसलमान। कमल—मस्तक। ढाक—छिपाकर।

७८. गीत महाराजा बखतसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

वनां वोलिया सचाळा मोर वीज खिवै चहुवळां,
सालुळे वादळा दळां आवियौ सुरेस।
दूनी मा आणद हुवौ आविया सकाजा दीह,
ताकवा करीजै विदा राजा बखतेस ।।१।।

सिखंडां दादरा सौर चहु ओर खिवै छटा,
रचै घणधौर घटा वूठा सुरां राव।
रेणा तुरा गजराज समपै सोव्रना रीझा,
सुपाता सदन मेलो अजन सुजाव ।।२।।

---

७८. गीतसार—उपर्युक्त गीत जोधपुर के महाराजा वख्तसिंह राठौड़ पर कथित है। कवि कीरतदान ने वर्षाऋतु के आगमन पर गीतनायक से अवकाश पर अपने घर जाने की स्वीकृति प्रदान करने के लिए प्रार्थना की है। वन मे वर्षा की खुशी से मोर वोलने लगे। चारो ओर विजलियाँ चमकने लगीं। मेघघटाएँ इधर से उधर उमडती घुमडती जाने लगी है। ससार में आनदातिरेक से हर्ष मनाया जाने लगा है। अत हे राजा कवियो को भी दान द्रव्य से सम्मानित कर अपने अपने घर जाने की आज्ञा दीजिए।

---

१. वीज—विद्युत। खिवै—चमकती है। चहुवळा—चारो ओर। साळुळे—चल रहे है, गमन करते हैं। वादळा दळा—मेघ-समूह। आवियौ सुरेस—इन्द्र आगया है। दूनी मा—दुनियाँ मे। आणद—आनन्द। सकाजा—काम काज के। दीह—दिवस। ताकवा—कवियो को। विदा—पुरस्कार सहित जाने की आज्ञा। वखतेस—वख्तसिंह।

२ सिखडा—मोर पक्षी। दादरा—दादुरो, दादुल। सौर—मधुर ध्वनि। छटा—विजली। वूठा—वरसा, वर्षा करने लगा। सुराराव—देवताओ का राजा, इन्द्र। रेणा—कवियो, याचको। तुरा—घोडे। समपै—सर्मपित करें, दान दें। सोव्रना—स्वर्ण, सुन्दर वर्ण के। रीझा—प्रसन्न होकर दान देने को रीझ कहा जाता है। सुपाता—सुपात्रो, याचको को। सदन—घर। मेलो—भेजिए। अजन सुजाव—महाराजा अजितसिंह के पुत्र, महाराजा वख्तसिंह।

नीर सरवरां भरे बरस्से सुरां चै नाथ,
भावियौ सारंग राग नै मलार भेव।
भांजणा दाळद मौज भामणे जमीणी भाण,
गुणी रुख सुध कीजै दूसरा गगैव ॥३॥

डूबीया नंदियां नाळा हाळियां जोतिया हळ,
इळा चहुवळां हुवै आणद ओछाह।
राजा कोड़ी जुगा ताई रीझ आद जोड राजा,
पातवा करीजै विदा हिन्दू पातिसाह ॥४॥

—कीरतदान बारहठ रो कह्यौ

---

३ नीर–जल। । सरवरा–सरोवरो, जलाशयो। भरे–भर दिए, पूरित। बरस्से–बरस कर, वर्षा करके। सुरा चै नाथ–देवताओ के स्वामी ने, देवराज इन्द्र ने। भावियौ–मन को सुहावना लगा। सारग राग–रागिनी विशेष, मोर और दादुलो का स्वर। मलार–रागिनी विशेष का नाम। भेव–भेद। भाजणा–नाश करना। दाळद–दरिद्रता। मौज–प्रसन्नता मे। गुणी रुख–विद्वानो की ओर, कवियो की तरफ। सुध–ध्यान, खबर। दूसरा गगैव–द्वितीया राव गागा, अभिनव गागा।

४ हाळियां–हाळियो,कृषको ने। जोतिया हळ–कृषि के लिए हल जोत दिये हैं। इळा-पृथ्वी पर। ओछाह–उत्सव। कोडी जुगा–करोडो युगो तक। तांई–तक। पातवा–कवियो को, याचको को, प्रार्थकर्त्ताओ को। हिन्दू पाप्तिसाह–हिन्दुओ का बादशाह, महाराजा बख्तसिह जोधपुर।

७६. गीत महाराजा राजसिंघ राठौड़ किसनगढ़ रौ

दळ दिखण मिळ दिल्ली दळा वध वेध खेध दहू वळा,
धर लियण घूपट दियण धसमस रुकहृथ राजान।
अवरग सगर आहुरे फव फौज गज धज फरहरे,
धर फसर हैवर धूज धर मद झरर कुजर सिर चमर।
नर निजर नाहर डर निडर तन पहर वगतर छिलम छर,
हर समर हसवर कस कमर धर सर धसर धर कर सिफर
वर कवर वीरत-वान ॥१॥

---

७६. गीतसार—गीतकार प्रसिद्ध कवि वृन्द ने उपरोक्त गीत मे किशनगढ के महाराजा राजसिंह राठौड के युद्ध का वर्णन किया है। गीत मे लिखा है कि दिल्ली के राजसिंहासन की प्राप्ति के लिए शाहजादो के दोनो पक्षो मे भयकर विरोध उत्पन्न होकर युद्ध मे परिणित हो गया। फलत. गजाश्वो की पीठ पर ध्वज-पताकाएँ फहराते हुए दिल्ली और दक्षिण की सेनाओ मे घमासान युद्ध छिड गया।

---

१ दळ दिखण—दक्षिण के राज्यपाल की अधीनस्थ शाही सेना। वध वेध—विरोध बढकर, युद्ध। खेध—विरोध, युद्ध, दु ख। दहू बळा—दोनो सेनाओ मे, दोनो पक्षो मे। धर लियण—राज्याधिकार प्राप्त करने के लिए। घूपट—अधिकार मे,कब्जे मे। रुकहथ—हाथ मे तलवार ग्रहण कर, वीर। सगर—युद्ध। आहुरे—टक्कर ले। गज धज—गजो पर ध्वजाए, गज और घोडे। हैंवर—घोडे। धूज—कम्पित होकर। मद झरर कुजर—हाथियो के मद बहकर। वगतर—वख्तर, कवज। छिलम—झिलम, सिर पर धारण करने के टोप के नीचे पहिना जानेवाला जालीदार कवच जो गर्दन की सुरक्षा के लिए पहिना जाता था। छर—सिंह के अगले पैर का पजा। समर—युद्ध। कस कमर—कमर बांधकर। धसर—प्रवेश कर। सिफर—ढाल। वीरत वान—वीरता सूचक चिह्न अथवा वीरत्ववाला।

अणभग पौरस ऊलसे अहराण अरि सिर ऊससे,
ध्रुव रूप बस असक धारण, धीग दोमज धीर।
त्रम्वाळ नौवत त्रह त्रहे गण भूत भैरव गह गहे,
उठ नाळ अरडड गाज गरडड, नड अनड धड हड भड निवड़।
छुट वाण छड छड तूट तड तड, अस उरड अडवड घूमघड धड़,
झड त्रिजड ओझड झूम झड झड धडकीज वेहड धार धडवड
विरच राजड बीर ॥२॥

कुळ किसन कळहण कोपियौ, अग रग अदभुत ओपियौ,
रिमराह वाह अथाह रिमहर, जोध सेर जवाण।
गहपूर गय-घड गौडणो मन मेळ हय थट मोडणो,
घण वरण रण वण सघण घण खग खिवण खणखण तीर छण।
जुध जुडै जण जण दूण दण दण हुवै वैण हण हण माच गहगण,
घण दिखण दपट रोस घण किय कमध तिण खण दुयण कण
माण तण महराण ॥३॥

---

२ अणभग—अभग, अजेय, वीर। पौरस—पौरुष, बल। ऊलसे—उल्लसित। अहराण—युद्ध स्थल मे। अरि—शत्रु। ऊससे—जोश मे उफनते हुए। धुव—ध्रुव, अटल। धीग—जबरदस्त वीर। दोमझ धीर—युद्ध मे दृढ रहनेवाला, धैर्य रखनेवाला। त्रम्वाळ—ताम्बा धातु के पेंदे वाले नगाडे। त्रहत्रहे—बजने से होने वाली ध्वनि, नाद। गहगहे—प्रफुल्लित होकर। नाळ—तोप की। अरडड—तोपो के चलने पर उत्पन्न ध्वनि। गाज—गर्जना। गरडड—गडगडाहट। नड-अनड अविजितो को विजय करने वाले, निर्बन्ध। धडहड—धडधडाने की आवाज। भड—योद्धा। निवड—भयकर, प्रहार। छुट—चलकर। वाण—छोटी तोप, तीर। छडछड—वाण चलाने पर होने वाली ध्वनि। अस—अश्व। उरड—जोश मे, जबरदस्ती घुसने। अडवड—भीड मे धकापेल। त्रिजड—तलवार। ओझड—प्रहार, झडी। वेहड—विदीर्ण होकर, घनी। विरच—रचकर, कर। राजड—गीतनायक महाराजा राजसिंह।

३ कुळ किसन—राजसिंह के पूर्वज किसनसिंह के कुल मे उत्पन्न। कळहण—युद्ध मे। ओपियौ—शोभित हुआ। रिमराह—युद्ध, युद्धपथ। वाह—प्रहार। रिमहर—शत्रुओ। जवाण—युवा,वीर। गहपूर—गाढ से परिपूर्ण, सिंह, वीरता से पूर्ण। गयघड—गज सेना। गौडणो—सहार करने वाला, नाशक। हयथट—अश्व समूह को। मोडणो—पीछे धकेलने। घण वरण—मेघ वर्णीय। सघण—सघन। खग खिवण—खग रूपी बिजली की चमक, कौंध। तीर—बाण। छण—आवाज विशेष। माच—मचकर, होकर। कमध—कर्मध्वज, गीत नायक राठौड कुलोत्पन्न राजसिंह। तिण खण—उस क्षण। दुयण—शत्रु। महराण—महाराजा, समुन्द्र।

भाराथ लख दळ भजणो गह फौज मौजा गजणो,
जगमाल भारह माल जेहो, वीरहर वानैत।
असपत्त छळवळ आदरे पिसणां पछाड़े पाधरे,
खग वाज खड खड खाट खड खड तड तिड तडतड ताडतड।
वध वडड ऊवड कंध कड लुथलुत्थ लड थड प्राण पड,
जुध ग्रीध झड फड अंत अड, हस वीर हड हड भाज हड
जण जुद्ध घूहड जैत ॥४॥
—महाकवि वृन्द रौ कह्यौ

---

४. भाराथ—युद्ध मे। लख दल—लक्षाधिक सेना का। मंजणो—सहार करने वाला, गह—गर्व। गजणो—सहार करने वाला। जगमाल—गीत नायक के पूर्वज का नाम। भारह—राजा भारमल। माल जेहा—मारवाड के शासक राव मालदेव जैसा, गीत नायक राव मालदेव के पौत्र किशनसिंह का वशधर था। वानैत—वीरता का द्योतक चिन्ह विशेष धारण करने वाला। असपत्त—बादशाह। आदरे—स्वीकार करके। पिसणा—वैरियो को। पाधरे—सीधे, खुले रूप मे। खग—तलवार। वाज—प्रहार काल मे होने वाली ध्वनि। खडखड—ध्वनि विशेप। खाट—अर्जित-कर। तडतड—ध्वनि विशेप। वडड—टूटने पर उत्पन्न ध्वनि। ऊवड—खुलना, फटना। कध—कधे, स्कध। कड—कटि, कडियाँ। लडथड—लडखडाकर। ग्रीध—गृद्धपक्षी। झडफड़—उडने पर होने वाली पख ध्वनि। अत—आंते, अत्रावली। हडहड—अट्टहास की ध्वनि। जण—जन, योद्धा। जुद्ध—युद्ध। घूहड—राठौड। जैत—विजय।

८०. गीत किसनगढ़ रा किला री द्रिढ़ता रौ

आछा अलगां सफीला ऊच आसमान हूता अड़ै,
पगा नीव पाताळा नै सेस रटां पीठ।
नैहरी समंदा नीख मच्छां ले हिलोळा नीरा,
दूजा मान थां रचै मेर गिरां दीठ ॥१॥

---

८० गीतसार—उपर्युक्त गीत किशनगढ के किले का निर्माण एव दृढता पर कथित है। यह दुर्ग किशनगढ के महाराजा वहादुरसिह ने वनवाया था। गीत मे किला, बुर्जे, सफीलें, नहर, पहाडी, खाई और परकोटा के वर्णन के साथ साथ निर्माता की कला प्रियता की भी सराहना की गई है।

---

१ अलगा—उत्तुग, ऊँची। सफीला—दिवारें। हूता—से। रटा—दातो पर, फनो पर। नैहरी—नहर। हिलोळा—हिलोरें, तरगें। दूजा मान—द्वितीय मानसिंह, अभिनव मानसिंह। था—आपने। मेर गिरा—सुमेरुगिरि, गिरिशिखर। दीठ—दृष्टि पड़ने वाला।

चक्कारा बुरज्जा चौड अरीड बेळ रा चाव,
आखा जेम नाग माथै नामरौ अठीळ।
जळा गगा ऊजळै चहु ओड़ां खाई जोड़,
हाटिका गिरदा जिसौ वणायौ हठील ।।२।।

आटा दै कम्मरा कोटा दातरा ऊगिया ईसा,
जम्मी भार सीस रूपे नचका जमाई।
सारे भूप बहाद्रेस हिलोहिळा जळा सोभ्ग,
भिड़े गिणा सोवन्ना दुरगा थयौ भाई ।।३।।

मिण धरा भागीरथी हेमगिरा त्रहूं मेळ,
करा जुगा ऊपरां भाराथ जुडा त्रकूट।
चाव धरा विचित्रा राजान तणा बाळी चौजा,
दोहूं राहां आदेसियौ भुरज्जा सादूठ ।।४।।

—गंगाराम रौ कह्यौ

---

२ बुरज्जा—बुर्जे। चौड—चौडी। अरीड—जबरदस्त। बेळ—रक्षा, चित्रकारी। आखा—कहे, अक्षय, तक्षक। नाग माथै—शेषनाग के सिर पर। अठील—अडिग, सुदृढ। जळा—जल। ऊजळै—वेग से वहता है, उज्ज्वल। चहु ओडा—चारो तरफ। हाटिका गिरदा—स्वर्णगिरि। वणायौ—बनवाया। हठील—हठीले ने सुदृढ।

३ आटा—चारो ओर लपेटा। कम्मरा—कटि भाग के। दांत रा—पत्थरो के दन्त। ऊगिया—निकले हुए। ईसा—ऐसे। नचका—न हटने वाली, निश्चित। बहाद्रेस—महाराजा बहादुरसिंह ने। हिलोळिया—आन्दोलित किये। सोवन्ना—स्वर्ण वाले। थयौ—हुआ।

४ मिणधरा—पाताल लोक। भागीरथी—गगा भूमिलोक। हेमगिरा—सुमेरुगिरि। त्रहूं मेळ—तीनो का एक साथ मिलान। त्रकूट—त्रिकुटाचल, लंका। दोहूराहा—दोनो धर्मों वालो ने। आदेसियौ—नमस्कार किया, वदना की, सराहा। भुरज्जा—बुर्जे। सादूठ—जबरदस्त।

८१. गीत राजा पदमसिंघ राठौड़ रतलाम रौ

न्रता लागिया सगीत ताळा परी सैं सुभावा नचै,
खुरीसैं चुभावा नाळां सुमा धुखै राव ।
सकौ मोल तरीसैं हजार आठ दूण साजा,
राजा इसौ नीळो तू ही वरीसै हयराव ।।१।।

धारा नीर आपगा अपार वी ऊपरा धावै,
लावै न समीर वार विमग्गा लार ।
हेडेच आचार वी अेरसा देख देव हाव,
खडेच लुटावै ईसा आरवी तोखार ।।२।।

छूना सेस सुलवी सुदेस आळा वाळ छूटै,
तूटै डाळा प्रलवी भरेस जूना ताक ।
छछाळा ऊत्तताबाळा समाजा झलबी छापै,
आपै पत्ता वाळा साजा झलवी अैराक ।।३।।

---

८१ **गीतसार**–उपर्युक्त गीत मालव प्रदेश के रतलाम राज्य के राजा पदमसिंह राठौड की घोडी पर कथित है । मध्यकाल के सघर्षशील युग मे अश्व का वडा महत्व रहा है । गीत मे घोडी की आकृति, उसकी चाल और उसके आभूषणो के साथ साथ गीत नायक की भी प्रशसा की गई है । लिखा है कि वह अपार जल राशि को अवाधगति से पार करने की क्षमता रखने वाली तथा पवन के वेग से भी तीव्रगामी है ।

---

१. न्रता–नृत्य । सगीत ताळा–सगीत की तालो पर । परीसैं–अप्सरा जैसी । नचै–नृत्य करती है । खुरी सैं–घोडी के पैर से, सुमो मे जडित नालें । नाळा–पैरो की नली । सुमा–सुमो, कृपणो के धुखे–चले कुपित हुए सुलगती है । तरी सैं–तीस हजार । आठ दूण–सोलह शृ गार । नीलो–नील वर्णीय । वरीसैं–दान करता है । हयराव–अश्वराज ।

२ आपगा–नदी । अपार वी–अपरिमित । ऊपरा धावै–ऊपर चलती है । विमग्गा–विकट पथ । लार–पीछे पीछे । हेडेचे–हाकते, चलाते । अरसा–ऐसा । खेडेच–राठौड, खेड स्थान पर राठौडो का राज्य रहने के कारण यहा गीत नायक के लिए यह शब्द प्रयुक्त हुआ है । ईसा–ऐसा । आरवी तौखार–अरबी जाति के घोडे ।

३ छूना सेस–शेषनाग का वच्चा । आळा–अयाल, वाला । वाळ–केशसमूह । डाळा–वृक्ष की शाखा । प्रलवी–वन्दर, लम्बी दुम । छछाळा–घोडे, हाथी । आपै–देता है, अर्पित करता है । झलवी–झिलमिल करते, चमकते । अैराक घोडे ।

सरीतां आदीत रत्था जूत रै उरागा सांचौ,
ताागा काचा सूत रै फरीता तारूप।
हूस दूजा चाहै मना अेहा हेत्त रै हाथ,
सकोपै भूत रै वाय दूत रै सारूप ॥४॥
सभावा सयाना जे असीस ले साल सूल जावै,
आव डील आया नू उतूळा जावै ऊप।
जोय मोल तरगना बखाना हाथी भूल जावै,
भूल जावै परात्ती मयाना हूस भूप ॥५॥
कथा मड सथां कध टकी रा बखाण केहा,
वेहा तूजिया कौमड सध बकी रा तणाव।
इसा धीस मक्रकेत धकीरा उफाण आणै,
बणै जाण छत्रकेत लकी रा बणाव ॥६॥
मारू राव चाव क्रीत भारा रौ ऊफाण माही,
दान जोया लारा रौ कहा वसु दीण।
जाको पदमेस पाण थारा रौ पेखता जूवौ,
हूवौ भाण बारा रौ केकाण माण हीण ॥७॥

---

४ आदी रत्था—सूर्य का रथ। जूत रै—जुतने। उरागा—वक्षस्थल। तागा—धागा, डोरा। काचा सूत रै—कच्चे सूत्र के, कच्चे धागे के। फरीता—फिरती, घूमती। हूस—इच्छा, उमग। अेहा—ऐसे। हेत रै—प्रीति के, हित के। सकोपै—क्रोधित। भूत रै—प्रेत के। वाय—वायु। सारूप—सदृश।

५ सभावा—स्वभाव। आव—कान्ति, दमक। डील—शरीरी। उतूळा—अतुलनीय। ऊप—उपमा, समानता। जोय—देखकर, सुनकर। बखाना—वर्णन करना, सराहना करना। परांती—दूर से ही। मयाना—सवारी विशेष, एक किस्म की पालकी। हूस—इच्छा।

६ कथा मड—कथा मे मडित। सथा—सहिता ? कध—स्कंध। सध—सधि। टकी—धनुष। बखाण—वर्णन। केहा—कैसा। तूजिया—धनुष। कौमड—धनुष। तणाव—खीचाव। मक्रकेत—मक्रकेतु, कामदेव। धकीरा—इच्छुक जोश। उफाण—उफान, जोश। जाण—मानो। छत्रकेत—राजा, छत्र एव ध्वजधारी, मयूर। लकी—सिंह-कटि, कमर, कपोत। बणाव—आकृति, शृगार।

७ मारूराव—मारवाड नरेश, यहा रतलाम वालो का मूल स्थान मारवाड होने के कारण गीत नायक को मारवाड का राजा सम्बोधित किया गया है। चावक्रीत—कीर्ति-लोभी। जोया—अवलोकने पर। लारा रौ—पीछे का, कुल-परम्परा का। जाको—जिसको। पाण—हाथ बल। थारा रौ—तुम्हारे का, आप का। पेखता—देखते हुए। जूवौ—जुदा। भाण—सूर्य का। केकाण—अश्व, उच्चै श्रवा। माण हीण—मान रहित।

८२. गीत ठाकर जोरावरसिंघ राठौड़ गोठियाणां रौ

भारी रचायौ जुद्ध यू नाम क्रामती बढावा भूरौ,
जचायौ अरिन्द्रा हीड दै महा सौक जोर।
मचायौ लक ज्यू सोर गोठाणँ महीप मानो,
अचायौ धिकायौ सैन घेरचौ चहुं ओर ।।१।।

तडा तडी बागी जठै कायरा प्राण यू तुकै,
अेडचा पीठ लागी केती फौज री अबूज।
भूमी पाव न टिकै वचाय जी भेडिया भागी,
आगी अहकारी देख न ठवै अगूज ।।२।।

---

८२ गीतसार—उपर्युक्त गीत किशनगढ रियासत के गोठियाणा ठिकाने के स्वामी जोरावरसिंह पर कथित है। गीतनायक ने राज्य की सेना को युद्ध मे उलटे पांव पीछे खदेड कर वीरता दिखाई थी। कवि ने कहा कि उस वीर जोरावरसिंह ने शत्रु की अपार सेना का तनिक भी भय नही माना और अपनी कुल-परम्परा का निर्वाह कर वीरगति प्राप्त की।

---

१ भारी रचायौ—भयानक किया। क्रामती—क्रान्ति। भूरौ—बब्बर सिंह, रणकेशरी। जचायौ—जुडाया,जचाया। अरिंद्रा—वैरियो। हीड दै—घेरे मे लेकर, बदूको की आवाज करके। गोठाणँ—गोठियाणा के। अचायौ—अकस्मात, निशक, अनचाहा। धिकायौ—चलाया हुआ, धकेला हुआ। घेरचौ—घेर लिया, चारो ओर से घेरना।

२ तडा तड़ी—गोलियो की तडतड की आवाज। बागी—हुई, बजी। तठै—वहा, तहा। तुकै—ताकते हैं। अेड्या पीठ—एडिया पीठ के, बेतहासा भागे। केती—कितनी ही। अबूझ—विना पूछे ही, अबोधता। भेडिया—भेडें, कायर पुरुष। भागी—भाग चली। आगी—आगे, अग्नि। न ठवै—नही ठहरते हैं, रुकते नही। अगूज—कायर।

सूर वीर रोके पैर जीत डका देण सारू,
जिसी सुणी भाखसी निसकां सत्त जीह।
बामोवध्र जोरावरो वोलणो बायका बंका,
संका चित्त न धारी सत्रवा हदी सीह ॥३॥

ताखडा चलावै बेहूँ दळा रा तुपका तोपा,
माच्यौ घोर सवद कैती दूर मे महान।
छिप्यौ भाण धुआ सू रैंन ज्यू अधकार छायौ,
मानो भादो मास घटा चढी आसमान ॥४॥

घडा सू सवाई रीठ लगाई गोळिया गोळा,
घणी मेघ झडी श्रोणधारा सूरा गात।
दामण्या दमकै तेगा भुजा मे अपार देखो,
भीम बीजौ अरया सग आथप्यो भारात ॥५॥

कटै सीस कैता फटै काळजा कुवीरा केरा,
रटै मुख बचाळा बचावैळो तो राम।
राकसा वस पै वीरभद्र हणु मान रूठौ,
जूटौ जग मोटा ईसी भात आठो जाम ॥६॥

---

३ जीत डंका—विजयकारी नगाडो के दण्डक। सारू—लिए। जिसी—जैसी। भाखसी—कहेगा। सत्त—सत्य। जीह-जिह्वा, वाणी। वामी वध—राठौड, वाएँ हाथ की ओर से पगडी वाँधने वाले। वायका वका—वक्र वचन वोलने वाले, चुभते हुए वचन वक्ता। सत्रवा हदी—शत्रुओ की। सीह—सिंह ने, निर्भीक वीर ने।

४ ताखडा—तगडे, वलवान्। वेहू दळा रा—दोनो दल वाले। तुपका—बन्दूकें। माच्यौ—हुआ, छिडा। घोर सवद—भयानक शब्दध्वनि। छिप्यौ भाण धुआ सू-सूर्य धूम्र से छिप गया। रैंन—रात्रि। छायौ—फैल गया। भादोमास घटा—भाद्रपद महीने की मेघघटा।

५ घडा सू—सेना से। रीठ—प्रहार। घणी—घनी। झडी—वौछार। दामण्या दमकै तेगा—तलवारें रूपी विजलियाँ चमकने लगी। भीम वीजो—द्वितीय भीमसिंह ने, जोरावरसिंह ने। अरया-वैरियो के। आथप्यो—स्थापित किया, रचा, प्रारभ किया। भारात—भयानक युद्ध।

६ कैता—कितनेही के। काळजा—कलेजे। कुवीरा केरा—कायरो के। वचाळा—वचेगें, जीवित रहेंगे। वचावैलो—वचाएगा। रूठौ—कुपित हुआ। जूटौ—जुडा, भिडा। मोटा—भयानक, महा भयकर। ईसी—ऐसी।

मुणे मार मार सव्द ध्यान मे कैलास वासी सिंभु,
छायौ रुण्ड माळा सारू हिया मे उछाह।
मारू धरा काठै ग्यान द्रस्टी देख राड मार्ची,
नदी पै सवार व्है पधारे सक्ती नाह ॥७॥

वादोवाद धाय देव तमासो देखवा वाधा,
अडोथडी मावै ना वीमाण आसमान।
भरै छै जोगण्या पत्र फिरै छै मोद मे भीनी,
गाढी रभा हियै फूली करै छै सुगान ॥८॥

महादेव धारी कठ दौवडा मुण्ड री माळा,
ऊजाळा साख रा वात राखदी अख्यात।
भूरौ वाघ जीत सत्रू पौढियौ सग्राम भूमि,
भलो नाम जीतायौ पडवा वाळी भात ॥९॥

विमाणा विठाय लेगी अच्छरा गावती वना,
अम्वरा सुलोक गई पावती आणद।
सुरा नरा लाख लाख सावासी ऊचारै सारै,
च्यारू कूट रहसी कीत जतै सूर चद ॥१०॥

---

७. मार मार सव्द—मारो मारो के वोल। छायौ—उत्पन्न हुआ, वढकर फैला। हिया मे—हृदय मे। उछाह—उत्साह। काठै—किनारे पर, सीमा पर। राड माची—युद्ध छिडा। नदी पै—नन्दिगण पर। सक्तीनाह—गौरीपति, शिव।

८. वादोवाद—हठ ठानकर। धाय—आकर, चलकर। वाधा—वढे। अडोथडी—भीड भाड। मावै ना—अन्दर समाहित नही होती। जोगण्या—योगिनियाँ, चंडिकाएँ। फिरै छै—घूमती हैं, फिरती हैं। गाढी—गहरी। हियै फूली—प्रफुल्ल हृदय से।

९ दौवडा—द्विलडी। ऊजाळा—उज्ज्वल। साख रा—शाखा वाले। अख्यात—अक्षय, प्रसिद्धि। भूरौ वाघ—केशरीसिंह। जीत—विजित कर। भात—भाँति।

१० अच्छरा—अप्सराएँ। गावती वना—दुलहा के गीत गाती हुई। अम्वरा—देवताओ के। पावती—पाती हुई। ऊचारै—उच्चरित करती हुई। च्यारू कूट—चारो दिशाओ मे। रहसी कीत—कीर्ति रहेगी। जतै—जव तक।

दोखिया झुण्ड मे राडे मचायौ दरौळ देखो,
राजा रक जेते तेते भाखै घणा रग ।
बस री अनादी चाल निभाई नासती बारा,
माहो माहे छत्री मना धरै छै उमग ।।११।।
बखाणै रूपगा कवी 'बाको' श्रेम बीरताई,
महाबळी सत्रवा री मिटाई मरौड ।
बीजै पाई आप भुजा पाण सू आराण बीच,
राणी जाया पाव पाछा दिराया राठौड ।।१२।।
—बाकीदान दधवाड़िया चारणवास रौ कह्यौ

---

११ दोखिया—वैरियो के । राडे—युद्धवीर ने,युद्ध । मचायौ—छेडा, आरम्भ किया । दरौळा—खलबली, उपद्रव । भाखै—कहते हैं । घणा रग—धन्य धन्य, रग है रग है । अनादी चाल—अनादि परम्परा । नासती बारा—गए बीते युग मे । माहो माहे—भीतर ही भीतर । धरै छै—धारण करते हैं ।

१२ बखाणै—वर्णन करते हैं । रूपगा—यशकाव्यो, गीत नामक छदो द्वारा । कवी बाको—बाकीदान कवि । मिटाई—नष्ट की । मरौड—ऐंठ । बीजै—विजय । पाई—प्राप्त की । भुजा पाण—भुज बल से । आराण—युद्ध स्थल मे । राणी जाया—राजाओ को । पाव पाछा—पीछे पैर ।

८३. गीत प्रतापसिंघ राठौड़ रौ सिंघ री सिकार रौ

हल्ला करोळा तब्बला बाज घेरियौ गिरद हिंदू,
जगायौ अडिन्दू जाणै नौहथो जटैत ।
दीठ होहा वूठतौ ऊठियौ रोस रत्ते देख,
पत्ते आप मत्ते यू बाकारियौ पटैत ।।१।।

---

८३ गीतसार—उपर्युक्त गीत कुमार प्रतापसिंह राठौड़ की सिंह-आखेट से सम्बधित है । कवि ने गीत मे सिंह की 'हाके' की शिकार का वर्णन करते हुए लिखा है कि प्रतापसिंह ने गरिमालाओ को अपने मनुष्यो द्वारा घेर कर नव हत्थे सिंह को जगाया । वह करोलो द्वार उठाये जाने पर हुकार-ध्वनि करता हाके वालो की आवाज पर झपटा । उस समय वह पख आये सर्प, आकाश से टूट कर पृथ्वी पर गिरते तारे अथवा तोप से निकले हुए गोलो की गति के समान दृष्टि-गोचर हुआ ।

---

१ करोळा—शिकारी जानवरो की खबर लाने वाले । तब्बला बाज—तब्बल वाद्य की ध्वनि । घेरियौ—घेरे मे लिया । गिरद—गिरि । अडिन्दू—अडियल, हठीला । नौहथो—नव हाथ लम्बाई माप के शरीर वाला । जटैत—जटाधारी । दीठ—दृष्टि । वूठतौ—बोलता हुआ । रोस रत्ते—रोष मे आरक्त मुख । आप मत्ते—स्वेच्छाचारी । बाकारियो—ललकारा । पटैत—पटोवाला, बडे केशो वाला, सिंह ।

तूटियौ अधाप वेग होफरैळ राताखियो,
　　साप पाखियो कै धाप डाखियो संठीर।
ताप खाई मैंगळा अलाप हूँ अमाप तेज,
　　कवरा सिगार आप बुळायौ कंठीर ॥२॥

वाघ चाळा चौतरफा रोकियौ थाहरा बीच,
　　चढै इद्र अटा हूँ विलोकियौ सचाळ।
भीम नाद आग्राजतौ तोकियौ गैणाग भुजा,
　　लागे खेटै रायजादो कोकियौ लकाळ ॥३॥

लागी पीठ वाहरा बिलागो वौम परा लागो,
　　नरा आयौ अधायौ भाखरा नरेस।
देखो रूप हवाई अवाई थाई दसौ दिसा,
　　दाकालियौ केहरी सवाई विरद्देस ॥४॥

छट्टा स्याम घट्टा रूप सट्टा आतपत्र छायौ,
　　अधायौ आराण धायौ अभायौ अवीह।
क्रान्त अंगा तायौ हेम चलायौ सक्रोध काथै,
　　सूधा बोल माथै आयौ बावरेल सीह ॥५॥

२　तूटियौ—झपटा। अधाप—अतृप्त, अधीर। होफरैळ—हुंकार करने वाला। राताखियो—आरक्त नेत्रवाला। पांखियो—पख आया। धाप—तृप्त। डाखियो—भूखा। सठीर—भीमकाय। मैंगळा—हाथियो। कंठीर—सिंह।

३　वाघ चाळा—वस्त्र का छोर बाघ, सेना से घेर कर। थाहरा—कदराओ। विलोकियौ—देखने का भाव। आग्राजतौ—गर्जना करता। तोकियौ—उठाये हुए। गैणांग—आकाश। खेटै—विग्रह, लडाई। कोकियौ—आवाज देकर उठाया हुआ। लकाळ—सिंह।

४.　वाहरा—चारो ओर, पीछे लग कर। विलागो—जा लगा। वौम—व्योम, आकाश। परा—पख। अधायौ—भूखा, अतृप्त। भाखरा नरेस—गिरि भूभाग का राजा, सिंह। थाई—हुई। दाकालियौ—ललकारा। केहरी—केशरी, नाहर। विरद्देस—विरुदो वाला विरुदसिंह का वशज।

५.　छट्टा स्याम घट्टा रूप—श्यामल मेघ घटा मे विद्युत के स्वरूप वाला। सट्टा—गर्दन की केशराशि। आतपत्र—छत्र। छायौ—आच्छादित, तना हुआ। आराण—युद्ध। धायौ—तेज गति से चला। अवीह—निर्भय। तायौ—तपाया हुआ। हेम—स्वर्ण। काथै—शीघ्रता से। सूधा बोल माथै—बोली पर सीधा। बावरेल—बब्बर, बर्बरसिंह।

गैण तारो तूटो छपा छूटो तोप हूँ गोळो,
चिल्ला हू बिछूटो बाण नारगा चठेल।
जोगी जटा थटा हूंत जांणै बीरभद्र जूटौ,
असै रूप आय जूटौ नौहथो अठेल ॥६॥

धाक हाक डाक ध्रीह धूसा आभ धूजाडियौ,
गिरा गूजाडियौ डाण सूख गौ गयंद।
औझाडियौ ढाल हूता नाराज झाडियौ आचां,
मारू पत्ते फत्तौ पाय पाडियौ मयंद ॥७॥

चम्मरा ढुळन्ता मेघाडम्मरा बाहुडे चमू,
तोड आडम्मरा देतौ चौहरा तणाव।
छाड जूना अबरा अखाडा सिधा औछाडिया,
बणाया अनोखा बाघम्बरा चाव ॥८॥

---

६ गैण—आकाश से। तूटो—टूटा। छपा—क्षपा, रात्रि मे। चिल्ला—धनुष की डोरी से। नारगा—लालरग, रुधिर। जोगी जटा—शिव की जटा से। थटा हूत—समूह से,सेना से। असै—ऐसे। जूटौ—भिडा। अठेल—अडिग।

७ डाक—ढाक वादित्र। ध्रीह—वाद्य ध्वनि। धूसा—धूसा वाद्य, नगाड़े। आभ—आकाश। धूजाडियौ—कपित किया। गूजाडियो—गुञ्जित। डाण—मद। गयद—हाथी का। औझाडियो—डाटा, हटकारा, रोका। नाराज—तलवार। आचा—हाथो से। मयद—सिंह।

८. चम्मरां—चवर। ढुळता—ढुलाते हुए। बाहुडे—वापस लौटे,पीछे फिर कर आए। चमू—सेना। जूना—पुराने। अवरा—वस्त्रो। औछाड़ियौ—आच्छादित किये। चाव—चाह पूर्वक, इच्छा से।

८४. गीत ठाकर दुरगादास आसकरणोत राठौड़ रौ

इळा ऊगटै काट है थाट मेळे अभग, अकळ वे वात ससार आखै ।
राह हीदू तणौ साह औरग रोहे, राह हीदू तणौ दुरग राखै ।।१।।

खेध चढिया धरा वेध बे खड खडै, सुध्रम राखण कजा जुगा सारू ।
अजादा वेद री खूद मेटण मतै, अजादा वेद री ग्रहै मारू ।।२।।

आदरे वाद लागा बिन्है आहुडे, किलम विखियाद कर वाद केवा ।
डीकरौ खुरम री ऊथपै देवता, डीकरौ आस रौ थपै देवां ।।३।।

---

८४ गीतसार—उपर्युक्त गीत प्रसिद्ध वीरदुर्गादास राठौड पर रचित है । गीत मे गीतनायक दुर्गादास और बादशाह औरगजेब के विरोध तथा युद्धो का सकेतन किया गया है । कवि का कथन है कि औरगजेब हिन्दू धर्म और देव मदिरो को नष्ट करता है और वीर दुर्गादास पुन. देव भवनो मे देव-प्रतिमाओ की पुन स्थापना कर देता है ।

---

१ इळा—पृथ्वी ।ऊगटै—उदय होकर, प्रकट होकर । काट—पाप । है थाट— अश्व सेना । मेळे—मिलाकर । अभग—अपार, अखड, वीर । अकळ—आकुल होकर, अखिल । आखै—कहते हैं, कहे । राह—मार्ग । तणौ—को । रोहे—रोके, रोक लगाता है । दुरग—दुर्गादास ।

२ खेध—विरोध, वैर । धरा—भूमि, राज्य । वेध—युद्ध । बे—दोनो । सुध्रम—स्वधर्म । कजा—लिए ।जुगा मारू—युग युगान्तर तक । खूद—मुसलमान, औरगजेब । ग्रहै—ग्रहण करे, पकडता है, धारण किए । मारू—मरुदेशीय वीर दुर्गादास ।

३ आदरे—स्वीकार कर के । वाद—विवाद, युद्ध । बिन्हैं—दोनो । आहुडे—भिडते हैं, युद्ध करते हैं । किलम—मुसलमान । केवा—प्रतिशोध, बदला । डीकरौ—पुत्र । खुरम रौ—खुर्रमका, शाहजहाँ का, औरगजेब । ऊथपै उलटता है । आस रौ—आसकरण का, दुर्गादास । थपै—स्थापित करता है ।

पटक रहियौ अगुट घणौ ही असपति, मुरधरा काज पर धरा मारी ।
पालटै तखत पिण धरम नही पालटै, धरम री सरम करणोत धारी ।।४।।

देवडा कूरमा अनै हाडा दगग अनै, चमक चीतौड पह दीध चाटी ।
नीमहर कमध नूं चाळ बाधत नही, मुखा कलमौ भणत घणा माटी ।।५।।

—कल्लै जीवण री कह्यौ

---

४ अकट—मस्तक । असपति—बादशाह । मुरधरा—मारवाड । मारी—लूटी, मारकाट की । पिण—परन्तु । पालटै—पलटता है, परिवर्त्तन करता है । करणोत—कर्ण का वंशज, दुर्गादास ।

५ कूरमा—कछवाहा । अनै—अन्य । पह—राजा, महाराणा । चाटी—भाग गए— दौड गए । नीमहर—नीमा का पौत्र, दुर्गादास । भणत—पढ़ते । मांटी—पुरुष, बलवान ।

८५. गीत हाथीसिंघ चांपावत री अजमेर रा जुद्ध री

अवसाण बडे अखियात उबारी, बिरद पगार भरन्तै बाथ ।
दळपति चाडि बिहडतौ दुयणा, हाथी भला दिखाया हाथ ।।१।।

---

८५ गीतसार—उपरिलिखित गीत ठाकुर हाथीसिंह चापावत शाखा के राठौड वीर का है । हाथीसिंह ने बीकानेर के महाराजा दलपतसिंह को अजमेर की शाही कारागार से बधन मुक्त करने के लिए जूझ कर प्राण त्याग किया था । गीत मे राजा दलपसिंह की सहायता करते हुए मारे जाने का कवि ने वर्णन किया है ।

---

१ अवसाण—अवसर, मौका, दाव । अखियात—प्रसिद्धि । उबारी—रक्षा की, बचाई । पगार—पगडडी, पराक्रम । भरन्तै बाथ—भुजपाश मे लेता । दळपति—बीकानेर के महाराजा दलपतसिंह की । चाडि—सहायता । बिहडती—नाश करता । दुयणा—वैरियो को । हाथी—गीतनायक हाथीसिंह ने । भला—अच्छा । दिखाया हाथ—हाथो के वार किए, हस्त लाघवता दिखाई ।

दामण दसण सूड करि दाखवि, नर तरवर नामतौ निराट ।
माडण हरौ हुवौ रण माडण, हाथी हेडवतौ हय थाट ।।२।।

वहतौ बिरद मछरि मद वहतौ, वाग घडा वरियाम विभाडि ।
पाल तणौ सूडाळ तणी परि, अर भू परि नाखिया ऊपाड़ि ।।३।।

आयौ खाडि खडग ऊखाणियै, जण जण वाहे जुवौ जुवौ ।
मारे मार महा रिण माहे, हाथी हाथी कटक हुवौ ।।४।।

वीका हरौ साभळे विवनौ, हाथी हियै न बैठो हारि ।
रिण रीवल रहियौ रिण माहे, माझी मूवौ माझिया मारि ।।५।।

—आसा सिढायच रौ कह्यौ

---

२. दामण—दामिनी, तलवार वधन । दसण—दात । नर तरवर—मनुष्य रूपी वृक्षों को । नामतौ—झुकाता, नमाता । निराट—बिलकुल, निपट । मांडणहरै—राव माडण का पौत्र हाथीसिंह । हेडवतौ—हाकता, धकेलता । हय थाट—गज समूह ।

३ वहतौ—प्रवाहित । मछरि—मत्सर, गर्व । मद—हाथी की मस्त अवस्था मे उसकी गर्दन से वहने वाला जल, मद । घडा—सेना । वरियाम—श्रेष्ठ । विभाडि—सहार । पाल तणौ—गोपालदास का पुत्र हाथीसिंह । सूडाळ तणि परि—हाथी की भांति । अर—वैरी । नाखिया ऊपाडि—उखाड कर पटक दिए ।

४ खाडि—काटतामारता । खडग—तलवार । ऊखाणियै—ध्वस्त करता, प्रहार हेतु तलवार ऊपर उठाए हुए । जुवौ जुवौ—पृथक पृथक ।

५ वीकाहरौ—राव वीका का वशज राजा दलपतसिंह वीकानेर । साभळे—सुनकर । विवना—मारा गया । हियै न वैठौ हारि—हृदय मे, हार मानकर चुप न रहा । रिण रीवल—युद्ध मे रीझने वाला, युद्ध मे सफलता प्राप्त करने वाला । माझी—मुखिया ।

८६. गीत ठाकर सवाईसिंघ चांपावत पोहकरण रौ

जै जै अराबां आरोध चडा उभ्रडा पाखरा जठै,
पूतारा भडाळा थटै तेगा बाह पूर।
दूवा सू ऊपटै क्रोध कठठे दिले सा दाई,
सवाई मानजै जठै थारौ अत सूर ॥१॥

हमल्ला दुरद्दा रुक्की न हल्ले बिरद्दा हक्की,
पलीते हैजम्मा हक्की मुक्की बज्र पात।
कड़क्की न बीज झखी कराळ काळका जक्की,
ओण छक्की भैंसा भख्खी न धक्की साबात ॥२॥

---

८६ गीतसार—उपरांकित गीत मारवाड के पोहकरण ठिकाने के प्रसिद्ध वीर ठाकुर सवाईसिंह चांपावत राठौड की छलाघात से हुई युद्ध-मृत्यु पर कथित है। सवाईसिंह को जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने अमीरखा टोंक वालो के पूर्वज से षड्यंत्र करवा कर नागौर के मूडवा ग्राम मे तम्बू मे बारूद बिछवाकर मरवाया था। गीत मे मानसिंह और नवाब अमीरखा के उक्त दुष्कृत की भर्त्सना की गई।

---

१ अराबा—छोटी, तोपें। आरोध—पूजन करवाकर, अर्चित करके। चडा—चण्डिका। उभ्रडा—ओढाए हुए। पाखरा—लोहे की झूलधारी अश्व। पूतारा—प्रोत्साहन। भडाळा—योद्धाओ। थटै—सेना, समूह। ऊपटै—उमडे। कठठे—बाहर निकले, प्रस्थान किया बलवान। थारौ—तेरा, तुम्हारा। अन्त—मौत, नाश।

२ दुरद्दा—हाथियो। पलीतै—तोप का पलीता। हैजम्मा हक्की—फौजे रवाना हुई। मुक्की—पडी, छूटी। वज्रपात—बिजली, वज्रायुध। कडक्की—गर्जना की। बीज—विद्युत। झखी—देखने मे आई, चमकी। काळका—कालिका देवी। छक्की—मस्त हुई। भैंसा भख्खी—भैंसा का भक्षण करने वाली, महिषमर्दनी। साबात—बारूद, सुरग।

कच्छी घाट वगा खेत आरब्बी अेराक जम्मी,
माझी जगा पडै नागा गोट कासम्मी माग।
पैंनागां वयडा भ्रमी लाखरा पाखरा पडी,
बैंडाका विखम्मी घडी ऊपडी न वाग ।।३।।

नेत बंध जग बच वाना बध नत्थी छाना,
छेक कंध अनम्मी कैकध लोहा छद।
छाक पाना सरम्मी धिआगा लागा छाका,
बध वाना अराना न वागा रूक बध ।।४।।

सिराजी गुलावी भल्ली उनैं पव्वै ताजसाही,
अखै राजसाही सूरा झल्ळी न अमान।
धाई छाड मानसाई छल्ली न क्रोधाण वाळी,
चल्ली ना जोधाण वाळी झडपफा चौगान ।।५।।

सालुळै न चातुरगी साड घटा आडी सामी,
छूट ऊट जूट तूट नामी ना अछेह।
विसम्मीजै सवाई दगा था येम बध वामी,
थटी वाता निकामी विधाता हाथ थेह ।।६।।

---

३ कच्छी घाट—कच्छ देशीय। वगाखेत—वगक्षेत्रीय। आरब्बी—अरब देशीय। अेराक—इराक देश के, इराकी घोडे। गोट—गुटिका। कासम्मी माग—आकाश मार्ग। पैंनागा—हाथियो। वयडा—हाथियो। बैंडाका—घोडो। विखम्मी—विषम। वाग—लगाम।

४ नेत बध—वीरता का चिन्ह। वानावध—वीरता का चिन्हधारी। नत्थी—नही। छाना—अप्रकट। अनम्मी—किसी का बधन न सहने वाला। धिआगा—आसमान, कुपित। छाका—मत्त। वागा—चले। रूकवध—खड्गधारी।

५ सिराजी ऊनैं पव्वै ताजसाही—तलवारों की किस्मो के नाम हैं। झल्ली—ग्रहण की। अमान—असह्य। मानशाही, महाराजा मानसिंह द्वारा बनाई हुई तलवार। छल्ली न—नही चली। झडप्फा—झडपें, प्रहार। चौगान—मैदान, रणस्थल।

६ सालुळै न—उमडती हुई नही चली। चातुरगी—सेना। साड घटा—आसाढ मास की मेघ घटा तुल्य गजसेना। आडी सामी—सामने से अवरोधक बनी। अछेह—अपार। विसम्मीजै—मृत्यु हुई। सवाई—ठाकुर सवाईसिंह। दगा था—धोखा से। बधवामी—राठौड, बाएँ हाथ से पगडी बाँधने वाले। थटी—घटी, प्रकट हुई। निकामी बुरी।

उभै राहा ऊतोळ को करै ऊच छाजा वाळी,
फौजा लोळ लोप सिंधू पाजा वाळी फैल।
आडा जीत दिलेसा उथाप थाप राजा वाळी,
गई चापा अन्त तो अवाजा वाळी गैल ।।७।।

---

७ उभै राहा—दोनो धर्म वालो मे। ऊच छाजा—उत्सव, उच्च शोभा, हेतु ऊपर उठाई हुई तलवार। लोप—उल्लघन कर। पाजा—मर्यादा। दिलेसा—बादशाहो। उथाप—अधिकार च्युत। थाप—अधिकारस्थापन। गैल—पीछे ही।

८७. गीत ठाकर सरदारसिंघ रतनसिघोत रौ

जोधा कूरमा सकोधा बिन्है बाजिया आराण जाबा,
अराबा सोर आवाजियौ आकास।
लोहा सिरदारै बिरद्दा रै भारे आभ लागै,
बखतेस आगै खळा मेळियौ ब्रहास ।।१।।

---

८७ गीतसार—उपर्युक्त गीत ठाकुर सरदारसिंह रतनसिंहोत पर कथित है। गीतनायक ने गगवाणा के रणक्षेत्र मे राजाधिराज बख्तसिंह की ओर से जयपुर की सेना से युद्ध लडा था। गीत मे उभय पक्षो मे रण वाद्य बजने के साथ ही बख्तसिंह के हरावल मे रहकर प्रतिपक्षी सेना पर आक्रमण करने का वर्णन है।

---

१ जोधा—राठौड की जोधा शाखा के योद्धा। सकोधा—सक्रुद्धहोकर। बिन्है—दोनो ओर से। आराण—युद्ध। अरावा—तोपें। सोर—बारूद। आवाजियौ—गर्जना हुई। लोहा—शस्त्रो से। बिरद्दा रै भारे—अनेक विरुदो का धारण कर्त्ता, विरुद-समूह धारक। आभ लागै—आसमान को स्पर्श करता हुआ। मेळियौ—मिलाया, भिडाया। ब्रहास—घोड़ा।

जूभाऊ डडाळा घोस वीरताळा वजै जुद्ध,
  किरम्माळा वहै ढहै पटाळा रा कध।
ऊमरां वडाळा चाळा वाधी सिंघ वाळा,
  कूरमा सू निराताळा व्राजिया कमध ।।२।।

सत्थे सुरा ग्रह्या पत्र ग्राई सत्था सूळपाणी,
  ग्रीभणी ग्रच्छरा परा ढाकियौ गिगन।
वधै धणी तणी चाड ग्रखाडे साफळे वागा,
  रिमहरा पाड़े खागा दूसरौ रतन ।।३।।

सगत्ती धपाडै रत्त ग्रीभणी भराडै गाळा,
  रुद्र माळा पोवाडै वराड़ै सूरा रभ।
नीभरणा भाडै रूका मुरधरा चाडै नीर,
  सात्रवा पछाडै जुधि थयौ जीवत सभ ।।४।।

---

२ जूभाऊ–युद्धोत्साही, जूभने वाले। डडाळा–नगाडो। घोस–घोप। किरम्माळा–तलवारें। वहै–वहती है। ढहै–कटकर गिरते हैं। पटाळा रा कध–हाथियो के कधे। ऊमरा–उमराव। वडाला–वडे, उच्चपदधारी। चाळा वाधी–वस्त्राचल वांधकर, पंक्तिवद्ध होकर। निराताळा–निरन्तर, भयकर। वाजिया–लडने लगे। कमध–कर्मध्वज, राठौड।

३. सत्थे–साथ मे। सुरा–चण्डिकाएँ। ग्रह्या पत्र–खप्पर, रक्त पात्र लिए। सूळ पाणी–त्रिशूलधर, महादेव। ग्रीभणी–गृद्धनियाँ। ग्रच्छरा–ग्रप्सराग्रो के। परा–पखो से। ढाकियौ–ढक गया, ग्राच्छादित। गिगन–गगन, ग्राकाश। वधे–वढकर। धणी तणी चाड–स्वामी की मदद पर। साफळे–युद्ध। वागा–लडने लगे। रिमहरा–वैरियो। पाडे–गिराकर। खागा–तलवारो से। दूसरौ रतन–ग्रभिनव रत्नसिंह।

४ सगत्ती–शक्ति, युद्धदेवी को। धपाडै रत्त–रक्त पान से तृप्त कर। भराडै गाळा–मास पिण्ड के ग्रास भरवाकर। पोवाडै–वनवाकर। वराडै–वरण करवाकर। रभ–ग्रप्सरा। नीभरणा–निर्भरनें। रूका–तलवारो से। चाडै नीर–कान्तिमान कर। सात्रवा–शत्रुग्रो को। थयौ–हुग्रा। जीवत सभ–युद्ध मे घायल होकर जीवित बचे रहने वाला योद्धा जीवत सभ कहलाता है।

हूंस भाजे सिधुरा बिरोळे भेळे हजारिया,
करा तेग उभारिया धारिया सक्रोध ।
राजा चास धारे काजा किया घूम साथि राजा,
जैत रा बाजता बाजा आयौ महाजोध ।।५।।

—किरतदान बारहठ रौ कह्यौ

५ सिधुरा—हाथियो को । बिरोळे—छिन्न भिन्न कर । भेळे—परास्त किए मिलाये । हजारिया—हजारी मनसब वालो का । करा—हाथ । तेग—तलवार । ऊभारिया—ऊपर उठाए हुए । चास—पृथ्वी, भूमि । जैत रा—विजय के । बाजता—बजते, नाद करते ।

८८. गीत ठाकर कलियाणदास राठौड़ बोरूंदा रौ

आहणियै रूक नवी वरै ऊभौ, अणिये त्रैभागे अपल ।
कलै मुगळ कर लेह कटारी, मारियौ मुगल कटार मल ।।१।।
हणियै खसमि महळ विचि हुबतौ, खमे धाड आगा मे स खोध ।
जवन कन्हा वसि करै जडाळी, जैमल तणै साधियौ जोध ।।२।।

८८ **गीतसार**—उपरिलिखत गीत राठौड योद्धा कल्याणदास मेडतिया पर कथित है । गीतनायक ने शाही महलो मे अपशब्द कहने पर किसी मुसलमान योद्धा को उसी की कटारी छीनकर मार दिया था । गीत में मुगल योद्धा से कटार छीनकर मारने का कवि ने वर्णन किया ।

१ आहणियै—प्रहार करके, मारकर । रूक—तलवार । नवी वरै—नवी से वरदान प्राप्त, मुसलमान । ऊभौ—खडे । अणिये—नोक, पैना भाग । त्रैभागे—त्रिधारे, भाले का तीसरा भाग । अपल—रोका नही जाने वाला,योद्धा । कलै—कल्याणदास । कर लेह—हाथ से लेकर, कर से छीनकर । कटारमल—कटार रखनेवाला योद्धा, कटार से लडने वाला वीर ।

२ हणियै—नाश करके, सहार करके । खसमि—स्वामी के, बादशाह के । महल—राज प्रासाद । हुवतौ—प्रहार देता । खमे—सहनकर । धाड—आघात, गर्जना कर । जवन—यवन । कन्हा—पास से । वसि करै—वश मे कर, छीनकर । जडाळी—कटारी । जमल तणै—राव जयमल मेडतिया के पुत्र गीतनायक कल्याणदास । वह जयमल का सातवा पुत्र था । साधियौ—निशाना बनाया, मारा ।

विहडे मीर वदै विख वयणे, वळि वळि भडा हणै विकराळ।
वळवत कमंध ग्राछटे विजडी, विजडी तिणि घडचियौ वगाळ ॥३॥

---

३ विहडे—मारे। मीर—ग्रमीर, मुसलमान उमराव। वदै—कहे, कहने पर। विख वयणे—विपाक्त वचन, कठोर वाणी, ग्रपशब्द। वळि वळि—पुन पुन। भडा—योद्धाग्रो। हणै—मारे। वलवत—सामर्थ्यशाली। कमव—राठोड, कल्याणदास राठौड़ ने। ग्राछटे—झटका कर, प्रहार कर। विजडी—कटारी। तिणि—उसी से। घडचियो—टुकडे टुकडे किए, मार दिया। वगाळ—मुसलमान को।

८९. गीत कलियाणदास मेड़तिया री वीरता रौ

ग्रतरा विरद तूझ कलियाण ग्रऊचरा, पहां सिरोमणि कमध प्रवीत।
चलण गिरग चितनि चत्रभुज, ग्राचि गग मसतकि ग्रादीत ॥१॥

जगड समौभ्रम जोध जैतहथ, भडा सिरोमणि कविलां भाण।
पगे पहाड रिदै परमेसुर, भुजि सुरसरि भाळयळि भाण ॥२॥

---

८९. गीतसार—यह गीत जगन्नाथ के पुत्र कल्याणदास मेडतिया का है। कवि ने कल्याणदास को योद्धाग्रो मे शिरोमणि, युद्ध मे गिरि तुल्य ग्रविचल, ग्रपने कुल में पवित्र, विष्णु भगवान की तरह उदार, गगा के समान निर्मल हाथ ग्रौर सूर्य तुल्य तेजस्वी ललाट वाले विरुदो को ग्रहण करने वाला कहा गया है।

---

१ ग्रतरा—इतने। ग्रऊचरा—उच्चारण करते हैं, उच्चता के। पहा—योद्धाग्रो मे। प्रवीत—पवित्र। चलण—गति मे, पैर। गिरग—गिरि, पर्वत। चितनि—मन, चित्त। ग्राचि—हाथ। ग्रादीत—ग्रादित्य, सूर्य।

२ जगड समौभ्रम—राव जगन्नाथ की समता की भ्रान्ति देने वाला, जगन्नाथ का पुत्र कल्याणदास। जोध—योद्धा। जैत हथ—जिसके हाथ मे विजय रहती है। कविला परिवार, कुल मे। भाण—सूर्य। पगे—पैरो का। रिदै—हृदय। भुजि—हाथ। सुरसरि—गगा।

वडिस पूरित वीर वसोधर, अतरै बोल नथि क्यू आळि।
गमे मेरगिर उर श्री गोवद, करि जान्हवी कमळ किरणाळि ।।३।।
वायक सुध कळियाण अतुळ वळ, विधि सहि आभोपम वस।
ओयण अनड़ श्री पति आतम, सुरसरि सुकरि भ्रगुटि हरि हस ।।४।।

—देवीदान कवि रौ कह्यौ

---

३ वीर वसोधर—राव वीरमदेव का वंशधर, कल्याणदास। अतरै—इतने। नथि—नही। आळि—व्यर्थं, असत्य। गमे—गमन, पैर। मेर गिर—गिरि शृ ग, स्थिर। जाह्नवी—गगा। कमळ—मस्तक। किरणाळि—सूर्य।

४ वायक—वचन। अभोपम—कान्ति मे अनुपम। ओयण—चरण। अनड—पर्वत। सुकरि—हाथ। भ्रगुटि—मस्तक। हस—सूर्य।

६०. गीत गिरधरदास केसोदासोत मेड़तिया बोरावड़ रौ

विघन वार गिरधर सघर वाधियै वीरारसि,
पह सुछळि सगह आलम संपेखै।
मरण मगळ जिसौ जाणियौ मोट मनि,
लाख दळ सबळ तिलमात लेखै ।।१।।

---

६० गीतसार—उपर्युक्त गीत पर्बतसर परगने के बोरावड ठिकाने वालो के पूर्वज राठौड वीर गिरधरदास मेडतिया पर रचित है। गीत मे कवि ने वर्णन करते हुए कहा है कि उस वीर गिरधरदास ने युद्ध का सकट काल आजाने पर वीररसाभिभूत होकर धैर्य धारण किया। उस वीर ने मृत्यु को मगलमय अनुभव कर लक्षाधिक शत्रु-सेना को नगण्य समझा। वह अपने साथियो के युद्ध से भाग खडे होने पर भी स्वामि-धर्म का निर्वहन कर लडता रहा और अन्त मे अप्सराओ का वरण कर सुरलोक मे गया।

---

१ विघन वार—विपत्तिकाल मे। गिरधर—गीतनायक गिरधरदास राठौड, वह प्रसिद्ध वीर जयमल का पौत्र और केशवदास का पुत्र था। सघर—धैर्यवान्। वाधियै—वर्धित पह—राजा, योद्धा। सुछळि—युद्ध। सगह—सगर्व, प्रगाढता। आलम—ससार। सपेखै—देखा, देखते हुए। मगळजिसौ—कल्याणप्रद हुवे जैसा, शुभ कार्य हो जैसा। मोटमनि—उदार चित्त, विशाल मन वाला। सबळ—बलवान। तिलमात—तिलमात्र, तुच्छ, नगण्य।

ऊससँ निहग लग भार सिरि आवियौ,
वाहतौ कमध जणि जणि वखांणँ ।
अत ऊछाह रिमराह उर आणियौ,
जुडतँ वहळ दळ तूछ जाणँ ।।२।।

हणे असुराण तुडिताण जैमल हरँ,
पाधरे पांण पिडि भुइ पचारँ ।
अमंगळ काळ आणद सम ईखियौ,
सेन दूभर सुगम कीध सारँ ।।३।।

हुवौ रिणथभ निय साथ विमुहे हुवँ,
त्रिदिव मनव हूवा तिणि तमासँ ।
सामिध्रम दाखि केसव तणौ सीघळी,
वरे गो रंभ सुरलोक वासँ ।।४।।

---

२ ऊससँ—जोश मे उफन कर, उत्साह पूरित होकर । निहग—आकाश । लग—स्पर्शकर, तक । भार—दायित्व । सिरि—सिर पर, ऊपर । वाहतौ—शास्त्रो की मार करता । कमध—राठौड वीर को । जणि जणि—जन-जन । अत—अन्तिम । ऊछाह—उत्साह, उत्सव । रिमराह—शत्रुओ, शत्रुता के मार्ग वालों । जुडतँ—लडते हुए, टक्कर लेते हुए । वहळ दळ—बहुसख्यक सेना से जबरदस्त सेना से । तूछ—तुच्छ, सामान्य ।

३ हणे असुराण—असुरो का नाशकर । तुडिताण—वश गौरव को बढाने वाला । जैमलहरँ—जयमल के पोत्र ने । पाधरे—सीधे, सामने । पाण—बल, हाथ । पिडिभुइ—युद्ध स्थल मे । पचारँ—ललकार कर, प्रोत्साहित कर । काळ—समय, मृत्य । आणद सम—आनन्दप्रद कार्यों के सदृश । ईखियौ—देखा, अनुभव कर । सेन—सैन्य । दूभर—कठिनता से पार पाने वाली । सारँ—तलवारो से, शस्त्रो से समस्त ।

४ रिणथम—युद्ध मे स्तभ तुल्य । निय साथ—अपने साथियो के । विमुहेहुवँ—विमुख होने पर, भाग जाने पर । त्रिदिव—देवता । मनव—मानव । तिणि—उस । तमासँ—तमाशे, युद्ध कुतूहल । सामिध्रम—स्वामिधर्म । दाखि—निर्वाह कर, कहकर । केसव तणौ—राजा केशवदास का तनय, गीत नायक गिरधरदास । सीघली—श्रेष्ठ वीरसिंह । वरेगो—वरण करके गया । रभ—अप्सरा । वासँ—निवास किया, जा वसा ।

९१. गीत गदाधरदास गिरधरदासोत मेड़तिया सबळपुर रौ

बधे वीर हाका धाका धोम गैणाग धूबै,
पवग जुधि मेळियौ दळां पहिलै।
आप छळ बाप छळ सामि छळ आदरे,
गदाधर खडगधर जूझि गहिलै ॥१॥

दळे आदेसियौ वीरगुर दूसिरौ,
जैत्रहथ वाहतौ करग रण जगि।
वीररसि हाकळे वाजि रिणि वावळे,
मेळियौ आवळे थाटि अणभगि ॥२॥

---

९१ ऊपर लिखा हुआ गीत मारवाड के पर्वतसर परगने के सबलपुर ठिकाने वालो के पूर्वज गदाधरदास मेडतिया योद्धा पर सर्जित है। गीतकार ने लिखा है कि जिस समय वीर नाद से आकाश ध्वनित हुआ उस समय गदाधरदास ने शत्रुओ की सेना पर अपने अश्व से आक्रमण किया। वह वीर अपने, अपने पिता और अपने स्वामी के निमित्त तलवार ग्रहण कर युद्ध मे जूझने लगा। उसने विपक्षियो का सहार कर घायल अवस्था मे विजय लाभ कर यश अर्जित किया।

---

१ वधे–बढकर। हाका–हुंकार, वीर नाद। धाकां–दहाड, गर्जना। धोम–धूम्र। गैणाग–आकाश। धूबै–नगाडे अथवा, तोपो के चलने की ध्वनि। पन्नंग–घोडा। मेळियै–मिलाया, शामिल किया। दळा पहिलै–विपक्षी सेना मे, अपनी सेना मे सबसे पहिले। छळ–युद्ध, लिए। सामि–स्वामी। आदरे–स्वीकार कर। गदाधर–गीत-नायक गदाधरदास। खडगधर–खड्ग ग्रहण कर। जूझि गहिलै–रणोन्मत्त।

२ दळे–अपनी सेना। आदेसियौ–आज्ञा दी, नमस्कार किया, सराहना की। वीर गुर दूसिरौ–द्वितीय वीर श्रेष्ठ वीरमदेव तुल्य गदाधरदास को। जैत्रहथ–जिसके हाथ से विजय होती है। वाहतौ–प्रहार करता, चलाता। करग–हाथ। जगि–विकट, युद्ध। हाकळे–ललकार। वाजि–घोडे को। रिणी वावळे–रण मस्त। मेळियौ–मिलाया, भिडाया। आवळै थाटि–विकट सैन्य। अणभगि–अभगवीर।

सावळा हूला पाड़ि रिप मातै समरि,
ऊजळे कमळि मुहरि अयारा।
त्रिजड़ हथि नाखियौ खेंग गिरधर तणै,
सूर तन पूरियै सीसि सारा ॥३॥

भला भवाडि जैमाल केसव भुवणि,
जुड़े पह काजि पित आगळी जेम।
वधे वाखांण त्या भडा न्याय वडा,
ऊवरै जीवतास्यभ होइ अेम ॥४॥

---

३ सावळां–भालो, वर्छो। हूला–प्रहार, विशेप प्रकार के आघात। पाडि–पछाड कर, मार कर। रिप–वैर। मातै समरि–भयानक युद्ध मे। ऊजळे–उज्ज्वल, निष्कलक। कमळि–मस्तक। मुहरि–सामने। अयारा–वैरियो। त्रिजड हथि–हाथ मे तलवार ग्रहण कर। नाखियौ–डाला, धकेला। खेंग–घोडा। गिरधर तणै–गिरधरदास के पुत्र गदाधरदास ने। तन–शरीर। पूरियै–पूर्ण कर। सारा–तलवारो, समस्त।

४ भला–अच्छा। भवाडि–कहलवाकर। जैमाल–प्रसिद्ध वीर राव जयमल राठौड जो महाराना उदयसिंह के पक्ष मे चित्तौड की रक्षा करता हुआ बादशाह अकबर से लडकर मारा गया था। केसव–राव जयमल का पुत्र और गीतनायक का प्रपितामह राजा केशवदास मेडतिया। वह बादशाह अकबर का मनसवदार था। भुवणि–ससार मे। जुडे–लडा, भिडा। पह–राजा। काजि–कार्य मे, लिए। आगळी–आगे, सम्मुख। वधे–बढे, बढकर। वखाण–वर्णन, किर्ति, प्रसिद्धि। भडा–भटो, योद्धाओ। न्याय–उचित, उपयुक्त। ऊवरै–जीवित रहे। जीवता स्यभ–युद्ध मे घावो से आपूर्ण होकर जीवित रहने वाले योद्धाओ को 'जीवितस्यभ' कहा जाता है। होइ–होकर। अेम–इस प्रकार, ऐसे।

९२. गीत रघुनाथसिंघ मेड़तिया मारोठ रौ

रचतै जुध भुगत रुघा वड रावत, आवध अन न हुई अटक ।
सीमा ठेल कियौ नवसहसौ, केवाणे पैली कटक ।।१।।

आरव सैन फाटता पेटा, पडिया भड तडफै सर पाज ।
अणभावतौ परूसँ ऊभौ, ऊभौ खळ न रहै कोय आज ।।२।।

खाटा दात हुवा खगवाहा, मुह फाटा फाटा उर मौर ।
कळह समै कहियौ कै वेळा, इसडी गोठ न दीन्ही ओर ।।३।।

---

९२ गीतसार—गीत लेखक ने उपर्युक्त गीत मे गोडावाटी के शासक रघुनाथसिंह मेडतिया के आसाम प्रान्त के रणक्षेत्र मे युद्ध लडने की घटना का दावत के साथ रुपक बनाकर वर्णन किया है । इसमे लिखा है कि तलवारो की रसवती मे भालो के आहार से शत्रुओ का उदर पोषण किया गया, जो योद्धा इस रसोईघर मे पहुच गया भूखा नही लौटा । और किसी भी आगन्तुक का न नाम धाम पूछा और न उसे जीमने मे रोका ही गया ।

---

१ रचते जुध भुगत—युद्ध रूपी भुक्ति । रूघा—रघुनाथसिंह । आवध—आयुध, हथियार । अन—अन्य । अटक—रोक, बाधा । सीमां ठेल—हद बाहर कर, असीम । नव सहसौ—राठौड, मारवाड राज्य मे नव सहस्त्र ग्राम थे, इसलिए वहा के शासक राठौडो को नव हजार ग्रामो का स्वामी कहा गया है । केवाणे—तलवार । पैलो—दुश्मन का, उस पक्ष का । कटक—सेना ।

२ फाटता—विदीर्ण होते । भड—योद्धा । तडफै—तडफडाते हैं, तडफते हैं । अणभावतौ—अरुचिकर, बिना भाता हुआ । परूसँ—परोसा गया । ऊभौ—खडा । ऊभौ खळ न रहै—शत्रु साबित पैर खडे नही रहे । कोय—कोई भी ।

३. खाटा दाता हुवा—दाँत खट्टे हुए, परास्त हुए । खग वाहा—तलवार चलाने वालों, योद्धाओ । मुह फाटा—मुख फटे रह गए । उर मौर—वक्षस्थल और पीठ भाग । कळह समै—युद्ध समय । कै वेळा—कई बार । इसडी—ऐसी । गोठ—दावत, सहभोज । दीन्ही—दी गई ।

सावळ तणा धपावै सात्रव, भोजन सार छतीसौ भांत।
पूछियौ न कौ नकौ पालियौ, पड़ियौ सुज चढ़ियौ रण पांत ।।४।।

रूका तणौ रचाय रसोड़ौ, भाला पेट सत्रा भरिया।
जीमण हार मूआ सह जोगा, अण जीमिया सह ऊबरिया ।।५।।

दुसमण कहै अनौखी दीठी, रुघपत भुगत तुहाळै राज।
खाधी जिका तिकां तै खाधा, भूखा रह्यास छूटा भाज ।।६।।

दळ आसाम भुगत देखाळै, वीरहरा रण ताळ विमेक।
कुडछी खाग झाट तळ कैंवी, आयौ जिकौ न आयौ अेक ।।७।।

---

४ सावळ तणा–श्यामलदास के पुत्र रघुनार्थसिंह ने। धपावै–तृप्त किये। सात्रव–शत्रुओ। सार-शस्त्र-अस्त्र। न कौ–कोई ने नही। पालियौ–रोका, मना किया। सुज–वह। रण पात–रण पक्ति मे।

५ रूका तणौ–तलवारो का। रसोडौ–भोजनालय, भोजन। भाला–वलमो की चोटो से। सत्रा–वैरियो के। भरिया–पूरित किए, तृप्त किए। जीमणहार–भोजन करने वाले। सह–सव। जोगा–योग्य थे वे। अण जीमिया–विना भोजन किए, भूखे। ऊवरिया–शेष रहे, वचे रह गए।

६ दीठी–देखी। रूघपत–रघुनार्थसिंह की। भुगत–भुक्ति, दावत। तुहाळै–तेरे वाले, तुम्हारे। खाधी–जीमी, खाई। जिकां–जो, वे। तिका–तिनको, उनको। तैं–तुम। खाधा–खा गए। छूटा भाज–भाग निकले, भाग छूटे।

७ आसाम–आसाम प्रदेश। वीरहरा–राव वीरमदेव का वशज। रणताळ–रणस्थल, युद्ध समय। विमेक–वोध। कुडछी खाग–वडे चम्मच रूपी तलवार। झाट–प्रहार। तळ–नीचे, स्थल। कैंवी–वैरी। जिको–जो। न आयौ–जीवित लौट कर नही आए।

९३. गीत सेरसिंघ नै कुसळसिंघ राठौड़ रौ

वागा बेताळा किलक्का खागा नागा निराताळा वीर,
जौम गौम बागा तोपा जागै धूम जूह।
चखा चौळ भाखियौ अफेर सेर नूरा चौज,
हूरा रै जहूरा लागौ सूरा रै समूह ॥१॥

जटी आराण रै विन्है जोधाण रा भाण जूटा,
वीछूटा वाण ज्यू आसमाण रा बेधाण
कज भेजा कळेजा केवाण फूलधारा कटै,
मजेजा ऊपटै सची रूप रौ मोहाण ॥२॥

---

९३ **गीतसार**—प्रोक्त गीत मारवाड के महाराजा रामसिंह और नागौर के राजाधिराज बख्तसिंह के मेडता के युद्ध मे मारे गए ठाकुर शेरसिंह मेडतिया रिया और ठाकुर कुशलसिंह चापावत आऊवा की वीरता पर लिखा हुआ है। शेरसिंह ने रामसिंह और कुशलसिंह ने बख्तसिंह के पक्ष मे शस्त्र ग्रहण कर शौर्य प्रदर्शित करते हुए मृत्यु का वरण किया था। गीत मे युद्ध की भयानकता और उभयवीरों के पराक्रम का वर्णन किया गया है।

---

१ वागा—वजने लगे, लडने लगे। किलक्का—हर्षध्वनि, किलकारी। खागां नागा—नग्न तलवारो से। निराताळा—भयकर, निरतर। जौम—जोम। गौम—आकाश। बागा—ध्वनि हुए, गुजित हुए। धूमजूह—धुघकार। चखा चौळ—क्रोधातिरेक से लाल नेत्र। भाखियौ—कहा, बोला। अफेर—न फिरने वाला। सेर—शेरसिंह। नूर—कान्तिवाला, श्री सम्पन्न। हूरा रै—अप्सराओ के। जहूरा—समूह काति, प्रकाश।

२ जटी—जहा, शिव। आराण रै—युद्ध के। विन्है—दोनो। जोधाण रा—जोधपुर के। भाण—सूर्य। जूटा—भिडे, लडने लगे। वीछूटा—छूटे हुए, चलाए गए। बेधाण—छिद्र करने वाले। कज—मस्तक। भेजा—मज्जा। केवाण—तलवार। मजेजा—मिजाज रखने वाले? ऊपटै—उमडे। सची—शची। मोहाण—मुग्धा, मोहित।

चोट निराताळां खागां झाळा जगा वीरचाळां,
काळा वीर मोहवियौ खळां रौ प्रळै काळ।
आखाडा अथोवियौ सिंघालौ जोध सदा वाळौ,
लोभी मजू घोखां वाळौ सोभियौ लकाळ ।।३।।

वेथटा अथागौ मारू धरा रौ ऊपट्टा वेध,
भूरौ वोम विलागौ सुभट्टां राम भूप।
झेल घट्टा आपरा पार रा वाह खाग झट्टां,
रभा रूप रट्टा लागौ वीर घट्टा रूप ।।४।।

काळ खाग धारा गै काळगा धू बिहार कीधौ,
धून कळाधार जंगां वाखांणै सधीर।
लोभा चारु सोभा जांणै नारगा चा हार लीधौ,
वारगा तमास रीधौ सीधौ सूर वीर ।।५।।

---

३ चोट–प्रहार। निराताळा–भयानक, अनवरत। खागा–तलवारो। जगा–युद्ध। काळा वीर–प्रचण्डवीर, यमराज तुल्य वीर। खळां रौ–वैरियो का। आखाडा–रणस्थलो। अथोवियौ–अधीर, लडने की प्रवलेच्छा वाला। सदावाळौ–सरदारसिंह वाला, शेरसिंह मेडतिया। घोखा वाळौ–प्रहार या बौछार करने वाला। लकाळ–योद्धा, सिंह।

४ वे थटा–दोनो सेनाओ मे। अथागौ–अथकित, गहरा, अत्यधिक। मारूधरा–मारवाड़ राज्य। उपट्टा वेध–विरोध उत्पन्न हुआ। भूरौ–वीर, सिंह। वोम विलागौ–आकाश को छूने लगा। राम भूप–महाराजा रामसिंह के पक्ष का। घट्टा–समूह, सेना। पार रा–परायो की, विपक्षी। वाह खाग झट्टां–तलवार के प्रभावशाली प्रहार देकर। रट्टा–टक्करें लेने लगा, चित्त मे विचारने लगा। घट्टा–घनघोर, वादलो की भाति चारो ओर छा जाने वाला।

५ खागधारा–कृपाण धार। गै–हाथियो। काळगा–श्यामल, काले रग के। धू विहार–मस्तक विदीर्ण या काट कर। कळाधार–नारदमुनि। जगा–युद्ध को। वाखाणै–वखान करता है। लोभा–लुब्ध। नारगा चा–रक्त का, अप्सरा का, मस्तक का। हार–गलहार, आहार। वारगा–अप्सराओ। रीधौ–प्रसन्न हुआ।

राडिगारा लूण रा उजेळी धारा उरेडते,
मेळी भू मेडते प्राभी रूक-धारां मौति।
छरा हू नेहडा तोडि जोडिया छेहडा छोडि,
जौति हूँ नेहड़ा जोडि मिळैगौ साजौति ।।६।।

९४. गीत ठाकुर सिवनार्थसिघ कुचामण रौ

दिल ऊजळ सिवा अभनमा दूदा, बडपण आखै बीस बिसा।
कपड़ा दिसा म देखे कमधज, देखीजै आखरां दिसा ।।१।।

---

९४ गीतसार–इस गीत मे कवि ने ठाकुर शिवनार्थसिह कुचामन का नर्णन करते हुए कहा है कि- हे अभिनव राव दूदा (शिवनाथसिह) तेरे यश की प्रसिद्धि समुद्रो तक फैल चुकी है। अतः तुम कवि के फटे पुराने वस्त्रो को देखकर उसका सम्मान करने की मत्त सोचो, अपितु उसकी काव्य रचना की उत्कृष्टता की परीक्षा कर यथायोग्य सम्मान प्रदान करो।

---

६ राडिगारा–युद्धप्रेमी, प्रचण्डवीर। लूण रा उजेळी–स्वामी के नमक को सफल करने वाले, नमक को उज्ज्वल करने वाले। धारा–तलवारें। उरेडते–पराक्रम दिखाते, उत्साह पूर्वक आघात करते हुए। भू मेडते–मेडता की भूमि पर। प्राभी–सघन, अत्यधिक। रूक धारा–खड्गधारा। मौति–मृत्यु। छरा–तलवार से, हाथ से। नेहडा–बधन, स्नेह। छेहडा–अञ्चल, गठजोड। नेहडा–स्नेह, प्रीति। मिलेगो–मिल गया।

१ दिल ऊजळ–पवित्र हृदय। सिवा–शिवनार्थसिह। अभनमा दूदा–अभिनव राव दूदा, गीतनायक राव दूदा का वशज है, इसलिए यहा उसे इस समय मे दूदा जैसा व्यवहार करने वाला बताया है। आखै–कहते हैं। वीसविसा–अडिग पूर्ण रूप से श्रेष्ठ। दिसा–तरफ। म देखे–मत देख। आखरा–काव्य रचना।

प्रभता समद कडां लग पूगी, ओपम भड़ां अरोडां।
जग दातार पोमाक न जौजै, जोजै रूपक जोडा ।।२।।
आरख इद सुपाता ओठभ, कमधज पारख कीजै।
आडंवर मत भाळे अपहड, भला गुणा भाळीजै ।।३।।
साभळ कथ लीजै सूजा रा, नित जस हाका नवा नवां।
सूमा ढहल मनावण मुकवी, सहळ म जाणे कमध सिवा ।।४।।

२ प्रभना–प्रभुता, वैभव। समद कडालग–समुद्र तट तक। पूगी–पहुची, फैल गई। ओपम–उपमा, शोभा सुन्दरता। अरोडा–जवरदस्तो, नही रुकने वालो। पोसाक–वेश भूपा। न जौजै–मत देखिए। रूपक जोडा–काव्य कला, गीतादि छदो की तुकें।

३ आरख–समान, तुल्य। इद–इन्द्र। मुपाता–सुपात्रो, सुकवियो। ओठभ–आश्रय-दाता। पारख–परख, पहिचान। आडवर–ऊपरी तडक भडक। भाळै–देखैं। अपहड–दानवीर, उदार पुरुप। भला–अच्छे, उत्तम।

४ साभल–मुनकर। कथ–कथन। सूजारा–सूरजमल्ल के पुत्र शिवनाथसिह। जस हाका–यश चर्चा। सूमा–कजूसो। म जाणे–मत समझे। कमध सिवा–राठौड़ शिवनाथसिह।

६५. गीत राव वाघसिंघ मेड़तिया मसूदा रौ

इखू पाथ रौ कै वज्र सुरा नाथ रौ भलूळ आग,
सूळ रुद्र हाथ रौ कै जञ्र मूळसार।
घूरम्वी छमाथ रौ कै कौळछी दाघ रौ धाव,
चूरम्वी भाराथ रौ कै वाघ रौ चौधार ।।१।।

६५ गीतसार–उपर्युक्त गीत अजमेर मेरवाड के मसूदा सस्थान के अधिपति राव वाघसिह मेडतिया के भेला की प्रशसा का अभिव्यजक है। इसमे भाला के प्रहार को अर्जुन के वाण, इन्द्र के वज्र, शिव के त्रिशूल, यमराज के लोहदण्ड, कालिका के शूल, विष्णु के चक्र, कालियनाग के क्रोव और रुद्र के तृतीय नेत्र की ज्वाला तुल्य प्रभावशाली वतलाकर वर्णन किया गया है।

१ इखू–तीर, वाण। पाथ रौ–अर्जुन का। सुरानाथ रौ–इन्द्र का। भलूळ आग–धधकती अग्नि। सूळ–त्रिशूल। जञ्र–यमराज का। मूलसार–लोह दण्ड। घूरम्वी– (?)। छमाथ रौ–पडानन का, स्वामि कार्तिकेय का। कौळछी– (?)। धाव–अभिग्रह, धावा। चूरम्वी–सहार करने वाला। भाराथ रौ–युद्ध का। वाघ रौ–राव वाघसिह का। चौधार–चार तीक्ष्ण धार वाला भाला।

ताप मारतण्ड रौ कै पंड रौ ससत्र तवा,
हूह कच्छ खण्ड रौ कै हाथ पाथ हूत।
त्रसूळ चामड रौ कै अलारा चूक रौ तेज,
काळा रौ प्रचड रोस कै आग झाळ कूत ।।२।।

वळे पच सीस रौ कै तीसरौ सिव नेत्र वाचा,
डाच विहगेस रौ कै अतका छ डड।
सर बहान कीस रौ कै घन्वी नाराच सेना,
मल्ला रा अधीस रौ कै वीर नाच मंड ।।३।।

जैतमाल हरा हूँत जूटबौ जवार जुद्धां,
केवियां खूटबौ कै बिना मीच काळ।
हूह रौ अदंग रौ कै जूटबौ हांकिये हेले,
छाकिये कमध रौ कै छूटबौ छडाळ ।।४।।

—हुकमीचद खिड़िया रौ कह्यौ

---

२ ताप—आतप। मारतंड रौ—सूर्य का। पड रौ—पाडण्व का अर्जुन का। तवा—कहे। हूह—प्रसिद्ध गन्धर्व जो तबला वजाने मे निपुण माना गया है। चामड रौ—चामुण्डा का। अलारा चक्र रौ—विष्णु के चक्र का, आलात चक्र का। काळा रौ—कालियनाग का। रोस—रोष, क्रोध। आग झाळ-अग्नि ज्वाला। कू त—भाला।

३ वळे—पुन भस्मीकडा। पचसीस रौ—शिव का। तीसरौ—तृतीय। वाचा—कहे। डाच—मुख, बाका। विहगेस रौ—पक्षीराज का, गरुड का। अतकाछ—यमराज का। डड—लोहदण्ड, गदा। सर बहान—बाण का छोडना। कीस रौ—हनुमान का। घन्वी—घनुर्धर। नाराच—शर, तीर। मल्ला रा अधीस रौ—मल्लो के स्वामी का, शिव का। नाच—नृत्य। मड—रचना, करना।

४ जैतमाल हरा हूत—जैतमाल के वशज से, राव बाघसिह से। जूटवौ—टक्कर लेना, भिडना। जवार—जवाहिरसिह, सभवत महाराजा जवाहरमल्ल जाट भरतपुर। जुद्धा—युद्धो मे। केविया—वैरियो का। खूटवौ—नष्ट होना, समाप्त होना। विना काळ मीच—अकाल मृत्यु। हूह रौ—हूह नामक प्रसिद्ध गन्धर्व का। अदग रौ—दुंदुभि पर ताल देना। हाकिये हेले—हाके की शिकार में सिंह के उठकर झपटने के। छाकिये—छकित, मत्त हुए। कमध रौ—राठौड राव बाघसिह का। छूटबौ—चलना, प्रहार हेतु चलना। छडाळ—भाला, छडवाले शस्त्र का।

६६. गीत पहाड़सिंघ महेचा जसोल रौ

समर भांजवा थाट वाका भडा सालुळै, दुजड ग्रह विडाणी धरा दावै ।
अगज जोध डिगन्तौ भुजा ऊपरै, विरद पत महेचौ आभ ढावै ।।१।।

धरा रौ थभ रजपूत वट धारिया, पटाळौ केहरी जोम पूरै ।
वणै जुध रूप कठीर रै वीर वर, चात मालाण दळां चूरै ।।२।।

विरद उजवाळ लकाळ छिलतै वरै, सुतन वैरा तणौ खाग सूरौ ।
माण रौ दजोवण जेम बेढ़ीमणौ, भांजवा दोयणा वाघ भूरौ ।।३।।

---

६६ गीतसार—उपर्युक्त गीत मारवाड के मालानी प्रान्त के जसोल सस्थान के रावल पहाडसिह महेचा की युद्ध वीरता पर कहा हुआ है। कवि गीतनायक के पराक्रम का वर्णन करता हुआ कहता है कि पहाडसिह युद्ध मे शत्रुओ को पराजित करने के लिए अपने वीर योद्धाओ को लेकर आक्रमण करता है और अपनी सैन्य शक्ति से दूसरो की भूमि पर अधिकार स्थापित कर लेता है। वह ऐसा महावीर है जो अपनी भुजाओ पर गिरते हुए आकाश को भी ऊपर ठहरा रख सकता हैं।

---

१ भाजवा—नाश करने के लिए। थाट—सेना, समूह। वाका—विकट। सालुळै—उमड कर, प्रयाण कर। दुजड—तलवार। विडाणी—दूसरो की, अन्य लोगो की। दावै—अधिकार मे लेने। अगज—अजेय। जोध—योद्धा। डिगन्तौ—डगमगाते हुए, लडखडाते। महेचौ—राठौडो की महेचा शाखा वाला, महेवा स्थान पर इस शाखा वालो की राजधानी रहने के कारण वे महेचा कहलाने लगे। आभ—आसमान। ढावै—ऊपर रोके रखे ऊपर ठहराये रखे।

२ थभ—स्तभ। वट—वल, क्षत्रियत्व। धारिया—धारण किए। पटाळौ केहरी—गर्दन पर लम्बी केशराशि वाला सिह, वब्बर शेर। जोम पूरै—जोश मे आपूर्ण। वणै—वनता है। कठीर रै—सिह के। चात मालाण—मालानी प्रान्त का मुखिया। चूरै—नाश करे, चूर्ण करे।

३. विरद—विरुद। उजवाळ—उज्ज्वल कर कीर्त्तिमान् कर। लकाळ—सिह। छिलतै—छलकते, जोश मे उमड़ते। वैरा तणौ—रावल वैरीशाल का। खाग सूरौ—महान् शूरवीर, खड्गवीर। माण रौ—मान का, मानधनी। दजोवण—दुर्योधन। वेढीमणौ—युद्ध लड़ने वाला। दोयण—दुर्जनो, वैरियो को। वाघ भूरौ—वर्वर शेर, महान्‌वीर।

सत्रवा साल वर वीर नव साहसौ, खाग ग्रहिया करा कळह खेलै ।
हाकळै दुग्रौ जसवत भडा हैमरा, पहाड़ौ गैमरा घड़ा पेलै ।।४।।

—जाला सादू रौ कह्यौ

९७. गीत पहाड़सिघ महेचा जसोल रौ

फुणी धूणियौ सीस समद ऊफणै, छळ छळे दोयणा गुमर छीजै ।
काहुळी चखा रढ़राण भेळण किला, कमध किण सीस घमसाण कीजै ।।१।।

---

९७. **गीतसार**—ऊपर लिखित गीत जसोल ठिकाने के रावल पहाड़सिह राठौड के सैनिक अभियान पर कथित है। गीतकार कहता है कि रावण की तरह हठीला वीर रावल पहाडसिह आज भयकर क्रोध से रक्तिम नेत्र किए किसके अधिकार के दुर्ग को जीतने के लिए चढाई करने को उद्यत हुआ है। उसके युद्धाभियान से शेषनाग का शीश लचक उठा है और समुद्र अपने तट का अतिक्रमण कर पाज से वाहर छलकने लगा है। शत्रुओ का गर्व खर्वित हो गया है।

---

४ सत्रवा—शत्रुओ। साल—शल्य। नव साहसौ—मारवाड मे नव हजार ग्राम थे अतदर्थ उसके शासक राठौडो का नव सहस्र ग्रामपति सम्बोधन प्रचलित हुआ। करा—हाथो मे। कळह—युद्ध। हाकळै—ललकार कर, प्रोत्साहित कर। दुग्रौ—द्वितीय। जसवत—जसवतसिह। हैमरा—घोडो को। पहाडौ—पहाडसिह। गैमरा घडा—गज सेना। पेलै—दवाता हैं, पीछे धकेलता है।

१ फुणी—शेषनाग। धूणियौ सीस—शीश धुनने लगा। ऊफणै—उफनने लगा, किनारो का अतिक्रमण करने लगा। छळछळे—छलक कर। दोयणा—वैरियो। गुमर—अभिमान। छीजै—जल कर नष्ट होने लगा, खर्वित। काहुळी—डरावनी। चखा—आखें। रढ राण—हठ और युद्ध मे रावण जैसा वीर। भेळण—नाशकर अधिकृत करने। कमध—राठौड पहाडसिह। किण सीस—किस पर। घमसाण—घनघोर युद्ध।

थट रज धूधळी सूर झंकौ थियौ, दसौ दिस सिंधवौ राग दीधो।
महपती दूसरां उवर भय न मावै, कुवर किण ऊपरां कोप कीधो ॥२॥

भैचके अरी भालां किरण झळहळे, समवडी नम रह्या पगां सारू।
दुवा जसवत मन ऊच धारे दुझल, मूछ किण ऊपरा ग्रहै मारू ॥३॥

पजाया खळां वाका भडा पहडा, समवडी खाग रौ नकू सूजै।
खेड़पत चढै तू तौ सहल खेलवा, घरा सह घडहड़ै गैण धूजै ॥४॥

—जाला सादू रौ कह्यौ

---

२ थट—समूह, ठाठ। रज—धूलि, गर्द। सूर—सूर्य। झखौ थियौ—धुधला होगया, प्रभाविहीन। सिंधवौ—सिंधु, युद्ध काल की रागिनी। महपती—राजाओ। उवर—उर, हृदय। न मावै—समाहित नही होता है, असह्य लगता है। किण ऊपरां—किन पर।

३ भैचके—भयचकित। अरी—वैरी। झळहळे—चमके। समवडी—समानता वाले। नम रहया—नम्र बन गए, झुक रहे। पगां सारू—चरणो मे पडे रहने के लिए, मातहत बन कर रहने को। दुवा—द्वितीय। मन ऊच—उदारचित्त। दुझल—प्रचण्ड वीर।

४. पजाया—मातहत किए, पराजित किए, उलझना। खळा—दुष्टो, वैरियो। पहडा—धोखे वाजो को, विचलितो को। नकू—कोई नही। खेडपत—खेड स्थान का स्वामी। सहल—सैर सपाटे। घड़हड़ै—धडधडा कर, दहल कर। गैण—गगन, आकाश। धूजै—कांप उठता है, कम्पित होता है।

९८. गीत चतरसिंघ बाला मोकळसर रौ

बाका भड जठै अनडपण बाकौ, साकौ दै दोय राह सरै।
वधारौ खाडू बालावत, कमध अवेढा वाद करै ॥१॥

रेस दियौ राजा राव राणा, समहर लियौ पटाळा सीह।
काळा खगां बजावण करगा, अडपायत बाला अणबीह ॥२॥

नाथै भडां ऊनरथा नाहर, दहला पडै दसौ दिस देस।
बाला रेसां दियै बीजा नू, अडपायत बाला अणरेस ॥३॥

---

९८ गीतसार—यह गीत राठौडो की बाला प्रशाखा के मोकलसर ठिकाने के वीर ठाकुर चतुरसिंह पर रचित है। गीत मे चतुरसिंह की वीरता की सराहना करते हुए लिखा गया है कि जहा पर बाकुरे वीर हैं वहाँ पर ही दुर्जेय दुर्ग बने होते हैं जिनके सामने क्या हिन्दू और क्या यवन सभी शकित रहते हैं। राठौड वीर चतुरसिंह अपनी वीरता से वृद्धि प्राप्त कर जागीरो का उपभोग करता है। और सदैव खतरनाक कार्य करता रहता है।

---

१ बाका भड—बहादुर योद्धा, विकट वीर। जठै—जहा पर। अनड—दुर्ग—अनडपन—किसी का बधन न सहना, अनम्रता। साकौ दै—शका मानें, डरे। दोय राह—हिन्दू और मुसलमान दोनो धर्मानुयायी। सरै—श्रेष्ठ, मुखिया। वधारौ—वृद्धि, किसी कार्य की सफलता पर राजा उसके कर्ता को ग्रामादि देकर जागीर मे वृद्धि करते थे, उन्नति। खाडू—प्राप्त करनेवाला, भोगनेवाला। अवेढा—विकट, प्रतिकूल। वाद—विवाद, विग्रह।

२ रेस दियै—दबा दिए। समहर—युद्ध। पटाळा सीह—बब्बर सिंह तुल्य योद्धा। काळा—वीर। खगा बजावण—खड्गाघात करने वाले। करगा—हाथो से। अड़पायत—शक्तिवान, योद्धा। अणबीह—अभय, निडर।

३ नाथै—वश मे करे। ऊनरथा—जो बधन नही मानते उनको। दहला—भयजन्य, कम्पन। बीजा नू—दूसरो को। अणरेस—अजय, अपराजित। वाकौ—विकट। मेवासौ—निवास स्थान। ओठभ—रक्षक, आश्रयदाता।

चावा खाग त्याग दिस चारौं, करणां दान हमेस करां।
मोकळसर वाको मेवासौ, निज ओठभ चतुरेस नरां ।।४।।

—जाला सादू री कह्यौ

६६. गीत अमरसिंघ उदावत नींबाज रौ

वाजै रण तूर नगारा गाजै, अनड़ पड़ै पड़गाज।
अमर तणा दळ देख अवाजै, भाजै अरि घड़ पडै पुड भाज ।।१।।

हुवकै हथनाळि हवाई हुवकै, धूवै धोम सळसळै सोर।
संकै सत्र सवळा तणी सुण, ठावी निहस निसाणे ठोर ।।२।।

---

६६. गीतसार—यह गीत मारवाड के नीवाज ठिकाने के ठाकुर अमरसिंह के अजमेर मे शाही सेना के विरुद्ध लडे गए युद्ध का है। इसमे लिखा है कि रण तूर्य और नगाडो की आवाज से पर्वत प्रतिध्वनित होने लगे। अमरसिंह के युद्धार्थ सज्जित योद्धाओ के भय से शत्रु सेना डर कर रणस्थल त्याग कर भाग गई। और वह वीर विजय की हर्ष के वाजे वजवाता हुआ जोधपुर लौट आया।

---

४ चावा—चाहने वाला, शौकिन। करा—हाथो से। मोकळसर—जोधपुर के जालौर सभाग के एक ठिकाने का केन्द्र स्थान। वाको—विकट। मेवासा—स्थान। ओठभ—आश्रयस्थल। चतुरेस—चतुरसिंह के।

१ वाजै रणतूर—रणतूर्य वजे। नगारा गाजै—नगाडो ने गर्जना की। अनड—पर्वत। पडगाज—प्रतिगर्जन, प्रतिशब्द गर्जन। भाजै—दौडे, नाश करे। अरि घड—शत्रु सेना। पुड—पृथ्वी तल।

२ हुवकै—छूटे, गर्जन करे। हथनाळि—तोपनुमा छोटी बन्दूकें। धूवै—प्रज्वलित हुवे, प्रचड होना। धोम—धूम। सळसळै—सुलगने का भाव। सोर—वारूद। सत्र—शत्रु। ठावी—निश्चितता की, ठीक निशाने की। निहस—ध्वनि, चोट गर्जन। निसाणै—नगाडे वाद्य। ठोर—ध्वनि।

आखर अरि पडै नीभडे उछडे, घडहड धूजै रिमां घड ।
सेरण भेर भयाकुळ सामत, दुलहल चौ धार कि दुजड ।।३।।

पाये सहि लाइ प्रथी पत, पधोरे धर प्रघळ ले पेस ।
बाजे जैत्र तणै बाजन्ते, आयौ जैत करै अमरेस ।।४।।

१००. गीत ठाकर सुरताणसिंघ उदावत नींबाज रौ

सुपह मान घैसाहरा सिलह तन साभियां,
गजर डका जाहरा त्रम्बागळ गाजिया ।
वीजळां थाहरा घेरतां बाजिया,
वरूथा नाहरा जेम नीबाजिया ।।१।।

---

१०० **गीतसार**–प्रोक्त गीत जोधपुर के नीबाज ठिकाने के ठाकुर सुरतानसिंह उदावत राठौड़ की रण-वीरता का द्योतक है। गीतनायक ने जोधपुर की सेना द्वारा घिर जाने पर बहादुरी के साथ आक्रान्ताओ का सामना करते हुए प्राणोत्सर्ग किया था। गीत मे गीतनायक द्वारा प्रदर्शित वीरता का वर्णन किया गया है।

---

३ नीभडे–कटकर अलग पडे,सर्व विहीन हुए। उछडे–उखड कर,भागकर। घडहड–कपन की ध्वनि। धूजै–कापते हैं। रिमा घड़–शत्रुओ के शरीर। भयाकुळ–भयभीत, भय से व्याकुल। चौ–की। दुजड–तलवार।

४ पाये–चरणो मे। सहि–सब। लाइ–लाकर, उपस्थित कर। पाधोरे–सीधे, आये। प्रघळ–अधिक। पेस–भेंट। बाजे–वादित्र। जैत्र तणै–विजय के। जैत करै–विजय प्राप्त कर।

१ सुपह मान–महाराजा मानसिंह जोधपुर ने। घैसाहरा–सैन्यदल को। सिलह–कवचादि। साभिया–सज्जित कर। गजर डका–प्रभात कालीन घडियाल की ध्वनि। त्रम्बागळ–नगाडे। गाजिया–निनाद करने लगे, बजने लगे। वीजळा–तलवारें। थाहरा–किला, यहा नीबाज ठिकाने की जोधपुर स्थित हवेली से अभिप्राय है, कदरा। घेरता–चारो ओर से घेरे मे लेते समय। बाजिया–टक्कर लेने लगे, लडने लगे। वरूथा–सेनाओ से। नाहरा जेम–सिंहो की तरह। नीबाजिया–नीबाज ठिकाने वाले।

हडहडै वीर वैताल वागो हको,
घड़हडै आतसां पडै मयदा धको।
जमस किम खाय खगधार वहतौ जको,
सिरायत जोधपुर तणा वाजै सको ॥२॥

मछर धर मझ सूर सत सुजळ माटकां,
कर सधर घ्यान गिरधर अकाटकां।
दुछर नर अडर हर हर उचर दाटका,
फाटतां फजर वागौ गजर फाटकां ॥३॥

भड खगा छछोहा भीच छेटी मनैं,
विहग जेठी समर खाचियौ वाज नै।
गजा घेटी तरह भाडता कुलग नै,
कणेठी सूर सुरताण जेठो कनै ॥४॥

२　हडहडै—हसने की ध्वनि। वीर वैताल—बावन वीर, वैतालादि शिव के गण। वागो हको—हाक हुई, शोरगुल मचा। घटहडै—घडक कर, घडवड आवाज कर। आतसा—अग्नि, तोपें। मयद—हाथियों। किम—कैसे। खगधार—खड्गाघात। वहतौ—होते, चलते। जको—जो, वह। सिरायत—अव्वल पंक्ति के सरदार, जोधपुर मे प्रथम पक्ति के ठिकाने वाले सिरायत कहलाते थे जिन मे नीवाज भी एक था। तणा—का।

३　मछर—मात्सर्य, गर्व। माटका—कुलके, घटके। सधर—धैर्य धारण कर, धीरता पूर्वक। दुछर—सिंह। हर हर—शिव शिव। उचर—उच्चारणकर। फाटता फजर—प्रात काल होते ही। वागौ—बजा, लडने लगे। गजर—निरन्तर प्रहार। फाटका—द्वार के किवाडों या फाटक पर।

४.　भड—टक्कर लेकर, योद्धा। खगां—तलवारो। छछोहा—उत्युत्साही। भीच—योद्धा। छेटी—दूरी, अन्तर, अन्तिम। विहग जेठी—गरुड के अग्रज अरुण ने, सूर्य के सारथी अरुण ने। समर—युद्ध में। खाचियौ वाज—की लगाम खीचकर सपातश्व घोड़े को स्थिर किया। गजा—हाथियो को। घेटी—गर्दनें, कण्ठो महिप। भाडता—काटकर गिराते। कुलग—मुर्गे को। कणेठी—कनिष्ठ, अनुज। सूर—शूरसिंह। सुरताण—सुरतानसिंह। जेठो कनै—जेष्ठ भ्राता के पास।

अेक डाळी झडै निराताळी अघट,
नद बहै कराळी रुघर वाळी निपट।
वीर ताळी बजै उताळी रण बिकट,
नचै काळी सहत कपाळी जांण नट ।।५।।

२०१. गीत ठाकर सुरतांणसिंघ उदावत नींबाज रौ

चाळा महीप रचाता चूक भाराथ मचायौ चौडे,
खीचायौ ऊदाणी आदू प्रवाडा खटैत।
जमा सोर गंज परा भगायौ वासदे जाण,
पौढियोड़ौ किना जगायौ पटैत ।।१।।

---

२०१. गीतसार—उपरांकित नींबाज के ठाकुर सुरतानसिंह उदावत राठौड पर लिखा हुआ है। सुरतानसिंह जोधपुर के शासक मानसिंह की सेना से लडकर वीरगति को प्राप्त हुआ था। यह युद्ध जोधपुर नगर स्थित नींबाज की हवेली पर लड़ा गया था। सुरतानसिंह अपने भाई शभूसिंह और अन्य सैनिक सरदारो सहित जूझकर धराशायी हुआ था। गीत में युद्ध का चित्रात्मक वर्णन हुआ है।

---

५. झडै—झडना, गिरना। निराताळी—भयकर। अघट—निरंतर। नद बहै—नदी बहती है। कराळी—विकराल रूप धारण किए। रुघरवाळी—लोहू की। वीरताळी—बावन वीर ताली बजाते हैं। उताळी—सत्वरता से, शीघ्रता से। नचै—नृत्य करते हैं। काळी सहत—कालिकादेवी सहित। कपाळी—रुद्र, महादेव। जांण—मानो। नट—नर्त्तक एक जाति विशेष का व्यक्ति।

१ चाळा—युद्ध, खेल। महीप—राजा, महाराजा मानसिंह। रचाता—रचना करते, शुरु करते। चूक—मारने, छलाघात, धोखा। भाराथ—युद्ध। चौडे—खुलेआम। ऊदाणी—उदावत प्रशाखा का राठौड वीर सुरतानसिंह ने। आदू—आदिकालीन। खटैत—प्राप्त करने वाला। जमा—जमा हुआ। सोर—बारूद। गज—ढेर, राशि। वासदे—अग्नि। किना—किंवा, अथवा। पटैत—सिंह को।

ठाम ठाम तोपा तणौ जाळ रै मोरचे ठहै,
धूबै जेठ आदीत माळरै वाळी धूप ।
हल्ले बाधचाळ रै हवेली माथै हुवौ हाकौ,
सुरत्ताण रूप महाकाळ रै सरूप ।।२।।

छायौ धूवाघौर गैण अरावा अगार छूटै,
तूटै मानो नौलाख नखत्रा गोळा तेम ।
फूटै घौर हूँतां कै सफीळा आर पार फूटै,
ऊठै लागौ हजारा लोक रौ हल्लो अेम ।।३।।

क्रोधगी सिंधू रै साथ सहत्थां केसरिया कीधा,
खळा माथे लीधा खाग अमोघा अखूट ।
प्याला भरै चौगणा गाळवा आगराई पीध,
दीधा आसमेद रा पावडा भडा दूट ।।४।।

---

२ ठाम ठाम—जगह जगह । जाल रै—जाल-सा । ठहै—स्थापित किए, बनाए । धूबै—धधके, जले । जेठ आदीत—जेष्ठ का सूर्य । माळ—माला, किरणें । धूप—अग्नि, आतप । बाँधचाळ—वस्त्र का छोर बाँधकर । माथै—पर । हाकौ—हल्ला, आक्रमण ।

३ गैण—आकाश । अरावा—तोपो से । अगार—अग्निकण, गोले । छूटै—छूटते हैं । तूटै—टूटे । नखत्रा—नक्षत्रो । तेम—त्यों । फूटै—फूटे, पार निकले । हूंता—से । सफीला—दिवालें । आर पार—इधर से उधर । ऊठै—वहा, होने लगा । अेम—यो, इस प्रकार ।

४ क्रोधगी—सक्रुद्ध । केसरिया—केशर के रग मे रगे हुए वस्त्र पहिन कर, यह पोशाक योद्धागण युद्ध मे जूझ कर मरने के निश्चय के साथ धारण करते थे । खळा—दुष्टो, वैरियो । अमोघा—अचूक । अखूट—अपार, अखडित । चौगणा—चार गुनें । गाळवा—पानी मे घोल बनाया हुआ । आगराई—अफीम । आसमेद—अश्वमेघ यज्ञ । पावडा—कदम, पैर । भडा दूट— दुधर्षवीर ।

हुवै हाक डाक वाक कायरा ऊवकै हियो,
डक डकै भैरवी वजावै रुद्र डाक।
धुकै ज्वाळा चसम्मा झडै कै खळां फूलधारा,
छकै घावां वकै कै दुबारा वाळी छाक ।।५।।

लूथवत्था हुवा कै खजरा मार धरा लूटै,
प्राण छूटै वरै कै अच्छरां करै प्रीत।
तूटै सीस जूटै कै अकारा सूर नगी तेगा,
रुद्र धारा छूटै कै फुहारा वाळी रीत ।।६।।

करै घाव छछोहा छटाका टूट झडै केई,
पडै केई उथल्लै अळूझै अत्र पाय।
परी रत्थां चढै फेई खवा धू हिंडोळै पेचां,
खागी वधे लडै केई ऊठै झोक खाय ।।७।।

---

५ हाक–हल्ला। डाक–डमरु की ध्वनि। वाक–वाणी। ऊवकै–वमनकरे, घवरावे। हियो–हृदय। डकडकै–डक डक की ध्वनि, पानी अथवा रक्त को कण्ठ से पीने पर होने वाली आवाज। भैरवी–दुर्गा। डाक–ढाक वाद्य। धुकै–धधके, जले। चसम्मा–नेत्रो मे। झडै–कटे, धराशायी हुवे। फूळधारा–तलवार की धाराएँ। छकै घावा–घावो से परिपूर्ण हुए, घावो से तृप्त हुए। वकै कै–कतिपय अटसट बकते हैं। दुवारा वाळी छाक–दोवार भट्टी से निकली हुई शराव पिये हुओ की तरह, मदमस्त की भाति।

६ लुथवत्था–गुत्थम गुत्थी। खजरा मार–खड्गो की चोटो से। धरा लूटै–पृथ्वी पर लौटते हैं। वरै–वरण करते हैं। कै–कई। अच्छरा–अप्सराओ से। तूटै सीस–खण्डित शीश हुए। जुटै–जुडते, भिडते हैं। अकारा–उतावले, कठोर, तीव्र। नगी तेगा–नग्न तलवारो से। रुद्र धारा–रक्तधारा।

७ छछोहा–उत्साही, फुर्तीले। छटाका–बिजली के, तलवार के। टूक–टुकडे। झडै–कटे, पडते। उथल्लै–उलटकर। अळूझै–उलझकर, फँसकर। अत्र–आतें। पाय–पैर। परी–अप्सराओ के। रत्था–रथो, विमानो पर। खवा धू–मस्तक और कधो पर। हिंडोळे–हिलोरें लेते, झूलते। पेंच–पगड़ी के आटे। खागी वधे–बांए हाथ से पगडी बांधने वाले, राठौड़। झोक–झुकते हुए, लडखड़ाकर।

मावै नकौ सुरा रा विमाण भूले गैण मग्गी,
खेत जग्गी बावनेस चलै रुद्र खाळ।
लेण छाका माहि पत्र जोगणी भरेबा लागी,
तीन पौर वागी घू जनेवा निराताळ ।।८।।

पाड़ घणा पोढियौ भाराथ बीच वरापूर,
रोखगी पाराथ जेम करे घौर राड।
साथ वीच सरारा झडै कै खागा सूर,
अेम पड़ै ऊदो नवै-कोटां रौ औछाड ।।९।।

ऊदो अव पायौ जको इतै भाण तपै इळा,
थायौ थको भुजा खत्री पणा वाळौ थोक।
भाई भड़ां समेळा वधारे तोल इन्द भारी,
लीधा सती साथ ही पधारे देवलोक ।।१०।।

---

८ मावै नकौ—समाहित नही होते, कोई कोई बैठने का स्थान नही मिलता। सुरा ग—देवताओ के। गैणमग्गी—आकाश पथ मे। खेत जग्गी—रणक्षेत्र जाग्रत हुआ। बावनेस—बावन वीर। छाका—छाक, रुधिर के प्याले। भरेवालागी—पूर्ण करने लगी। वागी—चली, वजी। घू—मस्तको। जनेवा—तलवारें। निराताळ—निर्विलम्व, निरन्तर भयकर।

९ पाड—पछाडकर, धराशायी कर। पोढियौ—रणभूमि मे सोया, मारा गाया। भाराथ—युद्धस्थल। वरापूर—वरो की इच्छाऐं पूर्ण कर वीर। रोखगी—रोषीला। पाराथ—अर्जुन। राड—युद्ध। औछाड—ढ़ाल, रक्षक, छाया करने वाला।

१० अव पायौ—पर्व प्राप्त किया। जको—जो, वह। भाण—भानु। इला—पृथ्वी। थायौ—स्थापित, हुआ। थको—रहते हुए। खत्री पणा—क्षत्रियत्व। थोक—समूह। समेळा—शामिल। वधारे—स्वागत किया, वढाकर। लीधा—लिए हुए।

१०२. गीत ठाकर सुरतांणसिंघ उदावत री ठकुराणी रौ

बाजै त्रबाळा जूझ रा डका गाजै वौम बकै वीर,
अड़ै जगा झड़ै अगा तोड़ रिमा आव।
कथ सुरा मदरा पधारो महासती कहै,
रभा कहै विमाणा पधारो मारू राव ॥१॥

डाक चमू बजाड़ै धपाडै गीधा गळा डळा,
बीजूजळा भुजाबळा भाजे खळा बीह।
अच्छरा अरज्जा करै आटीला बिमाणा आवौ,
अगहोमा कहै ऊभी आवौ पुरा ईह ॥२॥

---

१०२ गीतसार—उपरिलिखित गीत नींबाज के स्वामी ठाकुर सुरतानसिंह उदावत की वीर ठकुरानी चौहानजी पर रचित है। गीतनायिका ने अपने पति के युद्धस्थल पर मारे जाने के बाद उसके शव को गोद मे लेकर अग्नि प्रवेश किया था। वह जोधपुर के बीसलपुर ठिकाने के राव दुर्जनसिंह की राजकुमारी थी। गीत में कवि ने अप्सराओ और सती के वर प्राति के सम्वाद का वर्णन किया।

---

१ वाजे त्रम्वाळा—युद्धकारो नगाडे वजे अथवा वाद्य बजने लगे। डका गाजे—दण्डकों की चोट से ध्वनित हुए। वौम—व्योम मे, आकाश मे। वकै वीर—हर्ष से बोलने लगे। अडै जगा—युद्ध मे अडकर, हठ ठानकर। झडै अगा—अग प्रत्यग कट पडे। तोड—तोडकर, भजित कर। रिमा आव—वैरियो की आयु को। कथ—पति, कान्त। सुरा मदरा—देव प्रासादो मे, स्वर्ग लोक मे। रभा—अप्सरा। मारूराव—सुरतानसिंह राठौड कुलोत्पन्न होने के कारण उसे मारवाड का राव कहा गया है।

२ डाक—ढाक वाद्य। चमू—सेना मे। वजाडै—बजवाए। धपाडै—तृप्त किए। गीधा—गृद्धो को। गळा डळा—मास के टुकडो, मास पिण्डो से। वीजूजळा—कृपाणो। भाजे—सहार किये। खळा—वैरियो। वीह—डरपोक, भयभीत कर। अच्छरा—अप्सरा। अरज्जा करै—निवेदन करती हैं। आटीला—आट रखने वाले, हठीला। अगहोमा—सती शरीर होमने वाली। ऊभी—खड़ी हुई। पुरा इह—इस पुरी में, ईशपुरी, स्वर्ग मे।

हमैं घणी बेळा हुई अढगौ भाराथ व्हैता,
सावळा घमोडा दैता व्हैता सरा सोक।
इन्द्र री परी वरम्माळा रळै गळे रथा आवौ,
लीजै हवा आखै ऊदा चालो सती लोक ॥३॥

छत्रधारी दूजा जगा धराथभ ऊदा छात,
सिंभू रा सिंघळी दौलाहरा सुरत्ताण।
कळे मेट पधारीजै लीजै प्याला सती कै छै,
आवौ चहुवाण दै छै चावडा री आण ॥४॥

दोहूं पखा चाढ नीर आग झाळा होम देही,
पला नेह बधाडै हटाडै अग पोख।
कंथ साथ दुरज्जेस धीया खमा खमा कहती,
लेती प्याला अमी रा पधारे सती लोक ॥५॥

—वना खिड़िया रौ कह्यौ

---

३ हमैं—अव। घणी वेळा—वहुत समय। अढगौ—वेढंगा, विकट। भाराथ व्हैता—युद्ध होते हुए। सावळा घमोडा—भालो की चोटें। सरा सोक—वाणो के चलते समय होने वाली ध्वनि। इद्र परी—इन्द्र की अप्सरा। राळै गळे—गले मे डालती हैं कठो पर पहिनाती है। रथा—विमानो मे। आखै—कहती है। ऊदा—हे उदावत, सुरतानसिंह।

४ छत्रधारी—राजा, वडा सरदार जिसके शीश पर छत्र रहता है। दूजा जगा—द्वितीय जगरामसिंह। धरायम—पृथ्वी की रक्षा के लिए स्तम तुल्य। ऊदा छात—उदावतो के शिरोमणि। सिंघळी—श्रेष्ठ, सिंह। दौलाहरा—दौलतसिंह के पौत्र। सुरत्ताण—ठाकुर सुरताणसिंह। कळे—कलह, युद्ध। मेट—मिटाकर, समाप्त कर। चावड री आण—देवी चामुण्डा की दुहाई, चामुण्डा राठौडो की कुलदेवी है।

५ दोहू पखा—दोनो पक्ष, पितृ और पतिपक्ष। चाढ नीर—गौरवान्वित कर, कान्ति चढाकर। आग झाळा—अग्नि की लपटो मे, चिता मे। होमदेही—शरीर का हवन कर। पला—आञ्चल, गठजोडा, पति के प्रति। नेह—स्नेह, प्रीति। बधाडै—वढ़ाकर। हटाडै—हटाकर, दूर। पोख—पोषण। दुरज्जेस धीया—दुर्जनसिंह की पुत्री। खमा खमा—क्षमा क्षमा, राजपूतो मे अपने से सम्मान, आयु, पद आदि मे वडे को 'खमावणी' कहकर अभिवादन करने का प्रचलन है। अमी रा—अमृत के। पधारे—पधार गई।

१०३. ठाकर रूपसिंघ उदावत रायपुर रौ

कीजै नीव री घूट ज्यू पीजै प्यालो काळकूट केम,
मणा तोलिया तुलीजै केम मेर।
बीजौ किलो पातरे अमीरदौलो घेर बैठो,
न जावै भेळियौ किलो रायानेर ॥१॥

दगै तोपा बहै गोळा होहल्ला मोरछा दौळा,
जोर लार सकै सूता सेर नू जगाय।
भुरज्जाळ बाकडो बीटियौ दूजा गढा भोळै,
लोहा जाळ धसै केहौ नसैणी लगाय ॥२॥

---

१०४ **गीतसार**–उपर्युक्त गीत मारवाड के रायपुर ठिकाने के ठाकुर रूपसिंह उदावत द्वारा नवाव अमीरखाँ के रायपुर किले को घेरने पर लडे गए युद्ध पर कहा हुआ है। गीत मे लिखा है कि अमीरखाँ ने अन्य किलो की भाँति सहजता मे जीतने की धारणा से रायपुर पर घेरा डाला परन्तु वह ऐसा सुदृढ एव वीरो द्वारा रक्षित था कि उस पर विजय नही पा सका। भला, सुमेरुगिरी भी कही मन के बाटो से तोला जा सकता है। अन्ततः नवाब को निराश होकर वहाँ से घेरा उठाना पड़ा।

---

१ नीब री–निब की, कडवा। काळकूट–विष। मणा–मन के बाट। केम–कैसे। मेर–शृंग, सुमेरुगिरि। बीजौ–दूसरो, अन्य। पातरे–भूल से, भ्रमवश। अमीरदौलो–नवाब अमीरखाँ टोक वालो का पूर्वज। घेर बैठो–घेर लिया। भेळियौ–हस्तगत करना, कब्जा करना। रायानेर–रायपुर।

२ वहै–चलते हैं। दौळा–आसपास, चौतरफ। सूता–नीद मे सोये को। नू–को, ने। भुरज्जाळ–किला। वाकडो–विकट। बीटियौ–घेरा। भोळै–भोलेपन से। धसै–प्रवेश करके। नसैणी–सोपान, सीढी।

लेर वीडो लीधी जिका पूना री सपदा लूट,
फरूकाबाद नै कीधी खाख साफ फेर।
तिका लेवियै देर हल्लो न कीधौ बजाड तासा,
ऊदारा पोता रौ कोट दूसरो आसेर ।।३।।
रायानेर वज्र सो वणायौ गाढे राव रूपै,
आयौ श्रीगोपाल वेल चाढ़े वस आव।
हजारा रसाला वाढे अखाड़ा दिखाया हाथ,
नवी री कसम्मा काढै वखाणे नवाब ।।४।।

—वाकीदास आसिया रौ कह्यौ

१०४. गीत राउत भीमा रताउत रौ सेतरावा रा जुद्ध रौ

निहसावै सुहडि न्रिभे निय नाइक, समहरि भोमि ऊछजे सार।
रिण गहिले फेरियौ रताउति, सेत्रावै ऊपरि संघार ।।१।।

---

१०४ **गीतसार**—उपर्युक्त गीत रावत भीम रता के पुत्र पर कथित है। गीत मे रावत भीम द्वारा सेतरावा ग्राम पर आक्रमण कर वहाँ के स्वामी मोकल और अचल (अचलदास) को रणक्षेत्र मे मारने का वर्णन हुआ है। यह भी सकेत दिया है कि उसने मेतरावा के किले को ध्वस्त कर उस स्थान को समतल वना दिया।

---

३ लेर वीडो—बीडा लेकर, प्रण धारण कर। जिका—जिन्होंने। पूना री—पूना नगर की। खाख साफ फेर—मिट्टी मे मिला दिया। तिका—उन्हे। लेवियै—विजय करने में। वजाड तासा—तासे नामक वाजे वजवा कर। ऊदा रा—उदयसिह के। पौता री—वशजो का। आसेर—किला।

४ गाढेराव—विकटवीर। रूपै—रूपसिह ने। वेल—सहायता पर। चाढे वस आव—कुल को कीर्तिमान कर। रसाला—घुडसेना। वाढे—काटकर। अखाडा—युद्धभूमि मे। कसम्मा—शपथ। काढै—निकाले, खाते हैं।

१ निहसावै—जोश दिलवाकर। सुहडि—सुभट, योद्धा। न्रिभे—निर्भय। निय—निज, अपने, निकट। समहरि—युद्ध। ऊछजे सार—प्रहार के लिए तलवार अथवा शस्त्र ऊपर उठाकर। रिण गहिले—रणोन्मत्त। फेरियौ—घुमाया। रताउति—रता अथवा रतनसिह का पुत्र गीतनायक रावत भीम। सेत्रावै—सेतरावा नामक स्थान। सघार—सहार, नाश।

नाठै तोइ थळ घणी न छूटै, कळहणि काळ बिलागो कास।
भुइ अविहडा तणी भीमाजळि, घण भूझारि फेरियौ घास ॥२॥
मोकळ अचल पाडिया माझी, गह तजि बीजा सुहडि गया।
कमधजि भला थळेचा कैरा, कोट बेट सैलोट किया ॥३॥

—नाणद बारहठ रौ कह्यौ

१०५. गीत कचरा राठौड़ रौ विवाह रा रूपक रौ

पड जन पतसाह जान पतसाही, चहु वेद स ढुळता चमर।
गावै अछर रंभण गहमह, कचरौ परणीजै कवर ॥१॥

---

१०५ गीतसार—कवि ने उपराकित गीत मे वीर कचरा जसवर्तसिहोत द्वारा लडे गए युद्ध का विवाह के साथ रूपक रचा है। गीत मे वर्णन किया है कि शाही सेना के रूप मे बारात है और बादशाह उसमे वडा बराती है। चारो ओर झल रहे चवरो की क्रियाएँ चारो वेदो की ध्वनि है। गायनिएँ अप्सराएँ है। ऐसे युद्ध रूपी विवाह का दुलहा कचरा विवाह कर रहा है।

---

२. नाठै तोई—भागकर अन्यत्र जाना चाहे तो भी। थळ—स्थल, बालुकामयी भूमि। घणी—बहुत। न छूटै—पीछे छोडकर नही जा सकते, छोडी नही जा सकती। कळहणि—युद्ध मे। काळ—यमराज। बिलागो—विशेष रूप से लगा, सलग्न हुआ। कास—भाला शस्त्र। भुई—भूमि। अविहडा—मजबूत, जबरदस्त। तणी—की। भीमाजळि—गीतनायक रावत भीम। घण—घने। भूझारि—जूझार, वीर। घास—फदा, तीर, भाला या बर्छे की नोक।

३ मोकळ अचळ—मोकल और अचल जो सेतरावा ग्राम वालो मे प्रमुख थे। पाडिया—रणस्थल मे मार गिराए। माझी—मुखिया। गह—गाढ, दृढता, गर्व। बीजा—दूसरे लोग। सुहडि—बहादुर, वीर। थळेचा—थल प्रदेश के। कैरा—के। थळे चा कैरा—थल मे युद्ध लडने वाले। कोट—किला। बेंट—बल, बैठकें। सैलोट—समतल, भूमि के बराबर।

१ पडजन—अपर बराती, वडे बराती। जान—बरात। चहु वेद स ढुळता चमर—चारो वेदो के पाठ रूपी चवर ढुलाए जारहे है। चहुवे दस ढुळता चमर—चारो दिशाओ मे चवर झल रहे हैं। अछर—अप्सरा। रभण—रम्भाएँ, रमण। गहमह—जलसा, भीड। परणीजै—विवाह करता है।

पेखण कमध कळह परणावण, लिखिया रुद्र नारद लगन ।
जोगणपुरा माडही जानी, जोगणपुर रचियौ जगन ।।२।।
तीर अखत ढाल गज तोरण, चहुँ दस कळळ स मगळाचार ।
चौंरी वडी पेखियै चकते, करण कळोधर राजकवार ।।३।।
पौढि पिलग चाव सति पाथर, रहे महल विच घणौ रस ।
तोनैं दियौ हिंदवे तुरके, जसवत रा माड चै जस ।।४।।

१०६. गीत सुन्दरदास गोगादे राठौड़ तेना रौ

थह मूजा तणी आवळा थाटा, वाका भड कूदणा व्रहास ।
चलतौ अनड थळेचौ चौरग, दुजड़ हथा भड सुन्दरदास ।।१।।

---

१०६ गीतसार—उपर्युक्त गीत मे कवि ने तेना के स्वामी सुन्दरदास की वीरता का वर्णन किया है । वह कहता है कि वीर सुन्दरदास सुसज्जित सैन्य दल के वल पर मडोवर के समीप तक के ग्रामो का लगान लेता है। वह देश की रक्षा के लिए अर्गला तुल्य है ।

---

२ पेखण—देखने । कमंध—राठौड । कळह—युद्ध । परणावण—विवाह करने । लगन—लग्न, विवाह की रस्म विशेष । जोगणपुरा—योगिनीपुर वाले, दिल्ली के वादशाह । माडही—कन्यापक्ष वाले । जानी—वरात पक्षीय । जगन—यज्ञ, विवाह ।

३ तीर अखत—वाण रूपी अक्षत । कळळ—कोलाहल, घोडो का कोलाहल । मगळाचार—मागलिक कार्य । चौंरी—चवरी । चकते—मुसलमान, वादशाह । करण कळोधर—कर्णसिंह की कला को धारण करने वाला, कर्णसिंह के कुल का उद्धारक ।

४ पौढि—पलग पर पौढ कर । चाव—उमग, चाह । पाथर—सोया हुआ । घणौ रस—अधिक प्रेम । तोनैं—तुमको । जसवत रा— हे जसवतसिंह के पुत्र कचरा । मांड चै—माड के, कन्यापक्ष के लोगो ने ।

१. थह—दुर्ग । मूजा तणी—मुञ्जराज की । आवळा थाटा—सुसज्जित सेना, विकट सेना । वाका—विकट । भड—भट्ट, योद्धा । व्रहास—घोडे । चलतौ—चलता हुआ । अनड—पर्वत । थलेचौ—थली प्रदेश का स्वामी । चौरग—चतुरगिनी, फौज । दुजड हथा—तलवार धारी ।

महमा सघण अभनमौ मेहो, घण ताय नेतर लाज घणा ।
भडा कमाड लोहमी भागळ, तेनो आगळ देस तणी ।।२।।
जडळग हथो साथ थी जाडै, मछर सपूर नभ्रै मणौ ।
मुरधर वरग नचीता माल्हो, ताडै आडो राम तणौ ।।३।।
खेतल हरौ मडोवर खेडा, भडा किवाड लहै धर भोग ।
बणियौ पाट सहसमल बीकै, गहिया खाग कळोधर गोग ।।४।।

१०७. गीत रावल पूंजा गहलौत डूंगरपुर रौ

नमौ भाळ रा सूर गहलौत रावळ निडर,
उरड खत्रवाट पौरस उमाहे ।
काजळी रमता ऊजळी कटारी,
बीजळी ऊपरा तू हीज बाहे ।।१।।

---

१०७ **गीतसार**—उपर्युक्त गीत रावल पुजराज सीसोदिया डूंगरपुर पर रचित है। इस मे कवि ने श्रावणमास मे आकाश से कडकरी पृथ्वी पर पडी बिजली पर गीत नायक द्वारा कटार से प्रहार करने का वर्णन किया है। कवि ने उत्प्रेक्षा की है कि पृथ्वी की बिजली (कटारी) से घायल हुई आकाश की बिजली चोट खाकर बादल मे जा छिपी।

---

२ महमा—महिमा। अभनमौ मेहो—अभिनव मेहराज, सुदरदास। घण—अधिक। ताय—उसके, ताप। नेतर— नेत्रो मे। घणी—घनी। कमाड—कपाट, रक्षक। लोहमी—लोहे की। भागळ—भुजागळ, अर्गला। तेनो—तेना स्थान। आगळ—अर्गला। तणी—की।

३ जडळग हथो—खड्गधारी योद्धा। जाडै—घने। मछर—गर्वीला, अहकारी। नभ्रै मणौ—निर्भीक मन वाला, निशक। वरग—वर्ण, जाती। नचीता—निश्चिन्तता से। माल्हो—घूमोफिरो, चलो। ताडै—दहाडता है। आडो—अवरोधक, ओट बना हुआ। राम तणौ—रामसिह का पुत्र सुदरदास।

४ खेतलहरौ—खेत (क्षेत्रसिह) का पौत्र सुदरदास। खेडा—खेतो का, युद्ध। लहै—लेता है, वसूल करता है। धर भोग—भूमि का लगान। पाट—राजगद्दी। गहिया—धारण किए, पकडे। खाग—तलवार। कळोधर गोग—गोगादे की शक्ति को धारण करने वाला, गोगादे के कुल का उद्धारक, सुदरदास।

१. भाळ रा—ललाट का, भाग्यशाली। रावळ—रावल उपटकधारी पुजराज। उरड—साहस, बल पूर्वक प्रवेश करने की क्रिया का भाव। खत्रवाट—क्षत्रियत्व। उमाहे—उमग मे भरकर। काजळी—कजली तीज। रमता—खेलते। बीजळी—विद्युत। वाहे—वार करे।

लाय घर अंवर री दोय जाणै लडी,
खडहडी दोय जाणँ अडी खीज।
कहर श्री पुज रावळ जडी कटारी.
वीज ऊपरि पडी दूसरी वीज ।।२।।

करै ऊछाह मंगळ घमळ कामणी,
होस रळियामणी राग रग होय।
सांमणी तीज तिण दीह जडकी सुजड,
दामणी तणै अध्रियामणी दोय ।।३।।

भमे घर पाट मुरछ हुव अवर भड,
घम घमे घाट गोळा जिही धीज।
कसि करि दळै तायळ हुई कटारी,
वादळ वसी घायल हुई वीज ।।४।।

---

२ लाय—प्रचण्डाग्नि। घर अवर री—पृथ्वी और आकाश की। खडहडी—चमकी, टक्कराई, गिरी। अडी खीज—रुष्ट होकर जा भिडी। कहर—विपत्ति मे। जडी—चलाई। वीज—विजली।

३ ऊछाह—उत्सव। मगळ घमळ—मागलिक गायन। कामणी—नारियां। होस—इच्छा, उमग। रळियामणी सुन्दर—सामणी तीज—श्रावणमास की तृतीया। तिण दीह—उस दिन। जडकी—प्रहार की। मुजडी—कटारी। दामणी—दामिनी, विजली। अध्रियामणी—भयानक, डरावनी।

४. भमे—भ्रमण करे। मुरछ—तीन। हुव—होवे। अवर—अन्य। भड—योद्धा। घम घेम—धमाके से छूटे। धीज—प्रतिस्पर्द्धा, धैर्य। दळै—म्यान, खण्ड होकर तायळ—उग्र, तीक्ष्ण।

१०८. गीत आना गहलौत रौ आखेट रौ

गिड अर गहलौत अनड सिर गाजै, बाजै दहू तणा हथ बाढ।
अेकळ गुडै गुडै दी ओखळ, जडि गुडै गुडै जमडाढ।।१।।

आनै अेकळ अढगी अेहुवै, जग जडियाळ न चूका जाड।
अणभग अलग हूत ऊतरिया, फलग फलग करता अग फाड़।।२।।

बाही बेहुवै हस बिछूटा, रिणवट थट ताहे करट।
सूरा अलट पलट बीचि साभै, डाढ़ा भपट जमडढ़ भपट।।३।।

चूर हुवै तन तीस चलाणी, पोहो पैंतीस चलाणी पूर।
दीठा सूर बखाणै दहुवै, सूर सराहे दहुवै सूर।।४।।

---

१०८ गीतसार—कवि ने उपर्युक्त गीत मे क्षत्रियो की गहलोत शाखा के वीर आना की शूकर आखेट पर रचा है। इसमे वाराह और आना दोनो के गिरि शृंग पर जूझने तथा अन्त मे दोनो के एक साथ प्राणान्त का वर्णन है।

---

१ गिड—शूकर। अर—अरु, और। अनड सिर—गिरि शिखर पर। गाजै—गर्जन करते हैं। बाजै दहू तणा हथ बाढ—दोनो के हाथो के प्रहार होने लगे। अेकळ—एकाकी रहने वाला बलवान सूअर। गुडै—लुढकते हुए। ओखळ—चोट। जमदाढ़—कटारी।

२ आनै—गीतनायक आना। अढगी—जबरदस्त, भयकर। अेहुवे—ऐसे, दोनो ऐसे। जडियाळ—वह जिससे प्रहार किया जाय। अणभग—बहादुर, अखड। अलग हूत—दूर से, ऊपर से। फलग फलग करता—छलागे भरते हुए। फाड—विदीर्ण हो।

३ बाही—बाजू के भाग से, चलाने की क्रिया का भाव। बेहुवै—दोनो के। हस—प्राण। बिछूटा—मुक्त हुए। रिणवट—युद्ध पथ। करट—हाथी का कपोल दुश्मन। साभै—मार डाला। डाढा भदट—दाढो या दन्त शूलो की चोटो से। जमडढ—कटारी की।

४. चूर—चूर्ण चूर्ण। पोहो—योद्धा। दीठा—देखते ही। सूर—वीर। बखाणै—प्रशंसा करने लगे। सूर—सूर्य ने।

१०६. गीत बिहारीदास गहलोत रौ

धौसा पडि ध्रीह धरा पुड धडहड, बाज फडहड नास वरहास ।
आया दळा सामहू आतो, दैवा मरण बिहारीदास ।।१।।

वाटां निति जोवतौ बिहारी, अचड़ा काजि वडौ अवनाड ।
कटका तणां सण जोय काळै, काळै जडिया नही कीवाड ।।२।।

रावत कुसळ तणौ वड रावत, कारिज विढण उछाह किया ।
चाळा-वाधि आवियौ चोडै, दाटिक फाटिक नथो दिया ।।३।।

---

१०६ गीतसार—उपर्युक्त गीत रावत पदधारी प्रतापसिंह गहलोत के पुत्र विहारीदास पर रचित है । गीत मे उल्लेख है कि विहारीदास सदैव शत्रुओ की प्रतीक्षा करता रहता था । वह अपने दुर्ग के कभी भी किवाड वद नही करता था । युद्ध मे जूझ कर काम आने के लिए उत्सव मनाकर रण भूमि मे प्रविष्ट हुआ और दुर्गो मे छिपकर न रहने वाला वीरगीतो मे अमर हो गया ।

---

१ धौसा—नगाडो, धौसा नामक वाद्य । ध्रीह—चोट, ध्वनित । धरा पुड—पृथ्वीतल । धडहड—धडकने की आवाज, कपन । वाज—ध्वनित । नास—नासिका, नथुनें । वरहास—घौडे । आया—आने पर, आए हुओ के । सामहू—सम्मुख । दैवा—देने के लिए ।

२. वाटा निति जोवतौ—प्रतिदिन मार्ग देखता रहता, शत्रुओ की राह देखता रहता । अचड़ा—श्रेष्ठ कार्यों के । काजि—लिए, कार्य । अवनाड—अनम्र, स्वतत्र प्रकृति का वीर, निर्वंध । कटका तणा—सेनाओ के । घसण—पथ । जोय—देखता । काळै—वीर । जडिया—वद किये । कीवाड—कपाट, फाटक ।

३ कुसल तणौ—कुशलसिंह का । विढण—लड मरने के लिए । उछाह—उत्सव । चाळा वाधि—सेना को पक्ति वद्ध कर, वस्त्राञ्चल वांधकर, कमर कसकर । दाटिक—वडा वीर । फाटिक—फाटक । नथो दिया—नही जुडे, वद नही किया ।

पता सुजाव गाहतौ पिसणा, वलू जोध यम वरवरियौ।
आडो आय मही तट ऊपरि, आडी धरा ऊसरियौ ।।४।।

असा हुवै माथा उपहारा, माथै लिया सचाणी मौत।
रिम आयां भीता नह रहियौ, गीता विचि रहियौ गहलौत ।।५।।

११०. गीत अचळसिंघ राणावत रौ

धाराहर सिहर डवर घड धारवि, अजर उमड भर लोह अति।
अरि सिर समर वरसतै अचळा, रातवर धर थयी रति ।।१।।

---

११० गीतसार—उपर्युक्त गीत अचलसिंह राणावत योद्धा पर सर्जित है। गीतकार ने गीतनायक के युद्ध का वर्षा के साथ सादृश्य प्रकट करते हुए लिखा है कि जिस प्रकार गिरि शिखरो पर वर्षा होकर पानी की धारा वहती है उसी प्रकार शत्रुओ के सिर पर शस्त्र वरसा कर अचलदास ने पृथ्वी को लाल रग मे रग दिया।

---

४ पता सुजाव—प्रतापसिंह का पुत्र। गाहतौ—कुचलता, रौंदता। पिसणा—पिशुनो, वैरी। आडो आय—सामने आकर, ओट स्वरूप। मही तट ऊपरि—माहि नदी के किनारे पर ? आडी धारा—तिरछे प्रहरो। ऊसरियौ—वरसने लगा, प्रहार झडी लगादी।

५ असा—ऐसा। माथै लिया—सिर पर लिए। सचाणी—इच्छापूर्वक। रिम—वैरी। भीता—दिवालो के भीतर, किलो मे। गीतां—वीर गीतो मे, कीर्तिकाव्यो मे।

१ धाराहर—मेघ, जलधारा। सिहर—शिखर। उमड—उमड घुमड। अरि सिर—वैरियो के मस्तको पर। समर—युद्ध मे। अचळा—अचलसिंह। रातम्बर—रक्तवर्णीय, लाल। धर—पृथ्वी। थयी—हुई। रति—रक्तिम रक्त से।

सावळ वहळ प्पणग कळ सायक, जडकळक वीजळ खवे जंग ।
वपि खळ कमळ पाळ तण वूठा, रैण चळौवळ थयी गर ।।२।।
अणभग विया अजव घण ओखग, वढग गजि रग गग सवळ ।
उतवग खळा श्रवत जग आवध, पतग थयौ रग अवनि खळ ।।३।।
अग खळ वौळ भळण आहडै, व्यगजि जळ छौळ वरि ।
अग भकवौळ रुघर व्है आई, कमळा चौळ सरूप करि ।।४।।

१११. गीत सूरतसिंघ सगतावत रौ

कटक राण सुरताण रा आण चढिया कडै,
घड़ै गज पाट त्र माळ घुरतो ।
वीजळा भड़ै माहव चढै विमाणा,
सूर पडि ऊपडै जठै सुरतो ।।१।।

---

१११ गीतसार—ऊपर लिखित गीत वीर सूरतसिंह शक्तावत सीसोदिया पर रचित है। सूरतसिंह ने मेवाड नरेश की ओर से रणवाजखा मेवाती से युद्ध कर वीरता दिखाई थी। उक्त युद्ध मे सूरतसिंह का जेठ भ्राता माहवसिंह तो युद्ध मे मारा गया और वह घायल होकर जीवित वच रहा था। गीत मे सूरतसिंह के घायल होने का वर्णन हुआ है।

---

२ सावल—भाला, वर्छी। वहळ—आभा, चमक। प्पणग—वूंदे। कळ—तोप, धनुष। सायक—वाण, गाले। जडळक—तलवार। वीजळ—विद्युत। खवे—चमकती है। वपि—वपु, शरीर। खळ—वैरी। कमळ—मस्तक। वूठा—वरसा। रैण—पृथ्वी। चलौवळ—लाल, रिक्तम, लोहू।

३ अणमग—अभग वीर। विया—दूसरा। अजव—अजवसिंह। ओखग—तिरछा, वीर, चलाना। गजि—गर्जन कर, हाथी। गर—गिरि। सवळ—सवल, वलवान। उतवग—उत्तमाग, शीश। श्रवत—वहते। आवध—आयुध, हथियार। पतग थयौ—लाल हुआ। अवनीतळ—पृथ्वीतल।

४ वौळ—डुवो कर। आहडै—आहाड स्थानीय वीर गीत नायक के पूर्वजो की आहाड मे राजधानी होने से उसके लिए यह शब्द व्यवहृत हुआ है। छौळ—तरग, लहर। भकवौळ—शरावोर। रुघर—रुधिर, लोहू। कमळा—पृथ्वी। चौळ—लाल, रक्तिम।

१ कटक—सेना। राण सुरताण रा—महाराना और दिल्ली के वादशाह का। आण—आकर। चढिया कडै—पीछे चढे, युद्धार्थ सामने आए। घडै गज—गजसेना। त्रमाळ—नगाडे। घुरतो—घोष करते हुए। वीजळा—तलवारें। भडै—वहती हैं, वौछार करती हैं। माहव—माहवसिंह। पडि ऊपडै—रण मे गिर कर उठे। जठै—जहा पर। सुरतो—सूरतसिंह।

वैरिया ग्रसै वहसै नहसै वीरारस,
जगड़ हर असहै गज बौळ जाडे।
अेक गाजै वौह पूरा झलि ऊवरै,
ऊतरै दूसरौ लोह आडै ।।२।।

वाढि मेवातिया तातियां वीजळा,
खाटिया प्रवाडा विन्है गजखभ।
हस जेठी तणौ मुकति प्रापत हुवौ,
सुज हुवौ कणौठी जीवतौसभ ।।३।।

अडै राणा सुछळ चढै धारा अणी,
चलायौ मान रा वीर चाळौ।
मरण माहव तणौ त्रहुँ लोक मझि,
ऊवरण धनौ सुरतेस वाळौ ।।४।।

---

२ ग्रसै पकडे, सहार करे। वहसै–जोश मे आना। नहसै–गरजना, प्रहार। जगड हर–जगतसिह का पौत्र। असहै–ऐसे, नही सहन करता है। गजबौळ–घमासान युद्ध, हाथियो को डुवाने या मारने जैसा भयानक युद्ध। बौह पूरा–घावो से परिपूर्ण होकर, प्रहारो से क्षत होकर। ऊवरै–जीवित बचे। लोह आडै–तिरछे शस्त्र प्रहारो से।

३ वाढि–काट कर, मार कर। मेवातिया–रणवाज खा की सेना वाले। तातिया–आततायी, तेजधारा। वीजळा–तलवारो। खटिया–प्राप्त किया। प्रवाडा–प्रशस्ति कार्य, प्रसन्नतायुक्त विरुद। विन्है–दोनो। गज खभ–गजस्तभ, महान्‌वीर। हस–प्राण। जेठी तणौ–जेष्ठ का, बडे भाई का। प्रापत–प्राप्त। कणौठी–कनिष्ठ लघु। जीवतौ सभ–युद्ध मे घायल होकर जीवित रहने वाले का विशेषण।

४ सुछळ–युद्ध। धारा अणी–शस्त्रो की नोक। मान रा–मानसिह शक्तावत के वशजो ने। वीर चाळौ–वीरो का खेल, वीर–क्रीडा। तणौ–को। ऊवरण–बचने। धनौ–धन्य है। सुरतेस वाळौ–सुरतसिह का।

११२. गीत राजा भरतसिंघ सीसोदिया साहपुरा रौ

अडर ओप आराण कुरखेत वडवा अगनि,
सक तडिल कांवडा जोड़ साथा।
हाथि जिका भाराथ नाराज पिसणां विहड,
हद घडी काळ उसताज हाथा ।।१।।

कळा धमणि सेस फूका जहर कोयला,
अरड अहरणि कमठ पीठि अवियाट।
धरणि कर दलावत जका असिमर धजर,
घण घड़ी जजर नोखै बजर घाट ।।२।।

---

११२ गीतसार–ऊपर लिखा हुआ गीत शाहपुरा राज्य के राजा भरतसिंह राणावत सीसोदिया की तलवार की प्रशसा मे रचित है। गीत लेखक ने इसमे लिखा है कि शत्रुओ के महार के लिए भारतसिंह के हाथ मे रहने वाली तलवार बिजली के टुकडो को जोड कर श्रेष्ठ कारीगर द्वारा बनाई हुई है। उसके निर्माण मे शेषनाग की फूत्कार रूपी धमनी, यंत्र की फूक तया विषाक्त कोयलो की ताप का व्यवहार किया गया है। और वह कच्छप की पीठ रूपी अहरण पर घडी गई है।

---

१ ओप–चमक, उपमा। आराण–युद्ध, लुहार की भट्टी। कुरखेत–कुरुक्षेत्र, रणस्थल। तडिल–विद्युत। कावडा–लोह शलाका। जोड साथा–एक साथ मिलाकर। हाथि–हाथ मे। जिका–जो, वह। भाराथ–भारतसिंह। नाराज–खड्ग। पिसणा–पिशुनो, दुश्मनो। विहड–नाश करने वाली। हद घडी–अपार कलाकृति से निर्मित हुई है। काळ उसताज–यमरूपी उस्ताद के।

२ कळ धमणि–लुहार के लोहा तप्त करने की धमनी। सेस फूका–शेष नाग की फूत्कार। जहर–विष। अरड–बलपूर्वक पीटकर। अहरणि–लोहे का चौकोर खण्ड जिस पर तप्त लोहे को रख कर लुहार औजार घड़ता है। कमठ–कच्छप की। अवियाट–तलवार, मनोहर, युद्ध। दलावत–दौलतसिंह तनय, राजा भारतसिंह। असिमर–युद्ध, तलवार। वजर–तलवार योद्धा। घण–घन, बड़ा हथौडा। घडी–बनाई। जजर–यमराज। नोखै–अनुपम। वजर–वज्र। घाट–आकृति मे।

पांण भड ताळ चढि ताळ पाणी प्रळै,
तेज किरनाळ खरसाण ताणी।
तसी किरमाळ सीसोद वाळा तई,
अत टकसाळ घड़ि ढाळ आणी ॥३॥

दान वप घरे उसताज भेजा दुजड,
चक्रधर तणा चक्रव छेदा चेत।
जटाधर सूळ अवखेक पाटी जपै,
पखै खळ आवळाभूळ रण खेत ॥४॥

---

३ पांण–हथियार की नोक अथवा धार को तीक्ष्ण करने की क्रिया, आभा। भड–योद्धा। ताळ–समय, रणस्थल। ताळ पाणी प्रळै–प्रलयकालीन अपार जलराशि, अथाह प्रलयजल की आभ दी हुई। किरनाळ–सूर्य। खरसाण–हथियारों के धार लगाने का सकलीगर का चक्राकार यन्त्र। ताणी–धार लगाई हुई, खींची हुई। तसी–वैसी। किरमाळ–तलवार। तई–लिए। अत–यमराज की। ढाळ–धातु को तरल बना कर किसी चौकटे मे डाल कर वस्तु बनवाने की क्रिया को 'ढाळणं' कहते हैं, ढाल। आणी–लगवाई, दी।

४ दुजड–तलवार। चक्रधर–विष्णु, सिकलीगर। चक्रव–चक्र। छेदा–छिद्र। जटाधर–रुद्र। सूळ–त्रिशूल। अवखेक–अभिषेक, चमक की हुई। आवळाभूल–पूर्ण रूप से सवारी हुई, सुश्रृंगारित।

११३. गीत राजा उम्मेदसिंघ सीसोदिया साहपुरा रौ

झाळा वूठतौ कराळी तोपा वाहतौ अकाळी झाट,
    तेण हूं कमाळी खुल्ले आरूढा ताडीस।
बका भूप ईसरेस काळी नाग सीस बागी,
    परा विहगेस वाळी तौवाळी पाडीस ॥१॥

जागी फूतकारा जाग पताका चालतौ जीहा,
    अरस्सा अढारटंकी भाळतौ उपेग।
महावज्र वेग पड़ी जैसा रा उरेग माथै,
    तौवाळी भाराथ वाळा वज्र भास तेग ॥२॥

---

११३ गीतसार—उपर्युक्त गीत शाहपुरा के शासक राजा उम्मेदसिंह के युद्ध पर रचित है। गीत नायक ने उदयपुर के भाग्नेय महाराजा माधवसिंह कछवाहा के पक्ष मे जयपुर नरेश सवाई ईश्वरीसिंह कछवाहा से राजमहल के रणक्षेत्र मे लोहा लिया था। गीत मे महाराजा ईश्वरीसिंह को कालियनाग और राजा उम्मेदसिंह को पक्षीराज गरुड के रूप मे उपमित कर वर्णन किया है।

---

१ झाळा वूठतो—अग्नि वरसाता हुआ। कराळी—विकराल। वाहतौ—प्रहार करता हुआ। अकाळी झाट—भयकर प्रहार। कमाळी—शिव। खुल्ले—खुले, उघडे। आरूढा—सवारी। ताडीस—नदिगण, नृत्य करने वाला। भूप ईसरेस—महाराजा ईश्वरीसिंह कछवाहा जयपुर। काळी नाग—काले सर्प। बागी—चली। परा—पख। विहगेस वाळी—पक्षीराज गरुड की। तौवाळी—तुम्हारी, तेरी। पाडीस—कृपाण, तलवार।

२ जागी—नगाडो की, युद्धकारी। फूतकारा—फूत्कारें। पताका—ध्वजाऐ। जीहा—जिह्वाऐं, जीमें। अरस्सा—अकाश। अढारटकी—निश्चित नाप का धनुप। भाळतौ—खोजता, ढूढता। उपेग—उपाय। वेग—सत्वरता मे। जैसा रा—महाराजा जयसिंह के पुत्र ईश्वरीसिंह रूपी। उरेग माथै—सर्प पर, सर्प के शीश पर। भाराथ वाळा—राजा भारत सिंह के पुत्र उम्मेदसिंह। वज्रभास—वज्र सदृश। तेग—तलवार।

मत्ता जूभ माळा धूम खेहा धू निहाव मिल्ली,
आकळी बदल्ली पीठ कौम भार ऊक।
जोरावार खूनी नाग आसल्ली विरुद्ध जाण,
चल्ली राजपत्री डाण बाणास अचूक ॥३॥

भामी तूक हाथा वाह आहसी उम्मेद भूप,
भड़ाकेस माथै घत्थी काळकीट भाह।
तराजा खगेस आगै घडवी ईसाण ताग,
माण तबी होय बैठो बबी कोट माह ॥४॥

—हुकमीचद खिडिया रौ कह्यौ

---

३. मत्ता जूभ—घनघोर युद्ध, उन्मत्त गजो की। माळा धूम—धूम्रमाला। खेहा—धूलिराशि। धू—मस्तक, ध्रुव। निहाव—प्रहार ध्वनि। आकळी—अकुलाकर। बदल्ली—फेरी, बदली। कौम—कूर्म, कच्छप। भार—वजन के कारण, दवाव से। ऊक—अग्नि। जोरावार—वलिष्ठ, प्रवल। खूनी—अपराधी, घातक, क्रुद्ध। नाग—सर्प। आसल्ली—असली, वास्तविक। जाण—मान कर, समझ कर। चल्ली—चली। राजपत्री—गरुड। बाणास—तलवार।

४ भामी—पिता, स्वामी। तूभ—तेरे। हाथा वाह—हाथो के प्रहार। आहसी—साहसी, अशधारी। भडाकेस(?) माथै—सिर, पर। घत्थी—आघात किया, चली। काळ कीट—यमराज की। भाह—तरह। तराजा—समान खगेस—गरुड। घडवी (?) । ईसाण—ईश्वरीसिंह। ताग—तक्षक। माणतबी—मानहीन, होकर, सम्मान और पृथ्वी विहीन होकर। वबी कोट—बाबी रूपी दुर्ग मे।

११४. गीत रावत मोहकर्मसिंघ देवळिया रौ त्रकुटबंध

अणभग विहूँ थट यौ जुटे, अग जोस धर कर ऊपटे,
सझि सको आवध आमो सांमहा बकारै वर वीर।
इण भात नख चढि ओपिया, लहरीक किर हद लोपिया,
कर साहि किरमर सूर समहर अडर अरिहर पछट सिर पर।
कहर कर कर सकर समसर वजर पडि वर गजर सिर गिर,
कससि कँमर फूटि बडफर पार कर उर धरर रतवर।
जोय जटधर दाद दे वर चड पत्र भर गूद पळचर,
धापडे रणधीर ॥१॥

---

११४. **गीतसार**—उल्लिखित गीत देवलिया प्रतापगढ के महारावत प्रतापसिंह के अनुज रावत मोहकर्मसिंह सीसोदिया पर सर्जित है। रावत मोहकर्मसिंह ने विद्रोही तथा दस्युदल के भील नेता को युद्ध मे पराजित कर मारा था। गीत मे उभय **पक्षीय** योद्धाओ के लडने, घात-प्रतिघात और अन्त मे गीतनायक की विजय का वर्णन किया गया है। गीतकार किशनगढ नरेश बहादुरसिंह राठौड है।

---

१. अणभग—वीर, अटूट। विहूँ थट—दोनो पक्षो वाले सैनिक। जुटे—भिडे। जोस—जोश। ऊपटे—उमडे। सको—सब कोई। आमो—सामहा—एक दूसरे के सामने। बकारे—ललकारते हैं। इण भात—इस तरह। नख चढि—सामने, या निशाने पर। ओपिया—शोभित हुए। लहरीक—समुद्र। किर—अथवा। हद—सीमा। लोपिया—उल्लघन किया। कर साहि—हाथ मे उठाकर। किरमर—तलवार। समहर—समर, युद्ध। अरिहर—शत्रुता रखने वाले, वैरी। पछट—प्रहार देकर, पछाट देकर। कहर करकर—उग्रता धारण कर। वजर—वज्र। गजर—निरन्तर प्रहार। सिर गिर—गिरि शिखर। कससि—खीचकर। कँमर—धनुष। बडफर—ढाल, शरीर के बगल भाग का अश विशेष। उर हृदय। धरर—गिरने की ध्वनि, धारा। रत धर—रुधिर की धारा। जोय—देखकर। जट धर—शिव। दाद—वाह वाही। चड—चण्डिका, रण देवी। पत्र—खप्पर, पात्र। गूद—मास। पळचर—गृद्ध, शृगाल आदि मासाहारी पक्षी एव पशु। धपाडे—अघाना, तृप्त किए।

नूर चढियो भड निळा गढ लाज बाधी जिण गळा,
हद विहद कर हथबाह हुविया नमै नर नखतैत।
पजर दुधारा परळकै रुहिराळ खाळ सु खरळकै,
मडि सबळ दमगळ दळण खळ दळ प्रवळ मिळ कळ अटळ अचपळ।
विहद छळबळ करत धकचळ वहळ बीजुळ धार बळबळ,
कटि कमळ खळ उछळ पडियळ तडछ तडळ थहे रिण थळ।
रुहिर रळतळ प्रघळ डळ पळ अचळ जूवळ अणी अलियळ,
जुडे करिवा जैत ॥२॥
तिणवार दळ दहुंवा तणा अति अडै भड अधियावणा,
अवगाहि असहा अनड ऊभा वहौ सूर सिध अवसाण।
तन प्रचण्ड रण अति ताखडा वहौ लोह बाहै बेझडा,
पडि झाट फड फड काट कोरड छुटै लवछड ताड तड़ तड।
बाण छुट वड सौक सड सड फूटि फिफरड कळिज फड फड,
अतड ऊधड लोथ लडथड ऊळझ आखड रुण्ड रडवड।
पख झड फड बीर बड वड अछर अडवड धरा धडहड,
इसौ मचि आराण ॥३॥

---

२ नूर—कान्ति। भड—योद्धाओ के। निळा—ललाट। लाज—लज्जा। जिण—जिन्होंने। गळा—कठो, गले। हद विहद—वेहद। हथवाह—प्रहार हुआ। हुविया—चोटें दी। नखतैत—नक्षत्रधारी। दुधारा—द्विधार वाले शस्त्र, तलवार, वर्छा। परळकै—चमकते हुए। रुहिराळ—लोहू। खाळ—नाले। खरळकै—तरल पदार्थ के वहने की ध्वनि। दमगळ—युद्ध। खळदळ—शत्रुदल। अचपळ—चचल, अडिग। धकचळ—युद्ध, उपद्रव। वहळ—वहती है। बीजुळ—तलवार। बळबळ—वारबार, सतत। कमळ—मस्तक। पडियळ—पृथ्वी पर गिर कर। तडछ—तडछ खाकर। तडल—सिर, टुकडे। रिणथळ—रणस्थल। रुहिर—रक्त। रळतळ—फैलकर। प्रघळ—वहुत, अत्यधिक। डळ पळ—मास के पिण्ड। अचळ—अचल। जूवळ—पैर। अलियळ—भ्रमर, रण दूलहा।

३ अडै—सामने डटे। अधियावणा—भयकर। अवगाहि—कुचल कर, विलोड़ कर। असहा—शत्रुओ को। अनड—स्वतत्र, अनम्र। ऊभा—खडे। सिध अवसाण—अवसान सिद्ध। ताखडा—वलवान। वाह—शस्त्र प्रहार। बेझडा—दोनो हाथो के वार। झाट—प्रहार, झटका। कोरड—वगल का भाग। लवछड—तोडादार वन्दूक। तड़ तड—गोली चलने की ध्वनि। वाण—तीर। सोक—वाणो के चलने पर होने वाली ध्वनि। फिफरड—फेंफडे। कळिज—कलेजा। अतड—आन्त्र। ऊधड—छिन्नविछिन्न होकर। लोथ—लाश। लडथड लडखडा कर। ऊळझ—परस्पर फँसकर।। आखड—पैर रपटने की क्रिया का भाव। रडवड—लुढकना। झडफड—फड़फडाहट। वीर—वावन वीर। अछर— अप्सरा। अडवड—भीडभाड। आराण युद्ध।

दईवाण खत्रवट दाखतौ अणगज मोहकम आखतौ,
समराथ निज हलकार साथी उरडियौ अणभग।

अवगाढ पोरस ऊफणै वहौ खीझ करतो जुध वणै,
अति रोस ऊपट रूक रौ झट थोघि सह थट दुयण दहवट।

कमळ केई कट समळ सट पट फवि झपट सिर रंगट मट फट,
वणे रिणवट घाट अवघट लडै लटचट केई कुलट नट।

पलट ऊलट पडत चटपट खहे खग झट विरद अति खट,
जीतवा कजि जग ॥४॥

—महाराजा वहादरसिंघ राठौड़ रौ कह्यौ

---

४ दईवांण—दीवान, रावत पदधारी मोहकमसिंह। खत्रवट—क्षत्रियत्व। दाखतो—कहता हुआ। अणगज—अजयी। आखतौ—कहता हुआ, अधीर। समराथ—समर्थ। हलकार—चला कर। उरड़ियो—वलपूर्वक आगे बंसकर। अणभंग—वहादुर। अवगाढ—दृढता। पोरस—पौरुष, पराक्रम। वहौ—वहुत। खीझ—नाराज, रुष्टता। रोस—रोष, क्रोध। ऊपट—उमडकर। रूक—तलवार। रौ झट—युद्ध, विवाद, चोट। थोघि—थाह लेकर। थट—समूह, सेना। दुयण—दुर्जन, वैरी। दहवट—नाश। कमळ—शीश। समळ—चिल्ह। रगट—रगका, लोहूलुहान। मट फट—मटका फटकर, घडा फूटकर। रिणवट—युद्धमार्ग। अवघट—दुर्गम, विकट। लटचट—गुत्थम गुत्थ, केश पकडकर लडने का भाव। कुलट नट—नट के कुलाच खाने की तरह, पैर को रखने का ढग। खहे—भिडकर, चोट देकर। खगझट—तलवार का झटका, खड्ग का प्रवल आघात। खट—प्राप्त कर। कजि—लिए। जग—युद्ध।

११५. गीत महाराणा भीमसिंघ रा गजां री लड़ाई रौ

खूटा पराथी अनन्ता देहा उराथी उखेडे खंभ,
कपोळा भाराथी मद्दा जूटा काळ कीट।
जज्रदूत तणा साथी तूटा गैण वज्र जेम,
राण वाळा हाथी छूटा जूटा आकारीट ।।१।।
रसम्मी उगन्ती वेळा सोभती सिन्दूरा रेख,
स्वेतदन्ती धूति चद गिरद्दा समान।
कुदरत्ती हुवा चक्खा रत्ती झाळ-पूळा क्रोध,
चीतौड पत्ती रा वागा हसत्ती चौगान ।।२।।
है दल्ला हमल्ला जूझ मल्ला बाज हाक,
पोगरा नवल्ला भल्ला मल्ला पाण।
आदसल्ला दाता झीक आडीया बगल्ला ऊठै,
अडील्ला जेण वल्ला गजा मचायौ आराण ।।३।।

---

११५ गीतसार—प्रोक्तगीत मेवाड के महाराना भीमसिंह सीसोदिया के गजो की पारस्परिक युद्ध—क्रीडा पर सर्जित है। मध्यकालीन शासक और जन—समाज मे गजों की लड़ाई का वडा प्रचलन रहा है। उल्लिखित गीत मे दो उन्मत्त गजो की भिडन्त, उनके आघात और अन्त मे उन्हे बाधने के लिए व्यवहृत उपकरणो आदि का चित्रण हुआ है।

---

१ खूटा—खुले, उन्मुक्त हुए। पराथी—उधर से, दूर से। देहा—शरीर वाले। उराथी—इधर से, पास से। उखेडे—उखाडकर। खभ—खभे, स्तम्भ। भाराथी—भारी, बडे। मद्दा—मदधारा वाले। जूटा—भिडे, लडने लगे। काळकीट—मृत्युकीट, सर्प से। जज्रदूत—यमराज के दूत। तणा—का। तूटा—टूटे। गैण—आकाश से। आकारीठ—भयकर रूप।

२ रसम्मी—रश्मि, सूर्य किरणें। उगन्ती वेळा—उदयकाल मे, प्रात.काल मे। स्वेतदती—सफेद दातो वाले। गिरद्दां—पहाडो। चक्खा—चक्षुओ। रत्ती—रक्तिम, लाल। झालपूळा—आगबबूला, पूलो मे लगी आग सदृश। वागा—लडने लगे। हसत्ती—हाथी। चौगान—मैदान, हाथियों और भैंसो आदि की लड़ाई के लिए नियत स्थान को चौगान कहते हैं।

३ है दल्ला—अश्व समूह। जूझ—लडते। बाज—ध्वनित। पोगरा—शुण्डदण्डों। मल्ला—बर्च्छे, भाले, अकुश। पाण—बल, हाथ। आदसल्ला— (?) । झीक—प्रहार। बगल्ला—बगलें, पार्श्वभाग। अडील्ला—हठीले, अकडने वाले। वल्ला—समय। मचायौ—छडा, प्रारभ किया। आराण—युद्ध, लडाई।

अछक्का रदन्ना तन्ना वदन्ना भचक्का ऊठै,
मचक्का लचक्कां जम्मी थरक्के समाम।
हको हक्का खाडेराव चक्रवा पसाव हाथी,
सारीसा घधक्का धक्का जूटा बे संग्राम ।।४।।

लागा डांण अद्रि गात अथागा लगरा लोह,
खेध पै विलागा वौम आगा जेम खात।
गाजता पुळिन्द्र जेम सामद्र सा पुत्र गोती,
भद्रजाती नागा जोगी वागा ईसी भात ।।५।।

चठठ्ठा वैभीत रट्टा दुकट्टा लोयणा चोळ,
ऊभै छटा घटा सक्र गात मे अनूप।
लगरा रठठ्ठा पै अनूठा कट्टा आडी-लीह,
राण वाळा रूठा फील जूटा इसै रूप ।।६।।

---

४. अछक्का–अतृप्त, प्रहार। रदन्ना–दातो। तन्नावदन्ना–शरीरो और मुख भागो। भचक्का–टक्कर खाने से उत्पन्न ध्वनि। मचक्का लचक्का–मचक खाकर लचकने से। जम्मी–भूमि। थरक्के–दोलित हुए, हिलने लगे। हको हक्का–हाक, चिग्घाड। सारीसा–समतुल्य। जूटा–भिडे। बे–दोनो।

५. डाण–मस्ती। अद्रिगात–गिरिगात्र, पर्वतकाय। अथागा–असीम। लगरा–शृंखलाएँ। खेध–विरोध, युद्ध। विलागा–जा लगे। वौम–व्योम, आकाश के। खात–उमग, इच्छा। गाजता–गर्जना करते। पुळिन्द्र–मेघ, वादल। सामद्र–समुद्र। गोती–गोत्र वाले। भद्रजाती–हाथी, श्रेष्ठ जाति के गज। नागा–नग्न दादूपथी साधु। जोगी–योगी। वागा–लडने लगे। इसी भात–इस तरह मे।

६. चठठ्ठा–ध्वनि विशेष रट्टां–टक्करें। दुकट्टा–दोनो कूटे, वडे दात। लोयणा–लोचनों, नेत्रो। चोळ–लाल। उभै–दोनो। छटा–विजली, शोभा। सक्र–इन्द्र। गात–गात्र। लगरां–शृंखलाएँ। रठठ्ठा–टक्करें, ध्वनि विशेष। आडी लीह–अन्तिम रेखा। रूठा–रुष्ट हुए। फील–हाथी।

घत्तां घत्ता घत्ता घत्ता मावता पूतारै धीठ,
तत्था वेखि मत्ता मत्ता भिडै निराताळ।
वेखता घुमत्ता बे वरुथा यूं अखाडे बागा,
छत्रधारी भीमवाळा उमता छछाळ ॥७॥

सिंदूरां कपोळां बीच हबोळा खळक्के श्रोण,
गिरदा गैतूळा मच्चै बगूळा चौगान।
दोवळा हिलोळां टोळां ओळा दौळां प्रथी देखै,
मचोळा गायदा वाळा धूजै आसमान ॥८॥

धूवांधोर चरक्खी स पंखी छूटा घरा धूम,
भयाणंखी देख चक्खी ओछारे सुभाळ।
कौमखी गाजिया फील चोळ चक्खी पवैं काळा,
आवळा घडूस मुखी बे पखी उजाळ ॥९॥

---

७ घत्ता घत्ता—हाथियो को जोश दिलाने के लिए प्रयुक्त शब्द। मावता—महावतो। पूतारैं—प्रोत्साहित करे। धीठ—धृष्ट, वीर। वेखि—देख कर। निराताळ—अनवरत, मथकर। वेखता—देखते हुए। वे—दोनो। वरूथा—सेना। अखाडे बागा—मैदान मे लड़ने लगे। उमता—मदमस्त। छछाळ—हाथी।

८ सिंदूरा—सिंदूरी रग से। कपोळा—कपोल भाग। खळक्के—वेग से वहना। श्रोण—रुधिर। गिरदा—पहाडो। गैतूळा—धूलि, आधी। वगूळा—वायुचक्र, ववडर। चौगान—मैदान मे। दोवळा—दोनो ओर। हिलोळा—हिलोरें। टोळा—समूह। ओळा-दौळा—चारो तरफ। प्रथी—लोकसमाज। मचोळा—भिडन्ते, टक्करें। गयदा वाळा—हाथियो के। धूजै—कम्पित होता है।

९ चरक्खी—हाथियो को वश मे करने का यत्र विशेष, चर्खी। भयाणखी—भयानक। चक्खी—चक्षु, दृष्टि, दर्शक। कौमखी—क्रोधी, योद्धा। चोळ चक्खी—लाल नेत्र वाले, सक्रुद्ध। पवैं काळा—काले पहाड जैसे। आंवळा—सज्जित, वाके, विकट। घडूस मुखी—मेघ घटाकृति, बादल समूह जैसे। वे पखी—दोनो पक्ष को, दोनो पक्ष के। उजाळ—उज्ज्वल, निष्कलक।

आदीता बे घडी हूंता वीता निसा जाम उभैं,
भैंभीता न छडै पाव मीता यूं भयांन ।
पीलवानां करै दूर लगाडे पलीता पूळा,
जीता खाडेराव बेहू बदीता जहान ।।१०।।

लाखा द्रव अवारै उतरैं लूण जडे़ लोहा,
अनता सोव्रन्ना तन्ना सिगारे सरूप ।
वापूकारै पूतारै आण ठाण बाधा बेहू,
राणवाळा हाथी बीज झाळा रूप ।।११।।

११६. गीत महाराणा भीमसिंघ मेवाड़ रा हाथियां रौ

मिळै सामठा हजारा लोग भागवो वसत्ती मना,
सुणै खून आयौ जञ्ञ हसत्ती समाथ ।
लोप हाको दीधो झाट ओयणा मसत्ती लागै,
साकळा हसत्ती तीना तोडी हेके साथ ।।१।।

---

११६. गीतसार—उपर्युक्त गीत मेवाड के महाराना भीमसिंह के मदान्ध तीन हाथियो की युद्ध-क्रीडा से सम्बन्धित है। इसमे हाथियो द्वारा अपनी लोह शृ खलाओं के बधन तोडने, आपस मे लडने और अन्त मे जलते पलीतें एवं चर्खी यत्र के माध्यम से उन्हें पकड कर अपने स्थानो पर बाधने का वर्णन किया गया है।

---

१०. आदीता—सूर्य, आदित्य। बे—दो। हू ता—से। जाम—याम। उभैं—दो। भैंभीता—भयभीत। पीलवाना—महावत लोग। लगाडे—जलाकर, सुलगाकर, लगाकर। पूळा—मूजा के डठलों को बाधकर पूले बनाए जाते हैं। बेहू—दोनो। बदीता—प्रशसित। जहान—ससार।

११. अवारै—न्यौछावर करते हैं। उतारै लूण—दृष्टि-दोष से रक्षा करने के लिए राई और नमक न्यौछावर किया जाता है। लोहा—लोह की जजीरें। सोव्रन्ना—स्वर्ण। तन्नां—शरीरो को। वापूकरे—बाप बाप कह कर शान्त करते हैं। पूतारे—प्रोत्साहित करे, पुचकार कर शान्त करते हैं। आण—लाकर। ठाण—स्थान, गजशाला में। वीजझाळा—विद्युत ज्वाला।

१ भागवो वसत्ती मना—वस्ती के लोगो को यत्र तत्र भागने के लिए मना किया। खून आयौ—क्रोध मे भरा हुआ। जञ्ञ—यमराज। हसत्ती—हाथी। लोप—उल्लघन कर। झाट—प्रहार। ओयणा—पैरो। साकळां—जजीरें। तीना तोडी—तीनो ने तोड डाली। हेके साथ—एक साथ ही।

जठै भाला चरख्खी एडिया आण घणा जेता,
ठाणा मे मानवा केता भझेडिया ठाळ ।
बरूथा अज्र सो ऊभौ बीफरे बेडिया बध,
छेडिया जज्र सौ बोम बज्र सो छछाळ ।।२।।

खुलातो लगरा पाव डुलातो झाटका खभ,
चलातो असुण्डा झाळ सलातो चढील ।
छातो सीस रजि भोम उडातो गैणाग छिबै,
फबै रीस रातो आग जोम मातो फील ।।३।।

पिडा जोय कोसा मेर साकळा रठीठे पांव,
कीधा कोप को सो जज्र चलातो बौम कंध ।
ऊभौ ठाण बीच डाकी वीरभद्र ओप को सो,
गोळो तोप को सो तूटै नरा भू गयध ।।४।।

---

२ भाला—वल्लम, अकुश । चरख्खी—हाथी को वश मे करने का एक उपकरण, चर्खी । ठाणा—हाथियों को बाधने के स्थान । भझेडिया—फफेडना, झकझोरना । ठाळ—चुन चुन कर । बरूथा—सेनाओ मे । अज्र सो—यमराज तुल्य । ऊभौ—खडा । बीफरे—क्रोध मे आगबबूला हुआ । बेडिया—बेडिया, जजीरें । जज्रसो—यमराज सदृश । बौम—आकाश । बज्र—वज्र, बिजली । छछाळ—हाथी ।

३. लंगरा—शृंखलाओ । डुलातो—दोलित—करता । झाटका—प्रहारो, झटको से । खभ—स्तभ । असुडा—शुण्डादण्ड । झाळ—क्रोधज्वाला । छातो—ढकता, उडाता । रजी—धूलि से । गैणाग—आकाश । छिबै—शोभापाता । रीस रातो—क्रोध मे लाल मुख किए । मातो—मस्त, प्रबल, मोटा ताजा । फील—हाथी ।

४ पिंडा जोय—देखने मे शरीर के । कोसा मेर—कोसो तक पहाड हो जैसे । साकळा—जजीरें । रठीठे—घसीटती है । कोप—क्रोध । जज्र—यमराज । चलातो—चलता । बोम कध—आकाश मे ऊचे कधे किये । ऊभौ—खडा हुआ । ठाण बीच—गाजशाला मे । डाकी—वीर, भीमकाय । ओप को सो—उपमा का—सा । गयध—हाथी ।

ग्रहै सेल डाचरो मरौडे करै इंद्र गाज,
धुवै क्रोध साचरो सरूप काळ धीठ।
चाचरो ववोळे रभा अपार मजीठ चोळ,
अेणवार तणा दीठा वणै आकारीठ ।।५।।

लागो मौत चाळे हेक आदमी ती वार लूठौ,
तिकौ काज बाधवा चलाय वूठौ तूप।
पूठौ व्याळ जेण माथै अगूठौ लागता पाव,
दूठौ थको जूठौ हाथी तूठौ काळ रूप ।।६।।

करेवौ पळक्को काच पच्छरी उडेवौ किना,
तच्छरी वादळा वीज ज्या धरेवो तयड़।
तरेवौ मच्छरी नीर देवौ जाणे हाथताळी,
वरेवौ अच्छरी सूर फरेवौ वयड ।।७।।

---

५ डाचरो—मुह को फाटते समय का खुला हुआ मुख, वटका भरना। धुवै—क्रोध से भड़कता। काळ धीठ—महाकाल, यमराज की दृष्टि। चाचरो मस्तक। ववोळे—रक्ताभ। मजीठ चोळ—लाल रग, मजिष्ठ का लाल रग। दीठा—देखने पर। आकारीठ—महाघोर संग्राम, जबरदस्त।

६ मौत चाळे—मृत्यु—क्रीडा। तीं वार—उस समय। लूठो—वडा। तिकौ—वह। चलाय वूठो तूप—तोप या बदूक दाग बैठा। पूठौ—पीछे की ओर। व्याळ—सर्प, अयाल की पीठ पर। दूठो क्रुद्ध, थको हुआ जूठौ—लडने लगा, भिड गया। तूठो काळ रूप—काल सदृश झपटा, यमराज—सा झपटा।

७ करेवौ पळक्को—पलका करना। काच—शीशे का। पच्छरी—पक्षी का। किना अथवा। तच्छरी— (?)। वीज—विद्युत। तयड— (?) तरेवो—तैरना। मच्छरी—मछली। नीर—जल मे। देवो—देना। हाथ की ताळी—हाथ कीताली। वरेवौ—वरण करना। अच्छरी—अप्सरा। वयड—हाथी का।

करे गाढ धायौ लोग सांकळा जडी रै काज,
अचाणकी मोर हूं अडी रै जोस आंण।
सजै आयौ जिका अग कोर हूं वडी रै सूड,
जोर हूं दडी रै दोटौ दीधो मल्ल जांण ॥८॥

लखै तेण वेळां धकै भैचक्के हजारा लोग,
अक्खै हरी हरी सारां मुक्खै कांप अंग।
टल्ला घू मचक्कै नाव नाक दात भोम टक्कै,
सक्कै रीस बाव धक्कै भुक्कै मेर शृंग ॥९॥

बाज हाक चौतरफ्फा मचायौ आराण बेस,
जेण वार अयासां खचायौ तेण जीव।
सेस करा हूंत उठै नाग रौ ऊंचायौ सीस,
देखे काळ खायौ लोग बचायौ दईव ॥१०॥

---

८ गाढ—हठता। धायौ—चले, दौडे। साकळा जडी रै काज—हाथी को जजीरों से बाँधने के लिए। अचाणकी—अचानक। मोर सू—पीठ से। अडी रै—स्पर्श करते ही। वडी रै सूड—दीर्घ शुण्डवाला। दडी रै—गेंद के। दोटौ—चोट, हमला। तेण वेळा—उस समय। धकै—सामने, टक्कर से। भैचक्के—भय चकित हुए।

९ अक्खै—बोलने लगे। सारा—सब के सब। काप—कम्पन। टल्ला—टक्कर। घू—मस्तक। नाक—नासिका। भोम टक्कै—भूमि पर जा टिके या छू गए। रीस—रोष। बाव—वायु के। मेर शृंग—गिरिशिखर।

१० बाज हाक—हल्ला होकर। मचायौ—किया। आराण—युद्ध। अयासा—आकाश मे। तेण—उसने। जीव—प्राण। सेस करा हूंत—सहस्त्रकरो या फनो का। ऊंचायौ—ऊपर उठा लिया। काळ खायौ—मृत्यु के ग्रास बने। दईव—विधाता ने, देवने।

पछै बाध लगरा हठाळा पव्बै रूप पाव,
करे जन्त्र चाळो भाळो करायो करोड़ ।
खूटो अ्रेण रीत काळो मद्दाळो ऊवेडे खभ,
अ्रेळानाथ भीम वाळो दताळो अरोड़ ।।११।।

११७. गीत दुतिय त्रकुटबंध महाराणा संभुसिंघ रौ

अ्रधपतिय पुर उदियाण रौ, है तिलक कुळ हिंदवाण रौ ।
छळ अ्रचळ दळ दईवाण रौ, छक पेख उप्रवट पूर ।।
गुण चिरत धारण गात रा, निज विडद जे रघुनाथ रा ।
अ्रत तेज अ्रप्रवळ अ्रमळ यळ, भण अ्रचळ दस द्रय भळळ भळ ।।
ढिग छत्र चामर उजळ ढळ, जुधि स निसचळ पळळ जळ ।
गिण पीठ प्रत पळ गिरळ गळ, रजरूप दळ वळ रमळ रळ ।।
चतुरग भळहळ मेर चळ सर सध कळमळ सळळ सळपळ ।
प्रळै करण परमाण ।।१।।

---

११७ गीतसार–उपर्युक्त गीत उदयपुर राज्य के शासक महाराणा शंभुसिंह सीसोदिया पर कहा हुआ है । इसमे महाराणा के सामन्तो, सैनिक अभियानो, गजाश्व सेना और युद्ध सज्जा को देख कर शत्रुओ के भयातुर होकर आधीनता स्वीकार करने आदि का वर्णन किया गया है ।

---

११ पछै–फिर । लगरा–लोहे की शृ खला से । हठाळा–हठीले, विवादी । पव्बै रूप–गिरि स्वरूप । जन्त्र चाळो–यमराज तुल्य खेल । खूटो–खुला । काळो मद्दाळो–मद आया काला हाथी । ऊवेडे–उखाडे । अ्रेळानाथ–पृथ्वीनाथ, स्वामी, महाराना भीमसिंह दताळो–हाथी ।

१ अ्रधपतिय–अधिपति, स्वामी । पुर उदियाण रौ–उदयपुर रियासत को । कुळ–समस्त, वश । छळ–युद्ध मे । अ्रचळ–अविचल । दईवाण रौ–दीवान को, महाराणा को । छक–मस्त, तृप्त । पेख–देखकर । उप्रवट–गर्व से सिर ऊपर रखने वाला, ऊर्ध्व । चिरत–चरित, चरित्र । गात रा–गाथाओ का, गात्र का । विडद–विरुद । अ्रत–अत्यधिक । अ्रप्रवळ–महान् पराक्रमी, प्रचण्डवली । अ्रमळ–निर्मल, पवित्र, उज्ज्वल । यळ–पृथ्वी । दस द्रय–बारह । भळळ–दैदिप्यमान, कान्तिमान । ढिग–पास मे । चामर–चवर । उजळ–उज्ज्वल । ढळ–ढुलते हैं, झलते हैं । जुधि–युद्ध मे । निसचळ–अडिग । पळळ–निरन्तर । पीठ–पृष्ठ । प्रतपळ–प्रतिक्षण । रज रूप–राजपूती का स्वरूप । दळ–सेना । वळ–शक्ति । चतुरग–चतुरगिणी । भळहळ–चमकता । मेर–सुमेरुगिरि । चळ–चलायमान । सर–वाण । सध–सधान करने पर । कळमळ–आकुळता का भाव, योद्धा । सळळ सळपळ–चलायमान, चलते हैं । प्रळै करण–प्रलय करने के लिए ।

घस मसक धडहडै, खुरताळ पमगां खडहडै।
ग्रध डाण खगेस मत्त रा, सजै झिलम समाज।।
जे सूर रथ हिय जोड रा, तन झपट गज घड तोड रा।
पखरंत मान हुं गिरर पर, सन्नाह क्रगळ झिलम सर।।
कस कमर किरमर कुत कर, भड समर सायुध तुगस भर।
बर बीर सूर हर अछर बर, थट धक द्रोयण थरर थर।।
फब फील पर झड फरर फर, घण त्रबक जागीय घरर घर हर।
अमर गज सज होय।।२।।

पख भद्रजातीय पाटका, झर सीस पोगर झाटका।
मद मसत खुल्लीय डाण मद रा, सिंघ सुत सारीख।।
कैंकाण चाळ कराळ रा, नित करण पुर हटनाळ रा।
कर लगर झाटण कणण कण, ठल टलण घटण ठणण ठण।।
झल झूल रथ घण झणण झण, हय हीस दिस दिस हणण हण।
भमकार भेरीय भणण भण, न्रत सवद तंत्री तणण तण।।
गजनाळ गोळण गणण गण, फणधरण खणखण फणण फण।
रण करण साद्रस राण।।३।।

---

२. घस मसक–घसक कर। धडहडै–धडकते हैं। खुरताळ–पदचाप। पमगा–घोडों की। खडहडै–खडखड ध्वनि। ग्रध–मृग। डाण–गति, दौड में। पाण–बल में। खगेस–गरुड, पक्षीराज। झिलम–सिर और गर्दन की रक्षा के लिए पहिना जाने वाला युद्धकालीन जालीदार कवच, लोहे की झूल। सूर रथ–रवि रथ। गज घड–गज सेना। तोड रा–बराबरी के, पराजित करने वाले। पखरंत–पाखर धारी, लोहे की जालीदार झूलधारी। सन्नाह–ज़िरह। क्रगळ–कवच। सर–सिर पर। किरमर–तलवार। कुत–बल्लम, भाला। सायुध–आयुधों सहित, समस्त हथियार। तुगस–तर्कश, भाथा। अछर–अप्सरा। बर–दूलहा। थट–समूह। धक–क्रोध, इच्छा। द्रोयण–वैरी। फील–हाथी। त्रबक–नगाडे। जागीय–नगारची, तबले वाद्य।

३ भद्रजातीय–श्रेष्ठ जाति के हाथी। पोगर–गजमस्तक। झाटका–झटके, प्रहार। मदमसत–मदमस्त। खुल्लीय–खुली, उघडी। डाण–चाल, कदम। सारीख–सदृश। कैंकाण चाल–अश्व जैसी तेज चाल वाले। लगर–लोहे की जजीर। झाटण–फटकारें, तोडने वाला। घटण–घंटे। झूल–झूलें। हय–घोडे। हीस–हिनहिनाहट। भेरीय–नफीरी वाद्य। न्रत–नृत्य। सवद–शब्द, ध्वनि। तत्री–तत्री वाद्य। गजनाळ–हाथियों पर रख कर या उनसे धकेल कर चलाई जाने वाली तोपें। गोळण–गोले। फणधर–शेषनाग। साद्रस–सदृश।

सारूप प्रिय व्रत साथ रा, पह विजय पजर पाथ रा।
भीमेण भारत बाथ रा, निडर सादळ नद ।।
अवनेस पायक ओळ रा, भड़ भिडे कुण भूगोळ रा।
राजेंद्र ध्रुव धड़ अचड़ रड़, झट गरट आरख झड़ड़ झड़ ।।
तड़ तुपक असणा तडड़ तड, छत ढके अड अड़ निजड़ छड।
हर अछर खडभड वीर हड वाधार अरडड वड़ड बड ।।
जे भुरज पट्टड विजड जड, गह सो मद वव गडड गड।
खड़ त्रिजड़ आगळ खाम ।।४।।

---

४ सारुप–महाराना स्वरूपसिंह के, सारूप–समान आकृति वाले। पह–राजा की। पाथ रा–पार्थ के। भीमेण–भीम पाडव। भारत–महाभारत मे। बाथ रा–भुजाओ के। सादळ नद–शार्दूलसिंह का पुत्र, महाराना स्वरूपसिंह। अवनेस–पृथ्वीपति। पायक–सेवक, पदाति। ओळ रा–समानता, पंक्ति के, पहिचान के। भिडे–सामने आकर लडे, युद्ध करे। कुण–कौन। ध्रुव–ध्रुव। अचड–श्रेष्ठ कार्य, बडा, महान। गरट–झुंड, सेना। आरख तुल्य, वल। तुपक–छोटी तोप। असणा–गोलो। तडड तड–तडतड ध्वनि। छत–पृथ्वी, क्षिति। ढके–आच्छादित हो जाती है। छड–भाले, वर्छे। हर–शिव। अछर–अप्सरा। खड भड–उलट पुलट होकर, हलचल उत्पन्न होकर। वीर हड–वीर वैतालो के हँसने से। वडड़ वड–टूटते समय होने वाली ध्वनि। भुरज–बुर्जे। पट्टड–पट्टे, नगर। विजड–तलवार। गडड गड–ध्वनि विशेष। त्रिजड–तलवार। खाम–रोक, अटकाव, बंद करना।

११८. गीत महाराणा सरूपसिंघ री आखेट रौ

बाबरैल डाळामथो रसा पाळा बेड वाळो,
कवल्ला अखाड वाळो रेड वाळो काथ।
हैजम्मा विरोळी केती जञ्रदूता हेडवाळो,
भद्रजात्या कपोळा भचेड वाळो भ्रात ।।१।।

भाळकी सपा-सी चक्खा भाळवा भजातो आयौ,
हाथळा मजातो आयौ हवद्दा हड्डूर।
ऊभै ओळा हूता रोस झाळका बझातौ आयौ,
गिरदा गजातौ आयौ नौहत्थो गड्डूर ।।२।।

---

११८ गीतसार—उपर्युक्त गीत उदयपुर के महाराणा स्वरूपसिंह की आखेट पर रचित है। इसमे वन्य सिंह की भयानक आकृति, शिकारियो द्वारा कन्दरा से उठाने पर क्रोध और आक्रमण आदि की भयानकता का चित्रण किया गया है। बिजली के समान ज्वलित नेत्र तथा प्रलयकालीन ज्वाला स्फुलिंग तुल्य उस सक्रुद्ध सिंह की महाराना ने बन्दूक द्वारा आखेट की।

---

१ वाबरैल—बर्बर, बब्बर। डाळामथो—डलिया सदृश मस्तक वाला, सिंह, वृक्ष की शाखा के तुल्य शीश वाला। वेड—बीहड। कवल्ला—वाराहो के। अखाड—अखाडे। हैजम्मा—सेनाएं। विरोळी—नष्ट की। केती—कितनी ही (सेनाओ को) नष्ट की। जञ्रदूता—यमदूतो। हेड वाळो—समूह, हाकने वाला। भद्रजात्या—श्रेष्ठ जाति के हाथियो। कपोळा—कपोलो, गज मस्तको। भचेड वाळो—टक्कर से तोड डालने वाला। भ्रात—बंधु।

२ सपा—सी—विद्युत—सी। चक्खा—नेत्र। भाळवा—शिकार की खबर लाने वालो, करोलो को। मजातौ—दूर भगवाता, सहारता। हाथळा—हाथल, सिंह का पञ्जा। हवद्दा—गज होदे। हड्डूर—(?) ऊभै ओळा—दोनो पक्तियो। हूता—से। झाळका—ज्वाला का, क्रोध का। गिरदा—पहाडो को। गजातौ—गुजित करता। गड्डूर—सिंहराज, वाराह।

अविका सवारी हदो घाकळै नगीस ओळे,
ब्रसम्भी माकळे सको नै हैळ वा रूप ।
सारोस चसम्मा होय धावीयो हाकळे सामौ,
साभै बोल देर फेर दाकळे सारूप ।।३।।

असै वेग प्रळैकाळ झाळ री फुलग वूठौ,
जाणै वीज खड होय विछूटो जीमूत ।
अकुट समीर हूंता सुमेर माथ रै तूटौ,
कना गोळो नाळ छूटो बारूद रै कूत ।।४।।

जका रोके विचाळा थी दूनाळ न्हाळ री जोड़ै,
आरव्वा री जांमी सचा ढाळ री अमात ।
दूजा भीम श्री हथळ कपाळ ठाळ री दीघी,
सकेक काळ री मूठ वह गई समाथ ।।५।।

री थायो जू हेम विमाणा झुखीयौ रभा,
आपा हूंकार थी धावै मूकीयौ सराट ।
साधा री सेत रगी फूकार फूकियौ रखे,
नटी रौ तेवड़ी फाळां चूकीयौ नराट ।।६।।

---

३. हदो—को । घाकळे—हाक देता हुआ, दकालता । नगीस—पहाड । ओळे—ओट मे । सारोस—सरोष । चसम्मा—नेत्र । घावीयो—चला, दौड़ कर आया । हाकळे—दकालने, ललकारने । सामौ—सामने । सारूप—महाराना स्वरूपसिंह ने ।

४ असै वेग— ऐसे वेग से । प्रळैकाळ—प्रलयकालीन । झाळ री—ज्वाला का । फुलग—स्फुलिंग । वूठौ—वरसा । जाणै—मानो । बीज—विद्युत का । विछूटो—छूटा । जीमूत—इन्द्र । अकुट—अकुटाचल से । समीर—पवन । सुमेर—सुमेरुगिरि । माथ रै—मस्तक के । तूटौ—टूटा । कना—किंवा, अथवा । नाळ—तोप, नाली । कूत—कुत ।

५ जका—जो, जिसे । विचाळां थी—बीच ही मे । आरवा री—तोपखाने की । जामी—जामगी, पलीता । सचा ढाळ री—सचे मे ढलित, यत्र द्वारा ढाली गई । दूजा भीम—द्वितीय भीमसिंह । कपाळ—कपाल, मस्तक । ठाळ—निशाना खोजकर, नीचे । मूठी—मूठ, मुष्टिका । वह गई—चली, टूट पड़ी । समाथ—समर्थ, मस्तक पर ।

६ झुखीयौ—झुके । रभा—अप्सराए । मूकियो—छूटा, मुक्त हुआ । सराट—ध्वनि विशेष । सेत रगी—श्वेत रग की । फूकार—फूत्कार । तेवडी—प्रारभ की । फाळा—छलागे ।

तसां सारदूळा पाड़ै आखेटा थाहरा तौलै,
औछाहा समोलै भोख जाहरां जसोल।
खत्री है जत्ती रा फतै आलमा जिहान खोले,
जैजैकार बोलै सिधापती रा ज सोल ।।७।।

११६. गीत रावत पहाड़सिंघ चूंडावत सलूम्बर रौ

आयो उरेडियौ जोम रौ पटेल माथै धारे आट,
रवत्तेस दूर हूं तेडियौ काथै राग।
साकळां हूं लाघणीक हेडियौ बीहतो सेर,
पूछ चाप सूतो फेर छेडियौ पैनाग ।।१।।

---

११६ गीतसार—उपर्युक्त गीत मेवाड के सलूम्बर सस्थान के अधिपति रावत पहाडसिंह चूडावत की युद्ध वीरता पर कथित है। रावत पहाडसिंह ने उज्जैन की समरस्थली मे महादाजी सिंधिया से भयानक युद्ध लड कर अमरत्व प्राप्त किया था। गीत मे लिखा है कि पहाडसिंह ने शृ खला से उन्मुक्त हुए सिंह अथवा सुप्त नाग को छेडने पर क्रोध धारण कर झपटने की भाति माधव राव सिंधिया पर क्रुद्ध होकर आक्रमण किया और शत्रुओ का सहार कर परम ज्योति मे अन्तर्लीन हो गया।

---

७ तसा—तैसे, ऐसा। सारदूळा—शार्दूलो को, शेरो को। पाडै—पछाडे। थाहरा—सिंह की कदरा। औछाहा—उत्सव, उत्साह। भोख—धन्य। जसोल—यश गायक, विरुद गायक।

१ उरेडियौ जोम रौ—जोम मे उमडता हुआ, जोम तथा उत्साह पूर्वक उमड कर। पटेल माथै—ग्वालियर वालो के पूर्वज महादाजी सिंधिया पर। धारे आंट—वैर धारण किए, शत्रुता ग्रहण किए। रत्तवेस—रावत पदधारी। तेडियौ—बुलवाया हुआ। काथै—सत्वरता से, आतुरता से। साकळा हूं—जजीरों से। लांघणीक भूखा। हेडियौ—हाका हुआ। बीहतो—भयातुर, भयभीत। चाप—दबाकर। सूतो—सोया हुआ। छेडियौ—छेडा हुआ। पैनाग—सर्प।

घाट ओढी पाहडेस धकेलतो नौढी घडा,
जड़ा खळा ऊखेळतो धरा छळा जाग ।
गजां बौह बीच तुरी मेळतो पराथी गाढौ,
लोह जाय मेळतो उराथी द्रोह लाग ।।२।।
विजाई कुवेर चढै वीद ज्यूं अनोप वानें
अगोप गै भाजे यसौ हाथळा उठाय ।
अताळा करतो होफ जगा रोसा वक्र ओप,
कोप तोप झाळा लोप आयौ महाकाय ।।३।।
धूत नळा उछाजतौ भाजतौ हाथिया धक्के,
धारूजळा गाजतौ अनेक घडा धींग ।
काळकीट उप्राजतौ ऊठियो लोयणा कोय,
नरवेधा दोयणा खभ गाजतौ न्रसीग ।।४।।
चूडैं सोबाद्रार किया खाग रा ऊछाज चोडै,
दहू पासें चसम्मा आग रा तेज दीस ।
हैमरा अजेज वेग बाग रा उठाण हूंत,
सको हुआ नाग रा मजेज हीण सीस ।।५।।

---

२ घाट ओढी—सेना का रक्षक, महान योद्धा । नौढी घडा—नवौढी सेना को । जाडा खळा—शत्रुओ का समूह । ऊखेळतो—उखाडता हुआ । धरा—पृथ्वी । छळा—युद्ध, लिए । गजा बौह—गजव्यूह, हाथी दल । मेळतो—मिलाता । पराथी—दूर से ही । उराथी—इधर से, इस ओर से, हृदय से ।

३ विजाई—द्वितीय । कुवेर—रावत कुवेरसिंह । वीद—दूलहा । अनोप वानें—अनुपम वेशभूषा । अगोप—चौडे मे, अगुप्त । गै—हाथी । यसौ—ऐसा । हाथळा—पञ्जा, हाथ । अताळा—भयकर, जोशीली । होफ—दहाड, गर्जना । तोप झाळा—तोप की ज्वाला । लोप—उल्लघन कर, पर्वाह न कर ।

४. धूत—उन्मत्त हुआ, वीर । नळा—सिंह के आगे के पैर का भाग, पैर की पिंडली का अग्रभाग । उछाजतो—उछालता । भाजतौ—मारता, नाश करता । धक्के—सामने, धक्का लगाकर । धारूजळा—खड्गाघातो से । गाजतो—सहार करता । घडा—सेना । धींग—जवरदस्त, विकटवीर । काळकीट—यमराज । उप्राजतो—(?) । लोयणा—नेत्रो । दोयणा—वैरियो । खभ—स्तभ । न्रसीग—भगवान् नृसिंह ।

५ चूडैं—रावत चूडा का वशधर रावत पहाडसिंह ने । सोवादार—सूवेदार, राज्यपाल । ऊछाज— ऊपर उठाए हुए । चोडै—खुले, प्रकट । दहू पासे—दोनो पार्श्व, दोनो ओर । चसम्मा—नेत्रो । दीस—दृष्टिगत । हैमरा—घोडे । अजेज—निर्विलम्व । वाग रा—लगाम के । उठाण—उठाने, ऊची करने । हूत—से । नाग रा—शेषनाग का, हाथी का । मजेज—गौरव । हीण—हीन ।

सन्नाहा न मावै सूर वडी वडी नाचै सूडै,
आग झडी द्रोह ऊंडै चसम्मा अटेल।
भिडी खडी मूछ भ्रूहा लोह रै हडूडै भात,
पडी अडी राड चूडै अचूडै पटेल ॥६॥

आसमेद ज्याग रा अमाप पाव देत आघो,
आछे खाप हूंत देत ओनागो अत्रीठ।
लडाक सीसोद नेम गनीमा अहेत लागो,
नेतबंध बागो खेत अखाडे नत्रीठ ॥७॥

रोक रोक तुरी भाण आराण विलोक रीझै,
विभ्रमोक त्रलोक त्रवोक घोक वाज।
वेध वेध सोक झोक तोक बाण सेल खाग,
सीसोद गनीम तणा थोक हूं चोक सकाज ॥८॥

---

६ सन्नाहा—कवचो, जिरह। न मावै—समाहित नही होता। वडी वडी—बोटी बोटी, अग प्रत्यग। सूडै— (?) । आग झडी—अग्नि वर्षा। द्रोह ऊडै—गहरे वैर से। चसम्मा—नेत्रो। अटेल—गर्व वाला, शत्रुता रखने वाला। भिडी—मिली, स्पर्श करने लगी। भ्रूहा—भृकुटि, भ्रूहे। हडूडै—(?)। भात—भांति। अडी—हठीली, वैर धारण कर। राड—युद्ध। अचूडै—विकराल, भयावह। पटेल—महादाजी पटेल।

७ आसमेद ज्याग रा—अश्वमेध यज्ञ के। अमाप—अमित। पाव—कदम। देत आघो—आगे देता, अग्र देता, सामने दूर तक देता। आछे—अच्छे, हाथ। खाप हूत—तलवार से। ओनागो—नग्न, म्यान बाहर की हुई। अत्रीठ—अधैर्यता। लडाक—लडाकू, वीर। गनीमा—शत्रुओ। अहेत लागो—वैर लग कर, अहित मे लगा। नेत बध—वीरता सूचक चिह्न धारी। बागो—लडने लगा। खेत अखाडे—रणस्थल रूपी अखाडे मे। नत्रीठ—नि शक, प्रहार झडी लगने लगा।

८ तुरी—घोडा। भाण—सूर्य। आराण—रणभूमि। विलोक—देख कर। रीझै—खुश होता है। विभ्रमोक—चकित (?) त्रवोक—नगाडे। घोक वाज—घोर निनाद होकर। सोक—बाणो के चलने पर उत्पन्न ध्वनि। झोक—धन्य वाह वाह। तोक—उठाकर। त्राण सेल खाग—तीर भाला और तलवार। गनीम तणा—शत्रुओ का। थोक हू—समूह से, सेना के साथ।

वारगा उमंगा रगा विमाणगा सोक वाज,
रारगा अभगा भडा दमगा रोसार।
पनगा विहगा ढगा नारगा अभीच पडा,
सारगा खतगा अगा मातगा दूसार ।।९।।

खत्री कध जेम केही रोसार चसम्मा खोलै,
सार तोलं केहो सारसा चव समध ।
वार पड़ पूठ केही माथा मार मार बोलै,
काया तेग धार ऊठ डोलै कै कमध ।।१०।।

सूर गैण वाथ घाले घणा तेग छूटा संध,
रोस जूटा घणा सूर भाले गाढ़ेराव ।
घणा सेल फूटा सोस करै खाग बाढा घाव,
घणा खाग टूटा करै जम्मडाढ़ा घाव ।।११।।

---

९ वारगा–अप्सराएँ । उमगा–उमग, उत्कण्ठित । विमाणगा–विमानो मे । रारगा–नेत्र, आखें । अभगा भडा–निर्भीक वीरो । दमगा रोसार–क्रोधातिरेक से नेत्रो मे अग्निकण वरसते हैं । पनगा–सर्पों पर, हथियारो पर । विहगा–गरुड पक्षी, अनिल पक्षी । ढगा–भाति । नारगा–तीर, रक्त तलवार । अभीच–कायर । सारगा–वाण । खतगा–घायलो, क्षतो । मातगा–हाथियो, मदमस्तो । दूसार–आर पार छेद कर, द्विधारा वर्छा, तलवार ।

१० खत्री–क्षत्रिय । कध–विना सिर का धड, कधे, कद । रोसार–कोपान्वित । चसम्मा खोलै–नेत्र खोलते हैं । सार तोलै–तलवार अथवा शस्त्रो को प्रहार हेतु ऊपर उठाते हैं । केही–कतिपय । सारसा–समतुल्यो को । चवै–कहते हैं । समध–आपसी रिश्ता प्रकट कर । पूठ–पृष्ठ । माथा–मस्तक । काया–शरीर । तेग धार–खड्ग धारण किये । डोलै–लडखडाते कदमो से फिरते हैं । कै–अनेक, कई । कमध–धड ।

११ सूर–वीर । गैण–आसमान । वाथ घाले–भुजाओ मे लपेटे हुए, भुजपाश मे पकडे । घणा–घने । छूटा सध–सधिस्थलो से विछिन्न हुए । रोस जूटा–रोष मे भिडते हैं । भालें–वलम, सेल । गाढे राव–दृढ वीर । सेल–भाला । खाग वाढा–तलवारो के प्रहारो के, तलवारो की धाराओ के । खाग टूटा–प्रहारो से टूटित तलवारो के वाद । जम्मडाढा–कटारो के ।

नाराजा कै झडे सूर अच्छरा लगावै नेह,
छेह पेलै केही सूर आभडे नाछोत ।
देह त्यागै केही सूर जीरणा वसत्रा दोय,
सादेहा बिमाणा बैसे जावै कै साजोत ।।१२।।

दुझाल रा संध ज्यूं रहे न कोई खोज ओटी,
करै कै लाल रा जकै छोटी बूथ कूंत ।
धाराळा झाल रा नागा अगोठी काळ रा धूबै,
हाल रा चौसटी दै अनोठी बाण हूत ।।१३।।

महाराग छडेव छडेव च्हैन्न देन गूड,
बजडेव डम्मरु चडेव हत्थी बीस ।
सडेव छुडेव मेख पाथ बाण पाय साच,
उमडेव मडेव तंडेव नाच ईस ।।१४।।

---

१२ नाराजा–तलवारो । झड–कटे हुओं से । अच्छरा–अप्सराएँ । नेह–स्नेह, प्रेम । छेह–अन्त, आभडे ना छोत–बिना लिपटे हुए, स्पर्श नही करते हुए । जीरणा–जीर्ण, पुराने । वसत्रा दाय–वस्त्रो की तरह । सादेहा–सशरीर । बैसे–बैठ कर । जावै–जाते हैं । कै–कई । सजोत–सज्योति, ब्रह्म मे लीन होने ।

१३ दुझाल रा सध ज्यू–प्रलयकाल की सी उछालें लेते समुद्र की भांति । खीज–क्रोध, नाराजी । ओटी–बाधक बन कर, रक्षक । जकै–जो, वे । बूथ–मास के टुकडे । कूंत–भाला । धाराळा–तलवारें । नागा–हाथियो के । अगोठी–शिकार मे जानवर के निकलने के पूर्व ही उसके मार्ग को रोकर बैठने को 'अगोठी बैठना' कहा जाता है । धूबै–सहार करे, बरसते हैं । हाल रा–प्यार जताने के गीत । चौसटी–चौंसठ चण्डिकाएँ । अनोठी बाणा–अनूठी वाणी । हूत–से । छडेड–चण्डिका, सहायतार्थ पुकार की ।

१४ छडेव–चढने वाला,शिव । गूड–घूमर, चक्रनृत्य । वजडेव–वजाने वाला । डमरु–डमरु वाद्य । चडेव–चण्डिका, रणदेवी । हत्थी बीस–बीस हाथो वाली, बीस हाथो से । सडेव–नदि, वैल । छुडेव–चढने वाला, शिव । पेख–देख कर । पाथ–पार्थ, अर्जुन । उमडेव–उमडकर । तडेव नाच–ताण्डव नृत्य । ईस–शिव ।

ईख लका खेत्रा त्रेता जुगेता संग्राम असौ,
उरधरेता केता घू त्रनेता उनन्द्र ।
रुद्र छाक लेता वीर देता राह जेता फिरै,
मळै हास हेता वेता अनेता मुनन्द्र ।।१५।।

पथ आसमाण हूत झपट्टी अपट्टी परा,
वरा कंठ लपट्टी अपट्टी जेण वार ।
सामट्टी झडपफे गीध जट्टी तट्टी गणा सूधौ,
धूरजट्टी चूणै घू हजारा हाथ धार ।।१६।।

भद्रजाती चुणै सीस मोती श्रोण पंका भिळै,
खात मोती मराळी नसंका छुगै खूद ।
अंका कीध लका राम मिळै बका खेत अेम,
ग्रीध कंका असंका नसका लियै गूद ।।१७।।

---

१५ ईख—देख कर । लंका खेत्रा—लकापुरी के रणक्षेत्र मे । त्रेता—त्रेता । जुगेता—युग । असौ—ऐसा । उरधरेता—उर्ध्ववेता । केता—कितने ही । घू—मस्तक । त्रनेता—त्रिलोचन, शिव । उनन्द्र—उनिद्र, ऊंघता हुआ, जागृत होकर । रुद्र छाक—रुधिर की छाक, रक्त पान । वीर—वीर, गण । फिरै—घूमते हैं । मिळै—मिलते हैं । हास—हँसी । हेता—ऋषि । वेता—ज्ञानी, तत्व वेता ऋषि । अनेता—अनेक । मुनन्द्र—मुनि, ऋषि ।

१६ आसमाण—आकाश । हूत—से । झपट्टी—तीव्रता से पकडने को दौडी । अपट्टी—उमड कर, बहुत अधिक । परा—परी, अप्सराएँ । वरा कठ लपट्टी—अपने वाछनीय दूलहो के कण्ठो के लग झूमने लगी । अपट्टी—अपार । जेण वार—उस समय । सामट्टी—अत्यधिक । झडपफे—पखो की झपटें देते । गीध—गृद्ध पक्षी । जट्टी तट्टी—जहाँ तहा । गणा सूधौ—गणो सहित । धूरजट्टी—शिव । चूणै—चुनता है । घू—मस्तक ।

१७ भद्रजाती—उत्तम जाति के हाथी । श्रोण पकां—रक्त और कीचड़ मे । मिळै—मिले हुए, शामिल हुए । खात—चुगते हैं, खाते हैं । मराळी—हस । नसका—नि शक हो । खूद—कुरेच कर । मिळै—मिलकर, भिडकर । खेत—रणक्षेत्र मे । ग्रीध—गृद्ध । कका—कक पक्षी । गूद—मस्तक की मज्जा, चर्वी ।

जूझवा फुहार टक्र उडै धके आय जेता,
अग चक्र वार हुवा वक्र कै अथाण ।
कैलपुरे अठी उठी चक्र वेग फेर कीधौ,
मार टक्र मारहठी सेन रौ मथाण ॥१८॥

चावदत दीह अगा समा जूझ लाग चाळ,
नराताळ सामध्रमी तणै साचो नेम।
क्रोधवाळ रूप गनीमाण रौ विधूस कीधौ,
जोधवाळे वीरभद्र दख्ख ज्याग जेम ॥१९॥

सीसोद उमडे सुरालोक लीधो सीस साटे,
हत्थी बीस मडै ओक घाटां ओण हेत।
रूठौ सारदूळ खात अखाड़े उपाटा रोस,
खळा दात खाटा करे सूतो वीर खेत ॥२०॥

---

१८ जूझवा–युद्धरत योद्धाओ। टक्र–टक्कर से। चक्र वार–प्रहार से चक्र हुए अथवा कटे हुए, चक्राकृति। वक्र–तिरछे। कैलपुरे–रावत पहाडसिह ने। अठी उठी–इधर उधर। मथाण–मथन, विलोडन।

१९ समा–समय। जूझ–युद्ध। लाग चाळे–क्रीडारत होकर। नराताळे–अत्यधिक, निधडक होकर। गनीमाण–शत्रुओ का। विधूस–विध्वस। जोधवाळे–रावत जोधसिह के पुत्र पहाडसिह ने। दख्य ज्याग–दक्ष के यज्ञ।

२० सीसोद–सीसोदिया वशीय गीत नायक पहाडसिह। उमडे–उमड कर। सुरा लोक–स्वर्ग लोक। लीधो–लिया, प्राप्त किया। सीस साटे–सिर के बदले मे। हत्थी वीस–वीस भुजाओ वाली, रण देवी। मडै ओक–अञ्जली कर। ओण हेत–रक्तपान के लिए। रूठौ–रुष्ट हुआ, कुपित हुआ। सारदूळ–शार्दूल, सिंह। उपाटा रोस–रोष मे उमड कर। खळा दात खाटा करे–शत्रुओ के दात खट्टे कर। सूतो–सो गया। खेत–रणक्षेत्र मे।

वीत त्यागी जेम सुर नीराण सीसोद वढे,
जुधा जुधा खळां तणा जिराण एकूंट ।
आभ क्रीत लागे चढै वीरांण धकायो आद,
वीराण चखावे स्वाद हालियो वैकूंट ।।२१।।

हुवौ जोखत काकळे ओत ओत जोत हूतो,
जोत हूता रही नका भतका जुहार ।
सरै छाहा मही पूरी सातमी ततका सार,
अत समै लही पूरी अतका उदार ।।२२।।

धणी खरी सरीत निवाही वाज फूलधारा,
गोळ कूंडे रीत चूडे अरी करी गाह ।
परी वरी हस वैठ विमाणा सैंजोत पूगौ,
मरी मरी टूक होय उडो प्रथी माह ।।२३।।

—वद्रीदास खिडिया रौ कह्यौ

---

२१ वीत—वित्त, द्रव्य । नीराण—समुद्र । जिराण—हजम करने, जीर्ण । आभ—आकाश तक । क्रीत—कीर्ति । वीरांण—वीर । चखावे—चखाकर । हालियो—चला, गया ।

२२. जोखंत—मारा गया, समाप्त हुआ । काकळे—युद्ध मे । जोत हूतो—ज्योति से । मतका—भ्रान्ति । सरै—शरो, वाणो मस्तको की । छाहा—छाया । मही पूरी—पृथ्वी को आपूर्ण की । अन्त समै—अन्तिम काल मे, मृत्यु समय मे । लही—प्राप्त की । पूरी—पूर्ण, आपूरित कर । अतका—अन्तक, यमराज ।

२३ धणी—स्वामी की । खरी—सच्ची । सरीत—शर्त, परीक्षा । निवाही—निर्वाह की । वाज—लडकर । फूलवारा—तलवार धाराएँ । गोळकूडे—चक्रव्यूह की । रीत—रीति । चूडे—चूडावत शाखावाले पहाडसिह ने । अरी—वैरियो । गाह—मथन, नाशकर, कुचलकर । परी वरी—अप्सरा का वरण कर । हस—जीव, प्राण । सैंजोत—साज्योति । पूगौ—पहुचा । टूक होय—खण्ड खण्ड होकर । प्रथी मांह—पृथ्वी मे ।

१२०. गीत रावत हमीरसिंघ चूंडावत भदेसर रौ

काढी दळासी मगळा प्रळै समदा ऊजळी किना,
खळा धू अरूठी जज्र गैथडा खाणास ।
सरगा बिछूटी तूटी माध पव्वै काळा सीस,
वीर चूडावाळी ज्वाला बीजळा बाणास ।।१।।

जटी ऊघडी कै चखा अराबा साबात जागे,
सधा ऊबडीक पव्वै भूमंडा सामाज ।
मामला घडीक बूठी सतारा गिरंद माथै,
निहगा तड़ीक जेम तुहाळी नाराज ।।२।।

---

१२० गीतसार—ऊपर प्रस्तुत गीत मेवाड के भदेसर ठिकाने के रावत हम्मीरसिंह चूडावत योद्धा पर प्रणीत है। इसमे गीत नायक की तलवार को प्रलयाग्नि अथवा मेघमाला मे चमकती विद्युत के तुल्य उपमित कर युद्ध का वर्णन् किया है। कवि का कथन है कि गीत नायक ने शत्रुओ का सहार करने के लिए प्रलयकालीन ज्वाला अथवा मेघमाला की विजली जैसी अमोघ प्रभावकारी तलवार म्यान से वाहर की और पर्वतकाय श्यामल गज सेनाओ पर आघात करने लगा।

---

१ काढी दळा—म्यान से निकाली। सी—जैसी। मगळा—अग्नि ज्वाला। प्रळै—प्रलय। समदा—समुद्रो। ऊजळी—उज्ज्वल। किना—किंवा, अथवा। खळा धू—दुश्मनो के सिर। अरूठी—क्रुद्ध (?)। जज्र—वज्र यमराज। गै थडा—गज समूह। खाणास—सहारक, खानेवाली। सरगा—वादलो मे से, आकाश से। बिछूटी—विछुडी, टूटकर पडी हुई। तूटी—टूटी। माध—मार्ग महादा। पव्वै काळा सीस—श्यामल पहाडो पर, पर्वताकृति श्यामल गज सेना पर। बीजळा बाणास—विद्युत रूपा तलवार।

२ जटी—शिव। ऊघडी—खुले, उदघटित हुए। चखा—नेत्र। अराबा—तोपो। सावात—विशेष किस्म की वारूद, सुरगो मे भरी हुई बारूद। जगै—जलकर, धधककर। सधा—समुद्र, सिंधिया, मरहठे। ऊवडीक—ऊपर उठी। भूमडा—पृथ्वी के शृ गार, हाथियो के। सामाज—समूह। मामला घडीक—युद्ध घडी। वूठी—चली, वरसी। सतारा गिरद माथै—पर्वत रूपी सतारा के स्वामी पर। निहगा तडीक—आकाश की विद्युत। जेम—ज्यो। तुहाळी—तुम्हारी, तेरी। नाराज—तलवार।

सडफ्फै गैंजूह लोहा कै धरा तडफ्फै सूर,
बडक्कै खेचरा रभा झडक्कै वेवाण ।
महाबेग बहिया गनीम अद्र तणै माथै,
क्रोधगी हमीर वाळी दामणी केवाण ॥३॥
नीर बजै आसेर चढायौ सालमेस नंद,
सोभा चहुफेर चाह्यौ प्रवाडे सनीम ।
ओझलाणो थारी समसेर छटा तणी आगै,
मेर फेर फूल पत्रा न आवै गनीम ॥४॥
—तेजराम आसिया रौ कह्यौ

१२१. गीत रावत प्रतापसिंघ चूंडावत आमेट रौ

आछे नेक आटे गनीमा हू मेळिया निराट ऊखा,
त्राछी खाई रूका केक झेलिया त्रिताप ।
उली अणी पाछी देखी काथै खाग ऊखेलिया,
पैली अणी माथै काछी भेळिया प्रताप ॥१॥

---

१२१ गीतसार—उपराकित गीत मेवाड के आमेट ठिकाने के रावत प्रतापसिंह चूडावत के मरहठो से युद्ध लडने के प्रसग का है। गीत मे लिखा है कि प्रतापसिंह ने स्वपक्षीय योद्धाओ के भयाक्रान्त होकर युद्ध से पीछे हटते समय हाथ मे खड्ग पकडकर विपक्षी सेना पर घोडे से भयानक आक्रमण कर शस्त्र सघात प्रारम्भ किया ।

---

३ सडफ्फै—सहार करता है। गैंजूह—गज समूह। लोहा—अस्त्र शस्त्रो से। कै—कितने ही। तडफ्फै—तडफते हैं। वडक्कै—कडकती आवाज मे वोलने लगी। खेचरा—पिशाच योगिनिया। रभा—अप्सरा। भडक्कै—छीन छीन कर, झपट झपट कर। वेवाण—विमानो। वहिया—चली, वार किया। गनीम अद्र तणै माथै—गिरि सम शत्रु के सिर पर। क्रोधगी—क्रोधी। दामणी केवाण—विजली रूपी तलवार।

४ नीर वजै—विजय नीर, यश विजय। आसेर—दुर्ग। चहुफेर—चारो ओर। प्रवाडे—वश विरुद, कीर्ति कथा। ओझ लाणो—छिप गया, जल गया, अदृश्य हो गया, मुरझा गया। थारी—तेरी। समसेर छटा—विद्युत रूपी शमशेर। मेर—गिरि, पहाड। फेर—फिर। फूल पत्रा—पुष्प पत्र। न आवै—आने का साहस नही करता, नही आता। गनीम—वैरी।

१ आछे नेक—अच्छे भले। आटे—वैर, वदले मे। गनीमा हू—शत्रुओ से। मेळिया—मिलाया, भिडाया। निराट—विलकुल, निपट। ऊखा—उपाकाल मे। त्राछी खाई—भयभीत हुए। रूका—तलवारो से। केक—कइयो ने। झेलिया—सहन किये। उली अणी—इस ओर की सेना, स्वपक्षीय फौज। पाछी—पीछे हटती। काथै—जल्दी से। खाग ऊखेलिया— खड्ग प्रहारो से पैर उखडते हुए। पैली अणी—उस ओर की सेना, विपक्षी सेना। काछी—घोडा। भेळिया—आक्रमण किया।

घूपटै गनीमा धरा गढ़ा व्है नतारा ढोल,
काना सुणै फता रौ खता रा बोल केम।
सतारा छात रा दळा ऊपरा अघायौ सिंघ,
जोध आयौ उलकापात रा तारा जेम ॥२॥

मूछारा बळाका दीधां सीसोद गनीमा माथै,
घूर हास तमासै मुनिन्द्र रीधा धीर।
म्यान हूं उखेलताई कीधा खाग तेढ़ीमणे,
वेढ़ीमणे मेळतांई कीधा महावीर ॥३॥

मेदपाट तणी कूक सांभळे बिजाई मान,
बान आयौ अभूख उपाटा जेण बार।
मरेठा दनेउ भूक करतौ जनेबां मूढै,
एक घाव रोई टेक जनेऊ उतार ॥४॥

---

२ घूपटै—लूटता है, उन्मुक्तहस्त, अधिकार करता है। गनीमा—शत्रुओ की। नतारा—नित्य, प्रति दिन का। फता रौ—फतहसिंह तनय, प्रतापसिंह। खता रा—अपमान जनक, दोष पूर्ण, दूषित। केम—कैसे। सतारा छात रा—पूना सतारा के राजा का, मरहठो का। दळा—सेनाओ। अघायो सिंघ—अतृप्त शेर, भूखा सिंह जो अत्यधिक क्रुद्ध होता है। जोध—योद्धा। उलकापातरा—उल्कापात का।

३ मूछारा बळा का दीधा—मूछों के बल दिए हुए। गनीमां माथै—वैरियो पर। घूर—रुद्र। हास—हास्य, हँसी। रीधा—प्रसन्न हुए। उखेलताई—बाहर निकालते ही। तेढीमणे—विकटवीर। वेढीमणे—युद्ध के लिए। मेळताई—मिलाते ही, भिडन्त करते ही।

४ मेदपाट तणी—मेवाड की। कूक साभळे—पुकार सुनकर। बिजाई मान—द्वितीय मानसिंह ने, प्रतापसिंह ने। अभूख—क्षुधित, तृप्त। उपाटा—(?)। मरेठा—मरहठो को। भूक करतौ—उपहत करता, टुकडे करता। जनेवा मूढै—तलवारो की धाराओ से। जनेऊ उतार—यज्ञोपवीत पहनते हैं उस विभाग को विदीर्ण करता।

नाराजां आराण झळी विजळी सिळाव नेजां,
दळू फौज ऊलळी दारणां मिळी दीठ ।
लडाका रीसोद आडी घोड़े धाडि धाख लागी,
राडि चोड़ै सीसोद गनीमां वागी रीठ ।।५।।

सूरा पूर झाटा माची अकूटां उठावै सभू,
साची तान लावै रभा रचावै सगीत ।
रिखीराज वावै वीण प्रवीण हरक्खा रतौ,
गावै सुखा चौसठि अगोठी रुखा गीत ।।६।।

काळ वाळी चरक्खी असाध जूठौ नाग किना,
रूठौ जिसौ जूठौ खत्री घखै उरां रीस ।
एक वूठौ महारत्थी वाईक राळतौ आगि,
सायका अरोड़ै टूटौ आध रती सीस ।।७।।

---

५ नाराजा–तलवारें ।आराण–रण । सिळाव–चमक । नेजा–भालो । ऊलळी–उमडी, युद्धरत हुई । दारणा–वीरो की, प्रचण्डो । मिळी दीठ–दृष्टि मिली, चौनजर हुए । लडाका–लडने वाले, वीर । आडी–सामने, ओट स्वरूप । धाख–इच्छा, क्रोध । राडि–युद्ध । रीठ–प्रहार ।

६ पूर झाटा–पूर्ण वल से प्रहार करना । माची–हुई,लगाने लगे । अकूटा–मस्तको को, भृकुटि । तान–नृत्य, गानक्रिया । रभा–अप्सरा । रिखीराज–नारद । वावै वीण–वीणा वजाते हुए । हरख्खा रतौ–हर्ष मे अनुरक्त, प्रसन्नता से । चौसठि–चौसठ चण्डिकाएँ । रुखा–भाति ।

७ काळवाळी चरक्खी–कालचक्र, मृत्यु की चर्खी जिसमे जीव पिस कर नष्ट होते हैं । जूठौ–भिडा । नाग–हाथी, सर्प । किना–अथवा । रूठौ–रुष्ट हुआ । खत्री घखै–क्षत्रियत्व की प्रवलेच्छावाला । उरा रीस–हृदय मे रोष भरकर, क्रोधधारण कर । वूठौ-वरसा । वाईक–वचनो से । राळतौ आगि–अग्नि गिराता । सायका–तीरो की ।

सडफ्फै बीजूजळा हास मोहा बडक्कै सूर,
सीसहार झडफ्फै पडफ्फै नथी संभ ।
ग्रीधणी हडफ्फै पळा सामळी हडफ्फै गूद,
रुण्ड केई ग्रड़फ्फै पडफ्फै बरा रंभ ।।८।।

कै दिया नदीठ बैठ नागडै जोगिन्द्र केही,
सही लका ग्राघा घडै दीठ बंका सूर ।
दवा सू पागड़ै लग्गौ नूपरा चलावे दहू,
गहट्टी बरा ऊपरा झागडै परी जे हूर ।।९।।

---

८ सडफ्फै—अविराम अतिवेग से चोटें मार रहें हैं । बीजूजळा—तलवारो की । बडक्कै—छिन्न मस्तक, बडबडाहट की आवाजें करते हुए । सीसहार—मुण्डमाला के लिए । झडफ्फे-झपट रहा है । पडफ्फै—किन्तु उनको उठाने मे समर्थ नही । नथी—नही । सभ—शिव । ग्रीघणी—गृद्ध पक्षी । हडफ्फे—हडबडाते हैं । पळा—मास के लिए । सामळी—चील्हे । हडफ्फे—छीना झपटी मचाती हैं । गूद—मज्जा । अडफ्फे—स्पर्द्धा करते हैं । वरा—वरो, दूलहो । रभ—अप्सराएँ ।

९. नदीठ—जिसने दृष्टिपात न किया हो । नागड़ै—नग्न, दिगम्बर, शिव । केही—कई । आघा—अगाडी । घडै—बराबरी के । वका—बाकुरे । दवा सूं—स्वीकृति से (?) । पागडै लग्गौ—रकाव पकडे हुए, साथ साथ चलते हुए । नूपरा—नूपुर । चलावे—वजाती हैं । गहट्टी वरा—वैभवशाली वरो, वर समूहो । झागड़ै—झगडा करती हैं । परी—अप्सराएँ ।

गोळा तणी मार लोप तोप रै जजीरे गयौ,
आहडेस धारी नकौ बोला तणी आप ।
अहूं लोका मझारे औसाप पूगी रौळा तणी,
तापगीर हिये पूगी रौला तणी ताय ॥१०॥

उथापे गनीमा थाणा सूरा सीम थाप ऊभौ,
जोव पूरा काप ऊभौ भीम झाड़ झोड ।
अरी खाप धाप ऊभौ करी खावा धाप आघ,
आज री जगार्णी खापा न मावै अरोड ॥११॥

—वद्रीदास खिडिया रौ कह्यौ

---

१० लोप—उल्लघन कर, सहनकर । तोप रै जंजीरे—तोपो की पंक्ति के पास । आहडेस—सीसोदिया प्रतापसिंह । नकौ—कोई नही, कुछ नही । मझारे—मे । औसाप—महिमा, कीर्ति । पूगी—पहुची, फैली । रौळा तणी—युद्ध की । तापगीर—ताप देने वाले शत्रु, आतककारी के । हिये—हृदय मे । ताप—भय, आतप ।

११ उथापे—उन्मूल करे, उठावें । गनीमा तणा—दुश्मनो के । थाणा—सैनिक चौकियां । सूरा सीम थाभ—शूरवीरता की सीमा स्थापित या निर्धारित कर । ऊभौ—खडा । पूरा—पूर्ण । काप—टुकडे कर, नाश कर । भीम—भयानक । अरी खाप—शत्रु जाति शत्रु को तलवार से । धाप—तृप्त हो । खावा—(?) । जगाणी—रावत जगा का वशज, प्रतापसिंह । खापा—तलवारें । अरोड़—जवरदस्त ।

१२२. गीत सगतसिंघ सगतावत सांवर रौ

सकतेस राजड दूसरौ, यण बार खत्रवट ऊधरौ
इन्द्रसिंघ तात परताप आरिख, दुवौ सुन्दरदास
भड थाट गोकळ भाण रा, रछपाळ धर गिर रांण रा
अमट भड थट सुभट ऊपट, खहण झट झट विकट खाखट
लपट खग झट झपट लट लट, चपट रोझट रपट चट चट
गरज गट थट दबट गाहट, फब घट नट बट कुलट फबियट
घरट घूम घट दळट घट घट, झपट खग झट निपट झळ पट
अछर पूरी आस ।।१।।

---

१८१ गीतसार—उपराकित गीत अजमेर मेवाड के सावर ठिकाने के अधिपति महाराज शक्तिसिंह शक्तावत सीसोदिया पर लिखित है। गीत मे गीतकार ने महाराज शक्तिसिंह और इन्दोर (मालवा) वालो के पूर्वज मल्हार राव होल्कर के पारस्परिक युद्ध का वर्णन किया है। गीतनायक ने अजमेर के मरहठे राज्यपाल को पराभूत कर कीर्त्ति अर्जित की थी। कवि ने शक्तिसिंह को अपने पूर्वज प्रसिद्ध योद्धा महाराज शक्तिसिंह भीडर, शाही मनसबदार गोकुलदास और सुन्दरदास के समतुल्य वीर वर्णित किया है।

---

१ सकतेस—महाराना उदयसिंह मेवाड के छोटे पुत्र शक्तिसिंह जिससे सीसोदियो की शक्तावत शाखा का प्रचलन हुआ। राजड दूसरौ—द्वितीय राजसिंह, गीतनायक शक्तिसिंह। खत्रवट—क्षत्रियत्व। ऊधरौ—उर्ध्व, उद्धारक। तात—पिता। आरिख—सदृश। दुवौ—द्वितीय। भड थाट—योद्धा समूह, सैन्यदल। गोकळ—गीतनायक का पूर्वज शाही मनसबदार गोकुलदास। भाण—शक्तिसिंह प्रथम का पुत्र और गोकुलदास का पिता भाण। धर गिर—पृथ्वी और पहाडों का। राण रा—मेवाड के महारानाओ का। अमट—अमिट। भडथट—सेनादल। ऊपट—उमड कर, मर्यादा से बाहर आगे बढ कर। खहण—भिडकर, युद्ध कर। खाखट—योद्धा, प्रहार देकर (?)। खग झट—खड्गाघात। लट लट—बालो की लटें पकडकर। रोझट—लडाई, बखेडा। रपट—तेजी से बढकर, फिसलकर। थट—सेना। दबट—दौडकर, दबाकर। गाहट—रोदकर। घट—शरीर। नट बट—नट की भांति बल खाकर, नट का गोला। कुलट—कुलाच मार कर। फबियट—सुशोभित होते हैं। घरट—घरट्ट यंत्र। घट—शरीर। दलट—चूर्ण, दलन कर। झपट—गति से बढकर प्रहार देना। अछर—अप्सरा। पूरी आस—कामना पूर्ण।

सजि समर सोबादार सू, मड खड थड मलार सूं
गढपती दुरग सिर कर गाज, आप रै अपाण
दळ मार ठेलै दिखणिया, यम झाट खेलै खग अण्या
वजि त्रम्वक गहक ठहक विढक, खडक झरड़क भडक खाटक
भभक खळ चक घाव भक भक, घडक दरडक श्रोण धक धक
कटक हूकट झटक काटक, रटक छूटक झटक राटक
चटक छूटक मटक चाटक, वटक चडियक गटक वाटक
भिड़ज रथ थभि भाण ॥२॥

---

२. समर-युद्ध। सोवदार सू-राज्यपाल से। मड-लडकर। थड-सेना, समूह। मलार सू-मल्हार राव होल्कर, इन्दौर (मालवा) के राजाओ का पूर्वज। गढपती-राजा। दुरग-किला। गज-गर्जना। आप रै-अपने, स्वय के। आपाण-वल से, शक्ति के भरोसे। दळ-सेना। ठेलै-धकेल दिए, मार भगाए। दिखणिया-दक्षिण प्रान्त वाले, मरहठे मल्हारराव आदि। यम-इस प्रकार। झाट खेलै-युद्ध कर, शस्त्रो के प्रहार का खेल खेलकर। खग अण्या-तलवारो की नोकें, तलवारो मे सेनाओ के साथ। वजि-ध्वनित होकर। त्रम्वक-नगाडे। गहक-नगाडे की ध्वनि। ठहक-ध्वनि। खडक-ढोल के वजने की ध्वनि, खड खड शब्द। झरडक-किसी वस्तु के विदीर्ण होने की ध्वनि। भडक-योद्धा। खाटक-प्रचडवीर, प्रासकर्त्ता, ढाल। चक-निशान, घाव। भकभक-रक्त वहने की ध्वनि। दरड़क-तरल पदार्थ के ऊपर से गिरने की ध्वनि। कटक-सेना। काटक-जवरदस्त। रटक-टक्कर। छूटक-छुटक प्रहार। राटक-युद्ध। चाटक(?)। वटक-वटके, ग्रास। चढियक-चामुण्डा देवी, युद्ध प्रिय देवी। गटक-निगलकर। भिडज-घोडे। थभि-रोक कर। भाण-सूर्य।

मंडि सैनि चोडै मडहटा, घण घाट घेचै औघटा
सतारा हूंत यम तूहीज साहे, रूक सकता राण
चहुवाण चाचिग चापड़ै, बडगूजर भीमला बड़बड़ै
कमर कसि नर सुकर किरमर, झिगर गिर तर
डवर नीझर फरर अत्रीयर, फरर फीफर
ढीगर कोपर मगर ढाढ़र यदर जळधर समर ओसर
अछर मिळ वर सुवर आतुर घरर चौसर सकर उरधर
नीधसै नीसाण ।।३।।

---

३ मडि—लडकर, भिडकर। चोडै—खुले मैदान मे, प्रकट मे। मडहटा—मरहठे, महाराष्ट्रीय। घण—बहुत, अत्यधिक। घेचै—घसीटे। औघटा—विकट रीति से। सतारा—दक्षिण का एक नगर, पूना सतारा, मरहठे। हूंत—से। यम—इस प्रकार। साहे—लडता है, पकडता है, करता है। रूक-तलवार। सकता राण—गीतनायक महाराज शक्तिसिंह। चाचिग—चाचगदेव। चापडै—युद्ध मे। बडगूजर भीमला—बडगुर्जर भीम से। किरमर—तलवार। झिगर गिर—गिरि तरुवरो के झुण्ड। डवर—वन, घना। नीझर—निर्झर। अत्रीयर—आर्त्त, आत्र। फीफर—फेंफडे। ढीगर—ढेर (?) कोपर—कुहनी। मगर—पीठ। ढाढर—डाडर, वक्षस्थल। यद जळधर—मेघ रूपी इन्द्र। समर—युद्ध। ओसर—वर्षण कर। अछर—अप्सरा। मिळवर—वर प्राप्त होकर। चौसर—चार लडियो वाली माला, पुष्पहार। सकर—शकर, शिव। उरधर—गले मे धारण कर। नीधसै—ध्वनित, शब्दितय। नीसाण—वाद्य, नगाडे आदि।

कहियेत बावो केहरी, तिम घड़ा भजण तेहरी
सगतेस गोकळ तखत सिरखौ, राज छत्र रखपाळ
भलकार बेटा भाइया, दळकार भारथ दाइया
धुवण रण घण तरण धुबियण, करण कण कण पिसण कणियण
गयण ठणियण दोयण गाहण, रजण त्रिनयण अरण रुकियण
दमण उदमण रमण दारुण, धरण अहिफण चरण धमियण
प्रिसण घण जण सघण पुळियण, रसण कवियण रटियण
आहड़ा उजवाळ ।।४।।

---

४ तिम–त्यो। घडा–सेना। सकतेस गोकळ तखत सरखौ–महाराज शक्तिसिह गोकुलदास और तख्तसिंह समतुल्य। रखपाळ–रक्षक। भलकार–बुलवा तथा एकत्रित कर। दळकार–सेना बनाकर। भारथ–युद्ध। दाइया–समवयस्को,दावेदारो। धुवण–तोपें, नगाडे, क्रोधकर। धुबियण–ध्वनि करना। पिसण–शत्रु, दुश्मन। कणियण–छोटे छोटे टुकडे। गयण–आकाश। ठणियण– (?)। दोयण–दुश्मन। गाहण–युद्ध, सहारकर। त्रिनयण–शकर,त्रिलोचन। अरण–अरुण, सूर्य का सारथी। रुकियण–ठहर कर, रुक कर। दमण–द्रव्य, दमडे, दमन। उदमण–स्वतत्र रूप से, निर्बंध। धरण–पृथ्वी। अहिफण–शेष नाग का फन। धमियण–(?) प्रिसण–दुश्मन। घणजण–घनेरे, बहुत अधिक सख्या मे सैनिक। पुळियण–भागते हैं। रसण–रसना, जिह्वा। कवियण–कविजन। रटियण–रटते हैं, विरुद एव कीर्ति काव्यो द्वारा वर्णन करते हैं। आहडा–सीसोदियो या आहड स्थान वालो को। उजवाळ–उज्ज्वल कर, कीर्तिमान कर।

१२३. गीत ठाकर राजसिंघ संखवास रौ

संमत अठारे मेडले वरस अेकादसम,
भिड़ै मुरधर कमध दिखण भाराथ ।
खाग बळ खळा आपा जिसा खपावण
नागपुर सजै विजपत प्रथीनाथ ।।१।।
जठै चहुवाण राजड जगत जाहरा,
सतारा सू विजै भारथी सग ।
सलूबर तणौ रावता मदत जैतसी,
आविया मिटावण जग अणभग ।।२।।
दुवे सहस भडा सू अजब तण दिखण दळ
लखा विच भागड करण लूभौ ।
वात मिस घात सत्र गनीमा विभाडण,
अडीखभ विचारे मरण ऊभौ ।।३।।

---

१२३ **गीतसार**–उपर्युक्त गीत सखवास ठाकुर राजसिह चौहान द्वारा सवत १८११ वि० मे नागौर के पास गगारडे स्थान पर मरहठो के साथ लडे गए युद्ध विषयक है। वर्णित युद्ध प्रसिद्ध मरहठा जय अप्पा की सेना के साथ लडा गया था। इसमे मारवाड के अन्य वीरो के साथ साथ सलूम्बर का रावत जैत्रसिह भी मारवाड के पक्ष मे लडकर वीरगति को प्राप्त हुआ था। गीतनायक भी युद्ध मे धराशायी हुआ था।

---

१ कमध–राठौड। दिखण भाराथ–दक्षिण वालो से युद्ध। खागबळ–खड्ग बल से। खळा–वैरियो को। आपा–जय अप्पा सिंधिया। खपावण–नाश करने को। नागपुर–नागौर। विजपत–महाराजा विजयसिह जोधपुर नरेश।

२ जठै–जहा पर। राजड–ठाकुर राजसिह, गीतनायक। सतारा–पूना सतारा। विजै भारथी–विजयभारती। जैतसी–रावत जैत्रसिह सलूम्बर का स्वामी। अणभग–अद्वितीय वीर।

३ दुवे सहस–दो हजार। भडा सू–योद्धाओ सहित। अजब तण–अजबसिह तनय ठाकुर शेरसिह सखवास। भाजगड–युद्ध की पारस्परिक लडने न लडने की मत्रणा। मिस–बहाने से। गनीमा–शत्रुओ को। विभाडण–नाश करने। अडीखभ–स्तम्भ तुल्य, अडिग योद्धा। ऊभौ–खडा हुआ।

पाड आपा जिसा राडकर पौढियो,
अतळ वळ धाड वुध खगा चहुआण।
मेडते गनीमा हूत विढ साहै क्रमध,
गनीमा राजडो विढै नागाण ॥४॥
धरे गौ नातिया तणै जस सामध्रम,
वरे गौ अछर सुरपुर विसावीस ।
दुख सरव हरे गौ मुरधरा देस रौ,
सभरी करे गौ नाम जग सीस ॥५॥

—सादू चैनकरण री कह्यौ

१२४. गीत कंवर सेरसिंघ चुवांण संखवास रौ

सोर अगारां दमगां फैल जूटता भीम सू सेख,
ओरिया पमगा ढीली वागा रा आराण ।
सत्रा धू वाहता तूझ खागा रा वाखाण सेरा ।
वदै तूझ लोह लागा रा वाखाण ॥१॥

---

१२४ गीतसार—उपर्युक्त गीत मारवाड के सखावस ठिकाने के कुमारशेरसिंह चौहान के द्वारा मुसलमानो से लडे गए युद्ध से सम्वन्धित है। गीत मे कवि चैनकरण सादू ने कहा है कि तोपो के वारूद की अग्नि के स्फुलिंगो के साथ शेरसिंह ने शेख के विरुद्ध युद्ध मे अपने अश्व को धकेला और शत्रुओ के मस्तको को शिव का आभूपण वना कर तथा स्वय घावो से लोहू लुहान होकर वापस लौटा।

---

४ राडकर—युद्ध लडकर। पौढियो—रणशायी हुआ। विढ—लड कर। नागाण—नागौर।

५ नातिया—पौत्रो, सतित वालो। जस—कीर्ति। वरेगौ—वरण करके गया। अछर—अप्सरा। विसा वीस—निश्चय ही। हरेगौ—हरण कर के गया। सभरी—चौहान। करेगौ—करके गया। जग सीस—ससार पर।

१ सोर—वारूद। दमगा—स्फुलिंग। जूटता—युद्ध में भिडते समय। ओरिया—धकेले। पमगा—घोडे। वागा—लगामे। आराण—युद्ध मे। धू—मस्तक। वाहतौ—प्रहार करता। खागा रा—तलवारो के। वदै—सराहना करते हैं कहते हैं। लोह—शस्त्र।

वाज तासा अराबा असत्रा बोहडा री वांहां,
जठै खैगा ओहडां री खी बरा जारीफ ।
खळा सोहडां री सेन खागा ओहथां हूं खडे,
तूंही लागां लोहडा री जिहांन तारीफ ॥२॥

झोकतै तुरंगां जाडा थंडां चाहूवाण झोका,
चोडै थाहूवाण झोका मंडा वीर चाल।
झिलम्मा सहेत खागा खळां ढाहूवाण झोका,
लोहा साहूवाण झोका संभरी लकाळ ॥३॥

सामध्रमा तणा रा आसेर रायजादा सेर,
जुधां आडे अंक मांटी पणा रा जणाव ।
किलम्मा घणा रा सीस रुद्र आभूसणा कीधा,
वणे आप घवा आभूसणा रा वणाव ॥४॥

—चैनकरण सादू री कह्यौ

---

२ तासा—वाद्य विशेष । अरावा—अरवी बाजे, तोपें । जठै—जहा । खैगां—घोडे । खी बरा—अप्सराओ के वर । सोहडा री—योद्धाओ की । जिहान—ससार ।

३ झोकतै—धकेलते । जाडा थडा—घनी सेना के मध्य । झोका—धन्य धन्य । थाहूवाण—थाह लेने वाला । झिलम्मा—लोहे का जालीदार, सिर पर पहनने का कवच । सहेत—सहित । ढाहूवाण—ढाहने वाला, गिराने वाला साहूवाण—सहन करने वाला । सभरी—चौहान । लकाळ—सिंह, योद्धा ।

४ आसेर—दुर्ग, आश्रेणिक । माटी पणा—वहादुरी का । किलम्मा—मुसलमानों । घणा रा—वहुतो का । रुद्र—शिव । आभूसणा—मुण्डमाला, आभूपण ।

१२५. गीत ठाकर सेरसिंघ चुवांण संखवास रौ

सर खाचे स्यामध्रमे सूरापण, जोवै धार सुधार जळ ।
सुजडा काट उतारै सेरो, कमळ सत्रा खरसाण कळ ।।१।।

खत्रवट तणी डोर खाचता, चाढै वेग घणी सुविचार ।
माथा रिमा फेरणी माथै, धजवड तणी उजाळै धार ।।२।।

पाणप जिळै घणी जगप्रभता, सुपह तणौ खाचता सर ।
सभू सुतण धरा राखियौ सातरौ, कुरद चकर अरि सीसकर ।।३।।

आसत निध चहुवाण अतुळबळ, जुध पडत जाणग बहु जाण ।
अरि उतवग खरसाण ऊपरै, करवत जिसौ कियौ केवाण ।।४।।

---

१२५ **गीतसार**–कवि ने इस गीत मे मारवाड के सखवास ठिकाने के ठाकुर शेरसिंह चहुवान की तलवार तथा युद्धकला की सराहना की है। गीत मे लिखा है कि शेरसिंह सुविचार रूपी धनुष पर स्वामि–धर्म का बाण चढा कर क्षात्रधर्म रूपी प्रत्यचा को खीचता है। वह शत्रुओ के मस्तक रूपी खरसान पर अपनी कृपाण के धार लगाता है–तीक्षण बनाता है।

---

१ सर–बाण। स्याम ध्रमे–स्वामिधर्म। जोवै–देखता है। धार जळ–रक्त, आब देने का जल। सुजडा–कटारियो से, तलवारो से। काट–मैल। कमळ–सिर। सत्रा–शत्रुओ के। खरसाण–तलवार को तीक्ष्ण करने का यत्र। कळ–भाति, यत्र।

२ खत्रवट–क्षत्रिय मार्ग। घणी–धनुष। माथा–मस्तको। रिमा–शत्रुओ। धजवड तणी–तलवार की।

३ पाणप–पानी, आब, चमक। घणी–अधिक, घनी। प्रभता–प्रभुत्व। सुपह–राजा, योद्धा। सर–बाण। सातरौ–अच्छा, सुदर। कुरद–निर्धनता, कगाली। चकर–चक्र। अरि–वैरी।

४ आसत निध–आस्तिकता के समुद्र या कोष। अतुळ बळ–अपरिमित शक्ति। जुध पडत–युद्ध प्रवीण। जाणग–जानकर, ज्ञाता। बहु जाण–बहु ज्ञानी। उतवग–उत्माग, शीश। करवत–करपत्र। बढई का औजार। जिसौ–जैसा। केवाण–तलवार को तीक्ष्ण किया।

१२६. गीत रावत जोधसिंघ चौहाण कोठारिया रौ

मरद घाट जजराट लोह लाट बेढीमणा,
तीख घरवाट खत्रवाट तोरा ।
जणातौ नही रजपूत बट जोधडा,
गमाता जमी निरबीज गोरा ॥१॥

डाखिया घसल रवतेस डग डोलडा,
पीथहर चोलडा ग्रमल पीधा ।
ढावता सरण बागा जगत ढोलडा,
कोड़ जुग बोलडा ग्रमर कीधा ॥२॥

---

१२६ गीतसार—उल्लिखित गीत मेवाड के ठिकाने कोठारिया के रावत वीर जोधसिंह चहुवान पर कहा हुआ है। रावत जोधसिंह ने प्रथम स्वातन्त्र्य समर मे अग्रेज सत्ता का सशस्त्र विरोध कर जोधपुर के आऊवा ठिकाने के स्वामी ठाकुर कुशालसिंह चापावत को अपने वहा आश्रय प्रदान किया था। गीत मे गीतनायक द्वारा अग्रेजो का विरोध करने तथा शरणागतो की रक्षा करने का वर्णन हुआ है।

---

१ जजराट—यमराज। लोहलाट—लोहस्तम्भ। वेढीमणा—युद्धकारी, योद्धा। तीख घरवाट—घराना की श्रेष्ठता। खत्रवाट तोरा—क्षत्रियत्व का गर्व। जणातौ नही—प्रकट नही करता। रजपूत वट—राजपूती का बल। जोधडा—रावत जोधसिंह। गमाता—खो देते, समाप्त कर डालते। निरबीज—निर्वीय, विना बीज कर देते। गोरा—अग्रेज सत्ताधारी।

२. डाखिया—भूखा सिंह। घसल—दहाड, आक्रमण। रवतेस—रावत पदधारी जोधसिंह। पीथहर—रावत पृथ्वीसिंह के पौत्र। ग्रमल—अफीम, अफीम का रस। ढावता—आश्रय देते। बागा—बजे, नाद करे। ढोलडा—ढोल वाद्य, प्रशसात्मक वाद्य। बोलडा—वचन। कीधा—किया।

मोखमा सुतन फिरगाण लोपे हुकम,
कहै सावास दस देस काळा ।
जाणता जिसा अहनाण आया नजर,
उदैगिर भांण चहुवाण वाळा ।।३।।

पड़ै मचकूर लधन खबर पाड़िया,
जोध खग झाडिया धको जम रौ ।
राव बिन फिरग झेले कवण राड़िया,
भमै नव नाड़िया वीच भमरौ ।।४।।

---

३ मोखमा सुतन—मोहकमसिंह के पुत्र रावत जोधसिंह । फिरंगाण—अंग्रेज । लोपे—उल्लघन करे । दस देस—दशो विलायतो वाले दशरें राज्यो के । काळा, भारतीय—वीर । जिसा—जैसा । अहनाण—चिह्न, निशान । उदैगिर उदयाचल, उदयपुर के । भाण—सूर्य, हिन्दुआ सूर्य जो मेवाड के नरेशो का विशेषण है ।

४ मचकूर—मजकूर । लधन—लदन । जोध—जोधसिंह, योद्धा । खग झाडिया—तलवार के प्रहार देते समय । धको जम रौ—यमराज की सी टक्कर, यम जैसा आघात । फिरंग—अंग्रेजो से । झेले—ले, सामना कर लडने का साहस करे । कवण—कौन । राडियां—लटाइया । भमै—चक्कर लगावे, भ्रमण करे । नव नाडिया—शरीर की नवो शिराओ मे । भमरौ—जीव, प्राण ।

१२७. गीत सूरजमल चौहाण मूलेठी रौ

दळ हलक भाव समद रा, असुराण गोता ऊपरा
राठौड रतना भिडे अरिथट, अखियौ चहुवाण ।।
गरणाट गज घटा गजै, बज हाक रण त्रम्बक बजै
वजत त्रबक गजत परवत, धुजत अहिपत फुणज धरकत
भिडत सकडत सजत रणभ्रत, उडत ग्रीधत भमत अगणत
रजत थभत थटत सरसत, तगत कायर भजत जित तित
हसत नारद नसत हरखत, अखत जोगण मुखत जय जय
सबळ बळ घमसाण ।।१।।

---

१२७ **गीतसार**–ऊपरिलिखित गीत चौहान वशीय क्षत्रिय वीर ठाकुर सूरजमल्ल जागीरदार ठिकाना मूलेठी की युद्ध वीरता पर रचित है। गीतनायक ने गुजरात प्रदेश के ईडर राज्य की रक्षार्थ युद्ध मे अपने जीवन को विपत्ति मे डाला था। गीत मे लिखा है कि युद्ध वाद्यो के घोष से गिरिखण्डो को प्रतिध्वनित करते हुए उस वीर ने अग्रेजो की सेना को युद्ध स्थल से भगाकर वीरत्व प्रकट किया था।

---

१ दळ–सैन्य दल। हलक–हलचल। असुराण–असुर, अग्रेज। गोता–गोत्र वाले। राठौड रतना–गीत नायक का सामन्त रतनसिंह राठौड योद्धा। अरि थट–शत्रु सेना। आवियौ–आया। गरणाट–ध्वनि विशेष। गजै–गर्जना करते। बज हाक–हाक होकर। त्रम्बक–नगाडे। बाजै–ध्वनित होकर, बजकर। परबत–पर्वत। धुजत–कम्पित। अहिपत–शेषनाग। फुणज–फन। धरकत–धडक कर। सजत–सज्जित। भ्रत–सैनिक। उडत–उडते हैं, उडकर। ग्रीधत–गृद्ध पक्षी। भमत–आकाश मे चक्कर लगाते। थमत–रुकती हैं, ठहरती हैं। तगत–ताकते हैं। भजत–भागते हैं। जित तित–जहा–तहा, इधर–उधर। हसत–हँसते हैं। नसत–भागने वालो को, भागतो को। हरखत–हर्षित। अखत–कहती है, बोलती है। जोगण–योगिनी, रणदेवी। मुखत–मुँह से। घमसाण–घमासान, युद्ध।

तो रणजीत सुत जसराज रौ, आदीत सुभ तप आज रौ
कमधजा राखण राज काइम, धरा ईडर ढाल ।
जिण वार सावळ झव झवै, धर धूज घण तोपा धुवै
धुवक तोपक अतक धुधक उडत भुजळग भडक खगअग
अड़ड़ ओणग धुयण गैणग फुटत जोधत घडक वहरक
चळक धक धक पड़त लडथड जुवन पग पग
जोक सूरजमाल ॥२॥

खग झटा तडळ खेळणा, इळ कीत ब्रद ऊझेलणा
चहुवाण जस कळस चाढण, अनड़ भड़ अगजीत ।
फड फडा फीफर सिर फटै, केइ नरा धड खग अध कटै
कटत अध वप अडप कड़ चप तुछप जड़दप
अछप छड तप झडप ग्रीधप गटप पळ झप
दडप मुंड दप धडप रप दप कमळ धप धप

---

२. रणजीत सुत–महाराजा रणजीतसिंह के पुत्र। जसराज रौ–जसवन्तसिंह का। आदीत–आदित्य, सूर्य। कमधजा–राठौडों का। काइम–कायम, स्थिर, अटल। ढाल–रक्षक। सावळ–भाला। झवझवै–चमकता। धूज–कम्पित होकर। धुवै–चले, गर्जना करे। अतक–अत्यधिक। धुवक–धुधलापन, अधकार। भुजळग–तलवार। अडड–ध्वनि विशेष। ओणाग–भूमि गोले (?)। धुयण–धूम्र, ध्रुव। गैणग–आकाश मण्डल। वरहक–पताकाएँ। चळक–रुधिर, लोहू। लटथड़–लडखडाकर। जुवन–यवन, अग्रेज।

३ खग झटा–खड्गाघातो से। तडल–मस्तक, टुकडे। इळ–पृथ्वी पर। कीत–यशकथा। ब्रद–विरुद। ऊझेलणा–प्रचारित करना, वहाना, तरगित। जस कळस–यश रूपी कलश। चाढण–चढ़ाना। अनड भड–अविजित भट। फीफर–फॅफडे। धड–शरीर। खग–तलवार। अध कटै–अर्द्ध कटे हुए। अधवप–आधा शरीर। अडप–हठीला। कड चप– (?)। तुछप–तुच्छ। अछप– (?)। झडप–फडफडाहट, टकराने पर होने वाली ध्वनि। ग्रीधप–गृद्ध पक्षी। गटप–निगल कर। पळ–मास। दडप–भारी चीज के गिरने पर होने वाली आवाज। मुंड–सिर। धडप–शरीर। कमळ–मस्तक। भिडै–युद्ध करते है। अगजीत–अजीत, निर्भीक, निडर।

रणघोख नौबत धरहरे, गजा जबर झडा फरहरे
आछटे रवदा खाग अनमी, अुदार इण बार ।
मदझरा लगर खळभळ, सर सेस धवळक सळसळै
सळक धवळक सेस सवळक कळक समळक वीर करळक
पळक चरळक दुजक परळक भळक भुजळक,
गळक जंबुक पळक गरळक भळक अनळक
बाण झरळक अळक वहळक केक अरळक
झडप तेगा धार ।।४।।

भारथा पाराथ ज्यू भिडै, पैदळा हैदळा थट पडै ।
फिरगाण दळ वळ पाड फीटा, भाज खळ अणभग ।।
पोगरा गज कट धर पडै, झिलमाण सहतां सिर झडै
झडण सिर झिळमाण क्रम धरण तोपण
गुणण खोपर उडण खम खम घणण पाखर
बजण धम धम थटत वीरण नचत थम थम
किलम भाजत जात क्रम क्रम पढत कव क्रन बडम ओपम
जीतियौ घण जग ।।५।।

—करणीदान कवि रौ कह्यौ

---

४ रण घोख—रणघोष । धरहरे—ध्वनि करके । गजा-हाथियो पर । आछटे-पछाडे, आघात करे । रवदा—वैरियो । अनमी—अनम्र, बाकुरा । उदाहर—उदयसिंह का पौत्र । मदझरा—मदमस्त हाथियो के । लगर—लोह शृंखलाएँ । सेस—शेषनाग । धवळक—धवल, बैल के । सळसळै—चलायमान होते हैं, हिल उठते हैं । कळक—किलकारी । समळक—चिल्ह, चण्डी । करळक—बोलते है, करुण रव करते हैं । पळक—मास । चरळक—भक्षी । दुजक—मास भक्षी पक्षी । परळक—चमकना । भळक—चमक कर, भाला । भुजळक—कृपाण । गळक—मास के टुकडे । जबुक—सियार । गरळक—निगलते हैं । भळक—ज्वाला, लपटें । अनळक—अग्नि । बाण—तोपें । झरळक—झडी, प्रहरो की बौछार । अळक—(?) । बहळक—सूर्य (?) । केक—कई । झडप—झडी, टक्कर । तेगा धार—कृपाण धारा ।

५ भारथा—युद्धो मे । पाराथ—अर्जुन । हैदळा—घुडसेना । थट—समूह । फिरगाण—अग्रेज । पाड फीटा—लज्जित कर । भाज—नष्ट कर । किलम—मुसलमान । कव क्रन—कवि कर्णीदान । जीतियौ—विजय किया । जग—युद्ध ।

१२८. गीत राव राजा भोज हाडा बूंदी रौ

जुग बीता च्यार सूर साखी जै, राजा राव मुणी यन राव ।
जस कारण चहुवाण भोज जिम, अधपति कणी न बाटी आव ।।१।।
लाख वरीस कोड़ि सासण लग, स्रवण सुणै दातार सहै ।
करी भोज जिम थियै वियै कह, आतम दम देता अकहै ।।२।।
दसकत वेह लिखंत मेटै दन, वळै काज हाडै सवळ ।
सुरजन तणै नवाजै सुकवि, बाटि वळावध आरवळ ।।३।।
कीरति काज नवाज वडा कवि, थापिया जिण वडा अवथाण ।
जीवदान भोजे देतै जगि भाण साखि ऊवरियौ भाण ।।४।।

---

१२८ गीतसार—उपर्युक्त गीत बूंदी के हाडा वशीय नरेश राव भोजराज पर कथित है । कवि ने गीत मे किसी भाण नामक व्यक्ति को जीवदान देने का उल्लेख करते हुए लिखा है कि भगवान् सूर्य साक्षी दाता है कि चारो युगो मे ऐसा कोई भी अन्य राजा अथवा राव पदधारी शासक नही हुआ जिसने कीर्ति के लिए राव भोज की भाति अपनी आयु का दान दिया हो ।

---

१ जुग वीता च्यार—चारो युग व्यतीत हुए । सूर—सूर्य । साखीजै—साक्षी देता है, साक्षी है । मुणी—कहो । यन—अन्य । जस कारण—यश के लिए । अधपति—अधिपति, राजा । कणी न—किसी ने नहीं, किस ने । आव—आयु ।

२ वरीस—देने वाला, दानी । कोडि—करोड । सासण—शासन, चारणो को दान मे प्राप्त ग्राम । श्रवण—कान । थियै—हुए । वियै—दूसरे, अन्य । आतम दम—जीवन, प्राण । अकहै—विना कहे, कोई नही ।

३ दसकत—दस्तखत । वेह—विधाता, ब्रह्मा । लिखत—लिखित, भाग्यलेख । मेटै—नष्ट कर देता है । दन—दिन । हाडे—क्षत्रियो के चौहान कुल की हाडा शाखा का राव भोज । सवळ—वलवान् । सुरजन तणै—राव सुर्जन तनय । नवाजै—कृपा करे । वळावध—आडावळा पहाड के कारण वूंदी राज्य के लिए वलावध शब्द व्यवहृत हुआ है । आरवळ—आयुर्वल, उम्र ।

४ कीरति—कीर्ति । काज—लिए । थापिया—स्थापित किये । अवथाण—स्थान । भाण—सूर्य । ऊवरियौ—उद्धार हुआ । भाण—भाण नाम का व्यक्ति ।

१२६. गीत महारावराजा भावसिंघ हाडा बूंदी रौ

जिम राव भोज जिम राव दूदरज, बळि रतनेसुर टेक बहै ।
रहै तिकै तावीन राव री, राव किणी तावीन रहै ।।१।।

पौढा तणा बिरद पोहौ पौढा, पोहौ औढा गहियां परमाण ।
चलै तिकै बासै चहुवाणा, चालै किम बासै चहुवाण ।।२।।

हालै किम बूदी राव हाडो, धुर तज किणी न चित धरै ।
भावसाहि रिमराह भयकर, करी बाप तिम आप करै ।।३।।

---

१२६ गीतसार—उपर्युक्त गीत बून्दी नरेश भावसिंह हाडा की स्वातन्त्र्य-प्रियता और पराक्रम पर आधारित्त है । गीत मे उल्लेख हुआ है कि जिस प्रकार गीत नायक के पूर्व पुरुप राव भोज, दूदा और रतनसिंह प्रतिज्ञा निभाने एव मर्यादा पालने मे दृढ थे उसी परम्परा का भावसिंह अनुसरण करता है । अन्य शासक भावसिंह की अधीनता मे रहते हैं, पर भावसिंह किसी अन्य का अधीनत्व नही मानता ।

---

१ जिम—जैसे । राव भोज—राव भोज हाडा । दूदरज—राव दूदा । बळि—बलवान, पुन । रतनेसुर—रायाराय रतनसिंह । टेक—प्रतिज्ञा । वहै—चलता है, अनुगमन करता है । तिकै—जो, वे । तावीन—अधीनता मे । किणी—किसी की ।

२ पौढा तणा—प्रौढ का, वीरता का । विरद—विरुद । पोहौ—राजा, योद्धा । औढा—शरण मे, अधीन, विकट । गहिया—धारण किये, ग्रहण किये । बासै—पीछे, अनुगमन करते । किम—कैसे ।

३ हालै—चले । हाडो—चहुवानो की हाडा शाखा वाला । धुर—अग्रेसरत्व, परम्परा । तज—त्याग । भावसाहि—राव भावसिंह । रिमराह—युद्ध पथ मे । करी—की । तिम—त्यो ।

फाडै अवझाड़ै फुरमाणा, औरग री ग्रुथपै आलीक ।
सोवायता न हालै साथै, माथै ज्या आकस मछरीक ।।४।।

१३०. गीत नाथ जी रुघावत हाडा रौ

जुटे आय कुरमाण जुडे नाथ पडियौ जठै,
धाय तजि वसी उर रभ धायी ।
थाळ धरि हाथि वरमाळ लीधा थकी,
अछर वर नाथ सिरि चालि आयी ।।१।।

---

१३० गीतसार—कवि ने उपर्युक्त गीत मे रघुनाथसिह के पुत्र श्री नाथसिह हाडा गैता द्वारा कछवाहो से युद्ध कर वीरगति प्राप्त करने का वर्णन किया है। गीत मे इन्द्र की अप्सरा उर्वशी और युद्ध मृत वीरो की वराकांक्षिणी अन्य अप्सराओ द्वारा गीत नायक का वरण करने का सम्वाद अंकित किया हैं।

---

४ अवझाडैं—फटकारे, डांटे, प्रहार करे। फुरमाणा—फरमानो, शाही आदेशपत्रो। औरग री—बादशाह औरगजेव की। उथपै—उलटे, उल्लघन करे। आलीक—अमर्यादा, कुमार्ग। सोवायता—सूबेदारों के। साथै—साथ मे, अधीन बन कर सग मे। माथै—ऊपर, सिर पर। आकस—अकुश, भय, प्रतिबंध।

१ जुटे—भिडे। कुरमाण—कछवाहे। जुडे—भिडकर। पडियौ—धराशायी हुआ। जठै—जहा। धाम—इन्द्रलोक, घर। वसीउर—उर्वशी। धायी—दौडी आई। थाळ—थाल। लीधा थकी—लिए हुए। अछर—अप्सरा। वर—पति, दूलहा। चलि—प्रयाण कर।

रुघावत काजि समबाद कीधौ अछर,
अडसि करि कह्यौ नह बात आछी ।
पी मळियौ रण माहि पडता पहल,
परी हू राखि बरमाळ पाछी ॥२॥

पहल हू आय ऊभी रही सापरत,
तवै मुख झूठ अह बात तूभी ।
मूठि धर हाथि तरवारि खैंची मरद,
आय तद पूठि हू रही ऊभी ॥३॥

त्रसळ चाढे घणौ बयण कह सतोला,
होय तो मरण हूं करूं हासैं ।
बर बरे नाथ ऊभी रही उरबसी,
परी फिर गई रंभ यंद पासैं ॥४॥

---

२ रूघावत—रघुनाथसिंह के पुत्र के। काजि—लिए। समबाद—विवाद। अडसि करि—आट कर, विरोधकर। पीव—पति। मिळियौ—मिला, प्राप्त हुआ। हू—मैं। पाछी—वापस, पीछे, अलग।

३ आय—आकर के। ऊभी—खडी। सापरत—प्रत्यक्ष। तवै—बोलती है। मूठि—तलवार का हत्था। तद—तव। पूठि—पीठ पीछे, पीठ पर।

४ त्रसळ—भ्रकुटि, ललाट पर क्रोध मे पडने वाली रेखाएँ। वयण—वचन। सतोला—सतुलित,वजनी। वरे—वरण करे। नाथ—गीतनायक नाथूसिंह। ऊभी—खडी। यद—इन्द्र के। पासैं—पास।

सोवतौ नीद जोवौ अछर सामठी,
जीव चिता मही घणौ जड़ियौ ।
हुई अेह बात सुरराज सुणता पहल,
पलग हूता अलग जाय पड़ियौ ।।५।।

विसन पुर जाय सुरराज कूक्यौ बोहत,
छळ हुवौ अेह मौ जाग छूटी ।
माहरी परी वर लीध यक महपती,
ताहरी करी मुरजाद टूटी ।।६।।

विसन सिव ब्रह्म मिळि न्याव कीन्हौ बदत,
जंपै मुख अछर बर न्याव जाडौ ।
यद वर हूंत रीझी नही उरवसी,
हरख मन कियौ वर राव हाडो ।।७।।

---

५ सोवतौ—सोये हुए को । जोवौ—देखा । अछर—अप्सरा । पलग—ढोलिया । हूता— से । अलग—दूर, अलग ।

६ सुरराज—देवराज, इन्द्र । कूक्यौ—पुकार की, शिकायत की । छळ—धोखा । जाग—जगह, स्थान । मांहरी—मेरी । परी—अप्सरा । वर लीध—वरण की गई । तांहरी—तुम्हारी । करी—स्थापित की हुई । मुरजाद—मर्यादा । टूटी—नष्ट हुई, भग हुई ।

७ विसन—विष्णु । मिळि—मिल कर । कीन्हौ—किया । रीझी—प्रसन्न हुई । हरख—हर्ष । वर—पति । राव हाडो—हाडा नाथूसिंह को ।

१३१. गीत महाराज भगतराम हाडा इन्द्रगढ़ रौ

लंकाळ बाळ बडाळ लोधी, ढाहणौ ढैचाळ।
प्रतपाळ करणौ घणा पाता, उभय पख उजवाळ ।।
बधि-चाळ घोडा भडा बाका, चालणौं कळिचाळ।
भगतेस भुजबळा जी भाराथ पाथ भुजाळ ।।
खेरणि रण खळाजी समराथ नाथ सिंघाळ ।
वाहण बीजळा जी धाराळ रत धकचाळ ।।
माथै मैंगळा जी लोहाळ बाळ लकाळ ।।१।।

---

१३१ गीतसार—उपर्युक्त गीत कोटा राज्य के ठिकाने इन्द्रगढ के स्वामी महाराज भगतराम हाडा शाखा के चौहान क्षत्रिय पर रचित है। गीत मे गीतकार ने महाराज भगतराम के युद्धो, सामन्त समाज, उद्यान-विहार तथा वदान्यता आदि का वर्णन किया है। गीतनायक की पोशाक एव आभूषणो का भी आख्यान किया गया है।

---

१ लकाळ—योद्धा, सिंह। वडाळ—महान्, बडा। ढाहणौं—पछाडने अथवा गिराने वाला, सहार करने वाला। ढैचाळ—हाथी। प्रतपाळ—प्रतिपाल, पोषण। घणा—अधिक, घनें। पाता—पात्रो, कवियो, याचको। उभय पख—माता और पिता दोनो पक्षो को। उजवाळ—उज्ज्वल करने वाला। बधि चाळ—पक्तिबद्ध हो कर, अगरखे का छोर बाधकर। भडा—योद्धाओ। बाका—बाकुरे, विकट। कळिचाळ—वहादुर, युद्ध। भुजवळा—भुजवली, बलशाली। भाराथ—युद्ध मे। पाथ—पार्थ, अर्जुन-सा। भुजाळ—वलिष्ठ भुजावाला। खेरणि—नाश करने वाला। खळा—शत्रुओ का। समराथ—समर्थ, बलवान। सिंघाळ—श्रेष्ठ, सिंह। बाहण—चलाने वाला, प्रहार देने वाला। वीजळा—तलवारो के। धाराळ—धारा प्रवाह, तलवार। रत—रक्त, लोहू। धकचाळ—घमासान युद्ध। माथै—मस्तको, पर। मैंगळा—हाथियो। लोहाळ—शस्त्र-धारी। वाळ लकाळ—सिंह शावक।

भाराथ जेम पाराथ अणभग नाथणौ अणनाथ ।
सिधनाथ गोरखनाथ सिरखौ हिदवा सिर हाथ ।।
वीदगां भरि वाथ बगसै सकौ धाता साथ ।
धरै पाता जेम इन्द्र घण घ्रवै कुदण धाथ ।।
भगतेस भुजबळा जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खळा जी समराथ नाथ सिंघाळ ।।
वाहण वीजळा जी धाराळ हत धकचाळ ।
माथै मैगळा जी लोहाळ वाळ लकाळ ।।२।।

गज दियण सासण जस लियण गाडो ।
जोध अजेरा जेर कामा बाका पाव माडो ।।
समै भारथ सेर जाभो पाता कर जाडो ।
गैमरा खळ गैर अणी वूदी घणी फौज लाडो ।।
भगतेस भुजबळा जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खळां जी समराथ नाथ सिंघाळ ।।
वाहण वीजळा जी धाराळ रत धकचाळ ।
माथै मैगळा जी लोहाळ वाळ लकाळ ।।३।।

---

२ भाराथ–युद्ध मे । जेम–ज्यो । पाराथ–पार्थ, अर्जुन । अणभग–वीर । नाथणौ–वश मे करने वाला, नाथ डालने वाला । अणनाथ–अविजितो को । सिधनाथ–सिद्धनाथ । सिरखौ–सदृश, समान । सिर हाथ–रक्षक, रक्षा का हस्त । वीदगा–विदग्धो, पडितो, कवियो को । भरि वाथ–अत्यधिक, बाहुओ मे समा सके उतना । वगसै–बख्शता है । सकौ–वह, सब कोई । पाता–पात्रो को, याचको को । घण–घना, अधिक । घ्रवै–वरसता है, देता है । कुदण–कचन, स्वर्ण । धाथ–धातु ।

३ दियण सासण–शासनिक ग्राम देने वाला, जैसे ब्राह्मणो को दान मे दी हुई भूमि 'डोली' कहलाती है वैसे ही चारणो को पुरस्कार मे दी हुई भूमि 'सासण' कहलाती है । इस पर किसी भी प्रकार का राज्य कर नही लगाया जाता था । जस–यश, कीर्ति । लियण–लेने । गाडो–दृढ, कटिवद्ध । अजेरा जेर–अविजितो को विजित करने वाला । कामा–वाका–विकट कार्यो । पाव माडो–दृढ पैर रोपो, अडिग चरण । भारथ–युद्ध । जाभो–दृढ । जाडो–गहरा, चमन, भारी । गैमरा–हाथियो । खळ–शत्रु । गैर–पछाड कर, सहार कर । अणी–सेना, नोक । धणी–स्वामी की । फौजलाडो–सेना का दूलहा, सेनाध्यक्ष ।

बजि हाक डाक ठणाक तवला बिया फाटै बाक ।
चढि चाक घोडा भडा चौडै चमरबध बधि चाक ।।
है हाक सूरा बीर हळवळ ऊकढै अयराक ।
अैराक छाक सिरि दियण अरिया आछटण अैराक ।।
भगतेस भुजबळा जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खळा जी समराथ नाथ सिघाळ ।।
बाहण बीजळा जी धाराळ रत धकचाळ ।
माथै मैगळा जी लोहाळ बाळ लकाळ ।।४।।

बासिया भड अनड बाका घड़ त्रिबधी धूमाड़ ।
खाट खढ झड करण खागा प्रसण जाड़ ऊपाड ।।
बाड झाड सीमाड विहडण आखाडा अवनाड ।
हमल करि वेछाड हाका किला तोडण कीवाड ।।
भगतेस भुज बळा जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खळा जी समराथ नाथ सिघाळ ।।
बाहण बीजळा जी धाराळ रत धकचाळ ।
माथै मैगळा जी लोहाल बाळ लकाळ ।।५।।

---

४ वजि–होकर । हाक–हल्ला । डाक–ढाक वाद्य । ठणाक–ठणण की ध्वनि । तवला–तबल वाद्य । विया दोनो, अन्यो के । फाटै बाक–मुख फाट जाते हैं, भय के कारण मुह खुले के खुले रह जाते हैं । चाक–हृष्टपुष्ट, चक्र । भडा–वीरो । चमर वध–चमर धारी । हळवळ–हलचल, आतुरता से फिरना । ऊकढै–निकले । अयराक–मदिरा, घोडे । छाक–प्याले, मस्त । अरिया–वैरियो को । आछटण–पछाडने, वार करने । अैराक–घोडे, तेज मदिरा । अनड–दुर्ग, पहाड । वाका–वाके, विकट । घड–सेना त्रिबधी–तीनो विधि से ।

५ खाट खड–शस्त्रो के टकराने से उत्पन्न प्रहार ध्वनि । खागा–तलवारो से । प्रसण–वैरियो की । ऊपाड–उखाड । सीमाड–सीमावर्त्ती । विहडण–नाश करने वाले । अवनाड–बलवान, वीर । वेछाड–खूखार ।

वावडी ठाम तळाव वागा, जुगति रसता जोख ।
वणि केळि चपा सरू वूटा नवल पल्लव नोख ।।
फळ मजर आमा डाळ फूले झलै कुभी झाडि ।
दाख कु दण वेलि दौळा, वधे चदण वाडि ।।
भगतेस भुजवळा जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खला जी समराथ नाथ सिघाळ ।।
वाहृण वीजळा जी घाराळ रत धकचाळ ।
माथै मैगळा जी लोहाळ वाळ लकाळ ।।६।।

थटे सोवन जाय थांणा केवड़ा वणि कुज ।
केतकी छूटै लगस कोहरा गहकै मोरा गु ज ।।
वौळसरी आसापलव वणिया सुरग नारंग सोह ।
मोगरा खसवोह माहै डमर मधकर डोह ।।
भगतेस भुजवळा जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खळा जी समराथ नाथ सिघाळ ।।
वाहृण वीजळा जी वाराळ रत धकचाळ ।
माथै मैगळा जी लोहाळ वाळ लकाळ ।।७।।

---

६ ठाम–स्थान । तळाव–तालाव । वागा–वगीचा, उद्यान । जुगति–युक्ति । रसता–पथो । जोख–आनद, खुशी । केळि–केल, केला का पेड । वटा–पौधे । पल्लव–पत्ते । मजर–मजरि । आमा–आम्रो की । डाळ–शाखा, टहनी । दाख–द्राक्षवेल । दौळा–चारो ओर । चदण–चन्दन की । वाडि–वाडी, उद्यानिका ।

७ थटे–समूह, शोभा, ठहरना । सोवन–सुहावने । थाणा–स्थान । लगस–समूह । कोहरा–कोहरें, गिरि दर्रे । गहकै–कलरव करते हैं । मोरा–मयूर पक्षी । वौळसरी–मौलश्री का पेड । आसापलव–आशा पाला का पेड । सुरग–सुरगे । नारग–लाल, नारगी का पेड । खसवोह–सुगधी । डमर–महक । मधकर–मधुकर, भ्रमर । डोह–भ्रमण, गुजन ।

सतखणा इण्ड रतन सोभित चित्रसाळि चाव ।
ओवरी बूटा कनक ओपम देखजै दौराव ।।
करै पडदा जरीक अबर बिलातणी बाखाण।
नवखड ढुळत चमर नामी मौज खट रित माण ।।
भगतेस भुजबळा जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खळा जी समराथ नाथ सिंघाळ ।।
बाहण बीजळा जी धाराळ रत धकचाळ ।
माथै मैंगळा जी लोहाळ बाळ लकाळ ।।८।।

आभूखण फबता किता बड कडा तुररा कीध ।
परठिजै दुग दुग स प्रौंचा सहू गहणा सीध ।।
किलगी जड़ाव सीस करतै पना जडित पुखराज।
मिण माणिक हीरा लाल मझि मुकत लड महाराज ।।
भगतेस भुजबळा जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खळा जी भाराथ नाथ सिंघाण ।।
बाहण बीजळा जी धाराळ रत धकचाळ ।
माथै मैंगळा जी लोहाळ बाळ लकाळ ।।९।।

---

८ सतखणा–सात मञ्जिलें मकान। इण्ड रतन–रत्नजटित अण्डे। चित्रसाळि–चित्रसारी। ओवरी–कोठरी। बूटा–वेल पत्ते चित्रित। कनक–स्वर्ण। पडदा–पर्दे। जरीक अबर–जरी वस्त्र के। बिलातणी–विलायत मे बनी हुई। ढुळत–ढुलते हैं, हिलाने का भाव। खट रित–षट्ऋतु।

९ आभूखण–आभूषण। तुर रा–तुर्रे। परठिजै–धारण करे। दुग दुग–दुग दुगी नामक आभूपण जो हाथ की कलाई में पहिना जाता है। प्रौंचा–पहुचा, कलाई। सहू–समस्त। गहणा–आभूषण। जडाव–जटित। पना–पन्ना। मिण माणिक–मणि माणिक्य। मुकत लड–मुक्तालडी।

मुरजन भोज रतन सिरखौ नाथ रै अहनाण ।
इन्द्रसाल गजवध सदा इसडौ मेघ दइवाण ।।
धर रछक पिता छाताल छत्रधर हुआ थंभ हिंदवाण ।
भड अनड प्रतपै पाट भूरौ चमर वध चहुवाण ।।
भगतेस भुजवळा जी भाराथ पाथ भुजाळ ।
खेरण रण खळा जो समराथ नाथ सिंघाळ ।।
वाहण वीजळा जो धाराळ रत धकचाळ ।
माथै मैंगळा जी लोहाळ वाळ लकाळ ।।१०।।

१३२. गीत हाडां गौड़ां रौ जुद्धा रौ भेळो

आदीये खूम दिल्ली नू आया, आडा अवरग कवण अडै ।
जुध जुध भला पोहचिया जौडै, जुध वूदी अजमेरि जुडै ।।१।।

---

१३२ गीतसार—उपराकित गीत हाडौती के कोटा राज्य के शासक महाराव मुकर्दसिंह भीमसिंह और अजमेर प्रान्त के स्वामी अर्जुन एव राजा शिवराम गौड के क्रमश उज्जैन और धोलपुर मे वीर गति प्राप्त करने का सूचक है। कथित युद्धो मे हाडो और गौडो ने शाही पक्ष का समर्थन किया था। दोनो ही युद्धो मे शाहजादे औरंगजेव तथा मुरादवक्स की विजय हुई थी।

---

१० सुरजन—गीत नायक के पूर्वज राव सुर्जन। भोज—राव भोज हाडा वूदी नरेश। रतन—राव-रतनसिंह। सिरखौ—सदृश। नाथ रै—राजकुमार गोपीनाथ के। अहनाण—शक्ल-समता वाले, आकृति वाले। इन्द्रसाल—महाराज इन्द्रशाल। गजवध—जिस के यहा हाथी वँधे रहते है, वडा सरदार। इसडौ—ऐसा। दुवौ—द्वितीय। मेघ—मेघसिंह। दइवाण—दीवान, राजा। रछक—रक्षक। छाताल—छत्रशाल, छत्रसिंह। थभ—स्तभ, आधार स्वरूप। अनड—स्वतंत्र, निर्वंध। प्रतपै—तपता है राज्य करता है। पाट—सिंहासन, पट्ट। भूरौ—केशरी, वीर श्रेष्ठ।

१ आदीये—अदावत करके,दोनो ने आकर। खूम—मुसलमान वादशाह। आडा—अवरोधक, सामने। अवरंग—शाहजादा औरंगजेव के। कवण—कौन। अडै—वाधा उत्पन्न करे, सामने चढ़े। भला—अच्छे। पोहचिया—पहुचे, किए। जोडै—साथ मे। जुडै—जुट कर।

ठौडा ठौडा कळह ठाकुरौ, हाडा गौडा हेक गथो ।
अजरण मुकद उजेणि अेकठा, सेवौ भीमो हेक सथो ।।२।।

हर गोपाल रतन हर होता, भेळपणौ निरभाय अभूत ।
हिदवा छात बडाळा हाडा, रजवट गौड बडा रजपूत ।।३।।

गैंपा कियौ परम दिस गैलो, निमख अनै यकळास निभाय ।
रजवट रजक जाय किम राजा, रजवट रजक राखियौ राय ।।४।।

---

२ ठौडा ठौडा–स्थान स्थान पर। कळह–युद्ध। हेक–एक। गथो–जोडो, युग्म। अरजण–अर्जुन गौड जो उज्जैन मे स० १७१५ मे मारा गया था। मुकद–कोटा नरेश मुकदसिह हाडा। उजेणि–उज्जैन मे। अेकठा–एकत्र, शामिल। सेवौ–राजा शिवराम गौड बोली का स्वामी। भीमो–राव भीमसिह हाडा। हेक सथो–एक साथ मे।

३ हरगोपाल–राजा गोपालदास गौड के पौत्र अर्जुन गौड। रतन हर–रायाराय रतनसिह हाडा के वशज कोटा बूदी के शासक। भेळपणौ–सम्मिलित। निरभाय–निर्वाहन कर। अभूत–अपूर्व, अद्भुत। छात–राजा। बडाळा–बडे, महान्। रजवट–राजपूती के मार्ग पर क्षत्रियत्व।

४ गैंपा–गोपालदास की सतति वाले गौडो ने। गैलो–मार्ग राह। निमख–नमक। यकळास–इखलास, मित्रता। निभाय–निभाकर। रजक–रिजक, जागीर आदि आमदनी के स्त्रोत। किम–कैसे। राय–रायाराय रतनसिह हाडा के वंशधरो ने।

१३३. गीत राजराणा रार्यासिघ झाला सादड़ी रौ

तडै जोगणी महेस सडै उमंडै परी वैताल,
घुमंडै प्रचडै थंडै उडडै घैसाड ।
आडे खडे रोप झडे भुजाडडे तोल आभ,
रायासिघ गनीमां सू मडे चौडै राड ॥१॥

खतगा कराड़े झाट वागै राठ रीठ खागै,
जागै पाट प्रेत काळी अनाढ़ जुआण ।
सतारा हजारां आठ लोहलाठ आयौ सजे,
रासा रा निग्न सै साठ नीमजे आराण ॥२॥

---

१३३ गीतसार–उपर्युक्त गीत मेवाड के झाला क्षत्रियो के सादडी ठिकाने के स्वामी राज राणा रार्यसिह द्वारा मरहठो के साथ लडे गए युद्ध का परिचायक है। गीत मे मरहठो की आठ हजार सेना को पराभून कर विजय दुदुभि वजवाते हुए रण क्षेत्र से लौटने का वर्णन किया है। गीतकार ने लिखा है कि शत्रुओ के मास–मज्जा, रक्तादि से आमिपचारियो को प्रसन्न किया और वराकाक्षिणी अप्सराओ की अभिलाषा पूर्ण कर वीर रायसिह युद्ध से लौट कर आया।

---

१ तडै–नाचने लगी। महेस–महेश, महादेव। सडै–साथ, नदिगण। उमडै–उमडकर। परी वैताल–अप्सराएँ और वावनवीर। थडै–सेना। उडडै–अश्व। घैसाड–समूह, सेना। आडे खडे–तलवार के तिरछे प्रहार। रोप–स्थापित कर। भुजाडडे–भुजदण्ड। तोल आभ–आसमान को तोल कर, नभमण्डल को ऊपर उठाता हुआ। मडे–लडने लगा। राड–युद्ध।

२ खतगा–योद्धा, घायल। कराडे झाट–भीपण प्रहार। वागे–करने लगे, लडने लगे। रीठ–प्रहार, युद्ध। खागै–खड्ग से। काळी–कालिका, रण देवी। अनाढ–वीर। जुआण–युवा, जवान। सतारा–मतारा राज्य वाले, मरहठे। हजारा आठ–आठ हजार। लोह लाठ–लोह स्तभ तुल्य। रासा–रायसिह। निग्न–अधीन, आज्ञाकारी। सै साठ–छह हजार। नीमजे–ठानने का भाव, प्रारभ करे। आराण–युद्ध।

श्रोण चडी पियाला निवाला ग्रीध भखै मास,
दूध भीनै बाला ताला मुसाला जे दीठ ।
दुझाला बिलाला झाला अचाळा दिखणी दळा,
रूप भाला जगा गजा ढाला माता रीठ ॥३॥

बराळा कराळा झाळा अताळा बिछूटै बाण,
तई खेत्रपाळा मडे बैताळा तमास ।
मदाळा दताळा काळा नेजाळा सुडाळा माथै,
बाधचाळा कीतावाळा आछटे बाणास ॥४॥

सिधा नाद रोडे धूस धमोडे त्रिविध सेना,
धजा गजा हिया होडे गोडे सूर धीर ।
सात्रवा बिछोड़े कध अरोड़े दूसरौ सिंघ,
जगी हौदा होडे मोडे छाकिया जजीर ॥५॥

---

३ श्रोण–रुधिर के । पियाला–प्याले । निवाला–ग्रास । भखै–भक्षण करते हैं । दूध भीनै–दूध से भीगे, बाल्यावस्था के। ताला–सौभाग्यवाला । दुझाला–दुर्घर्षवीर । विलाला, मौजी, शौकीन, उदार । अचाळा–अडिग । दिखणी–दक्षिण के, मरहठे । भाळा–ललाट, बलम । माता रीठ–प्रबल युद्ध, प्रचण्ड प्रहार ।

४ बराळा–लपटें । कराळा–भीषण । झाळा–ज्वलित । अताळा–निर्विलम्ब, सत्वरता से । बिछूटै–छूटे, चले । तई–तब वैरी । खेत्रपाळा–क्षेत्रपाल, भैरव । मंडे–करने लगे । बैताळा–बैताल । मदाळा–उन्मत । दताळा–हाथी । काळा–श्यामल । नेजाळा–ध्वजधारी अथवा निशान वाले, भालाधारी । सुडाळा–शुण्ड वाले, हाथी । बाधचाळा–वस्त्राञ्चल पकड कर, पक्ति बद्ध हो कर । कीतावाळा–कीर्तिसिंह वाले ने, राजराणा रायसिंह ने । आछटे–प्रहार करे । बाणास–तलवार ।

५ सिधानाद रोडे–रणसिंगा वाद्य बजवाता हुआ । धूस–धूसा वादित्र । त्रिविध सेना–गज, अश्व और पैदल सेना को । धजा–घोडो । गजा–हाथियो । गोडे–लुढकाता है । सात्रवा–शत्रुओ के । बिछोडे कंध–स्कंध काटता, कधो पर से सिरों को छिन्न करता । अरोडे–जबरदस्त वीर । जंगी हौदा–युद्धार्थ निर्मित हौदे । छाकिया–मस्त, छके हुए । जजीर–लोह शृंखला, कवच, हाथी की लोह झूलें ।

प्रेत भूता बाज डाक हाक धूता काळ पोरा,
ताबूता सतारे हले आहूता तमाम ।
कटारा खजरा छुरा कैमरा दुधारा कूता,
सूर धीरा राजपूता घुमायौ सग्राम ।।६।।

रत्था परी जुत्था माळ अवरी समत्थां रोळै,
लूथ वत्था हुवै ईस मत्था सूर लैण ।
भारत्थां राखवा कत्था पत्था जेम बाघ भूरौ,
श्री हत्था आछटे खाग दूजौ चद्रसैण ।।७।।

गळा गीध गूद भखै उडै कै अत्राळा ग्रहै,
कराळा वराळा झाळां सेलाळा करद ।
तूटै करम्माळा प्रळै काळा आग झाळा तेम,
दताळा त्रमाळा खावै मदाळा दुरद्द ।।८।।

---

६ वाज–ध्वनित हो। डाक–डमरू, ढाक वादित्र। हाक–हल्ला। घूता–दुघर्पवीरो, अवधूतो। तावूता–तावूतो। आहूना–आहुति, जलाने के लिए। कैमरा–वाणो की नोको। दुधारा–द्विधारे, वर्छे। कूता–भालो। घुमायौ–किया, रचाया।

७. रत्थापरी–अप्सराएँ रथो पर। जुत्था–यूथ, समूह। माळ–माला। अवरी–अविवाहित। समत्था–समर्थतावालो, मस्तको पर। रोळै–युद्ध। लूथ वत्था–गुत्थमगुत्थ। ईस–महादेव। मत्था–मस्तक। लैण–लेने के लिए। भारत्था–युद्धो की। कत्था–कथाएँ। पत्था–पार्थ, अर्जुन। वाघ भूरौ–बब्बर, सिंह। श्री हत्थां–अपने हाथो से। आछटे–पछाट दे। खाग–खड्ग। दूजौ–द्वितीय।

८ गळा–माम। गूद–मज्जा। भखै–भक्षण करते हैं। अत्राळा ग्रहै–आते पजो मे पकडे हुए। वराळा झाळां–तोपो की भयकर ज्वाला। मेलाळा–भाले। करद–नलवार। करम्माळा–तलवार। प्रळैकाळा–प्रलयकालीन। आग झाळा–अग्नि ज्वाला। दताळा–दातो वाले हाथी। त्रमाळा–विक्षिप्त हुए चक्कर काटते हैं। मदाळा दुरद्द–उन्मत्त गजराज।

भडक्कै दुग्रांसा सेल तमासा सपेखै भाण,
अच्छरा हुलासा हास नारद्दा उमास ।
राज रौ भरोसा जिसौ जाणता गरीठ रासा,
उभै पासा बग्गा तासा तोलियौ अकास ॥९॥

ऊघडी जरद्दा कडी खडी चडी खेल ईखै,
रत्था चढी भडी भडो वरै सूरा रभ ।
साकडी बणन्ता घडी वाकडी बजावै सार,
खळा वडी वडी कीधी झाले अडी खभ ॥१०॥

ताजे श्रोण झल्ले चडी छाजे आसमान ताम,
जाझै हेत वारगना वरै सूरा जाम ।
ओटपा जलूस बाना गाजै रायसिंघ ऊभौ,
देखै जोम भाजै अरी अद्राजे दमाम ॥११॥

---

९ दुग्रासा–दोनो ओर से । सेल–भाले । सपेखै–देखने लगा । भाण–भानु, सूर्य । अच्छरा–अप्सराएँ । हुलासा–आनन्दातिरेक मे । हास–हास्य । उमास–उत्कठित । गरीठ–महाप्रबल । रासा–हे रायसिंह । उभै पासा–दोनो ओर से । बग्गा तासा–तासा नामक वादित्र के बजते ही ।

१० ऊघडी–खुली, टूट गई । जरद्दा कडी–कवचो की कडिया । ईखै–देखती है । रत्था–विमानो पर । वरै–वरण करती है । सूरा–वीरो का । साकडी–सकीर्ण, सकटकालीन । वाकडी–विकट । सार–तलवार । वजावै–चलाता है, वार करता है । वडी वडी–टुकडे टुकडे, बोटी बोटी । झाले–झालावीर रायसिंह ने । अडी खभ–अडिग, जोरावर ।

११ ताजे–सद्य । श्रोण–रुधिर । झल्ले–लेकर पीने लगी । छाजे–आच्छादित, शोभा पावे । ताम–तव, उस समय । जाझै–सघन । हेत–प्रेम । वारगनां–अप्सराएँ । वरै–पति रूप मे प्राप्त करने लगीं । ओटपा–अद्भुत । बाना–वेशभूषा, ढग । ऊभौ–खडा हुआ । भाजै–भागते हैं । अरी–वैरी । अद्राजे–पर्वत, गर्जन । दमाम–नगाडे, दुंदुभि ।

लगै लोह अगे तूर मरैठा जमी तै लोटै,
ढळक्के करी तै रेजा लाल नेंजा ढाल ।
आप पाण हीते रासौ खळा दळा घाय ऊभौ,
खत्री जुद्ध वीते आयौ अठी ते खुसाल ॥१२॥

पूर श्रोण धारा चण्डी आमखा आहार पखा,
तई जैजैकार जपै सादडी तखत्त ।
लागुवा हजारा भाज आवियौ धगारां लागौ,
वाजता नगारा रासौ राण रै वखत्त ॥१३॥

---

१२ लगै लोह–शस्त्राघातो से घायल हुए। मरैठा–मरहठे। जमी तै लोटै–भूमि पर पडे लुढकते हैं। ढळक्के–लटकते हैं, भूलते हैं। करी तै–हाथियो पर से। रेजा लाल–लाल रग की खादी की भूलें अथवा खादी के बने लाल रंग के झडे। नेजा–निशान। ढाल–नीचे की ओर, ढालें। पाण–बल, साहस। हीते–स्थान का नाम जहा युद्ध लडा गया था। घाय ऊभौ–घायल हो कर खडा, ध्वस करके खडा रहा। खत्री–क्षत्रिय रायसिह। वीते–समाप्त होने के बाद। अठीते–इधर से।

१३ पूर–पूर्णरूपेण तृप्त कर। आमखा–आमिषभक्षी। आहार–भोजन। पखा–पंखधारियो। जपै–बोलते है। सादडी–स्थान का नाम। लागुवा–वैरियों। भाज–नाश कर। धगारा लागौ–आसमान को स्पर्श करता हुआ। वाजता–घोष करते।

१३४. गीत रावल अमरसिंघ भाटी जैसलमेर रौ

जळाबौळ सुं वगतरा जोध वहता गया,
सुरा अचरज थयौ नरा सुभायि ।
रवद दळ रहिच रावळ किया लाल रग,
मही जळ मेळि महराण मायि ॥१॥
तरग बगतर जरद पूर पाणि तणै,
सुर सळिता जतै कियौ सग्राम ।
अगर उलटि पालटि बरण थट उन्हैरण,
बरण बचि माछळा गळै बरियांम ॥२॥
तगर असपति घड़ा पूर पाणी तणै,
चोगणा सार सुत दाति चाढै ।
माछळा काछिबा तणा पेटा महे,
कीर बगतर वरि चीर काढै ॥३॥

---

१३४ गीतसार-कवि ने उपराकित गीत मे जैसलमेर के शासक रावल अमरसिंह द्वारा समुद्रतट (पजाब प्रान्त) जो युद्ध किया था, उसका वर्णन किया है। वह कहता है कि रावल अमरसिंह ने शत्रुओ के चमकते हुए कवच जल मे वहा दिए। उन्हे यो वहते देख कर देवताओ को भी मनुष्यो की भाति आश्चर्य हुआ ।

---

१ जळावौळ-चमकते हुए रग के, जल प्लावित । बगतरा-कवचो । जोध-योद्धा । वहता गया-प्रवाह मे वहकर गए। सुरा-देवताओ ने । थयौ-हुआ । नरा सुभायि-मनुष्य की भाति, मानव स्वभाव की तरह । रवद दळ-मुसलमानो की फौज । रहचि-नाश कर, सहार । लाल रग-लोहू पूर्ण । मही जळ-पृथ्वी पर का जल । मेळि-मिला कर । महराण-महार्णव, महासागर । मायि-मे ।

२ जरद-कवच पीत रग। पूर पाणी-पूर्ण जल । सुर सळिता-देवनदी, गगा तट पर। उलटि पालटि-उलट पुलट । वरण-वर्ण । थट-समूह । उन्हैरण-उस युद्ध । बरण-जल, रग । माछळा-मत्स्य । गळै-निगलते हैं। वरियाम-श्रेष्ठ वीर ।

३ असपति घडा-शाही सेना। सार-लोहा, अस्त्र शस्त्र । दाति चाढै-सामने छाती भिड कर। काछिवा-कच्छपो के। पेटा-उदरो। कीर-मछुए, केवट । चीर-विदीर्ण कर। काढै-बाहर निकालते हैं।

कटक ऊवाणिया फाडि केवाणिया,
पाणिया विचि वरियाम पाड़ै ।
करचा रहचक कलियाण रा वीर कर,
विकै वगतर सिलै कीर वाड़ै ॥४॥

१३५. गीत मूलराज सौलंखी री कटारी रौ

वौह दीह हुवा मौ लघण वैठा, रहे पेट करि हस रहै ।
मूळवै मौ पडियाळ म राखी, काढी वाहि जमडाढ कहै ॥१॥
तरवारि तणौ रस लेवा दे तू, ऊपर आया घणा अरि ।
कमळ ढळता समौ कटारी, काढू नह तौ रीस करि ॥२॥
वाहि तरवारि घणा दळ विहडे, घण झूझार मिळत घण घाइ ।
हाथ कटारी किया हेकठा, रुण्ड पड़ै सोलखी राइ ॥३॥

---

१३५ गीतसार—उपरोक्त गीत सोलकी वीर मूलराज की कटारी प्रहार पर कथित है । गीत मे मूलराज द्वारा शिरच्छेदन के पश्चात कटार से शत्रुओ का नाश करते हुए गज सेना तक जा पहुचने का वर्णन किया गया है ।

---

४ कटक—सेना । ऊवाणिया—प्रहार कर, वार के लिए शस्त्र उठाए हुए, नग्न । फाडि—विदीर्ण कर । केवाणिया—तलवारो से । पाणिया—जलराशि । पाडै—गिरा दिए । करचा—किया । रहचक—विकट युद्ध । कलियाण रा—कल्याणसिह के । सिलै—सिलह । कीर वाडै—मल्लाहो के मुहल्लो मे ।

१. वौह दीह—बहुत दिन । लघण वैठा—उपवास मे वैठे वैठे । पेट—उदर, पेट । हस—प्राण । मूळवै—मूलराज । पडियाळ—तलवार । म—मत । काढी—निकालकर । वाही—प्रहार की । जमदाढ—कटारी ।

२ रस लेवा दे—आनन्द लेने दें । ऊपर आया—हमला कर ऊपर चढ आये । घणा अरि—बहुत से वैरी । कमळ—सिर । ढळता—कटकर पडते । समौ—समय । काढू—निकालू । रीस—रोष, क्रोध ।

३. वाहि—चला कर, प्रहार कर । विहडे—सहारे, मार डाले । झूझार—जूझार, सिर कटने पर युद्ध लडने वाला योद्धा । घाइ—घायल । हेकठा—एकत्र । रुण्ड—कटा हुआ मस्तक । सोलखी राइ—सोलकियो के राजा अथवा मुखिया ।

फर फर अफर फौजा फुरळतौ गैघड लग मूळराज गयौ ।
मळत खवा अरि बीछडतै माथै, करग कटारी मेळ कियो ।।४।।

मैगळ मिरिळपि मोताहळ, वप सागावत दुवाडे बाढ ।
मूळवै मेहले मरस माही रण, जाण जकौ भारवै जस राढ ।।५।।

परै जमडाढ हजारा पूगो, देबी यम बरदान दियौ ।
सत थारौ धनौ सोलखी, हाथ धनौ धन तूझ हियौ ।।६।।

१३६. गीत लालसिंघ सौलंखी री वीरता रौ

अडियौ जाय उजैणि के सनेस करेबा कदळ,
सूर चाळक कियौ खळक साखी ।
आप उतन चाढि अळहणपुरा,
लालसिंघ बळा री लाज राखी ।।१।।

---

१३६ गीतसार–गीत रचयिता ने उपर्युक्त गीत मे वीर लालसिंह सोलखी क्षत्रिय द्वारा वादशाह की रक्षार्थ विद्रोही मुसलमानो के दमन हेतु लडे गए युद्ध मे दिखाई गई वीरता का वर्णन किया है। वह बूदी के हाडा नरेश की ओर से उज्जयिनी के युद्ध मे भी लडा था।

---

४ फर फर–घूम घूम कर। अफर–पीछे न मुड कर। फुरळतौ–छिन्नभिन्न करता, बिखेरता हुआ। गै घड–गज सेना। लग–तक। मळत–मिलते। खवा–स्कध, स्कधमूल। बीछडतै–कट कर अलग होते। माथै–सिर। करग–हाथ। मेळ कियौ–मिलन किया।

५ मैगळ–हाथी। मिरळपि–रोद कर, सहार कर। मोताहळ–मुक्ताफल, मोती। वप–वपु, शरीर। सागावत–सग्रामसिंह का पुत्र मूलराज। दुवाडे–दिलवाकर। वाढ–धार। जकौ–वह, जो। जस राढ–युद्ध कीर्ति।

६ परैं–उस पार, दूर तक। जमडाढ–कटारी। पूगी–पहुची, मारे। थारौ–तेरा। धनौ–धन्य है। हियौ–हृदय।

१ अडियौ जाय–मुकाविले के लिए जा डटा। कदळ–युद्ध। चाळक–चालुक्य, सोलकी क्षत्रिय ने। खळक–ससार। साखी–साक्षी। उतन–वतन, मातृभूमि। अलहणपुरा–अलहणपुर पाटन पर चालुक्यो का शासन रहने के कारण गीतनायक के लिए कहा गया है। बळा री–आडाबळा की, बूदी रियासत की।

चगथा चवहाणा पठाणा रीठ पडि,
साहि आलम थियौ सवळ सासै ।
उरडियौ लाल खुरसाणिया ऊपरैं,
कडकि वीजळ पडी जाणि कासै ॥२॥

विया सादूळ सादूळ गति साभळो,
बचायौ दिलीसुर पीर वेगा ।
रोडता थका भजेडि नाख्या मुगळ,
तखत तोडि नाख्यौ तिकै मारि तेगा ॥३॥

हको हको वार हरियद रा हळाहळ,
खाग अ· ·· ·· ·· ·· ··· ···· वार खारी ।
खाग असराळ दोऊ तखत विच खळकिया,
थाळ वागौ भला वार थारी ॥४॥

---

२ चगथ–चिगताई वश के मुगलो। रीठ–धमामान युद्ध, प्रहार। थियौ–हुआ। सासै–शकाकुल। उरडियौ–वलपूर्वक आगे धसा। लाल–लालसिंह। खुरसाणिया–खुरासान वालो पर, मुसलमानो पर। कडकि–कडड ध्वनि कर, गर्जती हुई। वीजळ–दामिनी। कासै–काश्य धातु के पात्र पर, ऐसी प्रसिद्धि है कि काश्य पात्र पर विजली गिर जाती है, इसलिए वर्षाकाल मे उसे मकान से वाहर नही रखते हैं।

३ विया सादूळ–द्वितीय शार्दूलसिंह। सादूळ–शार्दूल, सिंह। वेगा–वेग पदवी वाले मुसलमानो, वेग के साथ। रोडता थका–कुचलते हुए, नगाडे वजाते हुए। भभेडि नाख्या–भकभोर डाले। नाख्यौ–गिरा दिया।

४ खारी–विकट, कठोर। खाग–तलवार। असराळ–जवरदस्त, आतक, भयकर। खळकिया–छलके, वहना। थाळ वागौ–थाल वजा, पुत्र जन्म पर थाल वजाने का रिवाजहै। वार–समय, वेला। थारी–तेरी, तुम्हारी।

१३७. गीत नागेटो अमरसिंघ गरड़वा रौ

धर वावी काज पिता सुत विखधर, दळ वादी कूरम दुरति ।
आमेरा वहता खग आखा, ताखा उडि लागा तुरति ॥१॥

ओघा डसण वाविया कारण, पति जोधा आमेर पति ।
जूना नाग तणा जोगिया कज, छौना लागा खाग छति ॥२॥

पूंगी तूर नादिया पारंभ, जुडिया वादी भमग जुवा ।
पौयण डसण लगादी पिसणा, अँम तरादो घणा मुवा ॥३॥

---

१३७ गीतसार—उपर्युक्त गीत मे कवि ने योद्धा अमरसिंह के आमेर के कछवाहो और मारवाड के राठौड नरेशो की सम्मिलित सेना से अमरसिंह के निवास स्थान पर आक्रमण करने पर उनसे लडने का वर्णन किया है। कवि ने लिखा है कि वावी रूपी दुर्ग पर अक्षत रूपी शस्त्रो की मार पडने पर विपधर रूपी अमरसिंह और उसका पुत्र दोनो तक्षक नाग की भांति उड उड कर प्रतिद्वन्द्वियो का नाश करने लगे।

---

१ धर वावी काज—भूमि रूपी वावी के निमित्त। विखधर—विषधर, सर्प। दळ वादी—विपक्षी सैनिक। कूरम—कछवाहे। दुरति—दुरत, प्रचण्ड। आमेरा—कछवाहो के। वहता खग आखा—खड्ग रूपी अक्षतो के प्रहार होते समय। ताखा—तक्षक नाग।

२ डसण—काटने के लिए, डक लगाने हेतु। जूना—प्राचीन, वृद्ध। छौना—वत्स, पुत्र खाग—तलवार। छति—पृथ्वी।

३ पूंगी—पूंगी की ध्वनि पर सर्प मुग्ध हो कर झूमने लग जाता है। तूर—तूर्य बाजा। नादिया—नाद करने वालो। पारंभ—प्रारंभ। जुडिया—भिडे। भमग—सर्प। जुवा—पृथक, युवा। पोयण—सर्प (?)। पिसणा—वैरियो के। घणा—बहुत।

भैरु नवल मानसा भारथ, धूहड कँवर अचड अ्रत धारि ।
दारण अमर तणा जतरादी, मारणहार राखिया मारि ॥४॥

आखा खागि फुणा अवभाटा, कटिया डसिया अचभ किसौ ।
बादी नाग अमरपुर वसिया, वात जुगादी राखि वसौ ॥५॥

१३८. गीत दुरजणसाल सोडा रौ जुध रौ

वकिया पडै जोध खळकिया वगतर, वाढ वळकिया चहूवळा ।
हुवियौ कटक अवेळो हावौ, खावौ आयौ सीस खळा ॥१॥

---

१३८ गीतसार–उपराकित गीत सोढा शाखा के क्षत्रिय योद्धा दुर्जनशाल की युद्ध वीरता का वोधक है। दुर्जनशाल ने सिरोही पर राठौडो के आक्रमण करने पर उनसे युद्ध लडा था। कवि कहता है कि राठौडो ने जव अचानक सिरोही पर धावा किया तव उस विकट समय मे वीर दुर्जनशाल उनके मुकाविले मे सामने आया और शत्रुओ का सहार कर उसने अपने पुराने वैर का वदला लिया।

---

४. भैरू······ मानसा–भैरोसिंह, नवलसिंह और मानसिंह ने। भारथ–युद्ध, भारतसिंह। कँवर–कुवर, धनुष। अचड–अटल, कीर्ति। अ्रतवारि–मरने का निश्चय कर। दारण–वहादुर। अमर तणा–अमरसिंह के पुत्र। मारणहार–आक्रान्ताओ को।

५ आखा–अक्षत। फुणा–फनो। अवभाटा–प्रहारो, चोटो। डसिया–डसने का भाव, डसने पर। किसौ–कैसा। अमरपुर–स्वर्ग लोक मे। जुगादी–युग युग से प्रचलित। वसौ–जीवित, वसुधा पर।

१ जोध–योद्धा। खळकिया–खडकना, खनकते। वाढ–तलवारो की धाराएँ, मारने काटने। वळकिया– (?)। चहुवळा–चौतरफ। हुवियौ–लडा, प्रहार किया। कटक–सेना। अवेळो–असमय। खावौ–वीर। सीसखळा–शत्रुओ पर, दुर्जनो के सिर पर।

वैर बाराह कमध धर बेधै, अणभग अरि कोटा ऊथाळ ।
अटका सबळ ऊपरै आयौ, सोहडा कळळत दुरजणसाल ॥२॥
हळवळ भडा हैमरा हूकळ, जाभै साथे छडाळा भूल ।
बेहगा ढूल पडै सिवबाडी, माधावत बैठियौ कळ मूळ ॥३॥
बोख बैडाण मारका वूपरै, खाग बजाडै भूप खरौ ।
बळियौ वैर सनिहा बाळै, हाक बहादर दुरग हरौ ॥४॥

१३६. गीत सांवलदास डाबर रौ

मगा चारि फौजा लगा जगा बीराण मे,
चगाहेली सकति त्यार चहकै ।
वगा रिणतूर सोध लगा बाढिया,
मह तरा खगा खसबोह महकै ॥१॥

---

१३६ गीतसार–उपर्युक्त गीत मे वीर सावलदास डावर द्वारा लडे गए युद्ध का वर्णन किया गया है । गीतनायक को बडनगर के स्वामी फतहसिंह का पुत्र बतलाया गया है । गीत मे शत्रुओ द्वारा चारो ओर से जाने पर उसने शाही सेना पर आक्रमण कर यश प्राप्त किया था ।

---

२ वैर वाराह–प्रतिशोध लेने वाला, वैर शोधन करने वाला । कमध–राठौड । वेधै–युद्ध । अणभग–अखड, वीर । अरि कोटा–शत्रुओ के दुर्गों को । ऊथाल–गिराने वाला, ढाहने वाला । अटका–रोक, बाधा । सबळ–सशक्त,दृढ । सोहडा–योद्धाओ । कळळत–कोलाहल होते समय ।

३ हलवळ–हलचल । भडा–योद्धाओ । हैमरा–घोडे की । हूकळ–हिनहिनाट, कोलाहल । जाभै–सघन, गहरे । छडाळा–भालो, भालेधारी योद्धा । भूल–समूह । बेहगा–पक्षियो, विहगो । ढूल–समूह, पक्ति । सिवबाडी–सिरोही । माधावत–माधवसिंह का पुत्र । कळमूळ–युद्ध का मूल, योद्धा ।

४ बैडाण–हाथी, घोडा । मारका–आक्रामक, योद्धा । वूपरै–ऊपर । खाग–खड्ग । बजाडै–वजाता है, चलाता है, वार करता है । खरौ–पक्का, सच्चा, निश्चयी । बळियो–लौटा, लिया, पुन । बाळै–वदला लिया । दुरग हरौ–दुर्गादास का वशज या पौत्र ।

१ मगा–मार्गों पर । जगा–युद्धो । चगाहेली–यशगान की ध्वनि (?) । सकति–शक्ति, दुर्गा । चहकै–कहकहे लगाए । बगा–बजने पर । रिणतूर–रणतूर्य्य । तरवरा–तरुओ । महकै–फैले, सुरभित हुए ।

साह री कावळी घडा सिरि सावळा,
भटापडि वावळी रोपि भडा ।
अरगचा वौह तूटै विना आवळी,
खुलै वासवळी तेण खडा ॥२॥
अरावा मौहरि वडनगर फताउत,
पसर यिम धाय समहर पतीजा ।
मेछ भीना अतर समर विच मूछतां,
वगर खागा पड़ै अगर वीजा ॥३॥
धूधडै फतै पाई परम धारिया,
थारिया हौड किण होण थावै ।
मीरजा हवायी तरा दिवस मारिया,
अजै तरवारिया वास आवै ॥४॥

१४०. गीत सेरखांन पठान रा जुद्ध रौ

सिर भूर कियौ खागे चड सेरैं, सास प्रामियौ जोह सगाथ ।
आदम गयौ धूणतो उतवग, हूरा गई मसळती हाथ ॥१॥

---

१४० गीतसार—उपर्युक्त गीत शेरखांन पठान द्वारा युद्ध भूमि मे वीर गति प्राप्त करने विपयक है। कवि कहता है कि शेरखांन ने युद्ध मे अपने शीश के छोटे छोटे टुकडे कर छितरा दिये जिससे मुण्डमाला प्रेमी शिव विना माला तथा अप्सराएँ विना वर के निराश होकर अपने लोक लौट गई।

---

२ कावळी घडा—विकट सेना। सावल—सावळादास। भटापडि—सत्वरता से। वावळी—उन्मत्त। अगरचा—अगर के। वौह—वहुत। आवळी—सुसज्जित। वासावळी—सुगन्धि।
३ अरावा—छोटी तोपें। वडनगर—वडनगर स्थान का नाम। फताउत—फतहसिंह के पुत्र सावलदास। पसर—फैल कर। समहर—युद्ध। मेछ—मुसलमान। अतर—इत्र। मूछता—मारते। वगर—फलाकुर (?)।
४ धूवडै—निश्चित ही। हौड—स्पर्द्धा, विवाद। वास—सुगंधि।
१ भूर कियौ—कण कण कर दिया, छोटे छोटे टुकडे। खागै चड—खडग धारा के सामने चढकर। सेरैं—गीतनायक शेरखांन ने। प्रामियौ—प्राप्त किया, मिला। सगाथ—साथियो। आदम—शिव। धूणतो—धुनता हुआ। उतवग—उत्तमाग, शीश। हूरा—मुसलमान अप्सराएँ। मसळती हाथ—हाथ मलती हुई, पश्चाताप करती।

कण कण कमळ कियौ अवदळ को, पनह खुहाय थयौ हस पिण ।
तसवी विण तिनयण गयौ तणि, वेगम रथ गौ खसम विण ।।२।।
कमळ पठाण कियौ चढ कुटकै, मेळी जौति रहमाण मझार ।
गौरावर सिणगार खपेगौ, निवर गई वर चगी नार ।।३।।

—पदमा सादुवण रौ कह्यौ

१४१. गीत भरतपुर किला पर जाटां अंग्रेजां रौ

हूणो हूतो सो होगयौ गल्ला सुणाया हुवै की हमैं,
कीधौ नीवावता धाया रग मे कुरग ।
जाटा नै दूर सू गौरा दूर बीणी दै दै जोता,
दादू वाळा होता तो न तूटतौ दुरग ।।१।।

---

१४१ गीतसार—उपरांकित गीत मे भरतपुर के दुर्ग पर अग्रेजो के आक्रमण की ओर सकेत किया गया है । उस युद्ध मे भरतपुर नरेश के राजगुरु नीम्बार्क पीठ के महत द्वारा किले के किवाड खोलने तथा अग्रेजो से मिल जाने की भर्त्सना तथा दादु पथ वालो की स्वामि भक्ति की श्लाघा की गई है । गीत प्रसिद्ध कवि बाकीदास आशिया रचित है ।

---

२ कमळ—मस्तक । अवदल को—अबदल (अब्दुला) खान का पुत्र शेरखाँन । थयौ—हुआ । हस—प्राण । पिण—परन्तु (?) । तसवी—मुण्डमाला । विण—बिना । तिनयण—त्रिलोचन, महादेव । वेगम रथ—हूरो का विमान । गौ—गया । खसम—खाविन्द, पति ।

३ कमळ—सिर । पठाण—पठान ने, गीतनायक शेरखाँन ने । कुटकै—छोटे छोटे टुकडे । मेळी—मिलाई । जौति—ज्योति । मझार—मे । गोरावर—गौरी पति, शिव । खपेगौ—परेशान होकर निराश लौट कर गया । निवर—बिना पति प्राप्त किए । वर—वराकाक्षिणी, दुलहिन । चगी नार—सुन्दर स्त्री, अप्सरा ।

१ हूणो हूतो सो हो गयो—जो होना था वह तो हो गया । गल्ला—गल्प, वार्ते, डींगें । सुणाया—सुनाने से । हुवै की हमैं—अब क्या हुवे । नीवावता—नीम्बार्क सम्प्रदाय वाले । धाया—धनी । रग मे कुरग—रग मे भग, उत्सव मे निराशा । गौरा—अग्रेज । दूरवीणी—दूरवीन से । जोता—देखा करते थे, निकट आने का साहस नही होता था । दादू वाळा—दादू पथ वाले । होता—उनके स्थान पर होते । न तूटतौ—नही टूटता, अधिकार मे नही जा पाता । दुरग—किला ।

सोर झाळा ऊठता बाजता खगा भार साहे,
गाजता घोर ज्यू गोळा वूठता गरम ।
प्रथी सारी कहै माय होता जो दयाल पथी,
भरथानेर रौ नथी जावतौ भरम ॥२॥

बैरागियां सलेमाबाद रा काम कीधौ बुरौ,
घुरौ या ऊपरा राम काळ री गुरज ।
नागा जि नराणै वाळा राखतौ वो युद्ध नैडा,
भरत्याण वाळौ न गाजतौ भुरज ॥३॥

दादू रा आबेर चाडवे केई वार सीस दीधा,
कूरमा री धरा रा नि…… कीधा कोट ।
गुरु व्है सुणाया नाम कठी बधी जाळ गळे,
फिरगी सू साधी तणा नीबावतां फोट ॥४॥

—बाकीदास आसिया रौ कह्यौ

---

२ सोर झाळा—बारूद की ज्वाला, तोपें। ऊठता—उठते, प्रज्ज्वलित होते। बाजता—चलते। भार साहे—दायित्व सम्हाले हुए। घोर—भयानक। वूठता—बरसते। गरम—गर्म, तप्त। माय—भीतर। भरत्थानेर—भरतपुर। नथी—नही। भरम—भ्रम, भेद, रहस्य।

३ सलेमाबाद रा—सलेमाबाद वालो ने, नीम्बार्क पीठ वालो ने। घुरौ—घोष करो, गर्जना करो। काळ री गुरज—यमराज की गदा। नागा—दादू पथी। नराणै वाळा—नराणा स्थान वाले, दादूजी का प्रमुख स्थान नराणे मे था, जो दादू द्वारा कहलाता है। नैडा—निकट। भरथांण—भरतपुर। न गाजतो—टूटता नही। भुरज—किला।

४ चाड—सहायतार्थ। कूरमा री—कछवाहो की। कंठी बधी—कठी बांधकर शिष्य बनाना। गळै—कण्ठो। फिरंगी—अग्रेज। साधी—साधा, किया, जोडा।

परिशिष्ट १

ऐतिहासिक टिप्पणियां

पृ. १२ गीत ४ राजा मानसिंघ कछवाहा आमेर—कछवाहो के राज्य आमेर के शासक भगवन्तदास का उत्तराधिकारी राजा मानसिंह कछवाहा। राजा मानसिंह सन् १५६२ ई० मे अपने पिता के साथ बादशाह अकबर की सेवा मे पहुचे थे। बादशाह के सन् १५७२ ई के गुजरात के आक्रमण मे मानसिंह अकबर के साथ थे और शेरखाँ फौलादी को पराजित कर प्रसिद्धि प्राप्त की थी। तदनन्तर वे महाराना प्रतापसिंह उदयपुर, महारावल आशकर्ण डूगरपुर और काबुल के रूशानी जाति के लुटेरो का दमन करने पर नियुक्त हुए। सन् १५८९ ई मे राजा भगवन्तदास का लाहौर मे निधन हो जाने पर मानसिंह उनके सिंहासन पर बैठे। तब इन्हे राजा की पदवी और पाच हजारी का मन्सब मिला। बादशाह ने राजा मानसिंह को विहार मे जागीर प्रदान कर वहाँ का शासक नियुक्त किया तब उन्होने वहा के पूर्णमल कधोरिया को परास्त कर शाही सेवक बनाया। मानसिंह ने पटना के रणपति चरवा, उडीसा के झपटराय, बगाल के कतलूखाँ लोहानी, रोहितास के विद्रोह तथा हल्दीघाट के प्रसिद्ध युद्ध मे विजय प्राप्त की थी। मानसिंह बादशाह अकबर के प्रमुख और प्रभावशाली सेनानायक थे। उन्होने अकबर और जहांगीर के शासन काल मे सल्तनत के अनेक प्रान्तो का शासन सम्हाला और प्रशसा प्राप्त की। गीत में मानसिंह द्वारा पठानो पर विजय प्राप्त करने का वर्णन है। मानसिंह ने सन् १५७४ ई मे बिहार मे दाऊदखाँन पठान को साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने पर हाजीपुर के युद्ध मे हराया था। सभवत दाऊदखाँ को पराजित करने की प्रशंसा गीत मे की गई है। वह सन् १६१४ जुलाई ६ के दिन दक्षिण प्रान्त के इलीचपुर मे मृत्यु को प्राप्त हुआ। वह उत्तरोत्तर वृद्धि प्राप्त कर सात हजारी के मन्सब तक पहुच गया था जो उस समय मे अन्य किसी हिन्दू राजा को नही मिला था।

मुगल दरवार भा १ पृ २९१–३०१। अलवर व जयपुर
राज्य का इतिहास पृ ७२,७७। राजा मानसिंह के झूलने छद।

पृ १३ गीत ५ मानसिंघ कछवाहा आमेर—आमेर का शासक राजा मानसिंह भगवन्तदासोत कछवाहा। गीत मे मानसिंह द्वारा रोहिताश, दक्षिण प्रान्त और काबुल के विद्रोहो को शान्त करने का वर्णन किया गया है। विशेष पृ १२ गीत ४ की टिप्पणी देखें।

पृ. १४ गीत ६ राजा माधोसिंघ कछवाहा म्रजवगढ भानगढ—आमेर के राजा भगवन्तदास का पुत्र और राजा मानसिंह का भाई राजा माधवसिंह कछवाहा। राजा माधवसिंह मेवात (अलवर राज्यान्तर्गत) भाणगढ राज्य का स्वामी था। वादशाह अकवर ने जव मिर्जा इब्राहीम को दण्ड देने के लिए अहमदनगर के सरनाल स्थान पर आक्रमण किया तव राजा माधवसिंह भी वादशाह के साथ था। कश्मीर पर मिर्जा शाहरुख के नेतृत्व मे प्रेपित शाही सेना मे इनकी भी नियुक्ति हुई थी। इन्होने वहा के जमीदार याकूव को परास्त करने मे साहस का परिचय दिया था। तदनन्तर वादशाह अकवर के निधन पर शाहजादे सलीम को सिहासन पर बैठाने वालो मे राजा रायसल और राजा माधवसिंह प्रमुख हिन्दू राजा थे। जहाँगीर के शासन काल मे तीन हजारी दो हजार सवार के मन्सव तक इनकी उन्नति हुई थी। राजा माधवसिंह के पुत्र शत्रुशाल और उग्रसेन भी शाही मन्सबदार थे। शत्रुशाल शाही विद्रोही खानजहाँ लोदी तथा जूझारसिंह बुंदेला से लडता हुआ अपने पुत्र भीमसिंह और आनन्दसिंह सहित रणखेत रहा था।

—जयपुर व अलवर राज्यो का इतिहास पृ २४६। मुगल दरवार पृ २८६–२८७। Genedogical Table of kachawahas Sheet No 3

पृ. १५ गीत ७ राजा जगन्नाथ कछवाहा—आमेर के राजा भारमल्ल का पुत्र राजा जगन्नाथ कछवाहा। राजा जगन्नाथ की जागीर मे रणथभौर का प्रान्त था। प्रारभ मे वह अजमेर के शाही प्रान्त पति मिर्जा शर्फुद्दीन हुसैन के पास राजसिंह और खंगार कछवाहा सहित वधन स्वरूप रहा। तदनन्तर राजा भारमल्ल की प्रार्थना पर वादशाह अकवर ने इनकी 'वधन मुक्ति का आदेश दिया। जव महाराना प्रतापसिंह ने शाही सेना को मेवाड में कई स्थानो पर हराकर शाही सैनिक चौकियो पर अधिकार कर लिया तव महाराना को दवाने के लिए राजा जगन्नाथ को भेजा गया। इसने प्रसिद्ध वीर राव जयमल के पराक्रमी पुत्र रामदास मेडतिया को युद्ध मे मारा। तदुपरान्त वह पञ्जाव, कावुल, मेवाड और मालवा के युद्धो मे शाही सेना मे रह कर लडता रहा। वादशाह जहाँगीर की मेवाड के विरुद्ध की गई चढाइयो मे भाग लिया। राव दलपत वीकानेर को दण्ड देने के लिए भी भेजा गया था। जहाँगीर के शासन काल मे वह पाच हजारी दो हजार सवार के मन्सव को प्राप्त कर चुका था। गीत मे सवत् १६४१ वि० मे महाराना प्रतापसिंह को पहाडो की शरण लेने के लिए वाध्य करने का वर्णन है।

मुगल दरवार भाग १ पृ. १४८, १५०, १५१। मेवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ ८६।

पृ. १६ गीत ८ गोयंददास माधाणी कछवाहा—राजा माधवसिंह कछवाहा भानगढ के शज खीवराज कछवाहा का पुत्र गोयददास कछवाहा। गीत मे गोयददास द्वारा दक्षिण ान्त के युद्ध मे लडने का वर्णन है। किन्तु आधार स्त्रोतो से पता नही चलता कि वह किस विरुद्ध किस स्थान पर लडा था।

पृ १७ गीत ६ कमा माधाणी कछवाहा—राजा माधवसिंह कछवाहा के पौत्र पेमसिंह ा पुत्र मोहकमसिंह कछवाहा। पेमसिंह खानजहाँ के विरुद्ध के युद्ध मे वीरगति को प्राप्त आ था। गीत मे मोहकमसिंह के शत्रु-नारियो पर व्याप्त आतक का वर्णन है।

मुहता नैणासी री ख्यात भाग १ पृ० २६६

पृ. १८ गीत १० अनोपसिंह कछवाहा री निन्दा रौ—सभवतया महाराजा मानसिंह के ेष्ठ राजकुमार जगतसिंह के पुत्र जूझारसिंह का पुत्र अनूपसिंह कछवाहा। वह शहजादा ुलाकी की सेवा मे पूर्व मे प्रदेश रहा था। फिर सवत् १७१८ के आस पास महाराजा यसिंह प्रथम आमेर की सेवा मे रहा। गीत मे उसके पौत्र के वीरगति प्राप्त करने की ाशसा तथा उसके भाग आने की भर्त्सना की गई है।

मुहता नैणसी री ख्यात भाग १ पृ २६८।
कछवाहो की हस्तलिखित ख्यात।

पृ, १६ गीत ११ राजा जैसिंघ कछवाहा आमेर—आमेर के राजा महासिंह के पुत्र मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा। जयसिंह ने बारह वर्ष की आयु मे एक हजारी पाच सौ वार का मन्सब प्राप्त किया था। तदनुपरान्त शाहजादा पर्वेज के साथ दक्षिण मे नियुक्त ुए। बादशाह शाहजहाँ के सिहासनारूढ होने पर सन् १६२८ ई मे चार हजारी तीन जार सवार के मन्सब से सम्मानित हुए। इसी वर्ष मे आगरा सरकार के महाबन के विद्रोहियो को कासिमखाँ किजवानी के साथ सजा देने पर नियुक्त हुए। बलख के हाकिम नजर मुहम्मदखाँ के विद्रोह का दमन करने के लिए महाबनखाँ खानखानाँ के साथ भेजे गए। सन् १६२६ मे खानेजहाँ लोदी के विरुद्ध दक्षिण प्रदेश मे अबुल हसन तुर्बती सहित भेजे गए। बादशाह शाहजहाँ के द्वारा चार हजारी चार हजार सवार का मन्सब प्राप्त कर भातरी के युद्ध, परेंदा के दुर्ग को घेर कर साहस का परिचय दिया। तदनन्तर शाहजादे शुजा के साथ दक्षिण की चढ़ाई, परेंदा दुर्ग घेरे पर तैनात हुए। तब बादशाह ने प्रसन्न होकर बालाघाट की सूबेदारी प्रदान की। तदनन्तर एक हजारी मन्सब की उन्नति कर शाहू भोसला पर खाँनदौरा के साथ भेजे गए। सन् १६३८ ई मे मिर्जा राजा की पदवी प्राप्त की। सन् १७४० ई मे मुरादबख्श के साथ काबुल प्रान्त मे नियत हुए। सन् १६४१ मे राजा बासू के पुत्र जगतसिंह के विरुद्ध मऊ दुर्ग पर अधिकार करने के लिए अभियान किया। इस विजय की उपलक्ष मे पाँच हजारी पाँच हजार के मन्सब पर

उन्नत हुए तथा उस दुर्ग के अध्यक्ष का पद मिला। फिर शाहजादा दाराशिकोह के साथ कधार पर नियुक्त किए गए। खाँनदोरा के निधन पर सन् १६४४ मे दक्षिण के सूबेदार नियुक्त हुए। तत्पश्चात् औरगजेब के साथ बलख की चढाई पर गए। मन्सब मे वृद्धि पाकर कामाँ पहाडी (भरतपुर) के जाटो के दमन पर गए।

शाहजहाँ की वृद्धता के कारण शाहजादो के उत्तराधिकार के विद्रोह में जयसिंह ने शाहजादा शुजा को पराजित कर भगाया और औरगजेब के पक्ष में दाराशिकोह को पकडने के लिए औरगजेब के साथ रहे।

दाराशिकोह की बन्दी अवस्था मे हत्या के बाद छत्रपति शिवाजी को पराजित करने के लिए नियत हुए। शिवाजी को शाही सेवा के लिए तैयार करने पर इनको सात हजारी सात हजार सवार का मन्सब प्राप्त हुआ। इन्होने बीजापुर के दुर्गों पर विजय प्राप्त की। सन् १६६७ (सवत् १७२३) में बुरहानपुर में इनका निधन होगया।

मिर्जा राजा जैसिंघ की दवावैत। मुगलदरबार भा पृ १५४-१६३

पृ. २० गीत १२ मिरजा राजा जैसिंघ—आमेर के शासक शाही मन्सबदार राजा जयसिह कछवाहा प्रथम। सवत् १६८१ वि. मे हाजीपुर के निकट टोस नदी के तट के युद्ध मे विद्रोही शाहजादे खुरम के पक्षधर राजा भीमसिह सीसोदिया टोडा और शाही योद्धा राजा गजसिह जोधपुर के मुकाबिला हुआ तब गजसिह मिर्जा राजा जयसिह की ओट मे आने पर सुरक्षित रह पाये। उक्त युद्ध मे राजा भीमसिह, मानसिह शक्तावत प्रभृति शाहजादे के समर्थक धराशायी हुए और गजसिह, जयसिह जो जहागीर की ओर से लडे थे ने विजय प्राप्त की। गीत मे राजा जयसिह की वीरता एव दृढता का वर्णन है।

गजगुण रूपक बध पृ० १२३–२४२

पृ. २१ गीत १३ गीत राजा जैसिंघ कछवाहा आमेर—राजा महासिह के पुत्र राजा जयसिह कछवाहा आमेर प्रथम। जयसिह बादशाह जहागीर, शाहजहा और औरगजेब के शासन काल मे शाही सेवा मे रह कर अनेक युद्धो मे लडा और सात हजारी सात हजार सवार तक का मन्सब प्राप्त किया। गीत मे जयसिह का आतक और राजनैतिक दक्षता का वर्णन है। वह सन् १६२१ से १६६७ ई तक आमेर का शासक रहा।

राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ० ८०–८८

पृ २२ गीत १४ महाराजा जैसिंघ कछवाहा आमेर—आमेर का महाराजा सवाई जयसिह कछवाहा द्वितीय। जयसिह राजा बिशनसिंह का पुत्र था। इसका जन्म ३ सितम्बर १६८८ ई मे हुआ था और सन् १७०० ई मे आमेर का सिहासनाधिकार प्राप्त किया। प्रारभ मे इसको १५०० जात १५०० सवार का मन्सब मिला। सिहासनारूढ

होने के उपरान्त वह औरगजेब के साथ दक्षिण मे गया और खेलना (विशालगढ) के दुर्ग को हस्तगत करने मे निपुणता दिखाई। फलत इसका मन्सब दो हजारी जात दो हजार का हो गया।

औरगजेब की मृत्यु के बाद जयसिंह ने जोधपुर के राजा अजीतसिंह के सहयोग से साभर पर आक्रमण किया और वहा के शाही अधिकारी अली अहमदखा, सैयद हुसैन खा बारहा आमेर के फौजदार और गैरतखा नारनोल के फौजदार और अहमद सैदखा मथुरा के फौजदार को ३ अक्टूबर, १७०८ को भयानक रूप से पराजित किये। इस युद्ध मे उनियारा के राव सग्रामसिंह नरूका ने अत्यधिक शौर्य प्रकट किया था। गीत मे कवि ने साभर के युद्ध का वर्णन किया है। सवाई जयसिंह ने गगवाणा का युद्ध, मालवा की सुबेदारी, जयपुर नगर का निर्माण, ज्योतिष यत्रो की स्थापना प्रभृति अनेकानेक ऐसे कार्य किए जिससे भारतीय शासको मे उसकी पाक्तेय गणना की जाती है।

साभर का युद्ध पृ ६, राजपूताने का इतिहास पृ ९२

पृ २३ गीत १५ महाराजा सवाई रामसिंह कछवाहा जयपुर—जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह तृतीय के पुत्र महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय जयपुर। इन का जन्म २७ सितम्बर १८३३ को हुआ और १७ फरवरी १८३५ को दो वर्ष की बाल्य आयु में राजसिंहासन पर आसीन हुए। बाल्यवस्था के कारण राज्य के प्रधान मत्री का कार्य सामोद के रावल बैरीशालसिंह को सौंपा गया। उनकी सहायता के लिए महाराव हनुवन्तसिंह शेखावत मनोहरपुर, राव जीवनसिंह दूनी, ठाकुर नवलसिंह शिवाड, मन्नालाल और किशनलाल को परिषद का सदस्य नियुक्त किया गया। ४ जून १८३५ ई को जब एल्वेस, ब्लेक और कैप्टिन लडलो राजमाता चन्द्रावत जी से भेंट कर राजमहलो से बाहर निकले कि फतहसिंह ने एल्वेस पर तलवार का प्रहार किया। वह सख्त घायल होकर बच गया। लडलो भी उसके साथ बच निकला। किन्तु ब्लेक पीछे रह गया। जयपुर की अग्रेज विरोधी प्रजा ने उस पर आक्रमण कर दिया तब वह अजमेरी द्वार के निकट के एक मदिर मे छिप गया। क्रुद्ध प्रजा ने उसे बाहर निकाल कर उसको, उसके चपरासी, छडीदार और महावत को मार डाला। तब अग्रेजो ने प्रजा को उत्तेजित कर विद्रोह करवाने वाले अमरचद और हिदायततुल्ला को मृत्यु दण्ड और झुंथाराम को कारावास की सजा दी।

सन् १८३७ ई मे रावल बैरीशालसिंह की मृत्यु पर उसका पुत्र रावल शिवसिंह प्रधानमत्री और ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौमू को सेनाध्यक्ष बनाया गया। किन्तु नागाओ की सेना और रामगढ की दो फौजो के विद्रोह करने पर अग्रेजो की सहायता से उनको दबाया गया। इसी काल मे ठाकुर मेघसिंह डिग्गी, हिंडौन की फौज का विरोध प्रकट हुआ परन्तु उन्हे भी दबा दिया गया।

सन् १८४० मे कालख के अधिकार च्युत ठाकुर किशनसिंह खगारोत ने कालख दुर्ग पर अधिकार कर लिया। तव राजकीय तोपखाना तथा सेना को भेज कर ठाकुर किशनसिंह को आत्म समर्पण करने के लिए वाध्य कर दिया।

सन् १८४३ ई मे पठान अमीरखा तथा रायचद चोवदार के विद्रोहात्मक दगे को शान्त किया गया और उन दोनो को फासी का दण्ड दिया गया।

सन् १८४६ ई मे सीकर रावराजा लक्ष्मणसिंह के दासी पुत्रो ने राव राजा रामप्रतापसिंह सीकर के विरुद्ध वगावत करदी। तव उन वागी लोगो की मदद पर प्रसिद्ध वारोठिया जवाहिरसिंह डूगरसिंह शेखावत वठोठ पाटोदा तैयार हो गए और १८ जून १८४७ को नसीरावाद छावनी के अग्रेजो के कोप पर आक्रमण कर ५२ हजार रुपये लूट ले गए। सन् ११ मई १८५७ को प्रथम भारतीय स्वातत्र्य सग्राम का मेरठ मे दीप जलाया गया और वह आग देश मे सर्वत्र फैल गई। जयपुर नरेश रामसिंह ने भी रावल शिवसिंह के द्वारा गुप्त रूप मे क्रान्तिकारियो और वादशाह वहादुरशाह से मत्रणा कर सहयोग का आश्वासन दिया था। तव अग्रेजो ने महाराजा को दवाने के लिए आगरा वुलवाया किन्तु उनके पास २० हजार सशस्त्र भाई–वधुओ, नागाओ तथा शेखावाटी की सेना होने के कारण अग्रेज अधिकारियो का महाराजा को वदी वनाने का साहस नही हुआ। इस प्रकार रामसिंह के शासनकाल का प्रारभिक समय वडा विद्रोहात्मक रहा। किन्तु सन् १८६२ ई के वाद महाराजा ने अपने शासन मे स्थिरता लानी आरभ की और राज्य मे चिकित्सालय, पाठशालाएँ, कालेज, शिल्पकला विद्यालय, रामनिवास वाग, रामवाग राजप्रासाद, दिवानी फौजदारी के कानून आदि वनवा कर सुव्यवस्था कायम की।

सवाई जयसिंह द्वितीय के वाद जयपुर के शासको मे रामसिंह जैसे कला प्रेमी, विधा प्रेमी, जन–प्रिय, उदार और विवेकशील शासक अन्य नही हुआ। इनका १८ सितम्बर १८८० ई को देहावसान हो गया। गीत मे महाराजा के सद्गुण एव उदार हृदयता का वर्णन किया गया है।

ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ जयपुर पृ १२५–१८४, पोलिटिकल हिस्ट्री स्टेट ऑफ जयपुर पृ ३३–५६, राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ १५४, ठिकाना दूदू का रिकर्डस् रायसलजसमरोजह लिखित।

पृ. २४ गीत १६ महाराव नाथूसिंघ सेखावत मनोहरपुर—शेखावत कछवाहो के पट्ट ठिकाने मनोहरपुर शाहपुरा का शासक महाराव नाथूसिंह (श्रीनाथ सिंह) शेखावत। वह महाराव जसवतसिंह का पुत्र था। गीत मे नाथूसिंह के शाही मन्सवदार होने का

वर्णन हुआ है किन्तु मनोहरपुर के इतिहास की अनुपलब्धता के कारण कितना मन्नव और कव तक रहा आदि की जानकारी प्राप्य नही है।

पृ २५ गीत १७ महाराव हणूर्तसिघ सेखावत मनोहरपुर—मनोहरपुर के महराव विशनसिह का पुत्र तथा महराव नाथूसिह का पौत्र महाराव हनुवन्तसिह शेखावत। वह महाराजा सवाई रामसिह द्वितीय जयपुर के वाल्यकाल मे जयपुर राज्य का सचालन करने के लिए निर्मित्त राज्य परिपद का सदस्य रहा। हनुवन्तसिह कुशल प्रशासक और काव्य प्रेमी शासक था। उसकी उदारता एव विद्यानुराग से प्रभावित होकर आईदान पाल्हावत वारहठ ने छदशास्त्र का ग्रन्थ 'हनुवन्त प्रकाश' वनाया था।

राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ १४६, मनोहरपुर की वशावली, वीरगीत सग्रह भाग १ भूमिका पृ ३

पृ. २६-३० गीत १८,१६,२० महाराव हणूर्तसिघ मनोहरपुर—मनोहरपुर का शासक महाराव हनुवन्तसिह शेखावत कछवाहा। मनोहरपुर जयपुर राज्य का प्रथम श्रेणी का सम्मान प्राप्त प्रमुख ठिकाना था।

विशेष गीत १७ की टिप्पणी देखें।

पृ ३१ गीत २१ राजा दुवारकादास सेखावत खण्डेला—शेखावाटी के खण्डेला राज्य का शासक राजा द्वारकादास शेखावत कछवाहा। वह वादशाह अकवर के दरवारी मत्री रायसल शेखावत का पौत्र और राजा गिरधरदास का पुत्र था। राजा गिरधरदास के स १६८० वि मे वरहानपुर मे सैयद कवीर के द्वारा २६ आदमियो सहित मारे जाने पर राजा द्वारकादास खण्डेला की गद्दी पर वैठा। वादशाह शाहजहाँ ने द्वारकदास को स १६८५ वि मे एक हजार जात ८०० सवार का मन्सव प्रदान किया था। सं १६८७ मे द्वारकादास नें दक्षिण मे निजामुलमुल्क पर चढाई की और उल्लेखनीय वीरता प्रकट की, जिससे प्रसन्न होकर शाहजहाँ ने १५०० जात एक हजार के मन्सब पर प्रतिष्ठित किया। वह खाँनजहाँ लोदी के अनन्य मित्रो मे था। खाँनजहाँ के विद्रोह मे वह शाही पक्ष मे रहा और स १६८७ वि मे खाँनजहाँ से लडता हुआ उसको मार कर स्वय भी मारा गया। गीत राजा द्वारकादास के हाथ से खाँनजहाँ के मारे जाने का वर्णन है, जो महत्वपूर्ण हैं।

मुगल दरवार भाग १ पृ ३५३ की पाद टिप्पणी, शाहजहाँ नामा, मुशी, भाग, १ पृ ८, ओझा-निवध सग्रह भाग ३-४ पृ ६३

पृ ३२ गीत २२ उमेदसिघ सेखावत सूजावास—शेखावाटी के दातारामगढ परगने के सूजावास का ठाकुर उम्मेदसिह शेखावत। वह गजसिह का पुत्र और राजा धीरसिह खण्डेला छोटा पाना के शासक का पौत्र था। गीत मे उम्मेदसिह की उदारता की सराहना की गई है।

पृ. ३३ गीत २३ ठाकुर दलपतसिंघ सेखावत—शेखावतो की उग्रसेनोत शाखा के ठाकुर जोधसिंह का पुत्र तथा हठीसिंह का पौत्र ठाकुर दलपतसिंह। वह रीगस के निकटस्थ महरौली ग्राम का ठाकुर था। जयपुर राज्य द्वारा मनोहरपुर पर आक्रमण करने पर दलपतसिंह ने मानपुर के किले की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त की थी। उसका भाई जोगीदास भी उसी सेना से शाहपुरा के किले मे लडता हुआ मारा गया था।

पृ ३५-३६ गीत २४-२५ ठाकुरजोगीदास सेखावत महरौली-महरौली का ठाकुर जोगीदास शेखावत। वह जोधसिंह का पुत्र था। जोगीदास ने मनोहरपुर राज्य पर जयपुर का आक्रमण होने पर शाहपुरा दुर्ग की रक्षा करते हुए प्राण त्याग किया था। इससे पूर्व मानपुर के युद्ध मे जोगीदास का भाई दलपतसिंह जयपुर के विरुद्ध लडकर मारा गया था। वह युद्ध सभवत् महाराव नाथूलिह मनोहरपुर के समय लड़ा गया था।

पृ. ३७ गीत २६ राव जगतसिंघ सेखावत कासली—शेखावटी के सीकर राज्य वालो का पूर्वज राव जगतसिंह शेखावत कासली का शासक। वह राजा रायमल दरवारी के लघु पुत्र राव त्रिमल्ल के पौत्र तथा राव श्यामराम का पुत्र था। राव जगतसिंह शेखावत के शासन से पूर्व ही श्यामराम के दासी पुत्र पूर्णमल खत्री ने वादशाह जहाँगीर को प्रसन्न कर कासली राज्य पर अधिकार जमा लिया था। किन्तु राव जगतसिंह ने पूर्णमल के पुत्र वलिराम पर आक्रमण कर कासली पर कब्जा कर अपना राज्य स्थापित किया।

सीकर का इतिहास पृ ३५ पाद टिप्पणी रायसल
जससरोज चतुर्थ कलिका पृ ९३।

पृ ३८ गीत २७ राव सिवसिंघ सेखावत सीकर—शेखावटी के सीकर राज्य का राव शिवसिंह शेखावत। वह राव दौलतसिंह कासली का पुत्र और उत्तराधिकारी था। अपने पिता के निधनोपरान्त वि स १७७८ मे सीकर की गद्दी पर बैठा। राव शिवसिंह ने सवत् १७८१ वि मे सीकर नगर का निर्माण करवा कर अपनी नवीन राजधानी स्थापित की। उसने अपने सगोत्रीय शेखावत वीर ठाकुर शार्दूलसि झुझुनू, ठाकुर गुमानीसिंह लाडखानोत रामगढ, ठाकुर रूपसिंह गिरधरदासोत, खूड, ठाकुर सल्हदीसिंह खीरोड प्रभृति के सैनिक सहयोग से फतहपुर के कायमखानी राज्य पर आक्रमण कर स १७८८ वि मे उस पर अधिकार कर लिया। वहा का नवाव सरदारखां घायल होकर पकडा गया। तदनन्तर शिवसिंह ने महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय के साथ नागौर के राव वख्तसिंह राठौड के विरुद्ध के **सवत् १७७९ के** गगवाना के **युद्ध में** भाग लिया और मालवा प्रान्त मे जयसिंह की सूवेदारी होने पर वहा रहा। सवाई जयसिंह की मृत्यु के वाद महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह के सहयोगी रूप मे राजमहल के युद्ध, बूदी के युद्ध एव वगरू महला के

द्ध मे लडते रहा। वगरू क्षेत्र के युद्ध मे शिवसिंह ने महाराजा ईश्वरीसिंह के पक्ष में ल्हार राव होल्कर इन्दौर वालो के पूर्वजो से लडते हुए घायल होकर सवत् १८०५ वि. वीरगत्ति प्राप्त की

—सीकर का इतिहास पृ ५९-७७, रायसल जससरोज,
शिखर वसोत्पत्ति पृ. ।

पृ. ४०-४१ गीत २८, २९ राव सिवसिंघ सेखावत सीकर—शेखावाटी के सीकर राज्य का सस्थापक राव शिवसिंह शेखावत। शिवसिंह प्रसिद्ध राजा रायसल दरवारी के लघुपुत्र राव त्रिमल्ल के वशधर दौलतसिंह का पुत्र था। वह बडा उदार, दूरदृष्टि एव काव्यप्रेमी वीर शासक था। उसकी प्रशसा मे रचित अनेक गीत, दोहे, और कवित्तों के अतिरिक्त गुण ग्र थ नामक एक ग्रंथ राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के सग्रह में उपलब्ध है।

—विशेष देखें गीत २७ पृ. ३८ की टिप्पणी।

पृ. ४२ गीत ३० राव सम्रथसिंघ सेखावत सीकर—सीकर के राव शिवसिंह का जेष्ठ पुत्र राव समर्थसिंह। वह अपने पिता की मृत्यु के वाद सवत् १८०५ मे सीकर की गद्दी पर वैठा। महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह ने उसके अनुज चांदसिंह को जयपुर में शिवसिंह का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। किन्तु दोनो भाइयो के आपस में बड़ा स्नेह था, इसलिए उक्त व्यवस्था से उनके मन मे कोई भेद नहीं उत्पन्न हुआ। किन्तु चादसिंह से भिन्न दो अन्य भाइयो कीर्तिसिंह मेदसिंह के और इनके आपस मे नही वनती थी। अत फतहपुर मे समर्थसिंह ने उन दोनो को मार डाला। महाराजा रामसिंह जोधपुर और राजाधिराज वख्तसिंह के मध्य लडे गए मेडता के युद्ध में राव समर्थसिंह ने भी महाराजा ईश्वरीसिंह की ओर से रामसिंह के पक्ष मे भाग लिया था। स. १८११ वि. मे समर्थसिंह का देहान्त होगया। उनके निधन पर राव चादसिंह सीकर के अधिपति वने और राव समर्थसिंह के पुत्र नाहरसिंह वो श्यामगढ़ का ठिकाना दिया गया।

—सीकर का इतिहास पृ. ७८, ८०, ८१–८४।

पृ. ४५ गीत ३१ राव देवीसिंघ सेखावत सीकर—सीकर के राव चादसिंह का पुत्र राव देवीसिंह शेखावत। वह अपने पिता के निधन के वाद सवत् १८२० वि मे १० वर्ष की आयु मे सीकर का शासक वना। सवत् १८३१ वि मे रेवाडी के मित्रसेन अहीर ने शेखावाटी पर आक्रमण किया तव देवीसिंह ने शेखावत शक्ति को सगठित कर उसको युद्ध मे पराजित किया। देवीसिंह ने सवत् १८३२ वि. मे शेखावतो की परसरामोत शाखा के ठिकाने वाय के ठाकुर जोधसिंह पर आक्रमण कर वाय को जीत लिया। किन्तु जयपुर राज्य के प्रतिरोध करने पर वाय पुन ठाकुर जोधसिंह के पक्ष में छोडनी पडी। सवत्

१८३६ श्रावण पूर्णिमा के दिन शाही फौजदार मुरतजाखान भडेच ने खाटू स्थान पर आ कर डेरा किया। राव देवीसिंह ने खूड, दाता और खाचरियावास के स्वामियो की सहशक्ति एव जयपुर की सेना के सहयोग से उस पर आक्रमण किया, जिसमे जयपुर के सेनापति चूहडसिंह नाथावत डूगरी, महन्त मगलदास दादू पथी दूदू, दलेलसिंह खगारोत सेवा तथा ठाकुर भक्तसिंह खूड, हनुवन्तसिंह वलारा, मल्हदीसिंह दूजोद आदि अनेक वीर मारे गए। किन्तु विजय शेखावतो की हुई। तदनन्तर राव प्रतापसिंह अलवर पर महाराजा सवाई प्रतापसिंह जयपुर की चढाई मे राव देवीसिंह ने जयपुर की सेना के सम्मिलित रह कर राजगढ के युद्ध मे वीरता प्रकट की। देवीसिंह ने ८४ गावो सहित कासली पर अधिकार कर अपने राज्य मे मिलाया। अन्त मे सवत् १८५२ मार्गशीर्ष कृष्ण १४ को सीकर मे उसका देहान्त होगया।

—सीकर का इतिहास पृ ८८–९९, माधववश प्रकाश, महाराजा सवाई प्रतापसिंह जयपुर की अलवर पर चढाई की निशानी।

पृ. ४७-५४ गीत ३२, ३३, ३४, ३५, ३६ राव देवीसिंघ सेखावत सीकर—सीकर का शासक राव देवीसिंह चादसिंहोत शेखावत। वह वीर योद्धा, स्थापत्य कला प्रेमी और विद्वान् शासक था। 'राजिया के सोरठे' का लेखक कृपाराम खिडिया इसका आश्रित कवि था। देवीसिंह स्वय भी अच्छा कवि था। गीत कवियो की प्रशसा मे रचित उसका निम्न गीत प्रसिद्ध है—

सुपदहा राव राण अवर जग सारै, कूरम देवी वात कहे।
प्रथमी नाम सुजस मोटा पण, रूपग–जोडा हूत रहे॥

—विशेष–देखें गीत ३१ की टिप्पणी।

पृ. ५५-५७ गीत ३७, ३८, ३९ रावराजा लिछमणसिंघ सेखावत सीकर—सीकर का शासक राव राजा लक्ष्मणसिह शेखावत। वह राव देवीसिह का पुत्र था। वह सवत् १८५२ मे सीकर का अधिपति वना। उसके पिता के विरोधियो ने लक्ष्मणसिह को शाहपुरा के मोहवतसिह का पुत्र घोपित कर जयपुर राज्य के सामने आपत्ति प्रस्तुत की। जयपुर के प्रधान मत्री दौलतराम हल्दिया के अनुज नदराम ने सीकर पर सैनिक अभियान किया। दोनो ओर से युद्ध की भयानक स्थिति वन जाने पर कृपाराम खिडिया ने नन्दराम को राव देवीसिह की जयपुर के लिए की गई पुरानी सेवाओ का स्मरण दिलवाकर दोनो ओर से समझौता पर तैयार किया और तव कहीं सीकर से वह युद्ध टला। सवत् १८५७ वि मे राव लक्ष्मणसिह ने शाहपुरा पर आक्रमण कर वहा के ठाकुर मोहवतसिह को अपदस्थ कर मारवाड की ओर भगा दिया। तदनन्तर परस्पर समझौता हो जाने पर मोहवतसिह को शाहपुरा की रक्षा का दायित्व सौंपा गया। स १८६० वि मे महाराजा मानसिह जोधपुर ने शाहपुरा पर आक्रमण किया तव उस आक्रमण मे मोहवतसिह मारा गया

किन्तु जोधपुर का शाहपुरा पर अधिकार नही होने दिया। लक्ष्मणसिंह ने १८६९ वि. में खण्डेला को छीनने के लिए वहा के दुर्ग कोट पर हमला किया जहाँ हनुमन्तसिंह वीरगति को प्राप्त हुआ और खण्डेला पर उसका अधिकार हो गया। उसने खीरोड के गढ को भी सवत् १८६९ मे ध्वस किया।

लक्ष्मणसिह ने भी अपने पिता की भाँति लक्ष्मणगढ दुर्ग का निर्माण करवाया। वह सवत् १८९० मे मृत्यु को प्राप्त हुआ।

—माधव वश प्रकाश, सीकर का इतिहास पृ १०३–११८।

पृ. ५८–६२ गीत ४०, ४१, ४२, ४३ कवर करणसिंघ सेखावत डूगरियास—शेखावतो की परशुरामोत शाखा का कुवर कर्णसिंह। वह ठाकुर उम्मेदसिंह का पुत्र था। कर्णसिंह ने सवत् १८७७ वि. मे लक्ष्मणगढ पर जवाहिरसिंह और विजयसिंह के आक्रमण करने पर दुर्ग की रक्षा करते हुए प्राण त्याग किया और वैरियो का किला पर अधिकार नही होने दिया। उक्त युद्ध मे कर्णसिंह के साथ सालिमसिंह और खगारसिंह गौड योद्धा जालू ग्राम निवासी भी अपने साथियो सहित मारे गए थे। कर्णसिंह डूगरियास का कुवर था।

—रायसल जससरोज कलिका पन्द्रहवी।

पृ. ६४ गीत ४४ ठाकर मोहब्वतसिंघ सेखावत दूजोद—ठाकुर भवानीसिंह का पुत्र ठाकुर मोहब्वतसिह शेखावत। मोहब्वतसिह सीकर राज्य की ओर से शाहपुरा का दुर्गपाल था। शाहपुरा पर जोधपुर के महाराजा मानसिह की सेना ने स. १८६२ में आक्रमण किया। दोनो ओर से एक मास तक तोपो का युद्ध होता रहा। जब दोनो ही पक्ष डटें रहे तब मोहब्वतसिंह ने दुर्ग से बाहर निकल कर जोधपुर की सेना पर आक्रमण किया और रण क्षेत्र मे जूझते हुए वीरगति प्राप्त की। मोहब्वतसिंह के अन्य भाइयो ने भी समर भूमि मे प्राणोत्सर्ग किया। सल्हदीसिंह ने खाटू युद्ध मे और डूगरसिंह खगारसिंह ने जयपुर द्वारा खण्डेला पर अधिकार करने के युद्ध मे प्राण त्याग किया था।

—रायसल जससरोज ग्यारहवी कलिका।

पृ. ६६ गीत ४५ राजा भोपालसिंघ सेखावत, खेतडी—राजा रायसल दरबारी के लघुपुत्र भोजराज के वशज प्रतापी ठाकुर शार्दूलसिह का पौत्र भोपालसिंह शेखावत। वह राजा किशनसिह का पुत्र था। भोपालसिंह का जन्म संवत् १७९२ वि मे हुआ था। वह सवत् १८०२ वि मे खेतडी की गद्दी पर बैठा था। भोपालसिंह ने जोधपुर के महाराजा

विजयसिंह की मरहठो के मारवाड पर आक्रमण करने पर सहायता की थी। तदनन्तर उसने स. १८२८ वि मे लुहारू के शासक कीर्तिसिंह पर हमला किया। कीर्तिसिंह शेखावतो की मैरूदासोत शाखा का था वह लुहारू की रक्षा करते हुए धराशायी हुआ। जब राजा भोपालसिंह गढ मे प्रवेश करने लगा तब कीर्त्तिसिंह के एक सैनिक ने उसके हाथी के होदे पर गोली का प्रहार किया जिससे भोपालसिह मारा गया। वह साहित्य मर्मी और उदार शासक था। दिल्ली दरबार मे उसे १२५० सवारो का मन्सब प्राप्त था।

—खेतडी का इतिहास पृ ४३–४७।

पृ. ६८–७० गीत ४६, ४७ राजा भोपालसिंघ सेखावत खेतड़ी—शेखावतो के खेतडी राज्य का स्वामी राजा भोपालसिंह शेखावत। वह शेखावतों की भोजराजोत शाखा के किशनसिंह का पुत्र था। उसने सवत् १८२४ वि. के मावडा के युद्ध मे जयपुर के पक्ष में युद्ध किया था।

पृ. ७१ गीत ४८ राजा बाघसिंघ सेखावत खेतडी—शेखावाटी के खेतडी राज्य का राजा बाघसिह शेखावत। वह राजा किशनसिह का पुत्र और राजा भोपालसिंह का अनुज था और भोपालसिह के निमन्तान मारे जाने पर सवत् १८२८ वि मे खेतडी का शासक बना। बाघसिह ने माडण स्थान के युद्ध मे अपने सरक्तीय वीर नवलसिह नवलगढ, हनुवन्तसिह डूडलोद प्रभृति वीरो की शक्ति से शाही सेना नायक पीरूखा बलोची और राव मित्रसेन अहीर रेवाडी को पराजित किया। पीरूखां मारा गया और शाही सेना पराजित हुई। ठाकुर नवलसिह का पुत्र लालसिह भी उसी युद्ध मे काम आया। जयपुर द्वारा शेखावाटी पर आक्रमण करने पर बाघसिह ने सजातीय शेखावत बधुओ की सेना एकत्रित कर जयपुर की सेना को हराया। जयपुर की सेना का नेता ठाकुर रणजीतसिंह नाथावत चौमू का ठाकुर था। शेखावतो की फौज का सचालन जार्ज टामस ने किया था। रणजीतसिह घायल होकर जीवित बच रहा था। इस युद्ध मे राजा किशनसिह का द्वितीय पुत्र पहाडसिह मारा गया था। सवत् १८४२ वि. मे बाघसिह ने बबाई पर अधिकार कर शाही स्वीकृति की सनद प्राप्त की।

बाघसिह ने स १८४३ वि. मे नवाब नजबकुलीखा जो शाही फौजदार था से तवरावाटी के सिरोही स्थान पर युद्ध किया। अत मे नजबकुली को हार कर शेखावतो से समझौता करना पडा। सवत् १८५७ वि. मे बाघसिह को 'राजाय राजगान उम्दाराजा हाय हिन्दुस्तान' की पदवी प्राप्त हुई थी।

—खेतड़ी का इतिहास पृ ४७–५२।

पृ. ७३ गीत ४६ राजा अभैसिंघ सेखावत खेतडी—शेखावतो के खेतडी राज्य के शासक राजा अभयसिंह शेखावत। वह राजा बाघसिंह का पुत्र था। वह सवत् १८५७ वि मे अपने पिता का शासनाधिकारी बना। राजा अभयसिंह जोधपुर के स्वर्गीय महाराजा भीमसिंह के पुत्र धौंकलसिंह के पक्ष का समर्थक किया था। इससे उनके और महाराजा मानसिंह जोधपुर के भयकर शत्रुता हो गई थी। अभयसिंह ने नवलगढ, सीकर व स्वय की सेना भेज कर डीडवाना पर धौंकलसिंह के सहायक छत्रसिंह भाटी का कब्जा करवा दिया था। यह वि स १८६१ की घटना है। इसी वर्ष राजा अभयसिंह ने जयपुर नरेश सवाई जगतसिंह के आमत्रण पर जोधपुर के महाराजा मानसिंह के विरुद्ध सैनिक अभियान मे भाग लिया। वह युद्ध महाराना भीमसिंह की राजकुमारी कृष्णाकुमारी के विवाह के प्रश्न को लेकर छिडा था। मारवाड के पर्वतसर प्रान्त के गीगोली स्थान के युद्ध मे मानसिंह को पराजित किया। उक्त युद्ध मे खेतडी नरेश के अतिरिक्त सीकर नरेश लक्ष्मणसिंह, ठाकुर नवलसिंह दाँता, खण्डेला का राजा, राव राजा भीमसिंह नरुका उनियारा, राव चाँदसिंह गोगावत दूणी तथा बीकानेर नरेश सूरतसिंह ने भी जयपुर के पक्ष मे युद्ध मे भाग लिया था। अन्तत महाराजा मानसिंह को रणत्याग कर जोधपुर दुर्ग की शरण लेनी पडी।

राजा अभयसिंह दूरन्देशी शासक था। उसका पजाब केशरी, महाराजा रणजीतसिंह, महाराजा बख्तावरसिंह अलवर, महाराजा सूरतसिंह बीकानेर प्रभृति नरेशो से मित्रता का घनिष्ट सम्बन्ध था। वह सवत् १८८३ वि० मे दिवगत हुआ।

खेतडी का इतिहास पृ ५३–५६, मारवाड का इतिहास द्वि भा पृ ४०५
कूर्मवश यशप्रकाश पृ ३–४।

पृ. ७४ गीत ५० सुजाणसिंघ सेखावत राजसिंघ राठौड—शेखावटी के छापोली ग्राम का ठाकुर सुजानसिंह भोजराजोत शेखावत। वह ठाकुर श्यामसिंह का पुत्र था। शेखावतो की रायसलोत शाखा के प्रधान राज्य खण्डेला के शासक राजा बहादुरसिंह पर बादशाह औरगजेब ने सवत् १७३६ वि० मे दाराबखाँ और बहरेमदखाँ के नायकत्व मे शाही सेना भेजी। राजा बहादुरसिंह ने शाही सेना से लडने का साहस नही किया। वह सेना बहादुरसिंह को दण्ड देने तथा वहाँ के प्रसिद्ध मोहनदेवजी के मदिर को ध्वस्त करने के लिए भेजी गई थी। सुजानसिंह ने उक्त सेना से सवत १७३६ चैत्र सुदि ६ के दिन विकट युद्ध की वीर गति प्राप्त की। उसके साथ ६० सहयोगी भी रणखेत रहे थे।

राजसिंह मेडतिया शाखा का राठौड सातलवास का ठाकुर था। वह प्रतापसिंह का पुत्र था। महाराजा जसवतसिंह के निधन पर बादशाह औरगजेब ने मारवाड राज्य को जब्त कर शाही थानें स्थापित कर दिए थे। और उनके पुत्र बालक महाराजा अजितसिंह को

पकड कर मुसलमान वनाने की कुमत्रणा मे लगा हुआ था उस समय औरगजेव ने प्रसिद्ध तीर्थराजपुष्कर के मदिरो को भूमिस्यात् करने के लिए अपने सेनानायक तहव्वरखाँ को आदेश दिया। तहव्वरखाँ तव अजमेर का फौजदार था। राजसिंह ने अपनी राठौड सेना एकत्रित कर तहव्वरखाँ का सामना किया। उक्त युद्ध मे राजसिह अपने भाई गोकुलसिह, रूपसिह हिम्मतसिह तथा जगतसिह उदावत प्रभृति अनेक योद्धाओ सहित मारा गया। वह युद्ध वि स. १७३६ मे लडा गया था।

सघ शक्ति मासिक जयपुर वर्ष ३, अक १ जनवरी १९६२, पृ. ३९, मारवाड़ का इतिहास प्रथम भाग पृ २६०, मारवाड इतिहास द्वि. भा. पृ ६६७।

पृ. ७५ गीत ५१ ठाकर नवलसिंघ सेखावत नवलगढ—सेखावटी के नवलगढ संस्थान का ठाकुर नवलसिह शेखावत। वह भुभूनू के स्वामी शार्दूलसिह का चतुर्थ पुत्र था। नवलसिह ने सन् १७३७ ई मे अपने नाम पर नवलगढ कस्वा आवाद कर अपने ठिकाने का मुख्यावास वनाया। नवलसिह ने सवत् १८२४ वि मे भरतपुर के राजा जवाहरमल्ल जाट के विरुद्ध जयपुर नरेश माधवसिह प्रथम द्वारा लड गए तवरावाटी के मावडा मण्डोली के युद्ध मे भाग लिया था। उस युद्ध मे जवाहरमल्ल की करारी हार हुई थी। नवलसिह ने सन् १७७५ ई. मे शेखावाटी पर पीरूखाँ वलोची और रिवाडी के राव मित्रसेन के आक्रमण करने पर माडण स्थान के युद्ध मे शाही सेना को पराजित किया था। पीरूखाँ उसमे मारा गया और मित्रसेन रणस्थल त्याग कर भाग गया था। नवलसिह का पुत्र लालसिह माडण के युद्ध मे मारा गया था। गीत में अप्रत्यक्ष रूप से माडण युद्ध मे मुसलमानो का नवलसिह के आतक से भयभीत होने का वर्णन किया है। वह फरवरी १७८० मे मृत्यु को प्राप्त हुआ।

शेखावतो की वशावली पृ० १२, राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ १९१।

पृ. ७७ गीत ५२ ठाकर नरसिंघदास सेखावत मडावा—नवलगढ के ठाकुर नवलसिह का जेष्ठ पुत्र नृसिहदास शेखावत। नृसिहदास शेखावत ने मडावा मे अपनी राजधानी स्थापित की तदनन्तर मडावा पर अपने पुत्र पदमसिह तथा ज्ञानसिह को तथा नवलगढ पर उदयसिह मोहव्वतसिह को नियत किया। नृसिहदास ने २८ जुलाई १७८७ के तुंगा के युद्ध मे महाराजा सवाई प्रतापसिह जयपुर की सेना के सम्मिलित रह कर महादाजी पटेल से युद्ध लडा। इस युद्ध में मरहठो ने तोपो के ५ सेर से १४ सेर तक के वजनी गोले राजपूत योद्धाओ पर वरसाए थे। किन्तु राजपूतो ने विना प्राणो की पर्वाह किए घमासान

युद्ध लडा और मरहठो को उल्लेखनीय पराजय का मुह देखना पडा। नृसिंहदास ने इस युद्ध मे पराक्रम प्रदर्शित कर वीरगति प्राप्त की।

सघ शक्ति वर्ष २ अक १२ पृ. २६–३३ सन् १९६१, राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ १२१, १२२ शेखावतो की वशावली, रायसल जससरोज

पृ. ७८-८२ गीत ५३, ५४, ५५ ठाकर अरजनसिंघ सेखावत चौकड़ी—शेखावाटी के चौकडी ठिकाने का स्वामी ठाकुर अर्जुनसिंह शेखावत। वह ठाकुर बख्तसिंह का जेष्ठ पुत्र था। चौकडी ठिकाना झुझुनू के शासक शार्दूलसिंह शेखावत के जेष्ठ पुत्र जोरावरसिंह की सतति परम्परा मे था। गीत नायक अर्जुनसिंह जोरावरसिंह का पौत्र और शार्दूलसिंह का प्रपौत्र था। गीतो मे अर्जुनसिंह के दान और पराक्रम का वर्णन किया गया है।

शेखावतो की वशावली पृ १२, १३, रायसल जससरोज।

पृ. ८३ गीत ५६ ठाकर स्यामसिंघ सेखावत बिसाऊ—शेखावाटी के बिसाऊ सस्थान का स्वामी ठाकुर श्यामसिंह शेखावत बिसाऊ। बिसाऊ झुझुनू के शासक शार्दूलसिंह के पुत्र केशरीसिंह के द्वितीय पुत्र सूरजमल्ल का प्रमुख ठिकाना था। सूरजमल्ल सन् १८८७ ई के तुगा के युद्ध मे महादाजी पटेल से लडता हुआ मारा गया था। तुगा के युद्ध मे महाराजा प्रतापसिंह जयपुर की विजय हुई थी। श्यामसिंह ठाकुर सूरजमल्ल का पुत्र था। श्यामसिंह और जयपुर नरेश के मध्य सन् १८०३ से १८०६ ई तक विरोध बना रहा है। जयपुर नरेश ने श्यामसिंह पर सैनिक आक्रमण भी किया किन्तु उसे दबा न सका। अत मे समझौता हो गया। श्यामसिंह ने सवाई जयसिंह तृतीय के बाल्यकाल मे जयपुर राज्य की अच्छी सेवा की थी। श्यामसिंह के पास यूरोपियन पद्धति से शिक्षित अश्व सेना तथा तोपखाना भी था। वह अपने समय का प्रभावशाली शासक था। गीत मे अग्रेजो के विरुद्ध जयपुर राज्य का पक्ष सबल बनाये रखने के लिए श्यामसिंह की प्रशसा की गई है।

राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ १९६ शेखावत की वशावली।

पृ. ८४ गीत ५७ ठाकर दूलहसिंघ सेखावत खाचरियावास–शेखावाटी के दातारामगढ़ परगने के खाचरियावास ठिकाने का ठाकुर दूलहसिंह शेखावत। दूलहसिंह ठाकुर गुमानसिंह का पुत्र था। गुमानसिंह ने रामगढ मे दुर्ग निर्माण कर अपने ठिकाने का मुख्यावास बनाया था। वह अपनी जन्म तिथि के उत्सव पर बारूद मे आग लग जाने के कारण मारा

गया था फिर रामगढ पर जयपुर राज्य ने अधिकार कर लिया था। दूलहसिंह ने वयस्क होने पर जोधपुर और जयपुर राज्यो की मरहठो के विरुद्ध सेवाएँ की तव उसे जयपुर से खाचरियावास और जोधपुर से ललासारी की जागीरें एव ताजिमो का सम्मान प्राप्त हुआ। ठाकुर दूलहसिंह ने खाटू (श्यामजी की) के युद्ध मे भी भाग लिया था। वह युद्ध सवत् १८३६ विक्रमी मे शाही सेना नायक मुर्तजाअली भड़च से लडा गया था। युद्ध मे शाही सेना पराजित हुई थी।

सिखर वशोत्पत्ति, रायसल जससरोज।

पृ. ८६ गीत ५८ ठाकर सिवदानसिंघ सेखावत खाचरियावास—दातारामगढ तहसील के खाचरियावास ठिकाने का ठाकुर शिवदानसिंह शेखावत। वह राजा रायसल दरवारी के जेष्ठ पुत्र लाडखाँन शेखावत के ८वें वशधर ठाकुर दूलहसिंह का पुत्र था। शिवदानसिंह ने सीकर रावराजा लक्ष्मणसिंह मे समझौता कर आपस के विरोध को मिटाया और सौहार्द स्थापित किया। गीत मे उसको गोत्र रक्षक कह कर सराहा गया है। वह लाडखाँनोतो का मुखिया सरदार था।

माधव वश प्रकास

पृ. ८७-८६ गीत ५६, ६० ठाकर खगारसिंघ सेखावत खोरा—दातारामगढ परगने के खोरा ग्राम का ठाकुर खगारसिंह लाडखाँनोत प्रशाखा का शेखावत था। वह मारवाड के कणवाई ठिकाने के ठाकुर रतनसिंह का पुत्र था। रतनसिंह ने टोक रियासत के प्रसिद्ध नवाव अमीरखाँ पिण्डारी से कणवाई मे युद्ध लडा था। अमीरखाँ को असफल होकर रणभूमि से हटना पडा था। खगारसिंह वीर प्रकृति का दानी पुरुष था। उसने अनेक चारणो को ऊँट-घोडे दान किए थे। वह ठाकुर फनहसिंह का पौत्र था। गीत में चारण कवि के चावुको की मार सहन कर यश प्राप्त करने का वर्णन है।

पृ. ६० गीत ६१ भोजराज खंगारोत नराणा—जयपुर राज्य के नरायना ठिकाने का स्वामी भोजराज खंगारोत कछवाहा। वह आमेर के राजा पृथ्वीराज के छोटे पुत्र जगमाल के द्वितीय पौत्र मनोहरदास का छोटा पुत्र था। जगमाल के जेष्ठ पुत्र नारायणदास ने नरायणा कस्वा अपने नाम पर वसाया था। नारायणदास ने भोजराज को दत्तक लिया था। भोजराज ने वादशाह शाहजहाँ और औरगजेव के शासनकाल मे मिर्जा राजा जयसिह कछवाहा के साथ रह कर कतिपय लडाइयाँ लडी। वादशाह शाहजहाँ के शहजादे शुजा के विद्रोह करने पर सवत् १७१५ वि मे उसे रोकने के लिए भेजी गई सेना मे वह शाहजादे सुलेमानशिकोह तथा राजा जयसिह कछवाहा के साथ भेजा गया था। वनारस के पास के युद्ध मे वह घायल होकर वच गया था। भोजराज सवत् १६८६

वि मे खाँनजहाँ का दमन करने लिए भेजी गई सेना मे नियत हुआ । उक्त युद्ध मे वह छत्रसिह कछवाहा के साथ लडता हुआ मारा गया । राजा द्वारिकादास खण्डेला का स्वामी भी उसी युद्ध मे मारा गया था ।

—बिन्हैरासो पृ १६०, भोजराज खगारोत री निसाणी,
मुहता नैंसाणी री ख्यात भाग १ पृ ३०५

पृ ६१ गीत ६२ कुसलसिघ नाथावत चौमू—जयपुर राज्य के चौमू ठिकाने का ठाकुर कुशलसिह नाथावत कछवाहा । वह ठाकुर मोहनसिह का पुत्र था । किन्तु गीत्त मे रामसिह का पुत्र लिखा है । वह मोहनसिह के मरने पर सन् १७४३ ई मे चौमू का अधिकारी हुआ । उसके वशज जोधसिह ने महाराजासवाई ईश्वरीसिह की ओर से मरहठो के विरुद्ध लडे गए युद्धो में भाग लिया था । राजमहल के युद्ध मे वीरता दिखाई थी । वह सन् १७५८ ई मे प्रसिद्ध दुर्ग णथभौर का किलादार नियुक्त किया था । जब महाराजा माधवसिह कछवाहा से रणथभौर छीनने के लिए मल्हारराव होल्कर ने अपने सेना नायक गगाधर तात्या को भेजा तब जयपुर की ओर से ठाकुर जोधसिह उनका पुत्र रावल रामसिह सामोद, ठाकुर गुलाबसिह बगरू, ठाकुर अचलसिह हाथोद, मसूदा के श्यामसिह, सवाईसिह हस्तेडा का पुत्र सालिमसिह, ठाकुर जालिमसिह टोरडी आदि प्रमुख योद्धाओ ने कक्कोड स्थान पर मरहठो का सामना किया और उल्लिखित सरदार जूझते हुए धराशायी हुए । वह युद्ध सवत् १८१६ वि मे लडा गया था ।

—सघशक्ति वर्ष २ अक ६ सवत् २०१८ वि पृ १६–१७,
राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ २०४, २०५ ।

पृ. ६२ गीत ६३ ठाकुर रणजीतसिघ—वह जयपुर राज्य के चौमू ठिकाने का ठाकुर था । रणजीतसिह ठाकुर रतनसिह के निस्सतान मरने पर सामोद से गोद आकर बैठा था । इसने महराजा जयपुर की ओर से सवत् १८४४ मे महादाजी पटेल की सेना से लडे गए तुगा के युद्ध मे भाग लिया था । इस युद्ध मे जयपुर के पक्ष के ठाकुर सूरजमल्ल विसाऊ, ठाकुर नृसिहदास नवलगढ, ठाकुर पहाडसिह खगारोत दूदू, ठाकुर जवानसिह रिया, जीवणसिह मारोठ, मोहबतसिह मेडतिया आदि मारे गए थे । विजय जयपुर पक्ष की हुई थी । रणजीतसिह ने सवत् १८५६ वि मे जव राव समर्थसिह के पुत्र श्यामसिह ने फतहपुर पर फ्रासिसी जार्ज के नेतृत्व मे आक्रमण किया तव सीकर की सहायता की थी । इस लडाई मे रणजीतसिह, ठाकुरअभयसिह ईसरदा उम्मेदसिह पानडी जालिमसिह और सूरजमल्ल चाँदावत ने वीरतापूर्वक युद्ध लडा और शत्रु को हराकर यश प्राप्त किया था । उम्मेदसिह मारा गया था और ठाकुर रणजीतसिह घायल होकर जीवित बच रहा । तदनन्तर कालख पर

खगारोत वैरीसालोतो ने ठाकुर मेघसिह डिग्गी तथा सीकर रावराजा लक्ष्मणसिंह की मदद से अधिकार कर लिया तब स १७६३ ई मे रणजीतसिह ने कालख पर आक्रमण कर विजय प्राप्त की। गीत मे रणजीतसिह द्वारा फतहपुर मे जार्ज से लडने का वर्णन है। वह स. १७६८ ई मे मृत्यु को प्राप्त हुआ।

—राजपूताने का इतिहास तृतीय भाग पृ २०३-२०४, रायसल जससरोज द्वादस कलिका, सघशक्ति वर्ष २ अक ११ नवम्बर १९७१ पृ ३१–३३

पृ. ६६ गीत ६४ चांदसिंघ वालापोता कछवाहा—चादसिह वालापोता कछवाहा। आमेर के राजा उदयकर्ण के पुत्र राव वाला वरवाडा के स्वामी के तृतीय पुत्र खीवकरण की सतान वालापोता कछवाहा कहलाती है। चांदसिह विहारीदास का पौत्र था। चादसिह ने मेवाड राज्य के चीरवा घाट स्थान पर वीरगति पाई थी। वह किस के विरुद्ध लडा कोई सकेत उपलब्ध नही हुआ।

पृ ६७,६८ गीत ६५, ६६ राव करमसी जोधावत राठोड—जोधपुर नरेश राव जोधा का पुत्र कर्मसिह राठौड। राव कर्मसिह राठौडो से राठौडो की कर्मसोत शाखा का प्रचलन हुआ कर्मसिह ने जोधपुर और वीकानेर नरेशो को सहयोग कर नारनोल पर युद्ध लडा और अपने विरोधी पठानो को मार कर खेत रहा।

—राठौडो की ख्यात (डा कल्याणसिंह शेखावत सग्रह)

पृ. १०० गीत ६७ ठाकर उदैसिंघ करमसोत खींवसर—राठौडो की कर्मसोत शाखा के खीवसर ठिकाने का ठाकुर उदयसिंह। वह हरनाथसिंह का पुत्र था। उदयसिह ने महाराजा अजितसिंह जोधपुर की सेवा स्वीकार महाराजा के द्वारा लडे गये युद्धो मे भाग लिया था। वह अ ने समसामयिक सरदारो मे वडा प्रतिष्ठित सरदार था।

—कर्मसिंहोतो का काव्य सग्रह।

पृ. १०१ गीत ६८ प्रथीराज जैतावत—जोधपुर के राव रिडमल के पुत्र अखैराज का चतुर्थ वशधर पृथ्वीराज जैतावत। वह मारवाड के वगडी ठिकाने वालो का पूर्वज था। पृथ्वीराज के पिता जैता ने राव मालदेव के पक्ष मे गिररी समेल के युद्ध मे वादशाह शेरशाह से लडते हुए वीरगति प्राप्त की थी। पृथ्वीराज ने भी अपने पिता राव जैता का अनुमरण करते हुए जोधपुर के राव मालदेव की सहायता की थी। वि. सवत् १६१० मे राव मालदेव ने मेडता के राव वीरमदेव के पुत्र राव जयमल मेड़तिया पर चढाई की तव राव पृथ्वीराज ने जयमल की सेना से युद्ध किया और जूझते हुए रण

खेत रहा। गीत मे पृथ्वीराज की युद्ध मृत्यु पर कवि ने गीतनायक की पर कुल परम्परा का स्मरण करवा कर उसके परिवार वालो को सान्त्वना दी है। और युद्ध मे प्राप्त मृत्यु के गौरव की सराहना की है।

—मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ १३४–१३५।

पृ. १०२ गीत ६९ नारायण धनराजोत राठौड़—धनराज का पुत्र नारायणदास राठौड। नारायणदास सिवाणा स्थान पर मुगल सेना से लड कर मारा गया था। सभवत राजा चन्द्रसेन जोधपुर के विरुद्ध भेजी गई शाही सेना से वह लडता हुआ मारा गया था। वि स १६३० मे बादशाह अकबर ने सिवाना पर बीकानेर के राव रायसिंह, केशवदास मेडतिया (सवलपुर–कवलाद वालो का पूर्वज) और शाहकुलीखाँ को भेजा था। सभवत नारायणदास कथित युद्ध मे ही मारा गया था।

—मारवाड का इतिहास प्र भा पृ १५२–१५३

पृ. १०३ गी ७० फहीम राडदडे रौ धणी—मारवाड के राडदडे सस्थान का शासक फहीम राठौड। वह मडोर के राव रिडमल के वशज पुञ्जराज का पुत्र था। गीतनायक का अन्य वृत्तान्त अप्राप्य है। किन्तु गीत लेखिका पदमा सादुवण के समय के आधार पर युद्ध काल वि स. १६३४ के आसपास ठहरता है।

पृ. १०५ गीत ७१ गोकलदास मानावत राठौड़—मानसिंह राठौड का पुत्र गोकुलदास राठौड। नागौर के राव अमरसिंह के बक्षी सलावतखा को कटार से मार कर मारे जाने पर मानसिंह ने अपने अन्य तेरह साथियो सहित शाही गुर्जवरदारो तथा सेवको पर हमला किया और मलूकचद आदि को मार कर वह भी अपने साथियो सहित मारा गया था।

पृ. १०६ गीत ७२ साहबसिंघ राठौड—गोपालदास के वशज साहबसिंह राठौड। गीत-नायक का अन्य परिचय प्राप्य नहीं है।

पृ. १०७-१०८ गीत ७३, ७४ महाराजा जसवतसिंघ राठौड़—मारवाड राज्य के राजा गजसिंह के द्वितीय पुत्र तथा नागौर के राव अमरसिंह के वडे भाई महाराजा जसवतसिंह राठौड। महाराजा जसवतसिंह का माघ कृष्णा ४ सवत् १६८३ वि मे दक्षिण प्रान्त के बुरहानपुर मे जन्म हुआ और राजा गजसिह के निधनोपरान्त स. १६९५ जेठ सुदी ३ को मारवाड का स्वामित्व प्राप्त हुआ। महाराजा जसवतसिंह को बादशाह शाहजहाँ ने पाँच हजार जात पाँच हजार सवारों का मन्सब प्रदान किया था। वह शाही सेना मे रहकर युद्ध अभियानो मे भाग लेता रहा। सवत १७१५ वि मे शाहजादे मुराद और औरगजेब के विद्रोह करने पर उन्हे दबाने के लिए इनके प्रधान सेना नायकत्व मे शाही सेना भेजी गई थी। उस समय उनके साथ कोटा का हाडा

नरेश मुकुन्दसिंह, रतलाम का राजा रतनसिंह, शाहपुरा का राजा सुजानसिंह सिसोदिया, खेलू मालू दक्षिणी, देवीसिंह बुन्देला प्रभृति अनेक हिन्दू मन्सवदार भेजे गए थे। उक्त युद्ध मे शाही सेना पराजित हुई थी और शाहजादे द्वय की विजय हुई थी। शाहजादे औरगजेब ने जव मुराद और दाराशिकोह को मरवा तथा शाहजहाँ को वन्दी वनाकर सल्तनत पर अधिकार किया तव फिर उसने शाहजादा शुजा का दमन करना तय किया और मिर्जा राजा जयसिंह कछवाहा आमेर के द्वारा महाराजा जसवंतसिंह को अपने पक्ष मे किया। औरगजेब ने भी जसवतसिंह को मन्सव प्रदान कर सम्मानित किया। किन्तु, वादशाह और जसवतसिंह के आन्तरिक विरोध वना रहा। अन्त मे महाराजा का वि स १७३५ मे जमरूद स्थान पर देहावसान हो जाने पर औरगजेब ने मारवाड राज्य को जब्त कर महाराजा के नवजात पुत्र अजितसिंह को समाप्त कर उनके परिवार से वदला लेना चाहा। किन्तु स्वामी भक्त राठौड दुर्गादास और उनके सहयोगियो के कारण औरगजेब अपना दूषित इरादा पूर्ण नही कर सका। जसवतसिंह जैसा वीर और निर्भीक था उसी के अनुरूप स्वय साहित्य, इतिहास एव दर्शन का भी मर्मी विद्वान् था। गीतो मे जसवतसिंह द्वारा छत्रपति शिवा सीसोदिया का दमन करने तथा उनकी मृत्यु पर धर्म की हानि होने आदि का वर्णन है।

—मारवाड का इतिहस रेऊ भा १ पृ २१९–२४३।

पृ १०९-१११ गीत ७५-७६ महाराजा अजीतसिंघ राठौड़ जोधपुर—जोधपुर के महाराजा जसवतसिंह के उत्तराधिकारी महाराजा अजितसिंह राठौड। महाराजा जसवतसिंह की जमरूद मे मृत्यु होने पर सवत् १७३५ चैत्र कृष्णा ४ को महारानी जादमन की कुक्षि से अजितसिंह का जन्म हुआ। वादशाह औरगजेब ने अजितसिंह और इनके अनुज दलथभन को वदी वनाना चाहा, किन्तु दुर्गादास राठौड, भारमल उदावत डेह, रघुनाथसिंह भाटी लवेरा, उदयभान भाटी खेजडला आदि तीन सौ स्वामिभक्त सरदारो ने दिल्ली मे शाही सेना का मुकाविला किया और अजितसिंह व दलथभन को मोहकमसिंह चाँदावत वलूदा की ठकुरानी के साथ गुप्त रूप से दिल्ली से मारवाड के लिए निकाल दिया। इनको सुरक्षा के लिए मुकुददास खीची आदि सरदार भी दिल्ली से साथ हो गए। तव फिर अजितसिंह को कुछ दिनो तक तो वलूदा मे रक्खा गया और फिर सिरोही के समीपस्थ सिवाना के छप्पन के पहाडो मे महाराजा अजितसिंह का पालन-पोषण किया गया। दुर्गादाश ने महाराना राजसिंह उदयपुर का सहयोग प्राप्त किया और वादशाह औरगजेब के शाहजादे अकवर को विद्रोह वना कर अपने पक्षमे वना लिया। तदन्तर औरगजेब का वालक महाराजा अजितसिंह तथा मारवाड की ओर से ध्यान हटाने के लिए अकवर को दक्षिण मे मरहठो के पास ले गया। पीछे मारवाड मे मोहकमसिंह मेडतिया तोसीना, सोनग चापावत, अजवसिंह चापावत, राजसिंह मेडतिया आलनियावास आदि राठौड वीरो ने जोधपुर,

पुष्कर, देमूरी, डीगराना, महेवा, सोजत आदि स्थानो के युद्धो मे अपने प्राणो की बलि देकर मारवाड मे शाही सैनिको को मारते रहे। औरगजेब के निधनोपरान्त महाराजा अजितसिंह ने मेवाड के महाराना और आमेर के महाराजा सवाई जयसिंह की सहायता से मारवाड पर अधिकार स्थापित किया। तदनन्तर अजितसिंह ने सैयद भाइयो से साँठ–गाँठ कर बादशाह फर्रुखशियर को मरवा कर प्रतिशोध लिया। ये एक ओर जहाँ विद्वान् वीर, हिन्दू धर्म मे दृढ आस्था रखने वाले धार्मिक राजा थे वहाँ दूसरी ओर कृतघ्न और क्रूर भी कम नही थे। वयस्क होने पर इन्होने दुर्गादास जैसे अपने उद्धारक को निर्वासित किया। अपने भाई दलथमन को दक्षिण मे छल से मरवाया। राव अमरसिंह के वशज और अपने निकटस्थ सगोत्रीय मोहकमसिंह को दिल्ली मे और मोहनसिंह को कासली (शेखावाटी) मे विश्वासघात कर मरवाया। अन्त मे सवत् १७८१ वि मे जेष्ठ राजकुमार अभयसिंह के सकेत से जोधपुर के किले मे इनके द्वितीय पुत्र वख्तसिंह ने इन्हे रात्रि मे निद्रावस्था मे मार डाला।

—मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ २४८ अजितविलास,
मारवाड का इतिहास द्वितीय भाग पृ ६६६–६६९।

पृ. ११२ गीत ७७ महाराजा अभैसिंघ राठौड़ जोधपुर—जोधपुर के महाराजा अजितसिंह का जेष्ठ पुत्र और शासनाधिकारी महाराजा अभयसिंह जोधपुर। वह महाराजा अजितसिंह के निधन के पश्चात् स १७८१ श्रावण शुक्ला ८ को राजगद्दी का अधिकारी बना। फिर नवाब सर बुलदखाँ के साथ हामिदखाँ और अन्य विद्रोही दक्षिणियो का दमन करने पर नियत हुआ। फिर उसने अपने अनुज रायसिंह एव आनन्दसिंह को मारवाड से निकाला और राव इन्द्रसिंह से नागौर छीन कर अपने भाई वख्तसिंह को राजाधिराज की उपाधि सहित प्रदान की। जब वि स १७८७ में दक्षिण मे गुजरात के राज्यपाल सर बुलदखाँ ने विद्रोह कर अपने को स्वतत्र शासक घोषित किया तब उसको दण्डित कर अधिकार च्युत करने के लिए महाराजा अभयसिंह को नियत किया गया। अभयसिंह ने अपने भाई राजाधिराज वख्तसिंह, ठाकुर शेरसिंह मेडतिया रिया, ठाकुर जालिमसिंह मेडतिया कुचामन और ठाकुर कुशलसिंह चाँपावत आउवा प्रभृति मारवाड के योद्धाओं सहित अहमदाबाद पर आक्रमण किया और नवाब सर बिलदखाँ को समझौता कर गुजरात से चले जाने के लिए बाधित कर दिया। अन्त मे सर बिलदखाँ ने नीबाज ठाकुर अमरसिंह उदावत की मध्मस्थता से अहमदाबाद त्याग कर प्रतापगढ मे कुछ समय तक शरण ली। अभयसिंह ने अहमदाबाद पर अधिकार कर वहाँ भंडारी रत्नसिंह को अपना नायब नियुक्त कर वहाँ की व्यवस्था की। अभयसिंह ने बाजीराव पेशवा से मिलकर बडौदा पर अधिकार करना चाहा किन्तु परिस्थिति वश वह इसमे सफल न हो सका। स १७९६ वि मे अभयसिंह ने बीकानेर पर घेरा डाल कर बीकानेर को

हडपना चाहा। बीकानेर महाराजा जोरावरसिंह ने जयपुर के कछवाहे महाराजा सवाई जयसिंह से सहायता की प्रार्थना की। सवाई जयसिंह ने अभयसिंह के विरुद्ध जोधपुर पर चढाई करदी तब वह बीकानेर से भाग कर जोधपुर लौटा और जयपुर महाराजा से समझौता किया। सवत् १८९६ आषाढ शुक्ला १५ को महाराजा अभयसिंह का देहान्त हो गया। वह उदार, प्रजा पालक और विद्वान शासक था। इसके समय मे डिंगल भाषा के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रथो की रचना हुई।

—मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ ३३१, ३३२, ३३३,
३५१, ३५७, राजरूपक ३६३।

पृ. ११४ गीत ७८ महाराजा वख्तसिंघ राठौड़ जोधपुर—महाराजा अजितसिंह के द्वितीय पुत्र और महाराजा अभयसिंह जोधपुर के लघु भ्राता वख्तसिंह। वख्तसिंह ने अपने पिता की महाराजा अभयसिंह के कहने पर हत्या की जिसके पुरस्कार मे अभयसिंह ने उसको नागौर का राज्य और राजाधिराज की पदवी दी। उसने अहमदाबाद और बीकानेर के युद्धो मे अपने भाई महाराजा अभयसिंह की सहायता की। तदनन्तर सं १७९८ वि मे अजमेर के पास गगवाना स्थान पर महाराजा सवाई जयसिंह की विशाल सेना से लडा। उस सेना मे जयपुर नरेश के अतिरिक्त बूदी, शाहपुरा, किशनगढ, भरतपुर, करौली, रामपुरा, शिवपुर बडौदा, सीकर और झुझुनू आदि २२ राजा राव जयपुर की सेना मे थे। वख्तसिंह बडी वीरता से लडा किन्तु अन्त मे पराजित हुआ। महाराजा अभयसिंह की मृत्यु के बाद वख्तसिंह ने उसके पुत्र और अपने भतीजे महाराजा रामसिंह से जोधपुर छीन लिया। वह सं. १८०८ मे जोधपुर की गद्दी पर बैठा और स १८९९ वि मे मर गया। वख्तसिंह दुर्घर्षवीर, विकट साहसी, निपुण न्यायी और स्वय विद्वान् तथा विद्याप्रेमी शासक था।

—मारवाड़ का इतिहास प्र भा पृ ३६७, ३६९ मारवाड़ रा
उमरावाँ री वात, उम्मेदसिंह सीसोदिया रा गीत पृ ८३-८४
एनाल्स एण्ड ऍंटिक्विटीज ऑफ राजस्थान भा २ पृ १८६७

पृ ११६ गीत ७९ महाराजा राजसिंघ राठौड़ किसनगढ—किशनगढ राज्य का शासक महाराजा राजसिंह राठौड। वह महाराजा मानसिंह का पुत्र और रूपसिंह का पौत्र था। इसका जन्म स १७३१ मे हुआ था। दिल्ली के सिंहासन के लिए मुअज्जम के निधन के बाद जब उसके शाहजादो मे युद्ध हुआ तब राजसिंह ने अजीमुशान का पक्ष लिया। किन्तु अजीमुशान रावी नदी मे डूब गया तब राजसिंह भी घर लौट गया। वह वीर और विद्यानुरागी शासक था। प्रसिद्ध कवि वृन्द उसका आश्रित और दरबारी

कवि था। राजसिह स्वय उत्तम कवि था। उसने 'वाहुविलास' और 'रसपाय' नामक दो काव्य ग्रथो का ब्रजभाषा मे प्रणयन किया था। वाहुविलास मे श्रीकृष्ण रुक्मणी विवाह का वीररसपूर्ण वर्णन है। वह स १८०५ वि. मे स्वर्गवासी हुआ।

—राजस्थान का पिंगल साहित्य पृ १२७–१२६, वाकीदास री ख्यात पृ ८३।

पृ. ११८ गीत ८० किसनगढ रा किला री द्रढ़ता—किशनगढ़ नगर मे महाराजा राजसिंह राठौड के छोटे पुत्र महाराजा वहादुरसिंह ने अराई और किशनगढ़ के किलो का निर्माण किया था। वह प्रसिद्ध भक्त महाराजा सावतसिंह का छोटा भाई था। महाराजा सवाई माधवसिंह जयपुर, महाराना अरिसिंह उदयपुर, महाराजा विजयसिंह जोधपुर एव माधवराव सिंधिया से वहादुरसिंह की अच्छी मित्रता थी। वह जैसा वीर था उसी के अनुरूप दानी, विद्वान और सगीत का मर्मी शासक था। 'प्रतापसिंघ मोहकमसिंह हरिसिंघोत री वात' और राग रागिनियो के पद सग्रह के रूप मे इनकी कृतियाँ उपलब्ध है। स. १८३८ वि, मे महाराजा वहादुरसिंह का परलोकवास हुआ।

—वाकीदास री ख्यात पृ ८२।

पृ १२० गीत ८१ राजा पदमसिंघ राठौड़ रतलाम—मालवा मे राठौडो के राज्य रतलाम का शासक राजा पदमसिंह राठौड। यह राज्य जोधपुर के राजा उदयसिंह के पौत्र राजा रत्नसिंह ने स्थापित किया था। पदमसिंह राजा पृथ्वीसिंह का पुत्र था। वह वि स १८०० से १८३० तक रतलाम का शासक रहा। पदमसिंह तत्कालीन नरेशो मे अपनी वदान्यता के लिए प्रसिद्ध था।

—मारवाड़ का इतिहास भा २ पृ ६८७।

पृ. १२२ गीत ८२ ठाकर जोरावरसिंघ राठौड़ गोठियाणा—किशनगढ़ के गोठियाने ठिकाने का स्वामी जोरावरसिंह राठौड़। जोरावरसिंह ने किशनगढ़ राज्य की ज्यातियों के विरुद्ध युद्ध लडकर वीरगति प्राप्त की थी। राजस्थानी काव्य मे जोरावरसिंह की वीरता से सम्बधित दोहे, कवित्त और गीत मिलते हैं।

पृ. १२५ गीत ८३ प्रतापसिंघ राठौड़ ....—महाराजा तख्तसिंह के छोटे पुत्र और महाराजा जसवतसिंह के लघु भ्राता महाराजा प्रतापसिंह राठौड। प्रतापसिंह यद्यपि जोधपुर महाराजा के भ्राता थे किन्तु अपनी वुद्धि कौशल और कार्य दक्षता से गुजरात का ईडर राज्य प्राप्त कर वि सं १९५८ मे वहा के महाराजा हो गए। अग्रेजो के परम मित्र, स्वामी दयानन्द सरस्वती के शिष्य और जोधपुर राज्य के अभिभावक के रूप मे इन्होंने दीर्घकाल तक मारवाड का शासन सम्हाले रक्खा। महाराजा के अभिभावक के रूप मे मारवाड मे सेना व पुलिस का गठन किया तथा शिक्षा के क्षेत्र मे महान् सेवाएँ की। महाराजा प्रतापसिंह वडे निर्भीक योद्धा और आखेट प्रिय व्यक्ति थे। शूकर और सिंह की शिकारो का उन्हे वडा शौक था। सं. १९७९ मे वे मृत्यु लोक गए।

—मारवाड का इतिहास भा २ पृ ४६८-४६९।

पृ. १२८ गीत ८४ ठाकर दुरगादास आसकरणोत राठौड़—आशकर्ण का पुत्र दुर्गादास राठौड। वि स १६९५ द्वितीय श्रावण सुदि १४ को उसका जन्म हुआ था। दुर्गादास की माता के साथ आशकर्ण का प्रेम न्यून होने की वजह से उसका वाल्यकाल अपनी माता के सरक्षण मे लूणवे ग्राम मे वीता था। किन्तु दुर्गादास का भाग्योदय राज्यकीय टोले के रक्षक राईके को मारने पर हुआ। राईके को मारने के अपराव मे वह महाराजा जसवतसिंह के दरवार मे वुलाया गया। जसवतसिंह के पूछने पर उसने राईका द्वारा उनके प्रति कटु-वचन कहने के अपराव मे उसे मारना सिद्ध हुआ। महाराजा जसवतसिंह दुर्गादास की निर्भीक प्रकृति और साहसिकता पर वडे प्रसन्न हुए। फिर तो जसवतसिंह ने उसे अपनी सेवा मे रक्ख लिया। दुर्गादास ने महाराज की सेवा मे रहकर २० वर्ष की वय मे वि स १७१५ मे उज्जैन मे उत्तराधिकार के मुराद औरगजेव के युद्ध मे शाही, पक्ष मे रह कर उनके विरुद्ध भाग लिया। महाराजा जसवतसिंह के स १७३५ वि मे जमरूद मे मृत्यु हो जाने के वाद मारवाड की रक्षा का भार ग्रहण किया और शिशु महाराजा अजितसिंह की जीवन रक्षा की। वह अनवरत ४० वर्ष तक कभी जोधपुर, कभी मेवाड और कभी दक्षिण मे औरगजेव के विरुद्ध योजना वद्ध ढग से लड़ता रहा। अन्त मे औरगजेव ने उसकी वीरता से परास्त होकर उसको पाटन (गुजरात) की फौजदारी और उच्चमन्सव व प्रदान किया। वि स १७६३ मे औरगजेव की मृत्यु के पश्चात् राठौडो ने मारवाड से शाही थानो को वलात् हटा दिए शाही सैनिको को स्थान स्थान पर मार कर मारवाड पर अधिकार स्थापित किया। और महाराजा अजितसिंह को जोधपुर के राजसिंहासन पर अभिपिक्त किया था। इस दीर्घकालीन सघर्प मे दुर्गादास का प्रमुख हाथ रहा। वादशाह शाह आलम वहादुरशाह द्वारा मारवाड जप्त करने पर साभर स्थान के युद्ध मे उसने अजितसिंह की मदद की और पुन मारवाड पर राठौडो का अधिकार स्थापित किया।

तदनन्तर जोधपुर के स्वार्थी सरदारो और राज्य कर्मचारियो के वहकाने पर अजित-सिंह और दुर्गादास के आपस मे वनी नही। तव उसे मारवाड का परित्याग कर मेवाड मे महाराना सग्रामसिह द्वितीय के पास जाना पडा। महाराना सग्रामसिह और महाराना अमरसिह दूसरे ने उसे ससम्मान मेवाड मे आश्रय दिया और उसकी प्रतिष्ठा के अनुरूप वदनौर आदि की जागीर दी। उस अवधि मे वह रामपुरा का प्रशासक भी रहा। वही वि स १७७५ मार्गशीर्ष सुदि ११ को उसका अस्सी वर्ष, तीन माह और अठ्ठाईस दिन की आयु मे देहावसान हुआ। मालवा मे क्षिप्रा के तट पर उसका अन्तिम सस्कार हुआ वहां उसकी स्वामिभक्ति, वीरता और परम साहसिकता की स्मृति का प्रतीक स्मारक वना हुआ है।

—अजित विलास, वाकीदास री ख्यात पृ ५५–५६

Rathod Durgadas by Row

पृ. १२६ गीत ८५ हाथीसिंघ चंपावत...............—राठौडो की चाँपावत खाँप के ठाकुर गोपालदास का पांचवा पुत्र हाथीसिह चाँपावत। वह वीकानेर के महाराजा दलपतसिह को वादशाह जहांगीर द्वारा अजमेर मे वन्दी वनाए जाने मर दलपतसिह को मुक्त करवाने के लिए अपने तीन सौ साथियो सहित स १६७० वि. फाल्गुन वदि ११ को दलपतसिह सहित लडते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ था। 'दासपां के इतिहास' मे हाथीसिह की जन्म तिथि आसोज कृष्णा ११ स. १६५१ वि० अकित की हुई है जो गलत है।

—दलपत विलास भूमिका पृ ११ दासपा का इतिहास पृ ३८

पृ. १३१ गीत ८६ ठाकर सवाईसिंघ चांपावत पोहकरण—मारवाड के पोकरण ठिकाने का स्वामी ठाकुर सवाईसिंह चाँपावत। वह ठाकुर सवलसिंह का पुत्र और देवीसिंह का पौत्र था। जोधपुर महाराजा भीमसिंह के निधन पर उनका उत्तराधिकार महाराजा मानसिंह ने ग्रहण किया। किन्तु भीमसिह की गर्भवती महारानी के उनकी मृत्यु के वाद उत्पन्न पुत्र धौंकलसिह को जोधपुर का वास्तविक दावेदार होने के कारण ठाकुर सवाईसिंह ने महाराजा मानसिह के विरुद्ध धौंकलसिह का पक्ष लिया और मेवाड की राजकुमारी कृष्णाकुमारी के विवाह सम्बन्ध के मतभेद से रुष्ट महाराजा जगतसिंह कछवाहा तथा टोंक के नवाव अमीरखाँ पिण्डारियो के मुखिया को अपने पक्ष में कर मानसिंह पर आक्रमण कर दिया। परवतसर के निकटस्थ गीगोली स्थान पर जब दोनो पक्षो की सेना मे मुकाविला हुआ तब मारवाड के अधिकाश सरदार मानसिंह के विरुद्ध जयपुर की सेना मे जा मिले। महाराजा मानसिंह को विवश होकर रणभूमि से भाग कर जोधपुर के

किले का आश्रय पकडना पडा। अन्त मे मानसिंह ने अमीरखाँ को लालच देकर गुप्त रूप से अपने पक्ष मे वना लिया। और सवत् १८८५ चैत्र सुदि २ के दिन नागौर के मूडवा ग्राम मे शिविर मे वारूद विछवा कर छलाघात से अमीरखाँ ने सवाईसिह और उसके साथी ठाकुर वख्शीराम चडावल, ठाकुर ज्ञानसिह पाली और ठाकुर केशरीसिह वगडी को उनके एक हजार सैनिको सहित मार डाला। सवाईसिह अपने युग का प्रवल योद्धा, विदग्ध राजनीतिज्ञ और जवर्दस्त सगठनकर्त्ता था। उसके निधन से महाराजा मानसिंह और धौंकलसिह का विरोध समाप्त हो गया।

—मारवाड का इतिहास द्वि भा. पृ ४१२-४१३, सघशक्ति मासिक वर्ष ३ अक १२ पृ १५–१६ दिसम्वर १९६२।

पृ. १३३ गीत ८७ ठाकर सरदारसिंच रतनसिंघोत—ठाकुर रतनसिह का पुत्र ठाकुर सरदारसिंह राठौड। सरदारसिह ने सवत् १७९८ मे महाराजा सवाई जयसिह जयपुर और राजाधिराज वख्तसिह नागौर के वीच लडे गए युद्ध मे राजाधिराज वख्तसिह के पक्ष मे भाग लिया था। उल्लिखित युद्ध मे वख्तसिह के पाच हजार सैनिको मे से केवल ६० वीर घायल होकर जीवित वचे थे। सरदारसिह भी घायल होकर जीवित वच रहा था।

पृ. १३५ गीत ८८ ठाकर कलियाणदास जैमलोत राठौड़ वोरूंदा—ठाकुर कल्याणदास मेडतिया राठौड। वह मेडता के राव जयमल का सातवाँ पुत्र था। कल्याणदास ने शाही सेना के किसी वडे अधिकारी को युद्ध मे कटारी से मारा था। कल्याणदास पींसागन के स्वामी अक्षयराज पवार के साथ हुए युद्ध मे मारा गया था। उसका वदला लेने के लिए रतनसिह राठौड ने अक्षयराज पर सेना सजा कर आक्रमण किया और रण स्थल मे अक्षयराज को मार कर पीसागन पर अधिकार कर लिया था। कल्याणदासोत मेडतियो के मारवाड मे वोरूदा, खोड, फालणा और वरकाण आदि ठिकाने थे।

—रतनसिंघ दूदावत रा कवित्त, मारवाड रा जागीरदारा री वंशावली।

पृ. १३६ गीत ८९ कलियाणदास मेड़तिया— जगन्नाथ का वशज कल्याणदास मेडतिया राठौड। कल्याणदास के ठिकाने तथा अन्य ऐतिहासिक परिचय प्राप्त नही है। सभवत वह मेडतिया गोयददासोतो मे किसी ठिकाने का ठाकुर था।

पृ. १३७ गीत ९० गिरधरदास केसोदासोत मेड़तिया वोरावड़—मारवाड़ के परवतसर प्रान्त के वोरावड ठिकाने वालो का पूर्वज गिरधरदास मेड़तिया। वह वादशाह

अकबर के मन्सबदार केशवदास का उत्तराधिकारी था। गिरधरदास ने युद्ध मे शत्रुओ का सहार कर यश प्राप्त किया था। बादशाह ने उसे पहले पदमावती और फिर परबतसर पट्टे मे दिया था। वह शाहजहाँ बादशाह के समय मे सवत् १६८६ मे खाँनजहाँ के विरुद्ध के युद्ध मे वीरगति को प्राप्त हुआ। गिरधरदास की सतति वालो के अधिकार मे मारवाड के परवतसर परगने के बोरावड, सबलपुर, बडू आदि ठिकाने थे।

—राठौडा री वसावली, बाकीदास री ख्यात पृ ६२।

पृ. १३९ गीत ९१ गदाधरदास गिरधरदासोत मेडतिया सबलपुर—मारवाड मे परवतसर परगने के मेडत्तियो के सबलपुर ठिकाने वालो का पूर्वज गदाधरदास मेडतिया। वह अकबर बादशाह के मन्सबदार केशवदास मेडतिया का पौत्र और गिरधरदास का पुत्र था। गिरधरदास के साथ उसने किस युद्ध मे वीरता दिखाई थी कोई अन्य आधार स्रोत नही मिला। वह युद्ध मे घायल होकर जीवित रह गया था।

पृ १४१ गीत ९२ रघुनाथसिंघ मेड़तिया मारोठ—मारवाड के मारोठ भूभाग का अधिपति रघुनाथसिंह मेडतिया राठौड। वह श्यामलदास मेडतिया का द्वितीय पुत्र था। रघुनाथसिंह शाहजादे औरगजेब की सेना मे शाही मन्सबदार था। उसने स १७१५ वि मे उज्जैन के युद्ध मे औरगजेब का साथ दिया था। औरगजेब ने बादशाह बनने पर उसे ११२ ग्रामो से मारोठ का राज्य प्रदान कर सम्मानित किया। वह सर्व प्रथम वि स १६८६ मे शाही दरबार मे गया था। मारोठ पर उसका सवत् १७१७ वि मे अधिकार हुआ। शाही सेवामे रहकर उसने आसाम, दक्षिण के युद्ध और शाहजादे शुजा के विरुद्ध के युद्धो मे वीरता दिखाई थी। सवत् १७४० वि मे उसका मारोठ मे निधन हुआ।

—ठिकाना कुचामन की ख्यात, रघुनाथसिंह मेडतिया की झमाल,
राजस्थान पुरालेखा विभाग, बीकानेर का रेकार्डस्।

पृ. १४३ गीत ९३ सेरसिंघ कुसलसिंघ राठौड—मारवाड के रिया ठिकाने का ठाकुर शेरसिंह मेडतिया और आऊवा ठिकाने का ठाकुर कुशलसिंह चापावत राठौड। शेरसिंह सरदारसिंह का और कुशलसिंह हरनाथसिंह का पुत्र था। इन दोनो वीरो ने महाराजा अभयसिंह की सेना मे रह कर गुजरात के विद्रोही शाही राज्यपाल सर बुलदखाँ हुए अहमदाबाद के स १७८७ के युद्ध मे वीरत्व दिखाया था। महाराजा अभयसिंह की मृत्यु के बाद उनके पुत्र महाराजा रामसिंह और अभयसिंह के अनुज

राजाधिराज वख्तसिह के मध्य के आपसी युद्धो मे शेरसिह ने रामसिह का तया कुशलसिह ने वख्तसिह का साथ दिया था। अन्त मे सं. १८०७ मे दोनो ही वीरो ने अपार शौर्य का प्रदर्शन कर रण भूमि मे एक दूसरे के शस्त्रो की मार से परम गति प्राप्त की थी। वह युद्ध मेडता के रणस्थल मे लडा गया था।

—मारवाड रा उमरावा री वारता, ठिकाना कुचामन की ख्यात।

पृ. १४५ गीत ६४ ठाकुर सिवनार्थसिघ कुचामन—मारवाड के मारोठ परगने के कुचामन ठिकाने का ठाकुर शिवनार्थसिह मेडतिया। वह ठाकुर सूरजमल्ल का पुत्र था। कुचामन ठिकाना रघुनार्थसिहोत मेडतियों की जालमसिहोत प्रशाखा का मुख्य ठिकाना था। कुचामन के सरदार सदैव जोधपुर के स्वामि भक्त सरदार रहे हैं।

—ठिकाना कुचामन की ख्यात, वाकीदास री ख्यात पृ ६६।

पृ. १४६ गीत ६५ राव वार्घसिघ मेड़तिया मसूदा—अजमेर मेरवाडा के मसूदा सस्थान का स्वामी राव-वार्वसिह मेडतिया राठौड। वह मेडता के राव वीरमदे दूदावत के नवें पुत्र जगमाल का पुत्र था। जगमाल से मेडतियो की जगमालोत शाखा का प्रचलन हुआ।

—वाकीदास री ख्यात पृ ६०।

पृ. १४८, १४६ गीत ६६, ६७ पहाड़सिघ महेचा जसोल—मारवाड के मालानी परगने के महेचा राठौडो के जसोल सस्थान का स्वामी पहाडसिह। वह जसवतसिह का पौत्र तथा वैरीशाल का पुत्र था।

पृ. १५१ गीत ६८ चतरसिघ वाला मोकलसर—मारवाड के जालौर भूभाग के मोकलसर का स्वामी चतुरसिह वाला राठौड। यह शाखा रिडमल के पौत्र वालोजी से वाला (वालावत) कहलाई।

—वाकीदास री ख्यात पृ. ५७

पृ. १५२ गीत ६६ अमरसिघ उदावत नींवाज—राठौडो की उदावत खाँप का अमरसिह। वह ठाकुर कुशलसिह का पुत्र था। संवत् १७७६ मे महाराजा अजितसिह ने अजमेर पर आक्रमण कर वहाँ के दीवान नाहरखाँ और उसके भाई रुहेलाखाँ को मार कर अमरसिह को अजमेर का प्रवधक नियुक्त किया था। अमरसिह ने अजमेर के गढ वीटली को सुसज्जित का अजमेर पर महाराजा का अधिकार स्थापित किया। वादशाह

ने पुनः अजमेर को प्राप्त करने के लिए सवत् १७८० वि. मे शरफुद्दौला इरादतमंदखाँ को ५०००० हजार सेना देकर विदा किया। उसके साथ आमेर नरेश सवाई जयसिंह को भी भेजा। ठाकुर अमरसिंह ने शाही सेना का वडी वीरता से मुकाबिला किया। कुछ दिनो तक युद्ध होते रहने के वाद महाराजा जयसिंह कछवाहा ने महाराजा अजितसिंह को समझा कर अजमेर का अधिकार त्यागने के लिए राजी कर लिया। और बादशाह से सधि करवादी। गीत मे अमरसिंह के साहस और वीरता का वर्णन है।

—वाकीदास री ख्यात पृ. ६८, मारवाड का इतिहास प्र. भा ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, अजितविलास.

पृ. १५३,१५५ गीत १००, १०१ ठाकर सुरताणसिंघ उदावत नींवाज—उदावत राठौडो के नीवाज ठिकाने का ठाकुर सुरतानसिंह। वह महाराजा मानसिंह जोधपुर का समकालीन सरदार था। महाराजा मानसिंह ने अपने कुटिलमति परामर्शको के वहकाने पर स १८७७ द्वितीय जेष्ठ सुदि १३ को सुरतानसिंह की जोधपुर स्थित नीवाज की हवेली पर आक्रमण किया। सुरतानसिंह ने अपने भाई शूरसिंह सहित जोधपुर की सेना का वीरता पूर्वक सामना किया और हवेली से वाहर निकल कर अपने कतिपय वीरो सहित जूझता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। वह स्वामिभक्त सरदार था।

—मारवाड का इतिहास प्र भा पृ. ४२३।

पृ. १५६ गीत १०२ ठाकुर सुरतानसिंघ उदावत री ठकुराणी—नीवाज के ठाकुर सुरतानसिंह उदावत की ठकुरानी। ठाकुर सुरतानसिह पर स १८७७ वि मे फौजराज के नायकत्व पर भेजी गई जोधपुर की सेना से लडकर मारे जाने पर उनकी धर्मपत्नि चहुवानजी ने सती धर्म का पालन कर देह त्याग किया था। वह ठाकुर दुर्जनसिंह चहुवान की पुत्री थी।

पृ. १६१ गीत १०३ ठाकर रूपसिंघ उदावत रायपुर—उदावतो के रायपुर ठिकाने का ठाकुर रूपसिंह उदावत। जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंह के सकेत पर टोक वालो के पूर्वज नवाव अमीरखाँ ने रायपुर पर घेरा डाला। ठाकुर रूपसिंह ने वीरता पूर्वक शत्रु का सामना करते हुए रायपुर की रक्षा की। नवाब अमीरखाँ रायपुर को विजय नही कर सका और हताश होकर घेरा उठा कर चला गया।

—वाकीदास आशिया कृत ठाकर रूपसिघ री झमाल।

पृ १६२ गीत १०४ राउत भीमा रताउत सेतरावा—मारवाड के शेरगढ़ परगने के सेत्रावा ठिकाने का अधिपति रतनसिह का पुत्र भीमसिह। रावत भीमसिह ने मोकल और अचलदास को युद्ध मे मार कर सेत्रावा पर विजय प्राप्त की थी। ख्यातो मे इसका कोई वृत्तान्त प्राप्त नही है।

पृ. १६३ गीत १०५ कचरा राठौड़—कचरा (कल्याणदास) राठौड। गीतनायक ठाकुर जसवतसिह का पुत्र और कर्णसिह का पौत्र था। उसने दिल्ली मे शाही सेना से लड कर वीरगति प्राप्त की थी। किन्तु वह किस के विरुद्ध कव और क्यो लडा कोई व्यौरा प्राप्त नही होता। सभवत कल्याणदास दुर्गादास के सहयोगियो मे था और महाराजा अजितसिह के वाल्यकाल के युद्धो मे लड़ा होगा।

पृ. १६४ गीत १०६ सुन्दरदास गोगोद राठौड तेना—मारवाड के शेरगढ भूभाग के तेना ठिकाने का स्वामी सुन्दरदास गोगादे राठौड। वह राव वीरमदेव सलखावत के पुत्र गोगादेव राठौड की सतति परम्परा मे हुआ है। सुन्दरदास के पिता का नाम ठाकुर रामसिह और पितामह का खेता अथवा क्षेत्र सिह था। विशेप विवरण अनुपलव्ध है।

पृ १६५ गीत १०७ रावल पूंजा गहलोत डूंगरपुर—राजस्थान के डूगरपुर राज्य का शासक महारावल पुञ्जराज गहलोत। वह महारावल कर्मसिह का उत्तराधिकारी था। पुञ्जराज स १६६६ मे गद्दीनशीन हुआ और स १७१३ तक ४५ वर्ष शासन करता रहा। शाहजादा खुर्रम के साथ उसकी घनिष्ठ मित्रता थी। खुर्रम जव शाहजहाँ के नाम से वादशाह वना तव पुजराज ने शाही मन्सव प्राप्त कर और भी प्रतिष्ठा प्राप्त की।

—राजपूताने का इतिहास पहला भा पृ ४११–४१२

पृ. १०८ गीत १०८ आना गहलोत—आनन्दसिह अथवा अनोपसिह गहलोत। गीत नायक का अन्य परिचय उपलव्ध नही हुआ।

पृ. १६८ गीत १०९ विहारीदास गहलोत—विहारीदास गहलोत। वह प्रतापसिह का पुत्र और रावत कुशलसिह का सेनानायक था। कुशलसिह के राज्य पर शत्रुओ के आक्रमण करने पर उसने दुर्ग के वाहर निकल कर लडाई की और शत्रुओ का सहार कर वीरगति प्राप्त की। विशेष विवरण प्राप्त नही हुआ।

पृ. १६९ गीत ११० अचलसिंघ राणावत—सीशोदियो की राणावत शाखा का अचलसिह। वह अजवसिह राणावत का पुत्र अथवा वशधर था।

पृ. १७० गीत १११ सूरतसिंघ सगतावत—रावत विक्रमसिंह का तृतीय भाई सूरतसिंह। सूरतसिंह ने अपने भ्राता रावत विक्रमसिंह और रावत महासिंह सहित शाही सेना नायक रणवाजखां मेवाती की सेना पर आक्रमण किया था। रणवाजखाँ और उसका भाई नाहरखाँ खारी के किनारे के उक्त युद्ध मे काम आए। रावत महासिंह और दौलतसिंह भी रणखेत रहे। राठौड जयसिंह वदनौर, सामतसिंह चूडावत, महासिंह का पुत्र नाहर-सिंह और सूरतसिंह घायल हुए। महाराना सग्रामसिंह द्वितीय ने महासिंह की सेवाओ से प्रसन्न होकर उसके पुत्र को कानौड और सूरतसिंह को रावत की पदवी और वाठरडा का ठिकाना तथा चूडावत सामतसिंह को वम्वोरा की जागीर प्रदान की।

—मेवाड का सक्षिप्त इतिहास, पुरोहित पृ. १३०–१३१

पृ. १७२ गीत ११२ राजा भारतसिंघ सीसोदिया साहपुरा—शाहपुरा राज्य के राजा भारतसिंह सीशोदिया। भारतसिंह ने शाहपुरा को गद्दी प्राप्त कर दक्षिण मे बादशाह औरंगजेव के पास अपनी उपस्थिति दर्ज की। और फिर दक्षिण के युद्धो मे शाही सेवा मे रह कर वरावर भाग लेता रहा। वसतगढ विजय पर बादशाह ने भारतसिंह को राजा की उपाधि से सम्मानित किया। रणवाजखाँ मेवाती की मेवाड की चढाई के समय भारतसिंह ने मेवाड का पक्ष लेकर महाराना सग्रामसिह द्वितीय की सहायता की। इस सहायता के उपलक्ष्य मे महाराना ने मेवाड का काछोला प्रान्त प्रदान किया। उसी अवसर पर महाराना ने कवला, गीरोट, और बदनौर इलाका भी दिया था। तदुपरान्त सवत् १७८६ वि मे उक्त महाराना ने पुन ८६ हजार वार्षिक आय का जहाजपुर का परगना भी वखशा। वृद्धावस्था मे जेष्ठ राजकुमार उम्मेदसिंह ने भारतसिंह को नजर बद कर राज्याधिकार छीन लिया था। सवत् १७८६ मे इनका शाहपुरा मे देहावसान हो गया।

—शाहपुरा राज्य की ख्यात हस्तलिखित भा १

पृ. १७४ गीत ११३ राजा उम्मेदसिंघ सीसोदिया साहपुरा—राजा भारतसिंह का पुत्र राजा उम्मेदसिंह सीशोदिया शाहपुरा। उम्मेदसिंह का जन्म सोमवार कार्तिक सुदि ७ सवत् १७५५ वि मे हुआ था। और सन् १७२७ ई मे उसने अपने पिता को अधि-कार च्युत कर शाहपुरा का शासन अपने हाथ में लिया था। किन्तु ३१ दिसम्बर १७२९ ई मे भारतसिंह की मृत्यु के उपरान्त ही वह शाहपुरा की गद्दी पर बैठा था। वह कौमार्य काल से ही युद्ध मे भाग लेता रहा था। सन् १७२३ ई मे जोधपुर के महाराजा अजितसिंह के विरुद्ध जब शाही सेना अजमेर पर भेजी गई तब उम्मेदसिंह ने शाहपुरा की सेना का नेतृत्व किया था। सवत् १७९८ वि के महाराजा सवाई जयसिंह जयपुर और राजाधिराज वख्तसिंह के मध्यम हुए गगवाना के युद्ध मे उम्मेदसिंह ने जयपुर के पक्ष मे युद्ध मे भाग

लिया था। सन् १७४४ ई मे रावराजा बुद्धसिंह हाडा बूदी के पुत्र उम्मेदसिंह का बूदी पर अधिकार करवाने के युद्ध मे वह उम्मेदसिंह की ओर से लड़ा था। मार्च १–२ सन् १७४७ ई. के राजमहल तथा अगस्त १–६ सन् १७४८ के वगरू के युद्ध मे जो कि महाराजा सवाई ईश्वरीसिंह को पदच्युत कर महाराना जगतसिंह के भानजे महाराजा सवाई माधवसिंह प्रथम को जयपुर की गद्दी दिलवाने के लिए किए गए युद्ध मे वह महाराना की सेना मे रह कर माधवसिंह के पक्ष मे लडा था। तदनन्तर वह मरहठो के मेवाड पर किए गए आक्रमणो मे मेवाड का सशक्त पक्षधर वना रहा और महाराना अरिसिंह द्वितीय की ओर से १६ जनवरी १७६९ ई. मे उज्जैन मे ग्वालियर वालो के पूर्वज महादाजी सिंधिया की पैंतीस हजार प्रवल सेना को एक वार पराजित करने के बाद जयपुर की पन्द्रह हजार नागा (योद्धा साधुओ) की सेना से लड कर वीरगति को प्राप्त हुआ।

राजा उम्मेदसिंह कालीन राजस्थान और उसकी ऐतिहासिक आधार सामग्री लेख परम्परा भाग २३ पृ. ९४ से ११६.

पृ. १७६ गीत ११४ रावत मोहकमसिंघ देवलिया—देवलिया प्रतापगढ के महारावत प्रतापसिंह का अनुज और महारावत हरिसिंह का द्वितीय पुत्र रावत मोहकमसिंह। रावत मोहकमसिंह ने प्रतापगढ के राज्य मे दस्यु कर्मी भीलो का दमन किया और वादशाह के विद्रोही तथा पदच्युत राज्यपाल सर वुलदखाँ गुजरात को अपनी शरण मे रक्खा था।

—रावत मोहकमसिंघ हरीसिंघोत री वारता

पृ. १७९, १८२ गीत ११५, ११६ महाराणा भीमसिंघ—महाराना भीमसिंह सीशोदिया उदयपुर। वह महाराना अरिसिंह तृतीय के द्वितीय पुत्र थे। वह अपने वडे भाई महाराना हम्मीरसिंह दूसरे के निधन के वाद १८३४ पौष सुदि ८ को उदयपुर की गद्दी पर वैठा था। उसके शासन काल मे मरहठो तथा चूडावतो शक्तावतो के आपसी वैमन्यस्य के कारण विग्रह एव अशान्ति रही। इसके समय मे राजकुमारी कृष्णाकुमारी वाग्दान के प्रश्न को लेकर जयपुर व जोधपुर के राजाओ मे लडाइयाँ होती रही और आपसी विरोध के कारण मरहठो और अमीरखाँ पिण्डारी के अत्याचारो का शिकार मेवाड को भी होना पडा। अन्त मे अंग्रेज कम्पनी शासन से समझौता होने पर कही जाकर राजस्थान मे शान्ति हुई। सं. १८८५ चैत्र सुदि १४ को इनका देहात हो गया। भीमसिंह उदार और विद्याप्रेमी शासक था।

—मेवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ १५१–१६६ भीमप्रकास हस्तलिखित।

पृ. १८६ गीत ११७ महाराणा सभुसिंघ—महाराना शभुसिह उदयपुर। महाराना स्वरूपसिह के नि सतान स्वर्गवासी होने पर वह बागोर ठिकाने से गोद आकर स १६१८ वि मे उदयपुर की गद्दी नशीन हुआ और स १६३१ वि मे मृत्यु को प्राप्त हुआ था।

—मेवाड का संक्षिप्त इतिहास पृ १७८–१८२

पृ. १८६ गीत ११८ महाराणा स्वरूपसिंघ—महाराना स्वरूपसिह उदयपुर। स्वरूपसिह महाराना सरदारसिह का छोटा भाई था। सरदारसिह के नाऔलाद देहावसान हो जाने पर वह वि स १८६६ वि मे गद्दी बैठा था। स्वरूपसिह के गद्दी पर बैठने पर मेवाड के जागीरदारो के सेवा नियम तथा अधिकार आदि की व्यवस्था की और राज्य सचालन व्यवस्था मे सुधार किया। वह स. १६१८ मे मर गया।

—मेवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ १७३–१७८

पृ १६१ गीत ११६ रावत पहाडसिंघ चूंडावत सलूम्बर—मेवाड के सलूम्बर ठिकाने का स्वामी रावत पहाडसिह चूडावत। वह महाराना अरिसिंह तृतीय के पक्ष मे स १८२५ वि. मे उज्जैन मे महादाजी सिंधिया की सेना से वीरता पूर्वक लडता हुआ मारा गया था। वह रावत जोधसिह का पुत्र था। और सवत् १८२१ मे सलूम्बर की गद्दी पर बैठा था।

—शाहपुरा राज्य की ख्यात

पृ. १६६ गीत १२० रावत हमीरसिंघ भदेसर—मेवाड के भदेसर ठिकाने का रावत हम्मीरसिह चूडावत। वह रावत भैरोसिह का पुत्र था। महाराना भीमसिंह समय मे अमीरखाँ पठान ने भदेसर छीन कर निम्बाहेडा मे मिला लिया तब हमीरसिह ने आक्रमण कर भदेसर से मुसलमानो को निकाल कर अपना अधिकार स्थापित किया। हम्मीरसिंह ने मरहठो के विरुद्ध के युद्धो मे भी भाग लिया था।

पृ २०० गीत १२१ रावत प्रतापसिंघ चूडावत आमेट—मेवाड के आमेट ठिकाने का स्वामी रावत प्रतापसिह चूडावत। वह रावत फतहसिह का उत्तराधिकारी था। महाराना अरिसिह और फितूरी नाम से प्रसिद्ध महाराना रतनसिह के समर्थक नागाओ के युद्ध मे प्रतापसिह ने महाराना का पक्ष लिया था। गणेशपत के साथ की लकवा की लडाइयो में वह लकवा का पक्षधर होकर लडा था।

—राजपूताने का इतिहास ओझा जिल्द दूसरी पृ १२०६–१२११

पृ २०५ गीत १२२ महाराज सगतसिंघ सगतावत सांवर—अजमेर मेरवाडा के सावर सस्थान-का स्वामी महाराज शक्तिसिह शक्तावन। वह महाराना प्रतापसिह के अनुज महाराज शक्तिसिह के वशधर गोकुलदास भाणावत की सतति परम्परा मे था।

शक्तिसिह ने मल्हारराव होल्कर की सेना से लडाई लडी थी। और होल्कर की सेना को परास्त कर कीर्ति अर्जित की।

पृ. २०९ गीत १२३ ठाकर रार्जसिघ संखवास—जोधपुर की नागौर पट्टी के सखवास ठिकाने का ठाकुर रार्जसिह चौहान। वह ठाकुर अजबसिह का जेष्ठ पुत्र और महाराजा विजयसिह जोधपुर का विश्वस्त सामन्त था। रार्जसिह ने जयअप्पा सिंधिया द्वारा सवत् १८११ वि मे महाराजा रामसिह (पदच्युत) के पक्ष मे महाराजा विजयसिह पर आक्रमण करने पर मेडता के युद्ध मे भाग लिया था। मेडता के युद्ध मे विजयसिह के पराजित होकर नागौर मे शरण लेने पर जयअप्पा और रामसिह की सेना ने नागौर को जा घेरा और नागौर दुर्ग पर अधिकार कर लिया। तव उदयपुर महाराना राजसिह द्वितीय ने विजयसिह और जयअप्पा के मध्य समझौता करवाने के लिए रावत जैतसिह सलूम्बर को भेजा था। किन्तु विजयसिह ने केशरीसिह खोखर और उसके एक साथी द्वारा जयअप्पा को छल से नागोर मे मरवा डाला। इस घटना से उत्तेजित होकर जयअप्पा के भाई दत्ताजी ने समझौते के लिए वहाँ ठहरे हुए रावत जैतसिह, विजय भारती और जोधपुर के सामतो पर आक्रमण किया। विजयसिह के पक्ष के दो हजार सैनिक वहाँ उपस्थित थे। उसी युद्ध मे रावत जैत्रसिह, विजयभारती और ठाकुर रार्जसिह जूझते हुए मारे गए थे। तदनन्तर विजयसिह को दत्ता मरहठा को क्षति स्वरूप ५० लाख नकद रुपये तथा अजमेर व जालोर का प्रान्त देना पड़ा।

—मुगलकालीन भारत पृ १९५–१९६, विजयविलास
हस्तलिखित छद ४३२, कीरत प्रकास हस्तलिखित।

पृ. २१०, २१२ गीत १२४–१२५ कवर सेरसिघ चुवांण सखवास—मारवाड के नागोर पट्टी के चौहानो के ठिकाने सखवास का स्वामी कुवर शेरसिह चौहान। वह ठाकुर शभुदानसिह का पुत्र एव उत्तराधिकारी था। शेरसिह ने महाराजा भीमसिह की ओर से वि स १८५० मे झावर स्थान के युद्ध मे भाग लिया था और महाराजा विजयसिह की सेना से लडाई की थी। वह युद्ध शेख पठान के विपक्षी नेतृत्व मे लडा गया था। सूरजमल्ल मेडतिया कुचामन, हरिसिह कूपावत चण्डावल आदि महाराजा भीमसिह के पक्ष के अनेक सरदार काम आए थे। शेरसिह और उसका अनुज वीरसिह घायल होकर वच रहे थे।

—मारवाड का इतिहास प्र. भा पृ ३९१–३९२, कीरत प्रकास।

पृ. २१३ गीत १२६ रावत जोधसिघ चौहाण कोठारिया—रावत मोहकमसिह का पुत्र रावत जोधसिह चौहान कोठारिया। रावत जोधसिह ने स १८५७ के प्रथम भारतीय

स्वातन्त्र्य सग्राम मे विद्रोहियो का साथ दिया था। मारवाड के आउवा ठिकाने के ठाकुर कुशालसिंह को अपने वहाँ ठहराने तथा सहायता करने मे उसने अग्रेजो का तनिक भी भय नही माना।

—राजपूताने का इतिहास दूसरी जिल्द ओझा पृ ११८६,
मेवाड का सक्षिप्त इतिहास पृ १७५।

पृ २१५ गीत १२७ **सूरजमल चौहाण मुडेटी**—गुजरात के ईडर राज्य के मुडेटी ठिकाने का ठाकुर सूरजमल्ल चौहान। वह ठाकुर जालिमसिंह का पुत्र था। सूरजमल्ल ने ईडर के महाराजा केशरीसिंह के निधन पर अग्रेजो के सती प्रथा कानून का उल्लंघन करते हुए महाराजा की महारानियो को सती करवा कर उनकी इच्छा पूर्ण की थी। उक्त लडाई मे उसके कतिपय सैनिक मारे गए थे।

—वीर चरित्र माला पृ १४०–१४१।

पृ. २१८ गीत १२८ **राव भोज हाडा बूदी**—राजस्थान के बूदी राज्य का शासक राव भोज हाडा। वह राव सुर्जन हाडा का जेष्ठ पुत्र था। भोज सवत् १६४२ वि मे बूदी की गद्दी पर बैठा था। बादशाह अकबर की गुजरात की चढाई के समय वह अपने भाई दुर्जनशाल सहित साथ था। भोज ने शत्रु सेनापति को द्वन्द्व युद्ध मे मारा था। अहमदनगर के घेरे मे भी उसने वीरता दिखाई थी। तदनन्तर उडीसा के युद्ध मे भी शाही सेना के साथ रह कर लडाई की थी। वह स. १६६४ वि. मे बूदी के राजमहल से गिर कर मर गया।

—मआसिरुल् उमरा पृ २७३–२७४।

पृ. २१६ गीत १२६ **महाराव राजा भावसिंघ हाडा बूंदी**—बूदी का शासक महाराव राज। भावसिंह हाडा। वह महाराव राजा शत्रुशाल का जेष्ठ पुत्र और उत्तराधिकारी था। भावसिंह अपने पिता महाराव शत्रुशाल के स १७१५ वि के शामूगढ के युद्ध मे मारे जाने पर बूदी की गद्दी पर बैठा था। तदनन्तर वह बादशाह औरगजेब द्वारा तीन हजारी दो हजार सवारो का मन्सब पाकर सम्मानित हुआ। भावसिंह ने शाही सेवा मे रह कर शाहजादा शुजा तथा छत्रपति शिवाजी मरहठा का दमन करने के लिए भेजे गए महाराजा जसवतसिंह राठौड तथा महाराजा मिर्जा राजा जयसिंह के साथ नियुक्त होकर दक्षिण की लडाइयो मे लडा था। वह चाँदा के राजा के विरुद्ध भी लड़ा था। अन्त मे स १७३४ वि. में औरगाबाद मे उसका देहान्त हो गया।

—मआसिरुल् उमरा पृ २५७–२५६, टाड राजस्थान,
भाग २ पृ. १३४२।

पृ २२० गीत १३० नाथजी रघावत हाडा—रघुनाथसिंह का पुत्र अथवा वशधर नाथसिंह। नाथसिंह ने कछवाहो के साथ युद्ध लड कर वीरगति प्राप्त की थी। वह युद्ध कब कहाँ लडा गया था कोई वृत्तान्त नही मिला। सभवत महाराव राजा बुद्धसिंह के पक्ष मे वह पाचोलास के युद्ध मे लड कर मारा गया होगा।

पृ. २२३ गीत १३१ महाराज भगतराम हाडा इन्द्रगढ़—कोटडियाद (हाडौती) क्षेत्र मे इन्द्रगढ सस्थान का स्वामी महाराज भक्तराम हाडा। वह महाराज छत्रसिंह का पुत्र था। महाराव राजा उम्मेदसिंह ने इन्द्रगढ के महाराज देवसिंह को मार कर भगत-राम को स १८१३ मे इन्द्रगढ प्रदान किया था।

पृ. २२८ गीत १३२ हाडा गौडा रौ जुद्ध—हाडो और गौडो का युद्ध। बादशाह शाहजहाँ के अन्तिम दिनो मे लडे गए शाहजादो के उत्तराधिकार के उज्जैन और धौलपुर के युद्धो मे उज्जैन मे हाडा राव मुकुन्दसिंह कोटा तथा गौड अर्जुन और धौलपुर मे महाराव राजा शत्रुशाल और गौड राजा शिवराम व भीमसिंह गौड़ एक पक्ष मे रह कर लडते हुए धराशायी हुए थे।

—विन्हैरासो परिशिष्ट पृ २२३, २२४, २२७, २३८।

पृ. २३० गीत १३३ राजराणा रायसिंघ झाला सादड़ी—मेवाड के सादड़ी ठिकाने का स्वामी राजराणा रायसिंह झाला द्वितीय। वह राजराणा कीर्तिसिंह प्रथम का पुत्र था। रायसिंह ने मेवाड की सेना का नेतृत्व करते हुए हींता स्थान मे मैदान के हट्ट मरहठा की ८ हजार सेना से युद्ध लडा था। वह उस युद्ध मे घायल होकर जीवित रहा और उसका लघु भ्राता नाथसिंह मारा गया था।

—श्री झाला भूषण मार्त्तण्ड पृ ६८–७२, राजपूताने का इतिहास
जिल्द २ चतुर्थ खण्ड पृ ११८३।

पृ. २३५ गीत १३४ रावल अमरसिंघ भाटी जैसलमेर—जैसलमेर के रावल मालदेव का उत्तराधिकारी रावल अमरसिंह भाटी। उसने पजाब मे मुसलमानों के साथ के युद्ध मे शौर्य प्रदर्शन कर यश प्राप्त किया था। स १६७० वि. मे उसका देहान्त हुआ था।

—नैणासी भा २ पृ. ६८

पृ २३६ गीत १३५ मूलराज सौलंखी—मूलराज सोलखी। मूलराज ने कटार युद्ध लडकर वीरगति प्राप्त की थी। विशेष विवरण प्राप्त नही है।

पृ. २३७ गीत १३६ लालसिंघ सौलखी—हरिसिंह का पुत्र लालसिंह सौलखी। लालसिंह ने बादशाह की ओर से उज्जैन मे युद्ध लडा और अपना जीवन न्यौछावर कर बादशाह के प्राणो की रक्षा की।

पृ. २३६ गीत १३७ अमरसिंघ गरडवा–अमरसिंह गरडवा का निवास स्थान, युद्ध स्थान तथा समय और युद्ध विवरण प्राप्त नही है।

पृ. २४० गीत १३८ दुरजणसाल सोडा—दुर्जनशाल सोढा। दुर्जनशाल ने सिरोही पर राठौडो के आक्रमण करने पर वीरता दिखाई थी। सभवत वह महाराजा मानसिंह राठौड की सेना के सिरोही पर हमला करने पर लडा हो। ख्यातो मे कोई उल्लेख नही मिला।

पृ. २४१ गीत १३६ सावलदास डावर—मालवा मे बडनगर का शासक श्यामलदास डावर। वह फतहसिंह का पुत्र था। उसने बडनगर पर आक्रमण करने पर किस मिर्जा पदधारी शाही सेनानायक से युद्ध किया कोई वृत्त नही मिला।

पृ. २४२ गीत १४० सेरखाँन पठान—अबदलखाँन का पुत्र शेरखाँन पठान। शेरखाँन का वंश परिचय नही मिला। सभवत वह जालोर के बिहारी पठानो मे से था और महाराजा शूरसिंह जोधपुर का समवर्त्ती था।

पृ २४३ गीत १४१ गीत भरतपुर किला पर जाट अंग्रेजां रौ–राजस्थान के जाट राज्य के भरतपुर दुर्ग पर अंग्रेजो से लडे गए युद्ध का गीत। जसवतराव होल्कर ने अंग्रेजो के विरुद्ध अपना राज्य त्यागकर राजस्थान के भरतपुर राज्य के महाराजा रणजीतसिंह की शरण लेकर डीग के किले को आश्रयस्थल बनाया था। डीग के पास अंग्रेजो से जबर्दस्त युद्ध हुआ। जिसमे अंग्रेजो के ६४३ योद्धा मारे गए थे, जिनमे २२ उच्च सैनिक अधिकारी थे। होल्कर की सारी सेना काम आयी थी। तब फिर भरतपुर के किले में जाकर डटे थे। वहाँ भी लेक के नेतृत्व मे अंग्रेजो ने पीछा किया और कई दिनो तक अनवरत युद्ध होता रहा। किन्तु अंग्रेज सफल नही हुए। यशवतराव का सहायक अमीरखा पठान अंग्रेजो से मिलकर तटस्थ हो गया, ऐसी परिस्थिति मे रणजीतसिंह को अंग्रेजो से सधि करने के लिए बाध्य होना पडा। किन्तु भरतपुर नरेश ने यशवतराव को अंग्रेजो को नही सौंपा। वह युद्ध १८०४, २३ दिसम्बर से अप्रैल १८०५ तक चलता रहा।



परिशिष्ट २.

गीत छंदानुक्रमणिका



सहायक ग्रंथ-सूची

अजितविलास—सं डॉ नारायणसिंह भाटी स स. सौभाग्यसिंह शेखावत राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी

अलवर व जयपुर राज्य का इतिहास—श्री जगदीशसिंह गहलोत

उम्मेदसिंह सीसोदिया रा गीत—डॉ नारायणसिंह भाटी स. सौभाग्यसिंह शेखावत

एनाल्स एण्ड ऐंटिक्वीटीज ऑफ राजस्थान—कर्नल जेम्स टॉड

ओझानिबंध-सग्रह भा ३–४—स. नाथूलाल भागीरथ व्यास, साहित्य सस्थान, उदयपुर

कछवाहो की ख्यात—राजस्थानी शोध सस्थान सग्रहालय, चौपासनी

कूर्मवशप्रकाश—स. महताबचद्र खारेड, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

खेतडी का इतिहास—प० झावरमल्ल शर्मा जसरापुर, खेतडी

गजगुणरूपकबध—स सीताराम लाळस, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

दलपतविलास—स. रावत सारस्वत, शार्दूल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर

बाकीदास री ख्यात—स नरोत्तमदास स्वामी रा प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

बिन्हैरासो—स. सौभाग्यसिह शेखावत, रा. प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

भीमप्रकास, महादान मेहडू रचित—सौभाग्यसिंह शेखावत का सग्रह

माधववश. प्रकाश—बक्सी भूयालाल ठाकुर लूणसिंह भोपालसिंह दूजोद का सग्रह

मारवाड का इतिहास, भा १ व २—प. विश्वेश्वरनाथ रेऊ, जोधपुर

मारवाड रा उमरावा री बात—कु. देवीसिंह शेखावत मडावा का सग्रह

मारवाड रा जागीरदारां री वशावली—मुशी देवीप्रसाद

मुहता नेणसी री ख्यात—सं बदरीप्रसाद साकरिया, रा प्रा प्रतिष्ठान, जोधपुर

मुगलदरबार—अनु. ब्रजरत्नदास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

मेवाड का सक्षिप्त इतिहास—देवनाथ पुरोहित, उदयपुर

राजपूताने का इतिहास भा तृतीय—डा गौ ही ओझा, अजमेर

राजरूपक—स प. रामकर्ण आसोपा, ना० प्रचारिणी सभा, काशी

राजस्थान का पिंगल-साहित्य—डा मोतीलाल मेनारिया, उदयपुर

राजस्थान पुरालेख विभाग, बीकानेर का रेकार्ड

राठौडो की ख्यात—डा कल्याणसिंह शेखावत का सग्रह

रायसलजस सरोज, रामदयाल कविया रचित—सौभाग्यसिंह शेखावत का सग्रह

वीरगीत सग्रह, भा. १—स सौभाग्यसिह शेखावत, रा प्रा प्रतिष्ठान, जोधपुर

शाहजहाँनामा—अनु० मुशी देवीप्रसाद

शाहपुरा राज्य की ख्यात—राजाधिराज सुदर्शनदेवसिंह, शाहपुरा

शिखर-वशोत्पत्ति—स प हरिनारायण पुरोहित, जयपुर

शेखावतो की वशावली—रावल हरनाथसिंह शेखावत, डूडलोद

साभर का युद्ध—स डॉ रघुबीरसिंह, सीतामऊ राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ

सीकर का इतिहास—प झाबरमल्ल शर्मा, जसरापुर

Generogical Table of Kachawahas—Rawal Harnath Singh Dundlod

Rathod Durgadas—Vishvashwarnath Reu

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला

नवीन-प्रकाशन

क्रमांक	ग्रन्थ-नाम	सम्पादक	मूल्य
११५	सिंहसिद्धान्तसिन्धु, (गोस्वामी शिवानन्द भट्ट कृत) प्रथमखण्ड	डॉ फतहसिंह एव श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी	११-५०
११६	राजस्थानी-वीर-गीत-संग्रह, भाग ३	श्री सौभाग्यसिंह शेखावत	९-२५
११७	बालतन्त्रम् (कल्याण पण्डित कृत)	कविराज श्री विष्णुदत्त पुरोहित	३-५०
११८	नरसीजी रो माहेरो (मीराकृत)	श्री जेठालाल नारायण त्रिवेदी	७-२५

मुद्रणाधीन-प्रकाशन

१	मीरा बृहत्पदावली, भाग २	डॉ० कल्याणसिंह शेखावत
२	मारवाड रा परगनारी विगत, भाग ३	डॉ० नारायणसिंह भाटी
३	सिंहसिद्धान्तसिन्धु, द्वितीय खण्ड	श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी
४	संगीतरघुनन्दनम्	डॉ० दशरथ शर्मा
५	राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३	श्री ओंकारलाल मेनारिया
६	रतन रासो	डॉ रघुवीरसिंह एव श्री काशीराम शर्मा
७	खण्डप्रशस्ति टीकाद्वययुक्तम्	डॉ फतहसिंह एव श्री म० विनयसागर
८	नन्दिसूत्रम्-प्रभाव्याख्यायुक्तम्	डॉ० फतहसिंह एव श्री म० विनयसागर